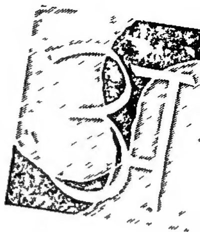
अनुवादविज्ञान



श ब्द का र

मूल्य बारह रुपए पचास पैसे



महेन्द्र चतुर्वेदी
को
सस्नेह

दो शब्द

अनुवाद को उसके पूरे परिप्रेक्ष्य म लें तो वह मूलत प्रायोगिक भाषा विज्ञान (Applied Linguistics) के अन्तगत आता है। साथ ही अनुवाद करने मे तुलनात्मक (Comparative) या व्यतिरेकी (Contrastive) भाषा-विज्ञान म भी हम बडी सहायता मिलती है। इस तरह अनुवाद भाषाविज्ञान स बहुत अधिक सबद्ध है। इस सम्बन्ध के कारण भी भाषाविज्ञान क प्रति रुचि ने मुझे अनुवाद तथा उससे सम्बद्ध समस्याओ की ओर आकर्षित किया। विद्यार्थी जीवन मे पाठ्यक्रमीय अनवाद की बात छोड दें तो सरम पहले अज्ञेय जी द्वारा सपादित नेहरु अभिनन्दन ग्रन्थ म मुझे अनुवाद करन का अवसर मिला। उसी समय कुछ भाषा सम्बन्धी लेखो के मैंने अग्रेजी स हिन्दी म अनुवाद किए जो पत्र पत्रिकाओ म प्रकाशित हुए। गुलनार और नजम नाम से एक अग्रेजी पुस्तक का सक्षिप्तानुवाद १९५२ मे पुस्तकाकार भी छपा था। आगे चलकर डा० गुने की पुस्तक Introduction to Comparative Philology का मने हिन्दी अनुवाद किया जो १९ ४ मे प्रकाशित हुई। उसी प्रकाशक के लिए मने ग्लीसन की प्रसिद्ध पुस्तक Introduction to Descriptive Linguistics का भी हिन्दी अनुवाद किया था किन्तु कुछ कारणवश उसका प्रकाशन स्थगित करना पडा। १९६२ ६४ म रूस म अपने प्रवास काल मे कुछ उज्बेक रूसी तथा इस्तोनियन कविताओ का भी मने हिन्दी अनुवाद किया था। ताशकन्द रेडियो म १९६४ म मरे सहयोग से हिन्दी विभाग खुला था। वहाँ प्रतिदिन आध घन्टे के कायक्रम के लिए रूसी उज्बेक अग्रेजी आदि स हिन्दी म अनुवाद किया जाता था जिसका पुनरीक्षण मुझे करना पडता था। एक वष म कुछ ऊपर तक यह काय भी चलता रहा। भारत लौटने पर भाषा तथा कई अन्य पत्रिकाओ के लिए भाषा तथा लिपि विषयक कई लेखो का मैंने अनुवाद किया। १९६८ मे भारतीय अनुवाद परिषद ने अपनी त्रमासिक पत्रिका अनुवाद क सपादन का भार मुझे सौंपा और समयाभाव के कारण न चाहते हुए भी, कई मित्रो के आग्रह स मुझे यह दायित्व लना पडा। दिल्ली विश्वविद्यालय म अनुवाद के सर्टिफिकेट कोर्स मे इधर कई वर्षों से अनुवाद के कुछ पक्षो पर मेरे विशेष भाषण भी होते रहे

हैं। इस तरह अनुवाद से, काफी दिनों से कई रूपों में मैं सम्बद्ध रहा हूँ।

यों, अनुवाद-कार्य तो मैंने थोड़ा ही किया है किन्तु अनूदित सामग्री का 'पुनरीक्षण' काफी किया है—लगभग १८००० पृष्ठ। 'पुनरीक्षण' के सिलसिले में मैंने यह अनुभव किया कि अनुवाद करने की तुलना में 'पुनरीक्षण' में अनुवाद की समस्याओं पर हमारा ध्यान कहीं अधिक जाता है। इसका कारण शायद यह है कि अनुवाद तो हम सहज भाव से करते जाते हैं अतः थोड़े अभ्यास के बाद उनकी समस्याओं की ओर हमारा ध्यान प्रायः कम ही जाता है किन्तु पुनरीक्षण में पग पग पर अनुवादक के अनुवाद से पुनरीक्षक के सम्भाव्य अनुवाद का संघर्ष होता है, अतः अपेक्षाकृत अधिक समस्याएँ—और वे भी अधिक गहराई के साथ सामने आती हैं। वस्तुतः अनुवाद करने से अधिक 'पुनरीक्षण' पत्रिका के संपादन, अनुवाद विषयक भाषणों और भाषणों के बाद के प्रश्नों तथा शंकाओं ने ही मुझे अनुवाद से सम्बद्ध विभिन्न समस्याओं की ओर विशेष रूप से आकृष्ट किया है और परिणामस्वरूप मैं अनुवाद पत्रिका के संपादकीयों या कई पत्र-पत्रिकाओं में लेखों के रूप में अनुवाद के संबंध में अपने विचार समय समय पर व्यक्त करता रहा हूँ।

प्रस्तुत पुस्तक की सामग्री के लेखन का प्रारम्भ मूलतः अनुवाद पत्रिका का सिद्धांत विशेषांक निकालने के लिए कुछ लेखों के रूप में हुआ था। विशेषांक के लिए कहीं और से अपेक्षित सामग्री न मिलने पर धीरे धीरे मुझे अपनी सामग्री बढ़ानी पड़ी, किन्तु अंत में सामग्री इतनी हो गई कि विशेषांक में पूरी न जा सकी। अब वह पूरी सामग्री प्रस्तुत पुस्तक के रूप में प्रकाशित की जा रही है।

अनुवाद विषयक चिंतन में महेन्द्र चतुर्वेदी, ओमप्रकाश गाबा, विश्वप्रकाश गुप्त, लज्जाराम मिहन, डा. जगदीश चन्द्र भूना, डा. कृष्ण कुमार गुप्ता तथा डा. नगीन चन्द्र सहगल आदि मित्रों से मुझे बहुत सहायता मिलती रही है। मैं इन सभी का हृदय से कृतज्ञ हूँ। बिटिया मुकुल ने अर्थविज्ञान वाले अध्याय के चित्र बनाकर मेरे चिंतन को मूर्त रूप दिया है। उसे ढेर सारा प्यार।

पुस्तक में प्रूफ की कई भद्दी भूलें रह गई हैं जिनके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

भोलानाथ तिवारी

दो शब्द

अनुवाद को उसके पूरे परिप्रेक्ष्य म लें तो वह मूलत प्रायोगिक भाषा विज्ञान (Applied Linguisitcs) के अन्तगत आता है। साथ ही अनुवाद करने म तुलनात्मक (Comparative) या व्यतिरेकी (Contrastive) भाषा विज्ञान स भी हम बडी सहायता मिलती है। इस तरह अनुवाद भाषाविज्ञान स बहुत अधिक सबद्ध है। इस सम्बन्ध के कारण ही भाषाविज्ञान के प्रति रुचि ने मुझे अनुवाद तथा उसस सम्बद्ध समस्याओ की ओर आकर्षित किया। विद्यार्थी जीवन मे पाठ्यक्रमीय अनुवाद की बात छोड दें तो सबस पहल अज्ञेय जी द्वारा सपादित नेहरू अभिनन्दन ग्रन्थ म मुझे अनुवाद करने का अवसर मिला। उसी समय कुछ भाषा सम्बन्धी लेखो के मैंने अंग्रेजी स हिन्दी म अनुवाद किए जो पत्र पत्रिकाओ म प्रकाशित हुए। 'गुलनार और नजरन नाम स एक अंग्रेजी पुस्तक का सक्षिप्तानुवाद १९५२ मे पुस्तकाकार भी छपा था। आगे चलकर डा० गुणे की पुस्तक Introduction to Comparative Philology का मने हिन्दी अनुवाद किया जो १९५४ मे प्रकाशित हुई। उसी प्रकाशक के लिए मने ग्लीसन की प्रसिद्ध पुस्तक Introduction to Descriptive Lingiustics का भी हिन्दी अनुवाद किया था किन्तु कुछ कारणवश उसका प्रकाशन स्थगित करना पडा। १९६२ ६४ म रूस म अपने प्रवास काल मे कुछ उज्बेक रूसी तथा इस्तोनियन कविताओ का भी मैंने हिन्दी अनुवाद किया था। ताशकन्द रेडियो मे १९६२ म मेरे सहयोग से हिन्दी विभाग खुला था। वहाँ प्रतिदिन आध घण्टे के कायक्रम के लिए रूसी उज्बेक अंग्रेजी आदि स हिन्दी म अनुवाद किया जाता था जिसका पुनरीक्षण मुझे करना पडता था। एक वर्ष म कुछ ऊपर तक यह काय भी चलता रहा। भारत लौटने पर भाषा तथा कई अन्य पत्रिकाओ के लिए भाषा तथा लिपि विषयक कई लेखो का मैंने अनुवाद किया। १९६८ म भारतीय अनुवाद परिषद ने अपनी त्रैमासिक पत्रिका अनुवाद के सपादन का भार मुझे सौंपा और समयाभाव के कारण न चाहते हुए भी, कई मित्रो के आग्रह से मुझे यह दायित्व लेना पडा। दिल्ली विश्वविद्यालय म अनुवाद के सर्टिफिकेट कोस मे इधर कई वर्षों स अनुवाद के कुछ पक्षो पर मेरे विशेष भाषण भी होते रहे

हैं। इस तरह अनुवाद से, काफी दिनों से कई रूपों में मैं सम्बद्ध रहा हूँ।

यों, अनुवाद कार्य तो मैंने थोड़ा ही किया है किन्तु अनूदित सामग्री का पुनरीक्षण काफी किया है—लगभग १८००० पृष्ठ। पुनरीक्षण के सिलसिले में मैंने यह अनुभव किया कि अनुवाद करने की तुलना में 'पुनरीक्षण' में अनुवाद की समस्याओं पर हमारा ध्यान कहीं अधिक जाता है। इसका कारण शायद यह है कि अनुवाद तो हम सहज भाव से करते जाते हैं, अतः थोड़े अभ्यास के बाद उसकी समस्याओं की ओर हमारा ध्यान प्रायः कम ही जाता है किन्तु पुनरीक्षण में पग पग पर अनुवादक के अनुवाद से पुनरीक्षक के सम्भाव्य अनुवाद का संघर्ष होता है, अतः अपेक्षाकृत अधिक समस्याएँ—और वे भी अधिक गहराई के साथ सामने आती हैं। वस्तुतः अनुवाद करने से अधिक 'पुनरीक्षण' पत्रिका के संपादन, अनुवाद विषयक भाषणों और भाषणों के बाद के प्रश्नों तथा शंकाओं ने ही मुझे अनुवाद से सम्बद्ध विभिन्न समस्याओं की ओर विशेष रूप से आकृष्ट किया है और परिणामस्वरूप मैं 'अनुवाद' पत्रिका के संपादकीयों या कई पत्र-पत्रिकाओं में लेखों के रूप में अनुवाद के संबंध में अपने विचार समय समय पर व्यक्त करता रहा हूँ।

प्रस्तुत पुस्तक की सामग्री के लेखन का प्रारम्भ मूलतः 'अनुवाद' पत्रिका का सिद्धांत विशेषांक निकालने के लिए कुछ लेखों के रूप में हुआ था। विशेषांक के लिए कहीं और से अपेक्षित सामग्री न मिलने पर धीरे धीरे मुझे अपनी सामग्री बढ़ानी पड़ी, किन्तु अंत में सामग्री इतनी हो गई कि विशेषांक में पूरी न जा सकी। अब वह पूरी सामग्री प्रस्तुत पुस्तक के रूप में प्रकाशित की जा रही है।

अनुवाद विषयक चिंतन में महेंद्र चतुर्वेदी, ओमप्रकाश गाबा, विश्वप्रकाश गुप्त, लज्जाराम सिंहल, डा. जगदीश चन्द्र मूना, डा. कृष्ण कुमार गुप्ता तथा डा. नगीन चन्द्र सहगल आदि मित्रों से मुझे बहुत सहायता मिलती रही है। मैं इन सभी का हृदय से कृतज्ञ हूँ। बिटिया मुकुल ने अर्थविज्ञान वाले अध्याय के चित्र बनाकर मेरे चिंतन को मूर्त रूप दिया है। उसे ढेर सारा प्यार।

पुस्तक में प्रूफ की कई भद्दी भूलें रह गई हैं, जिनके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

भोलानाथ तिवारी

विषय-अनुक्रम

१

'अनुवाद' शब्द व्युत्पत्ति, अर्थ और इतिहास

'अनुवाद शब्द का सम्बन्ध वद् धातु से है, जिसका अर्थ होता है 'बोलना' या 'कहना'। 'वद् धातु में घञ् प्रत्यय लगने से वाद' शब्द बनता है, और फिर उसमें 'पीछे बाद में अनुवर्तिता' आदि अर्थों में प्रयुक्त 'अनु उपसर्ग जुड़ने से अनुवाद शब्द निष्पन्न होता है। अनुवाद का मूल अर्थ है पुनःकथन या किसी के कहने के बाद कहना'।

'शब्दार्थ चिंतामणि' कोष में अनुवाद का अर्थ 'प्राप्तस्य पुनःकथन' या 'ज्ञातार्थस्य प्रतिपादने अर्थात् 'पहले कहे गए अर्थ को फिर से कहना' आदि दिया गया है।

प्राचीन भारत में शिक्षा की मौखिक परम्परा थी। गुरु जो कहते थे शिष्य उसे दुहराते थे। इस दुहराने को भी 'अनुवाद या अनुवचन कहते थे। 'अनुवाक' भी मूलतः यही था यद्यपि बाद में इसका अर्थ वेद का कोई प्रभाग (Section) हो गया—मूलतः कदाचित् उतना भाग जिसे एक बार गुरु से सुनकर दुहराया या पढ़ा जाता जा सके।

वैदिक संस्कृत के प्राचीनतम रूप में उपसर्ग का प्रयोग मूल क्रिया से अलग होता रहा है बाद में दोनों का मिलाकर प्रयोग किया जाने लगा। अनुवाद के अनु' और वद्' का भी अलग प्रयोग मिलता है। ऋग्वेद(२ १३ ३) में आता है— अन्वेको वदति यद्ददाति।

यहां भी 'अनु वदति का अर्थ है 'दुहराता है या पीछे से कहता है। ऋग्वेद में एक अन्य स्थान पर आया है—

रोचनाऽधि(८ १ १८)

इस पर सायण कहते हैं—

अधि पंचम्यर्थानुवादी।

अर्थात् अधि पंचमी के अर्थ को ही दुहरा रहा है। इस तरह सायण ने भी इसका प्रयोग दुहराने के लिए ही किया है। ब्राह्मण ग्रंथों में 'दुबारा

कहना' या 'पुन कथन' अर्थ मे 'अनुवाद' का प्रयोग कई स्थलो पर मिलता है। एतरेय ब्राह्मण (२ १८) म आता है—

यद् वाचि प्रादितायाम् अनुब्रूयाद् अयस्यवनम्
उदितानुवादिनम् कुर्यात्

ताडय ब्राह्मण (१४ ४ १७) म भी अनुवाद आता है।

उपनिषदा म भी अनु + वद् का प्रयोग कई व्याकरणिक रूपा मे मिलता है। बृहदारण्यक उपनिषद् (५ २ ३) मे अनुवदति का प्रयोग दुहरान के अथ म हुआ है—

तद् एतद् एवैषा देवी वाग अनुवदति
स्तनयित्नु द द द इति

यास्क के निरुक्त म आता है—

कालानुवाद परीत्य (१२ १३)
अर्थात् (सविता के) समय को कहने को जानकर (—दुग)।
यहाँ अनुवाद' का अथ कहना या बात का कहना है।

निरुक्त में ही अन्यत्र (१ १६) इसका प्रयोग दुहरान' के अथ म हुआ है—

यथा एतद् ब्राह्मणेन रूपसपन्ना विधीयन्त इत्युदितानुवाद स भवति।

पाणिनि क अष्टाध्यायी म भी 'अनुवाद शब्द' का प्रयोग मिलता है—

अनुवादे चरणानाम् (२ ४ ३)

इस सूत्र के अनुवाद शब्द की भट्टोजि दीक्षित व्याख्या करते हैं—

सिद्धस्य उपन्यास

अर्थात् ज्ञात बात को कहना। भट्टोजि पर वासुदेव दीक्षित की व्याख्या बालमनोरमा म आता है—

अवगतार्थस्य प्रतिपादन इत्यथ

यहाँ भी इसका अथ बात का कहना' ही है।

पाणिनि क उपयुक्त सूत्र पर महाभाष्यकार के कथन की टीका म कय्यट कहते हैं—

यत्र प्रतिपत्ता प्रमाणान्तरावगतमप्यथ शर्दान्तराथ प्रयोक्ता
प्रतिपादयत तत्रानुवादो भवति

अर्थात् किसी और प्रमाण स विदित बात को ही दूसर काय के लिए किसी क द्वारा श्रोता स जब कहा जाता है तब अनुवाद होता है।

काशिका (२ ४ ३) म इसी पर टीका है—

प्रमाणान्तरावगतस्यार्थस्य शब्दन सकीर्तनमात्रमनुवाद

अर्थात् अन्य किसी प्रमाण से जानी हुई बात का शब्द के द्वारा कथन ही अनुवाद है। मीमांसा में वाक्य के आशय का दूसरे शब्दों म समथन के लिए प्रयुक्त कथन को अनुवाद' कहा गया है तथा इसके तीन भेद (भूतार्थानुवाद, स्तुत्यर्थानुवाद गुणानुवाद) माने गए हैं।

न्यायसूत्र (२ १ ६२) म वाक्य तीन प्रकार के माने गए हैं विधि, अर्थवाद, अनुवाद—

विध्यर्थवादानुवादवचनविनियोगात्

न्यायसूत्र म ही अन्यत्र (२ १ ६५) 'अनुवाद को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि 'विधि तथा विहित का पुन कथन अनुवाद है'—

विधिविहितस्यानुवचनमनुवाद

न्यायदर्शन (२ १ ६६) मे आता है—

नानुवादपुनरुक्तयोर्विशेष शब्दाभ्यासोपपन्न

अर्थात् अनुवाद और पुनरुक्त म भेद नहीं है क्योंकि दोनों म शब्दों की आवृत्ति होती है। इसके ठीक उलटे न्यायसूत्र के वात्स्यायनभाष्य (२ १ ६७) म कहा गया है कि अनुवाद' पुनरुक्ति नहीं है। पुनरुक्ति निरथक होती है, किन्तु अनुवाद साथक या प्रयोजनयुक्त पुन कथन होता है। बात को स्पष्ट करने के लिए वहाँ 'शीघ्र शीघ्र जाओ (शीघ्रतरगमनोपदेशवत् अभ्यासात् नविशेष) उदाहरण लिया गया है जिसम शीघ्र शीघ्र' को पुनरुक्ति न मानकर अनुवाद माना गया है क्योंकि जाने की रीति पर बल देने के लिए यहा उसे दुहराया गया है। इस प्रकार यहाँ अनुवाद का अर्थ है शब्द का सार्थक रूप म दुहराना।

भर्तृहरि (२ १ १५) म अनुवाद का अथ दुहराना या पुनकथन है—

आवृत्तिरनुवादो वा

जैमिनीय न्यायमाला (१ ४ ६) मे आता है—

ज्ञातस्य कथनमनुवाद

अर्थात् ज्ञात का कथन अनुवाद है।

मनुस्मृति के प्रसिद्ध टीकाकार कुल्लूक भट्ट (४ १२४ पर) कहते हैं—

सामगानश्रुतौ ऋग्यजुषोरनध्याय उक्तस्तस्यायमनुवाद

यहाँ भी अनुवाद' का अथ पुन कथन ही है।

सस्कृत साहित्य मे गुणानुवाद शब्द का प्रयोग गुण के बार-बार कथन' के लिए हुआ है।

द्वारा दुहराया जाना', 'पश्चात्कथन', 'दुहराना', 'पुनःकथन', 'कहना', 'प्राप्त को कहना', 'समर्थन के लिए प्रयुक्त कथन', 'विधि या विहित का पुनःकथन' 'आवृत्ति', 'सार्थक आवृत्ति' आदि अर्थों में हुआ है। यों तो इनमें कोई भी अर्थ आज के अनुवाद शब्द का ठीक अर्थ नहीं है, किंतु यह स्पष्ट है कि इनमें से अधिकांश अर्थ आज के अर्थ से बहुत दूर नहीं कहे जा सकते। अनुवाद मूलतः 'पुनःकथन' या किसी के कहे जाने के बाद कहना है और आज के प्रयोग में भी यह किसी के कथन का पुनःकथन ही है—एक भाषा में किसी के द्वारा कही गई बात का किसी दूसरी भाषा में पुनःकथन।

लोगों की इस सामान्य धारणा से मैं बहुत सहमत नहीं हूँ कि प्राचीन भारत में—विशेषतः संस्कृत में—अनुवाद होते ही नहीं थे। एक समृद्ध देश ने दूसरों से जो कुछ भी ग्रहणीय पाया लिया—ज्योतिष, वास्तुकला तथा चिकित्सा आदि के क्षेत्र में। अतः यह सर्वथा संभव है कि अनुवाद भी हुए होंगे। हाँ अब वे उपलब्ध नहीं हैं। यों प्राकृतों से संस्कृत अनुवाद के उदाहरण आज भी उपलब्ध हैं। संस्कृत नाटकों में स्त्रियों तथा नौकरों के प्राकृत वाक्यों, छंदों या गीतों आदि को प्राकृत के साथ साथ संस्कृत में भी देने की परम्परा रही है जिसे संस्कृत में 'छाया' कहते रहे हैं। तत्वतः यह भी एक प्रकार का अनुवाद ही है। इस तरह विशेष प्रकार के अनुवाद के लिए अपने यहाँ 'छाया' शब्द पर्याप्त प्राचीन है। आधुनिक भारतीय आर्य भाषा काल में १४वीं १५वीं सदी से ही ज्योतिष वैद्यक नीति कथा वार्ता तथा अन्य भी अनेक विषयों के संस्कृत ग्रंथों के हिंदी आदि में भाषांतरण होने लगे थे जिन्हें 'भाषा टीका' कहते थे। इस प्रयोग में भाषा का अर्थ था बोलचाल की भाषा अर्थात् हिंदी (कबीर ने इसी अर्थ में संस्कृत को कूपजल तथा तत्कालीन बोलचाल की भाषा को बहता नीर कहा था) तथा टीका का अर्थ है अनुवाद'। इसे कभी-कभी 'हिंदी टीका' तथा कदाचित् 'भाषानुवाद' भी कहते थे। आगे चलकर फारसी (तथा उसके माध्यम से अरबी के भी) प्रचार के कारण 'तरजुमा' शब्द भी चल पड़ा है। अपने अनुवाद 'रत्नावली' की भूमिका में सन् १८६८ में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र लिखते हैं 'नाटकों का तर्जुमा प्रकाशित होता जाएगा' (भारतेन्दु नाटकावली भाग २ संपादक—ब्रजरत्नदास इलाहाबाद सं० १९६३, पृ० ६५)। इन शब्दों के साथ साथ इसी अर्थ में 'उल्था' शब्द भी चल रहा था। इस तरह परम्परागत रूप में कालक्रम के साथ छाया, टीका, भाषानुवाद, तर्जुमा तथा उल्था शब्द अपने अपने ढंग से चल रहे थे। १९वीं सदी उत्तरार्ध में हिन्दी में 'अनुवाद' शब्द भी इस अर्थ में आ

गया था। अपने लेख 'नाटक के उपक्रम में भारतेंदु हरिश्चन्द्र लिखते हैं 'मुद्राराक्षस का जब मैंने अनुवाद किया ...'(भारतेंदु नाटकावली, भाग २ पृ० ४१७)। सम्भव है यह शब्द 'भाषानुवाद' से ही संक्षिप्त होकर अनुवाद रूप में चल पड़ा हो या बंगला में आया हो। बंगला में व्यवस्थित अनुवादों की परम्परा हिंदी से प्राचीन है तथा वहाँ हिंदी की तुलना में और पहले से इसे अनुवाद कहते रहे हैं। यों मराठी, गुजराती, असमी, उड़िया, पंजाबी, तेलगू में भी इसे अनुवाद ही कहते हैं। इतने व्यापक क्षेत्र में प्रचार से एक अनुमान यह भी लगता है कि सम्भव है १७वीं १८वीं सदी तक आते आते संस्कृत में भी इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग होने लगा हो, और वहीं से इस शब्द को इस अर्थ में इन आधुनिक भाषाओं में ले लिया गया हो। यदि किसी समय संस्कृत में इस अर्थ में इसका प्रयोग न होता तो आधुनिक काल की इतनी अधिक भाषाओं—और वह भी न केवल आर्य परिवार की बल्कि द्रविड़ (*कन्नड़ और तेलगू*) में भी—प्रयोग न मिलता। इस प्रसंग में कहना न होगा कि कन्नड़ और तेलगू ने संस्कृत से बहुत कुछ लिया है। उपर्युक्त तीनों अनुमानों में अंतिम की सम्भावना मुझे सर्वाधिक लगती है।

१

प्रतीकांतर और अनुवाद

[illegible] के [illegible] विचार [illegible] विचारों [illegible] भिन्न [illegible] में अनुवाद [illegible] प्रतीकांतर का [illegible] है। [illegible] का [illegible] है कि [illegible] हैं। [illegible] है कि विचार [illegible] किए जाते हैं। [illegible] प्रतीक [illegible] है। [illegible] भी भाषा का विचारों को [illegible] के लिए [illegible] के प्रतीकों का प्रयोग होता है। [illegible] प्रतीक [illegible] है। दूसरे [illegible] एक प्रतीक (या प्रतीक गण) द्वारा व्यक्त विचार (या विचारों) को दूसरे प्रतीक (या प्रतीक गण) द्वारा व्यक्त करना 'प्रतीकांतर' है।

प्रतीकांतर [illegible] प्रकार के [illegible] हैं—

(१) [illegible]— [illegible] प्रतीकांतर का रूप है किसी भाषा में व्यक्त विचार को उसी भाषा में दूसरे [illegible] व्यक्त करना। इसमें भाषा वही रहती है [illegible] प्रतीक या प्रतीकों के स्थान पर दूसरे [illegible] प्रतीक या प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए श्रीमद् [illegible] का गद्यानुवाद है [illegible]।

(२) माध्यमांतर—एक माध्यम के प्रतीकों के स्थान पर दूसरे माध्यम के प्रतीकों का प्रयोग। उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति हाथ के संकेत से किसी को अपने पास बुला रहा है। बुलाए जाने वाले व्यक्ति ने [illegible] नहीं पर बुलाने वाले ने [illegible] कहा 'इधर आओ'। यह माध्यमांतर है संकेत के प्रतीक के स्थान पर भाषा के प्रतीकों का प्रयोग। एक कवि जो भाव एक कविता में व्यक्त कर सकता है एक चित्रकार उसी भाव को एक चित्र में व्यक्त कर सकता है तथा एक संगीतकार उसी को संगीत के द्वारा। ये भी माध्यमांतर हैं।

(३) भाषांतर—एक भाषा में व्यक्त विचार को दूसरी भाषा में व्यक्त करना भाषांतर है। इसी को अनुवाद या तरजुमा आदि भी कहते हैं।

इस प्रकार अनुवाद प्रतीकांतर का एक भेद है।

३

अनुवाद क्या है ?

एक भाषा की किसी सामग्री का दूसरी भाषा में रूपांतर ही अनुवाद है। इस तरह अनुवाद का कार्य है एक (स्रोत) भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी (लक्ष्य) भाषा में व्यक्त करना, किंतु यह 'व्यक्त करना' बहुत सरल कार्य नहीं है। होता यह है कि हर भाषा विशिष्ट परिवेश में पनपती है, अतः उसकी अपनी अनेक ध्वन्यात्मक, शाब्दिक, रूपात्मक, वाक्यात्मक, आर्थिक, मुहावरे विषयक तथा लोकोक्ति विषयक आदि—निजी विशेषताएँ होती हैं जो अनेक अन्य भाषाओं से कुछ या काफी भिन्न होती हैं और इसीलिए यह आवश्यक नहीं है कि स्रोत भाषा की किसी अभिव्यक्ति के पूर्णतः समान अभिव्यक्ति—शब्दतः और अर्थतः—लक्ष्य भाषा में हो ही। 'पूर्णतः समान अभिव्यक्ति' से आशय यह है कि स्रोत भाषा की रचना या सामग्री को सुन या पढ़कर स्रोत भाषा भाषी जो अर्थ (अभिधार्थ, लक्ष्यार्थ तथा व्यंग्यार्थ) ग्रहण करे, लक्ष्य भाषा में उसके अनुवाद को सुन या पढ़कर लक्ष्य भाषा भाषी भी ठीक वही अर्थ (अभिधार्थ, लक्ष्यार्थ तथा व्यंग्यार्थ) ग्रहण करे। ऐसा सर्वदा इसलिए नहीं हो पाता कि प्रायः स्रोत भाषा की अभिव्यक्ति से जो अर्थ व्यक्त होता है वह लक्ष्य भाषा की अभिव्यक्ति से व्यक्त होने वाले अर्थ की तुलना में या तो विस्तृत (expanded) होता है, या संकुचित (contracted) होता है या कुछ भिन्न (transfered) होता है या फिर इनमें दो या अधिक का मिश्रण। साथ ही दोनों भाषाओं की अभिव्यक्ति इकाइयों (शब्द शब्द बंध, पद पदबंध, वाक्यांश, उपवाक्य, वाक्य, मुहावरे, लोकोक्तियाँ) के प्रसंग-साहचर्य (associations) भी सर्वदा समान नहीं होते—हो भी नहीं सकते इसी कारण स्रोत भाषा में अभिव्यक्ति-पक्ष तथा अर्थ पक्ष के तालमेल को ठीक उसी रूप में लक्ष्य भाषा में भी ला पाना सर्वदा संभव नहीं होता। वास्तविकता यह है कि दोनों भाषाओं में इस प्रकार के तालमेल की समानता हमेशा होती ही नहीं फिर उसे खोज पाने का प्रश्न ही नहीं उठता। अपवादों को छोड़ दें तो प्रायः स्रोत (भाषा की) सामग्री और उसके अनुवाद स्वरूप प्राप्त लक्ष्य (भाषा में) सामग्री में दोनों अभिव्यक्ति तथा अर्थ के स्तर पर

प्राय एक या समान नहीं होती। अनुवाद में दोनों की समानता एक समझौता मात्र है। वे केवल एक दूसरे के मात्र निकट होती हैं। हाँ समानता की यह निकटता जितनी अधिक होती है अनुवाद उतना ही अच्छा और सफल होता है। उदाहरण के लिए हिंदी के तीन वाक्य लें लड़का गिरा, लड़का गिर पड़ा लड़का गिर गया। गहराई से देखें तो इन तीनों वाक्यों के अर्थ में सूक्ष्म अंतर है। मान लें अंग्रेजी में अनुवाद करना हो तो हम the boy fell या the boy fell down कहेंगे। स्पष्ट ही अंग्रेजी के वाक्य केवल पहले हिंदी वाक्य के समतुल्य कहे जा सकते हैं। अन्य हिंदी वाक्यों में पड़ना तथा 'जाना सहायक क्रियाओं से जो बात व्यक्त की जा रही है अंग्रेजी में नहीं की जा सकती क्योंकि उसमें इस प्रकार की सहायक क्रियाएँ हैं ही नहीं। ऐसी स्थिति में हिन्दी लड़का गिर पड़ा या लड़का गिर गया का the boy fell या fell down रूप में अंग्रेजी में अनुवाद अर्थ और अभिव्यक्ति की दृष्टि से केवल निकट का ही माना जाएगा। मूल और अनुवाद को पूर्णतया एक या समान नहीं माना जा सकता। इसी तरह मान लें किसी उर्दू नाटक में एक स्थान पर आता है आइए दूसरे स्थान पर आता है आ जाइए तीसरे स्थान पर आता है 'तशरीफ लाइए और चौथे स्थान पर आता है तशरीफ ले आइए। मोटे रूप से इन चारों के अर्थ में भले समानता हो किंतु गहराई से विचार करें तो इन चारों में अर्थ का सूक्ष्म अंतर है। यदि कोई व्यक्ति अंग्रेजी रूसी या इस्तोनियन भाषा में इन चारों का अनुवाद करना चाहे तो पहले का ही पूर्णत सटीक अनुवाद कर सकता है। शेष का उसे निकटतम अनुवाद या यथासंभव समान अभिव्यक्ति में अनुवाद ही करना पड़ेगा क्योंकि इन भाषाओं में ऐसी अभिव्यक्तियाँ नहीं हैं जो शब्दत तथा अर्थत उर्दू की दूसरी तीसरी तथा चौथी अभिव्यक्तियों के पूर्णत समान हों।

एक बात और। उपर्युक्त कठिनाई अनुवाद में एक और परेशानी को जन्म दे देती है। चूंकि स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा में पूर्णत समतुल्य या समान अभिव्यक्तियाँ नहीं मिलतीं अत अनुवादक कभी-कभी स्रोताभिव्यक्ति और लक्ष्याभिव्यक्ति में समानता लाने के मोह में स्रोत भाषा के ऐसे प्रयोग भी लक्ष्य भाषा में यथावत् ला देने की गलती कर बैठता है जो लक्ष्य भाषा की अपनी प्रकृति में सहज नहीं होते। ऐसे अनुवादों में लक्ष्य भाषा की अपेक्षित सहजता नष्ट हो जाती है। मान लीजिए अंग्रेजी का एक वाक्य है the man who fell from the tree died in the hospital बहुत से हिंदी अनुवादक हिंदी में इसे वह आदमी जो पेड़ से गिरा था अस्पताल में मर गया रूप में

रख देंगे। किंतु हिंदी भाषा की प्रकृति से परिचित व्यक्ति इस वाक्य को देखते ही समझ जाएगे कि यह अंग्रेजी की छाया है क्योंकि हिंदी का अपना प्रयोग है 'जो आदमी पेड से गिरा था अस्पताल में मर गया।' पहले हिंदी वाक्य में 'वह' the का शब्दानुवाद मात्र है। यों भारतीय भाषाएँ अंग्रेजी से इतनी अधिक प्रभावित हो चुकी हैं कि ऐसे बहुत से प्रयोग अब अपने सहज प्रयोग लगने लगे हैं। इसी प्रकार हिंदी 'इस विषय में आपका दृष्टिकोण गलत है' का संस्कृत मे अनुवाद करते समय यदि कोई दृष्टिकोण' शब्द का प्रयोग करे तो गलत होगा क्योंकि संस्कृत में 'दृष्टिकोण' शब्द का प्रयोग नही होता, इस अर्थ मे वहाँ दृष्टि शब्द आता है अस्मिन् विषये भवदीया दृष्टि अशुद्धा। यहाँ कहने का आशय यह है अनुवादक को अनुवाद करते समय इस बात में बहुत सतर्क रहना चाहिए कि लक्ष्य भाषा में अनुवाद उसकी सहज प्रकृति के सर्वथा अनुरूप हो स्रोत भाषा की किसी भी रूप में छाया न हो।

उपर्युक्त बातों के प्रकाश मे अनुवाद को निम्नांकित रूप मे परिभाषित किया जा सकता है कि—

एक भाषा मे व्यक्त विचारों को, यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा मे व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।

इस परिभाषा में तीन बातें ध्यान देने की हैं —

(क) अनुवाद का मूल उद्देश्य है स्रोत भाषा की रचना के भाव या विचार लक्ष्य भाषा में यथासंभव अपने मूल रूप मे लाना।

(ख) अनुवाद के लिए स्रोत भाषा में भावों या विचारों को व्यक्त करने के लिए जिस अभिव्यक्ति का प्रयोग है उसके यथासंभव समान या 'अधिक से अधिक समान' अभिव्यक्ति की खोज लक्ष्य भाषा मे होनी चाहिए।

(ग) लक्ष्य भाषा मे, स्रोत भाषा के यथासंभव समान जिस अभिव्यक्ति की खोज हो वह लक्ष्य भाषा में सहज हो अर्थात् उसके सहज प्रवाह या प्रयोग के अनुकूल हो स्रोत भाषा की छाया से युक्त न हो। यह ठीक ही कहा गया है कि अनुवाद एक कस्टमहाउस है जिससे होकर स्रोत भाषा के प्रयोग का विदेशी माल लक्ष्य भाषा में अन्य स्रोतों की तुलना में अधिक आ जाता है यदि अनुवादक अपेक्षित सतर्कता न बरते।[1]

---

१ Translation is a customhouse through which passes, if the custom officers are not alert, more smuggled goods of foreign idioms than through any other linguistic frontier

अनुवाद को तरह तरह से परिभाषित करने का प्रयास किया गया है। तीन प्रसिद्ध परिभाषाएं हैं —

(1) Translating conists in producing in the receptor language the closest natural equivalent to the message of the source language, first in meaning and secondly in style —Nida

(2) The replacement of textual material in one lanuage by equivalent textual material in another language —Catford

(3) Translation is the transference of the the content of a text from one language into another bearing in mind that we cannot always dissociate the content from the form —Foresten

ऊपर इन पंक्तियों के लेखक ने भी एक परिभाषा दी है। किंतु अनुवाद की वास्तविक प्रक्रिया की दृष्टि से विस्तृत रूप में उसकी परिभाषा कुछ इस प्रकार दी जा सकती है —

भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद है इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन, अर्थात् एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम (कथनतः और कथ्यतः) समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग। इस प्रकार अनुवाद निकटतम समतुल्य और सहज प्रतिप्रतीकन' या यथासाध्य समानक प्रतिप्रतीकन प्रक्रिया है। अर्थात् प्रतिप्रतीकन यथासाध्य ऐसा होना चाहिए कि स्रोत भाषा के कथ्य में लक्ष्य भाषा में आने पर न तो विस्तार हो न संकोच या अन्य किसी प्रकार का परिवर्तन। साथ ही स्रोत भाषा में कथ्य और अभिव्यक्ति का जैसा सामंजस्य हो लक्ष्य भाषा में अनूदित होने पर भी यथासाध्य दोनों का सामंजस्य वैसा ही हो। संभवतः मूल सामग्री पढ़ या सुन कर स्रोत भाषा भाषी जो अर्थ ग्रहण करता हो अनूदित सामग्री पढ़ या सुन कर लक्ष्य भाषा भाषी भी ठीक वही ग्रहण करे।

संक्षेप में—

अनुवाद कथनतः और कथ्यतः निकटतम सहज प्रतिप्रतीकन प्रक्रिया है।

४

अनुवाद क्या है ? शिल्प, कला, विज्ञान

कुछ लोग अनुवाद को केवल शिल्प मानते हैं तो कुछ लोग केवल कला। अनुवाद को विज्ञान प्राय लोग बिल्कुल नही मानते। मेरे विचार म अनुवाद शिल्प भी है, कला भी है और विज्ञान भी है। दूसरे शब्दो मे अशत वह शिल्प है, अशत कला तथा अशत विज्ञान।

विज्ञान किसी भी विषय का व्यवस्थित तथा विशिष्ट ज्ञान होता है। इसी अर्थ म राजनीतिविज्ञान, मानवविज्ञान, भाषाविज्ञान जसे विषयो को विज्ञान माना जाता है। रूस में इतिहासवेत्ता को भी 'साइंटिस्ट' (वज्ञानिक) कहते हैं। वस्तुत किसी भी विषय स सबद्ध बातो के जितने अश का व्यवस्थित वज्ञानिक विवेचन किया जा सकता है उतने अश का वह अध्ययन विज्ञान की सीमा में आता है। उसम विकल्प की गुजाइश प्राय नही होती या प्राय कम ही होती है। जसा कि हम आग देखेंगे अनुवाद प्रायोगिक भाषाविज्ञान (applied linguistics) के अतगत आता है तथा वास्तविक अनुवाद करने के पूव की चिंतन प्रक्रिया तुलनात्मक या व्यतिरेकी भाषाविज्ञान पर ही पूणत आधत है। तुलना आधार पर ही स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की ध्वनि, शब्द, रूप वाक्य, अथ सबधी समानताएँ असमानताए ज्ञात करते हैं और फिर असमानताओ की समस्या सुलझाने के लिए कुछ अपवादो को छोडकर प्राय निश्चित नियमो का अनुसरण करते हैं। इस तरह वास्तविक अनुवाद करने की पूव पीठिका जो अनुवादक के मस्तिष्क मे चिंतन क रूप म होती है पूणत वज्ञानिक और व्यवस्थित प्रक्रिया है। यदि एसा न होता तो मशीनी अनुवाद सभव ही नही होता। दोनो भाषाओ के वज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर निश्चित किए गए वज्ञानिक नियम ही उस सभव बनात हैं। अनुवाद की पष्ठभूमि मे स्थित यह सारा अध्ययन विश्लेषण विज्ञान के ही अतगत आता है। अनुवाद के इस विज्ञानपक्ष से सुपरिचित अनुवादक उस अनुवादक की तुलना म जो इससे परिचित नही है कही अच्छा अनुवाद कर सकता है। यो एक बार फिर इस बात पर बल द देने की आवश्यकता है कि अनुवाद का यह विज्ञान पक्ष वास्तविक अनुवाद क्रिया की पष्ठभूमि म होता है, अनुवाद करने म नही।

कला तथा शिल्प मे अतर तो है किंतु वास्तविकता यह है कि शायद ही

ऐसी कोई कला हो, जिसमें शिल्प की बिल्कुल अपेक्षा न हो और शायद ही ऐसा कोई शिल्प हो जिसमें कला पूर्णत: अनपेक्षित हो। कला एक प्रकार की सर्जना (creation) है। व्यक्ति में यह प्राय: सहज रूप में होती है। केवल अभ्यास या शिक्षण से कोई कलाकार नहीं बन सकता जब तक उसमें सहज प्रतिभा न हो। काव्य, मूर्ति, चित्र आदि इसी लिए कला हैं। इसके विपरीत जिन्हें प्राय: उपयोगी कला (जैसे फर्नीचर बनाना, बर्तन बनाना, गहना बनाना, जिल्द बनाना, मशीनें बनाना आदि) कहा गया है शिल्प हैं। इन्हें अभ्यास और शिक्षण के द्वारा अर्जित किया जा सकता है। प्राय: लुहार का बेटा लुहार, सुनार का सुनार, जूता बनाने वाले का जूते बनाने वाला, बढ़ई का बढ़ई हो जाता है क्योंकि वातावरण तथा अभ्यास आदि से वह सीख जाता है किन्तु कवि का बेटा कवि हो या चित्रकार का चित्रकार हो यह कम ही देखा जाता है, क्योंकि ये चीजें केवल वातावरण या अभ्यास से नहीं आतीं। इनमें सहज प्रतिभा भी अपेक्षित होती है। कला और शिल्प का सबसे बड़ा अन्तर यह है कि कला में व्यक्ति आत्माभिव्यक्ति करता है, उसका व्यक्तित्व उसमें आ जाता है जबकि शिल्प में वह न तो आत्माभिव्यक्ति करता है और न तो कुछ अपवादों को छोड़कर (और वे अपवाद शिल्प न होकर कला होते हैं) उसका व्यक्तित्व ही उसमें आता है।

जहाँ तक अनुवाद की बात है अनुवादक उस प्रकार आत्माभिव्यक्ति नहीं करता जो कवि, मूर्तिकार आदि कलाकार अपनी कृति में करता है। इस प्रकार अनुवाद उस रूप में तो कला निश्चित ही नहीं है जिस रूप में काव्य, चित्र, मूर्ति आदि हैं, किंतु अनुवादक का व्यक्तित्व अनुवाद में अवश्य ही थोड़ा प्रभावी होता है। इसीलिए एक ही मूल सामग्री के दो व्यक्तियों द्वारा किए गए अनुवाद प्राय: भिन्न होते हैं। इस तरह अनुवादक भी एक सीमा तक सर्जक है और काव्य आदि यदि सर्जना (creation) हैं तो अनुवाद पुन:सर्जना (re-creation) है। केवल प्रक्रिया का अंतर है। मूल कलाकार अपने भावों को अपनी कला में उतारता है, जबकि अनुवादक किसी और मूल के आधार पर सृजन करता है। मूल को हृदयंगम करके वह अपने अनुसार लक्ष्य भाषा में ढालता है। इस कलात्मकता के कारण ही हर व्यक्ति केवल योग्यता और अभ्यास से अच्छा अनुवादक नहीं बन सकता। अन्य अनेक गुणों की भाँति ही यह अनुवाद कला भी कुछ ही अनुवादकों में होती है और एक सीमा तक सहजात होती है।

किंतु यदि बहुत अच्छे अनुवादकों की बात छोड़ दें तो काफी अनुवादक

ऐसे ही होत हैं जो अनुवाद कर तो लेते हैं किंतु उनके अनुवादन की उपलब्धि शिल्प से आगे नहीं बढ पाती। योग्यता, अभ्यास तथा वातावरण आदि से व्यक्ति इस प्रकार का अनुवादक बन सकता है। इसके लिए किसी सहज प्रतिभा की कोई खास आवश्यकता नहीं। किंतु इस श्रेणी के अनुवादक ठीक वैसे ही करते है जैसे अन्य शिल्पो के शिल्पी करत हैं। वे पुन सृजना नहीं कर पाते।

यह तो सकेत किया जा चुका है कि हर कला के लिए प्राय कुछ शिल्प की तथा हर शिल्प के लिए कुछ कला की अपेक्षा होती है। यही बात अनुवाद म भी है। अपवादों की वात छोड दें तो हर अनुवाद म एक सीमा तक शिल्प तथा कला दोनों की अपेक्षा होनी है और हर कलाकार अनुवादक, शिल्पी भी होता है और हर शिल्पी अनुवादक, एक सीमा तक कलाकार भी होता है। किसी भी अनुवाद को देखकर इसका अनुमान लगाया जा सकता है कि उसमें कला का अपेक्षित अश है या केवल एक शिल्पी की ही कृति है। यों इसका सबध विषय से भी होता है। यदि मूल सामग्री केवल सूचनाओं या तथ्यो से युक्त है या विधान आदि की है जिसम सूचना की प्रधानता है और अभिव्यक्ति का कोई खास महत्त्व नहीं है तो उसके अनुवाद के साथ शिल्पी न्याय कर लेगा किंतु मान लीजिए कविता का अनुवाद करना है जिसम भाव हैं तथा जिसका बहुत कुछ सौदर्य उसकी अभिव्यक्ति पर आश्रित है तो उसके लिए अनुवाद-कला अनिवार्यत आवश्यक होगी, केवल अनुवाद शिल्प स अनुवाद मे अपेक्षित बात नहीं आ सकती।

इस प्रकार अनुवाद विज्ञान भी है, शिल्प भी है और कला भी है।

५

अनुवादक

अच्छे अनुवादक के लिए तीन बातें आवश्यक हैं।

पहली बात तो है स्रोत भाषा का ज्ञान। स्रोत भाषा का ज्ञान भी कई प्रकार का हो सकता है। मान लें किसी अंग्रेज़ी पुस्तक का अनुवाद करना है। यदि वह पुस्तक साहित्यिक नहीं है तो अंग्रेज़ी भाषा के सामान्य ज्ञान से काम चल सकता है, किंतु मान लीजिए वह कोई कविता पुस्तक है या ऐसा उपन्यास है जिसमें आंचलिकता की पुट है तो फिर भाषा ज्ञान का अच्छा-खासा होना आवश्यक है। वस्तुतः इसका कोई खास पैमाना नहीं है कि अनुवादक को स्रोत भाषा का ज्ञान हो। उस मूल सामग्री के स्तर का वैसा ज्ञान होना चाहिए जैसा कि उसे पढ़कर अच्छी तरह समझने या रसास्वादन करनेवाले मूल भाषा भाषी को होता है। ज्ञान उस स्तर से जितना ही कम होगा, उतनी ही त्रुटि होने की संभावना अनुवाद में बढ़ जाएगी।

अनुवादक की दूसरी आवश्यकता है लक्ष्य भाषा का विषय के अनुरूप समुचित ज्ञान। अर्थात् उतना ही ज्ञान जितना लक्ष्य भाषा भाषी को उस विषय में ठीक अभिव्यक्ति के लिए अपेक्षित है। यह ज्ञान भी जितना कम होगा अनुवाद के उतने ही त्रुटिपूर्ण होने की संभावना बढ़ जाएगी।

अनुवादक की तीसरी आवश्यकता है विषय का ज्ञान। विषय के ठीक ज्ञान के बिना प्रायः देखा गया है कि अनुवादक अर्थ का अनर्थ कर बैठता है। विषय के ज्ञान के संदर्भ में भी उपर्युक्त बातें दुहराई जा सकती हैं। अर्थात् यह ज्ञान कम-से-कम उस स्तर का तो होना ही चाहिए जिस स्तर की अनूद्य सामग्री हो।

यह स्थिति तो आदर्श है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि अनुवादक इन तीनों में किसी एक या कभी-कभी दो से पूरी तरह परिचित नहीं होता। वैसी स्थिति में किसी ऐसे एक व्यक्ति या दो व्यक्तियों से सहायता ली जा सकती है जो उससे या उनसे भली भाँति परिचित हों। यहीं मूल सामग्री को समझने या अनुवाद को विषय की दृष्टि से भली भाँति देखने या अनुवाद की अभिव्यक्ति को वेटिंग करने की आवश्यकता होती है। मुख्यतः ऐसा तो प्रायः होता है कि लक्ष्य भाषा का ठीक जानकार विषय से परिचित नहीं होता, और दूसरी तरफ विषय के ठीक जानकार की लक्ष्य भाषा में अपेक्षित गति नहीं होती। ऐसी स्थिति में वेटर (पुनरीक्षक) की अपेक्षा होती है। अनुवादक की अपनी क्षमता तथा अनुवाद्य कृति की गहनता और स्तर को देखते हुए अनुवाद को भाषाविद्, विषयवेत्ता, अथवा दोनों के पास पुनरीक्षण के लिए भेजा जा सकता है।

६

अनुवाद के प्रकार

अनुवाद के कई भेद या प्रकार हो सकते हैं। इन भेदों या प्रकारों के मुख्य आधार चार हैं (क) गद्यत्व पद्यत्व, (ख) साहित्यिक विधा (ग) विषय, (घ) अनुवाद की प्रकृति। इनमें प्रथम तीन अपेक्षाकृत बाह्याधार हैं तथा अंतिम आंतरिक और इसीलिए यही अधिक सार्थक है। इन आधारों पर मुख्य भेद नीचे दिए जा रहे हैं —

(क) अनुवाद के गद्य पद्य होने के आधार पर—

(१) गद्यानुवाद—जैसा कि नाम से स्पष्ट है यह अनुवाद गद्य में होता है। प्राय मूल गद्य का ही गद्य में अनुवाद किया जाता है किंतु यह कोई आवश्यक नहीं है। मूल पद्य का भी गद्य में अनुवाद किया जा सकता है और ऐसे अनुवाद किए भी गए हैं।

(२) पद्यानुवाद—यह अनुवाद पद्य में होता है। प्राय मूल पद्य का ही पद्य में अनुवाद किया जाता है किंतु मूल गद्य का भी पद्य में अनुवाद हो सकता है, और ऐसे अनेक अनुवाद विभिन्न भाषाओं में हुए हैं। इसे छंदानुवाद या छंदबद्ध अनुवाद भी कहते हैं।

(३) मुक्तछंदानुवाद—यह अनुवाद मुक्त छंद में होता है। इसमें जो छंद होता है वह तुक मात्रा आदि उन बंधनों से मुक्त होता है जो पद्यानुवाद के लिए आवश्यक हैं। शेक्सपीयर के कई हिंदी अनुवाद इसके उदाहरण हैं। सामान्यत मूल सामग्री मुक्त छंद में होने पर ही मुक्तछंदानुवाद किया जाता है किंतु मूल गद्य या पद्य के भी ऐसे अनुवाद हो सकते हैं और होते हैं।

(ख) साहित्यिक विधा के आधार पर—

इस आधार पर ऐसे तो कई भेद हो सकते हैं किंतु मुख्य भेद निम्नांकित हैं—

(१) काव्यानुवाद—किसी काव्य रचना का अनुवाद। यह अनुवाद गद्य पद्य, या मुक्तछंद किसी में भी हो सकता है। यों प्राय काव्य का अनुवाद पद्य, या मुक्तछंद में ही किया जाता है। यह प्रश्न विवाद का रहा अनुवाद हो भी सकता है या नहीं। स्पष्ट ही,

अवश्य हो सकते हैं। हाँ यह अवश्य है कि शैली और अर्थ दोनों ही दृष्टियों से मूल का अनुगामी सफल अनुवाद करना बहुत कठिन है। कभी कभी तो यह इतना कठिन होता है कि असंभव की सीमा छू लेता है। आगे अलग से काव्यानुवाद पर विस्तार से विचार किया जा रहा है।

(२) नाटकानुवाद—किसी नाटक का नाटक रूप में अनुवाद। यो अन्य साहित्यिक विधाओं के भी नाटक रूप में अनुवाद (रूपान्तरण) हो सकते हैं और इसके ठीक उल्टे नाटक के भी काव्य या कहानी रूप में अनुवाद (रूपान्तरण) होते हैं। नाटक का नाटक रूप में अनुवाद काफी कठिन होता है क्योंकि उसे पठनीय होने के साथ साथ ऐसा होना चाहिए कि रंगमंच पर खेला भी जा सके। इसीलिए रंगमंच की सारी आवश्यकताओं तथा विशेषताओं का जानकार ही सफल नाटकानुवाद कर सकता है।

(३) कथानुवाद—कथा साहित्य (उपन्यास तथा कहानी) का कथा साहित्य (उपन्यास तथा कहानी) में अनुवाद। इस श्रेणी का अनुवाद काव्यानुवाद तथा नाटकानुवाद की तुलना में सरल होता है।

इस आधार पर रेखाचित्रानुवाद निबंधानुवाद संस्मरणानुवाद आदि अन्य भी कई भेद विभेद हो सकते हैं।

(ग) विषय के आधार पर—

विषय के आधार पर अनुवाद के अनेक भेद किए जा सकते हैं। जैसे सरकारी रिकार्डों का अनुवाद गजटियरों का अनुवाद पत्रकारिता से संबद्ध अनुवाद विधि साहित्य का अनुवाद वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद गणित साहित्य का अनुवाद ऐतिहासिक साहित्य (अभिलेखादि) का अनुवाद धार्मिक साहित्य (बाइबिल आदि) का अनुवाद तथा ललित साहित्य का अनुवाद आदि।

(घ) अनुवाद की प्रकृति के आधार पर—

अनुवाद की प्रकृति के आधार पर भी अनुवाद के कई भेद किए जा सकते हैं। मूलतः इस प्रकार के दो भेद होते हैं—

(१) मूलनिष्ठ अनुवाद—ऐसा अनुवाद जो यथासाध्य मूल का अनुगमन करे। मूल के अनुगमन में अनुवादक का ध्यान विचार (कथ्य) तथा अभिव्यक्ति (कथन पद्धति) दोनों ही पर रहता है। वह अपने अनुवाद को यथासंभव दोनों ही दृष्टियों से मूल के निकट रखना चाहता है।

(२) मूलमुक्त अनुवाद—जैसा कि नाम से स्पष्ट है, अनुवाद के इस प्रकार में अनुवादक को काफी छूट रहती है, किंतु यह छूट प्राय: अभिव्यक्ति या कथन शैली की तरफ से ही विशेष होती है। कथ्य या विचार की तरफ से नहीं। कथ्य या विचार की दृष्टि से तो अनुवाद प्राय मूलबद्ध या मूल निष्ठ ही होता है, क्योंकि वह यदि ऐसा न हो तो उसे अनुवाद कहा ही नहीं जा सकता। हाँ सक्षेप की दृष्टि से उसमे कुछ बातें छोड दी जा सकती है। जहाँ तक अभिव्यक्ति या कथन शैली का प्रश्न है मूल मुक्त अनुवादक लक्ष्यभाषा की सुविधानुसार अनुवाद के उद्देश्यानुसार तथा अनुवाद पढ़ने या सुननेवालो की योग्यतानुसार परिवर्तन परिवर्धन कर सकता है। इसके अतिरिक्त सामग्री को अधिक बोधगम्य बनाने के लिए उदाहरणो उपमानो आदि का देशीकरण भी किया जा सकता है। मूलमुक्त अनुवाद को मूलाधारित या मूलाश्रित अनुवाद कहना शायद अधिक अच्छा होगा।

सामान्यत जो अनुवाद किए जाते हैं, उनमें प्राय उपयुक्त दो म से ही किसी एक का या मिश्रित रूप से सुविधानुसार दोनो का प्रयोग किया जाता है।

अनुवाद की प्रकृति के आधार पर अनुवाद के कुछ अन्य प्रकारो का भी उल्लेख किया जाता है जो तत्वत मूलनिष्ठ और मूलमुक्त से भिन्न नहीं हैं, बल्कि अनेक बातो म एक दूसरे पर ओवरलैप करते हैं। ये अन्य प्रकार अधोलिखित हैं—

(१) शब्दानुवाद—यह नाम 'शब्द+अनुवाद' से बना है। मोट रूप म इस प्रकार के अनुवाद मे मूल के हर शब्द पर अनुवादक का ध्यान जाता है। शब्दानुवाद का प्रयोग एक से अधिक प्रकार के अनुवादो के लिए होता रहा है। इसीलिए इसके कई उपभेद किए जा सकत हैं। अग्रेजी म लिटरल ट्रास लेशन बबल ट्रासलेशन वर्ड फार-वर्ड ट्रासलेशन आदि इसी को कहते हैं। शब्दानुवाद के मुख्य उपभेद तीन हो सकते है

(अ) जिसम मूल सामग्री की हर शब्दाभिव्यक्ति का प्राय उसी क्रम म अनुवाद किया जाय। जैसे I am going home का 'मैं हूँ जा रहा घर'। बाइबिल की पुरानी पोथी के कई यूनानी अनुवाद लगभग इसी प्रकार के किए गए थे। अनुवाद का यह निकृष्टतम रूप है। कभी कभी ऐसा शब्दानुवाद पूर्णत अबोधगम्य हो जाता है क्योंकि हर भाषा म शब्द क्रम एक जैसा नहीं होता। जैसे Will he go का 'गा वह जाना'। वस्तुत इस प्रकार का मक्षिका स्थाने मक्षिका अनुवाद अनुवाद कहलाने का अधिकारी नहीं है। इस प्रकार



कुछ और उदाहरण हो सकते हैं मेरा सर चक्कर खा रहा है—My head is eating circles, वह पानी पानी हो गया—He became water and water भिन्न होने हुए भी, ये प्राय उसी श्रेणी में हैं।

(ख) ऐसा अनुवाद जिसमें क्रम भ्रान्ति तो मूल का नहीं रखते किन्तु मूल के हर शब्द का अनुवाद में पूरा ध्यान रखते हैं और इसीलिए मूल की गन्ध अनुवाद में स्पष्ट झलकती है। हिन्दी अखबारों में अंग्रेजी से किए गए अनुवादों में ऐसे उदाहरण प्राय मिलते हैं। कुछ उदाहरण हैं

It is an interesting point

यह एक रोचक बिन्दु है।

It sounds paradoxical

यह विरोधाभास-सा सुनाई पड़ता है।

It was hopelessly obscure

यह निराशाजनक ढंग से अस्पष्ट था।

The insects called silver fish

कीड़े जो रजत मछली कहलाते हैं—

silver fish वस्तुत कोई मछली नहीं होती। यह एक चमकीले कीड़े का नाम है।

There is very small distance between these two cities

इन दो नगरों के बीच बहुत छोटी दूरी (बहुत कम फासला) है।

There is a custom among st the red Indians

लाल भारतीयों में एक रिवाज है—।

इसके उलटे हिंदी अंग्रेजी के उदाहरण भी लिए जा सकते हैं

बत्ती जलाओ।

Burn the lamp

उसने मैच में दो गोल लिए।

He made two goals in the match

वैद्य ने उसकी नब्ज देखी।

The Vaidya saw her pulse

फूल मत तोड़ो।

Dont break flowers आदि।

इस प्रकार के शब्दानुवाद, पहले प्रकार के शब्दानुवाद जितने घटिया न होने पर भी घटिया ही कहे जाएंगे। इनका अर्थ पहले की तरह अस्पष्ट तो

नहीं रहता, किंतु लक्ष्य भाषा की सहज प्रकृति इसमें नहीं आ पाती बल्कि स्रोत भाषा की शलीय छाया लक्ष्य भाषा पर बुरी तरह छाई रहती है, अतः सहज प्रयोग की दृष्टि से ऐसे अनुवाद गलत तथा हास्यास्पद होते हैं।

(इ) शब्दानुवाद का तीसरा रूप वह है जिसे उत्तम कोटि का या आदर्श शब्दानुवाद कहा जा सकता है। इसमें मूल के प्रत्येक शब्द बल्कि प्रत्येक अभिव्यक्ति-इकाई (जैसे शब्द पदबंध मुहावरा लोकोक्ति उपवाक्य, वाक्य) के लक्ष्य भाषा में प्राप्त पर्याय के आधार पर अनुवाद करते हुए मूल के भाव को लक्ष्य भाषा में संप्रेषित किया जाता है। इसमें किसी भी शब्द या अभिव्यक्ति इकाई की उपेक्षा नहीं की जाती। दूसरे शब्दों में अनुवादक न तो मूल की कोई अभिव्यक्ति इकाई को छोड़ सकता है न अपनी ओर से कोई अभिव्यक्ति इकाई को जोड़ सकता है। संक्षेप में शब्दानुवादक के लिए मैं एक आदर्श सूत्र देना चाहूँगा मत छोड़ो मत जोड़ो। उदाहरणार्थ The boy who fell from the tree died in the hospital का शब्दानुवाद होगा 'वह लड़का जो पेड़ से गिरा था अस्पताल में मर गया। हिंदी की प्रकृति के अनुकूल और अच्छा शब्दानुवाद होगा—लड़का जो पेड़ से गिरा था अस्पताल में मर गया। इसके विपरीत इसका भावानुवाद होगा—पेड़ से गिरने वाला लड़का, अस्पताल में मर गया।

शब्दानुवाद ऐसी सामग्री के अनुवाद में बहुत सफल नहीं हो सकता जिसमें सूक्ष्म भावों का शलीप्रधान चित्रण हो किंतु तथ्यात्मक वाङ्मय—जैसे गणित ज्योतिष, संगीत विज्ञान विधि आदि—के लिए तो शब्दानुवाद ही अपेक्षित है। मुख्यतः विधि साहित्य का प्रामाणिक अनुवाद तो शब्दानुवाद ही माना जाएगा भावानुवाद नहीं, क्योंकि उसमें हर शब्द का अपना महत्व होता है और कानूनी गहराई में जाने पर उसकी अपनी सार्थकता होती है।

शब्दानुवाद की मुख्य कमियाँ ये हैं

(i) स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा यदि शब्दार्थ विशिष्ट प्रयोग मुहावरे तथा वाक्यरचना आदि की दृष्टि से बहुत समान हों, तब तो शब्दानुवाद बहुत घटिया नहीं होता किंतु दोनों में यदि इन दृष्टियों से असमानता हो तो असमानता जितनी ही अधिक होगी, शब्दानुवाद उतना ही घटिया होगा।

(ii) शब्दानुवाद में अनुवादक के बहुत सतर्क रहने पर भी प्रायः स्रोत भाषा का प्रभाव स्पष्ट रहता है। मूल की उस गंध के कारण अनुवाद की भाषा प्रायः कृत्रिम तथा निष्प्राण हो जाती है तथा उसमें मूल प्रवाह नहीं रह जाता जो बढ़िया अनुवाद के लिए अनिवार्यतः

(iii) यन्त्रवत शब्दानुवाद कभी कभी पूर्णत: बोधगम्य तथा हास्यास्पद भी हो जाता है।

किंतु यदि अनुवादक अत्यन्त सतर्कता बरत कर उपर्युक्त त्रुटियों से बच सके तो बढ़िया शब्दानुवाद—यदि वह मूल के भाव को सफलतापूर्वक व्यक्त करने में समर्थ है—ही वास्तविक अनुवाद है।

पंक्ति प्रति-पंक्ति (Interliner translation) नाम का प्रयोग भी शब्दानुवाद के लिए कभी कभी किया जाता है।

स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में सहज रूप में वाक्य के लिए शब्द अनुवाद नहीं किये जा सकते, किंतु कोई अनुवादक यदि वाक्य के लिए वाक्य अनुवाद करे, तो उस शब्दानुवाद को वाक्य प्रति वाक्य अनुवाद भी कहा जा सकता है।

(२) भावानुवाद—जैसा कि नाम से स्पष्ट है इस प्रकार के अनुवाद में मूल के शब्द वाक्यांश वाक्य आदि पर ध्यान न देकर भाव अर्थ या विचार पर ध्यान दिया जाता है और उसी को लक्ष्य भाषा में सम्प्रेषित करते हैं। शब्दानुवाद में अनुवादक का ध्यान मूल सामग्री के शरीर पर विशेष होता है तो इसमें उसकी आत्मा पर। अंग्रेजी में सेंस फॉर सेंस (sense for sense) ऐसे ही अनुवाद के लिए कहा जाता है। भावानुवाद एकाधिक प्रकार का हो सकता है। कभी तो मूल के वाक्यों के हर पद या शब्द पर ध्यान न देकर पदबंध का भावानुवाद (जैसे भारत में पैदा होने वाला गेहूँ के लिए Indian wheat), कभी उपवाक्य का भावानुवाद (जैसे गेहूँ जो भारत में पैदा होता है' का Indian wheat) वाक्य का भावानुवाद कभी एकाधिक वाक्यों को एक में मिलाकर उनका भावानुवाद कभी पूरे पराग्राफ का भावानुवाद और कभी एकाधिक पराग्राफों को मिलाकर उनका भावानुवाद करते हैं। सामान्यत: मूल सामग्री यदि सूक्ष्म भावों वाली है तो उसका भावानुवाद करते हैं, और यदि वह तथ्यात्मक वैज्ञानिक या विचारप्रधान है तो उसका शब्दानुवाद करते हैं। किंतु ऐसी भी स्थितियाँ कभी-कभी आती हैं कि अनुवादक जब किसी अंश का बढ़िया शब्दानुवाद नहीं कर पाता तो उसे भावानुवाद ही करना पड़ता है। इस प्रकार अनुवाद की व्यावहारिक कठिनाई दूर करने का भावानुवाद एक अच्छा रास्ता है। भावानुवाद का सबसे बड़ा लाभ यह है कि लक्ष्य भाषा में स्रोत भाषा की अभिव्यक्तियों की गंध नहीं आ पाती। अनुवाद मूल का यन्त्रवत अनुसरण नहीं रह जाता और उसमें मौलिक रचना जैसा सहज प्रवाह आ जाता है। शब्दानुवादक प्राय: शुद्ध भाषांतरकार के रूप में ही हमारे सामने आता है, किंतु भावानुवादक कारयित्री प्रतिभा

वाले लेखक (creative writer) के रूप में हमारे सामने आता है। किंतु साथ ही भावानुवाद की यह भी सीमा है कि उसमें मूल की शैली आदि न आने से वह प्रायः अनुवाद न रहकर मूल पर आधारित मौलिक रचना-सा हो जाता है, अतः पाठक उसे मौलिक रचना का सा आनन्द लेते हुए पढ़ तो सकता है, किंतु उसे पढ़कर मूल रचना की शैली या उसके अभिव्यक्ति सौंदर्य या अभिव्यक्ति पक्ष का उसे पूरी तरह पता नहीं चल पाता। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि पाठक किसी रचना को भाव या विचार से अधिक मूल लेखक की अभिव्यक्ति पक्ष को जानने के लिए ही पढ़ना चाहता है। भावानुवाद ऐसे पाठकों के लिए भ्रामक होता है, क्योंकि भावानुवाद में प्रायः अनुवादक की अपनी शैली आ जाती है उसका अपना व्यक्तित्व मूल लेखक के व्यक्तित्व पर एक सीमा तक छा जाता है।

इसीलिए आदर्श अनुवाद वह है जो शब्दानुवाद तथा भावानुवाद दोनों पद्धतियों को यथावसर अपनाते हुए मूल भाव के साथ साथ यथाशक्ति मूल शैली को भी अपने में उतार लेता है और साथ ही लक्ष्य भाषा की सहज प्रकृति को भी अक्षुण्ण बनाए रखता है।

(३) छायानुवाद—हिंदी में छाया तथा छायानुवाद दो शब्दों का प्रयोग काफी मिलते जुलते अर्थों में होता है। 'छाया' शब्द का एक प्रकार का पुराना प्रयोग संस्कृत नाटकों में मिलता है। उनमें स्त्री पात्र तथा सेवक आदि प्राकृत भाषा का प्रयोग करते हैं किंतु पुस्तकों में प्राकृत कथन या छंद के साथ उसकी संस्कृत छाया भी रहती है। उदाहरण के लिए कालिदास के प्रसिद्ध नाटक अभिज्ञान शाकुंतलम् में पहले अंक में नटी कहती है—

ईसीसिचुम्बिआइ भमरेहिं उह सुउमारकेसरसिहाइं।
ओदंसअंति दअमाणा पमदाओ सिरीसकुसुमाइं।

इसकी संस्कृत छाया है—

ईषदीषच्चुम्बितानि भ्रमरैः पश्य सुकुमारकेसरशिखानि।
अवतंसयन्ति दयमाना प्रमदाः शिरीषकुसुमानि।

हिंदी अनुवाद होगा—

यह देखो, भ्रमर-समूह ने धीरे धीरे चुंबन करते हुए जिनके रसों को चूस लिया है, ऐसे कोमल केसरयुक्त गुच्छों वाले शिरीष के फूलों को मदमाती युवतियाँ सदय भाव से अपने अपने कर्णफूल बना रही हैं।

स्पष्ट ही इस अर्थ में छायानुवाद शब्द का भी प्रयोग हो सकता है।

'छाया' शब्द का एक दूसरा प्रयोग तब होता है जब किसी पुस्तक को

कुछ छाया या उसका छायावत् धुंधला प्रभाव मात्र हुए स्वतन्त्र रूप से कोई रचना की जाय। इसमें प्राय नाम, स्थान वातावरण आदि का देशीकरण कर लिया जाता है। भगवती चरण वर्मा के उपन्यास चित्रलेखा के अनातोले फ्रांस के उपन्यास थाया की छाया है। इस अर्थ में छायानुवाद का प्रयोग मेरे विचार में नहीं किया जाना चाहिए। चित्रलेखा पर थाया की छाया ही है वह छायानुवाद नहीं है। छायानुवाद उस अनुवाद को कहा जाना चाहिए जो शब्दानुवाद की तरह मूल के शब्दों का अनुसरण न कर न भावानुवाद की तरह मूल के भावों का अनुसरण करे अपितु शब्दों ही दृष्टियों से मूल से (शब्द भावत) मुक्त होकर अर्थात् बिना मूल से बिल्कुल बधे उसकी छाया लेकर चले।

(४) सारानुवाद—इसमें मूल की मुख्य बातों का मूलमुक्त अनुवाद होता है। यह संक्षिप्त अति संक्षिप्त अत्यन्त संक्षिप्त आदि कई प्रकार का हो सकता है। भारतीय लोकसभा के वाद विवाद का जो अनुवाद किया जाता है वह प्राय ऐसा ही होता है। अपनी संक्षिप्तता सरलता स्पष्टता तथा लक्ष्यभाषा के स्वाभाविक सहज प्रवाह के कारण व्यावहारिक कार्यों में सामान्य अनुवाद की तुलना में सारानुवाद ही अधिक उपयोगी पाया गया है। सब भाषणों का सद्य अनुवाद करने वाले दुभाषिये भी प्राय इसी का प्रयोग करते हैं।

(५) व्याख्यानुवाद—इसमें मूल का व्याख्या के साथ अनुवाद होता है। स्पष्ट ही व्याख्या व्याख्याता के व्यक्तित्व ज्ञान तथा दृष्टिकोण पर आधृत होती है तथा उसमें कथ्य के स्पष्टीकरण के लिए कुछ अतिरिक्त उदाहरण उद्धरण प्रमाण इत्यादि जोड़े जा सकते हैं। इसी कारण व्याख्यानुवाद में अनुवादक केवल अनुवादक न रहकर काफी महत्वपूर्ण हो जाता है। लोकमान्य तिलक का गीतानुवाद इसी प्रकार का है। संस्कृत के विभिन्न धार्मिक ग्रंथों के सनातनधर्मी एवं आर्यसमाजी व्याख्यानुवाद भी इसके अच्छे उदाहरण हैं। व्याख्यानुवाद में अनुवादक अनुवाद से अधिक बल मूल की बातों का विस्तार के साथ अपने ढंग से समझाने पर देता है। इसीलिए तत्वत व्याख्यानुवाद अनुवाद से अधिक व्याख्या या भाष्य होता है। इसे भाष्यानुवाद भी कह सकते हैं। मूल की तुलना में यह काफी बड़ा होता है। षड्दर्शन ग्रंथों के व्याख्यानुवादों में एक एक सूत्र को कभी-कभी दो दो तीन तीन पृष्ठों में समझाया गया है। व्याख्यानुवाद काफी प्रभावी होता है क्योंकि इसमें मूल की अस्पष्ट बातें विश्लेषित तथा उदाहृत होकर स्पष्ट हो जाती हैं परन्तु

इसमे एक डर यह होना है कि अनुवादक या भाष्यकार मूल लेखक के विचारो मे कुछ अपना रग आरोपित करके उसके साथ अन्याय भी कर सकता है।

(६) अनुवाद—यह अनुवाद का आदर्श प्रकार है, जिसमे अनुवादक स्रोत भाषा से मूल सामग्री का अभिव्यक्ति और अव्यक्त लक्ष्य भाषा मे निकटतम एव स्वाभाविक समानकों (closest natural equivatents) द्वारा अनुवाद करता है। इसे स्वाभाविक सटीक अनुवाद भी कहा जा सकता है। अनुवादक इसमें यथासाध्य अपना व्यक्तित्व नहीं आने देता। अनुवाद मूल जैसा होता है। अर्थात् अनुवादक का प्रयास यह होता है कि मूल को पढ या सुनकर स्रोत भाषा भाषी जो ग्रहण करे अनुवाद को पढ या सुनकर लक्ष्य भाषा भाषी भी ठीक वही ग्रहण करे।

मैं प्राय आदर्श अनुवाद के लिए एक सूत्र का प्रयोग करता रहा हूँ—न छोडो न जोडो। अर्थात् अनुवादक यथासाध्य न तो मूल का कुछ (अव्यक्त या अभिव्यक्ति) छोडे और न तो अपनी ओर से कुछ (अव्यक्त या अभिव्यक्ति) जोडे। वह एक तटस्थ माध्यम का काम करे। आदर्श अनुवादक सिरिंज की वह सुई है जो सिरिंज की दवा को ज्यों की त्यों मरीज के शरीर में पहुँचा देती है।

अनुवाद का ही भाषांतर भाषांतरण उल्था तरजुमा आदि भी कहते हैं।

(७) रूपांतरण (adoptation)—इस शब्द का अर्थ है रूप को बदलना। अनुवाद के इस प्रकार म रूपांतरकार मूल को अपनी रुचि सुविधा तथा आवश्यकता के अनुसार परिवर्तित करके लक्ष्य भाषा म रखता है। इस मे मूल सामग्री, संक्षिप्त या विस्तृत सरल या कठिन तथा विधा रूप में परिवर्तित (अर्थात् कहानी स नाटक, नाटक से कहानी आदि) होकर आती हैं। पात्रो के नाम देशकाल या वातावरण आदि म परिवर्तन किए भी जाते हैं और नहीं भी। भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने शेक्सपीयर के मर्चेंट आफ वेनिस का अनुवाद 'दुर्लभ बन्धु अर्थात् वंशपुर का महाजन नाम से किया था। इसमे कथा को पूरी तरह भारतीय कर दिया गया है। वंशपुर वेनिस है। ऐंटा नियो' को अनंत' बसोनिया को बसंत तथा पोर्शिया' को पुरश्री' नाम दे दिये गये है।

रेडियो पर प्राय विभिन्न प्रकार के रूपांतर आते रहते हैं।

(८) वार्तानुवाद अथवा आशु अनुवाद—जब दो भिन्न भाषा भाषी आपस मे बात करते हैं तो उनके बीच के अनुवादक को दुभाषिया (Interpreter) कहते हैं। दुभाषिया द्वारा किए जाने वाले अनुवाद को किसी अन्य प्रचित

शब्द के अभाव में हिन्दी में मैं वार्तानुवाद की संज्ञा देना चाहूँगा। कहीं कहीं ऐसी व्यवस्था भी होती है कि कोई भाषण या वार्ता किसी एक भाषा में प्रसारित होती है परन्तु विभिन्न स्टेशनों पर उसके विभिन्न भाषाओं में अनुवाद साथ साथ सुने जा सकते हैं। जो लोग यह अनुवाद करते हैं उन्हें आशु अनुवादक और उनके कार्य को आशु अनुवाद कह सकते हैं। वार्तानुवाद या आशु अनुवाद उपयुक्त किसी भी दृष्टि या आधार से अनुवाद का कोई स्वतन्त्र प्रकार या भेद नहीं है। इसके स्वतन्त्र विवेचन का आधार केवल यह है कि इस प्रकार के अनुवाद का स्वतन्त्र सन्दर्भ है और इसीलिए इसका अपना महत्त्व है। जहाँ तक अनुवाद की प्रकृति का प्रश्न है वार्तानुवाद भाषान्तर अनुवाद का ही एक रूप है। इसके संबंध में एक ही बात उल्लेख्य है कि किसी लिखित सामग्री के अनुवादक की भाँति दुभाषिया या वार्तानुवादक के पास इतना अवकाश नहीं होता कि वह देर तक सोच सके या अपेक्षित कोश आदि सन्दर्भ ग्रंथ देख सके। इसीलिए वार्तानुवाद कभी कभी सटीक की तुलना में कामचलाऊ अधिक होता है किंतु दुभाषिया चूँकि महत्त्वपूर्ण राजनैतिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक वार्ताओं के समय अनुवाद का कार्य करता है अतः उसे अत्यन्त व्यावहारिक, दोनों भाषाओं (स्रोत तथा लक्ष्य) का अच्छा जानकार सम्बद्ध राजनीतिक आर्थिक तथा सांस्कृतिक आदि समस्याओं को समझनेवाला एवं आशु अनुवादक होना चाहिए। किसी प्राचीन या नवीन ग्रंथ या लेख के अनुवादक की किसी गलती के परिणाम उतने भयंकर शायद ही कभी होते हों जितने किसी दुभाषिये की सामान्य भूल के हो सकते हैं। इसीलिए इतिहास में ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है जहाँ दुभाषियों की गलतियों की प्रतिक्रिया दो देशों के आपसी तनावों में होते-होते बची है।

७

अनुवाद की शैलियाँ

अनुवाद के प्रसग मे 'शैली' शब्द का प्रयोग दो अर्थों मे प्राय होता है। एक तो अनुवाद की विविध शैलियो से लोग अर्थ लेते हैं शब्दानुवाद, भावानुवाद, सारानुवाद आदि का। इस अर्थ में 'शैली' अनुवाद के प्रकार या भेद का पर्याय है। पीछे 'अनुवाद के प्रकार' शीर्षक के अन्तर्गत इस पर विचार किया जा चुका है। 'शैली' का अनुवाद के प्रसग मे दूसरा अर्थ लिया जाता है अनुवाद मे अभिव्यक्ति की शैली। यहा हम दूसरे अर्थ मे ही शैली पर विचार किया जा रहा है।

मूल प्रश्न यह है कि अनुवाद की शैली क्या हो? सच पूछा जाय तो अनुवादक का मूल उद्देश्य होता है मूल कृति को लक्ष्य भाषा में निकटतम रूप मे भाषातरित करना। इसका अर्थ यह हुआ कि अच्छा और सफल अनुवादक वह है जो अनुवाद की शैली प्राय वही रखता है जो मूल रचना की होती है। उदाहरण के लिए जयशकर प्रसाद का अनुवाद प्रेमचन्द का अनुवाद तथा महात्मा गांधी का अनुवाद, चाहे किसी भी भाषा मे क्यो न किया जाए, एक शैली मे नही किया जाना चाहिए। सफल अनुवादक उसे माना जाएगा जो अनुवाद म भी उच्च सास्कृतिक शब्दावली युक्त काव्यात्मक शैली का पुट प्रसाद के अनुवाद मे दे सके महात्मा गांधी के अनुवाद म हिन्दुस्तानी शैली का सीधापन झलका सके, तथा प्रेमचन्द के अनुवाद को इन दानो के बीच मे इस प्रकार रख सके कि साहित्यिकता के पुट के साथ साथ उसम मुहावरेदार सरल शैली का प्रसादत्व भी हो। एक ठास उदाहरण लें तो हिंदी के कृती अनुवादक श्री महेन्द्र चतुर्वेदी ने एक तरफ काव्य मे उदात्त तत्व (होरेस के 'आन स ल्लाइम' के हिन्दी अनुवाद) में या 'अरस्तू का काव्यशास्त्र' (पेरि पोइतिकेस के हिंदी अनुवाद) म एक ऐसी शैली का प्रयोग किया है जो तत्सम शब्दावली तथा तदुपयुक्त प्रभावो के कारण एक प्रकार की है, तो मौलाना अबुल कलाम आजाद की पुस्तक 'इडिया विंस फ्रीडम' के अनुवाद 'आजादी की कहानी' मे उन्होंने एक दूसरे प्रकार की शैली का प्रयोग किया है, जिसे देखकर हुमायू कबीर ने कहा था कि मुझे यदि यह पता होता कि चतुर्वेदी जी एसी शैली में अनुवाद करेंगे तो मैं उर्दू म इसका अलग अनुवाद न कराता,

तथा प्राय इसे ही उर्दू में भी प्रकाशित करवा देता। यहाँ यह भी ध्यान देने की बात है कि अनुवादक चतुर्वेदी ने होरेस की कृति के नाम में तो 'काव्य में उदात्त तत्त्व' अर्थात् काव्य और उदात्त का प्रयोग किया है किन्तु मौलाना आज़ाद की पुस्तक के नाम में 'स्वतन्त्रता' शब्द का प्रयोग न कर 'आज़ादी' का प्रयोग किया है। निष्कर्षतः अनुवाद की शैली के बारे में सामान्य सिद्धांत तो यही है कि अनुवाद में अभिव्यक्ति की शैली ऐसी होनी चाहिए जो मूल कृति या मूल कृति के लेखक की अनुगामिनी हो।

इस प्रसंग में 'शैली' शब्द भी विचारणीय है। जब हम अनुवादक के 'मूल की शैली' के अनुगमन की बात उठाते हैं तो शैली का क्या अर्थ है। गहराई से देखा जाए तो संक्षेप में शैली में वह सब कुछ आ जाता है जो किसी भी रचना में कथ्य को पाठक या श्रोता तक पहुंचाने के लिए होता है और जिस समवेततः अभिव्यक्ति पक्ष या कला पक्ष की संज्ञा देते हैं। कविता की शैली की परख मुख्यतः शब्द चयन, अलंकार, शब्द शक्ति, गुण, नाद सौंदर्य, ध्वनि, दोष तथा छन्द आदि से होती है। गद्य में छन्द को छोड़कर न्यूनाधिक रूप में ये सभी बातें आ सकती हैं। हिन्दी में शैली के भेदों या प्रकारों के नाम पर व्यास शैली, समास शैली, अलंकृत शैली, उदात्त शैली, मुहावरेदार शैली, लाक्षणिक शैली, व्यंजक शैली, गुम्फित शैली, सरल शैली, सरस शैली, सामान्य शैली तथा सपाट शैली आदि के नाम लिए जाते है। विश्व की अन्य भाषाओं में इसी प्रकार की कुछ कम या अधिक शैलियों के नाम हो सकते हैं।

अनुवादक को चाहिए कि मूल की शैली को—चाहे वह किसी भी प्रकार की क्यों न हो—यथासाध्य अनुवाद में भी लाने का यत्न करें, हालाँकि ऐसा करना न तो सर्वदा सरल होता है और न बहुत सम्भव ही। उसका कारण यह है कि हर भाषा की प्रकृति में कुछ उसकी निजी विशेषताएँ होती हैं जो दूसरी भाषा में होती ही नहीं। फिर जिस भाषा में वे हैं ही नहीं उसमें कोई कैसा ला कैसे सकता है। फिर भी यत्न तो होना ही चाहिए। सीधे न सही किसी और ढंग से सही।

शैली के मुख्य तत्त्वों में शब्द चयन, अलंकार, शब्द शक्तियाँ, ध्वनि तथा छन्द को अनुवाद में ठीक उतार पाने में कभी-कभी काफी कठिनाई होती है। शब्द चयन का ही प्रश्न लें। किसी भाषा में पर्यायों का आधिक्य होता है तो किसी में वे कम होते हैं अतः सभी भाषाओं में सभी स्थलों पर शब्द चयन कर पाने की गुंजाइश नहीं होती। उदाहरणार्थ हिन्दी के शब्द-समूह में पर्याया की काफी गुंजाइश है क्योंकि इसमें देशज शब्दों के अलावा तीन स्रोतों के

न्त हैं (१) सस्कृत तत्सम, (२) तद्भव, (३) विदेशी। इसीलिए पृथ्वी, धरती, जमीन, या सुदर, सुघर खूबसूरत जैसी पर्याय शृखलाएँ हैं जिनके स दर्भार्य कभी-कभी एक दूसरे से दूर होते हैं। इस दृष्टि से हिंदी की ३ नालियाँ हैं सस्कृतनिष्ठ हिंदी, अरबी फारसी युक्त उदू, बीच की शली हिंदुस्तानी। सभी भाषाओ म य अतर ठीक इसी प्रकार नही मिल सकते अत सभी भाषाओ म अनुवाद मे इह लाया भी नहीं जा सकता। रूप चयन की कठिनाई को भी इसी के साथ मिला सकते हैं। हिंदी मे बठ बठो, बैठिए, बठें ये चार भाना के रूप हैं जिनम सूक्ष्म अन्तर है। अग्रेजी रूसी आदि यूरोपीय भाषाओ म इह उतार पाना असम्भव है। हा जब हम किसी अय भाषा से हिंदी म अनुवाद कर रहे हो तो प्रसगानुसार उपयुक्त रूप का चयन कर सकते हैं।

अलकारों की भी यही स्थिति है। हिन्दी मे यमक तथा श्लेष अनेकार्थी शब्दो पर निभर करते हैं किन्तु यह आवश्यक नहीं कि लक्ष्य भाषा मे ऐसा कोइ शब्द हो जिसके उतने अथ होते हो हैं। उदाहरण के लिए 'कनक कनक ते सौगुनी ' का नलीगत सौन्दय उस भाषा के अनुवाद म उतारा ही नही जा सकता जिसम कोई एक ऐसा शब्द ('कनक' का पर्याय) न हो जिस के सोना और धतूरा दोनो अथ होते हो। अलकारा के सन्दभ म सक्षेप मे यह कह सकते है कि जहाँ स्रोत सामग्री म उपमा रूपक आदि अर्थालकारा के चमत्कार हों उन्ह ज्यो का त्यो या थोडे बहुत हर फेर के साथ लक्ष्य भाषा म सप्रेषित किए जाने की सम्भावना हो सकती है परन्तु जहाँ स्रोत भाषा मे अनुप्रास, यमक श्लेष आदि शब्दालकारा स चमत्कार पदा किया गया हो वहा लक्ष्य भाषा म वसा शली चमत्कार ला पाना बल्कि अनुवाद कर पाना ही कठिन हो जाता है। दूसरी ओर स्रोत भाषा म कोई अलकार या मुहावरा न आने पर भी कुशल अनुवादक अपने अनुवाद म अनुप्रास की छटा या मुहावरे का सौन्दय ला सकता है।

शब्द शक्तियो नाद सौंदय तथा ध्वनि आदि की भी प्राय यही स्थिति है। वस्तुत

'कंकण किंकिणि नूपुर धुनि सुनि,'

'घन घमड नभ गरजत घोरा

अथवा मृदु मद मद मथर मथर का नलीगत सौन्दय अनुवाद में ला पाना सभी अनुवादको के वस का नहा है।

छद तो प्राय विभिन्न भाषाओं म अलग अलग ही होते हैं। यों अनुवादको ने

इस दिशा मे नए छद लाने के यत्न किए है। उदाहरण के लिए महाभारत तथा रामचरित मानस के रूसी अनुवादको ने अपने अनुवाद मूल छद मे किए हैं। अंग्रेजी मे भी कुछ इस प्रकार के अनुवाद विविध भाषाओ से हुए हैं। किन्तु ऐसा हमेशा सम्भव होता नही। यो सवदा ऐसा करना बहुत सार्थक भी नही होता क्योकि किसी छद का जो प्रभाव स्रोत भाषा भाषी पर पडता है, आवश्यक नही कि लक्ष्य भाषा-भाषी पर भी वही पड़े।

इस तरह सक्षेप म यही कहा जा सकता है कि इन सभी दृष्टियो से यथा साध्य मूल शैली को लाने का प्रयत्न होना चाहिए। प्रयत्न होने पर इस दिशा मे अधिक नहीं तो कुछ सफलता मिलने की तो सम्भावना हो ही सकती है।

यह बात आदर्श अनुवाद की दृष्टि से की जा रही थी। कुछ बातें ऐसी भी होती हैं जिनको दृष्टि म रखते हुए मूल कृति की शैली मे कभी कभी थोड़े-बहुत परिवर्तन अपेक्षित होते हैं। उदाहरण के लिए कल्पना कीजिए कि किसी पुस्तक का अनुवाद सुपठित बडो के लिए नव साक्षरो के लिए किशोरो के लिए तथा बच्चो के लिए किया जा रहा है तो निश्चय ही शब्द चयन आदि की दृष्टि से शैली को इन चारो म एक नही रखा जा सकता। इसका अर्थ यह हुआ कि अनुवाद की इस प्रकार की शैली के लिए एक बहुत बडा निर्णायक तत्व यह है कि अनुवाद जिसके लिए किया जा रहा है। उसके पाठक कौन होग? इस तरह पाठको के ज्ञान और भाषा स्तर की दृष्टि से अनुवाद की एकाधिक शैलिया हो सकती हैं और अनुवादक को उनका ध्यान रखते हुए शैली मे परिवर्तन करते रहना चाहिए।

मान लें किसी नाटक का अनुवाद किया जा रहा है। यदि नाटक रग मच के लिए है तो उसकी शैली अपेक्षाकृत सरल होनी चाहिए ताकि कथोपकथन का अर्थ श्रोता—जो भाषाज्ञान की दृष्टि स हर श्रेणी के हो सकते हैं—सुनते ही समझ जायें किन्तु इसके विपरीत यदि नाटक केवल पढने के लिए है तो शैली थोडी कठिन भी हो तो कोई बात नही, क्योकि पाठक अपने समझने की क्षमता की दृष्टि से उसे अपनी सुविधानुसार—तेजी से धीमी गति से—पढ़ सकता है। इस तरह ऐसी अपेक्षाए भी अनुवाद की शैली को प्रभावित करती है।

शैली का सबध पुस्तक या रचना के विषय से भी बहुत अधिक होता है इस दृष्टि स विभिन्न विषयो या रचनाओ को मोटे रूप स दो वर्गों म बाटा जा सकता है—

पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग है। यों तथ्य प्रधान साहित्य के इतिहास, राजनीति आदि कुछ विषय ऐसे भी हैं जो कुछ तथ्य प्रधान होते हुए भी शैलीय सौन्दर्य से युक्त भी होते हैं। अतः इनमें एक सीमा तक अनुवादक को शैली का ध्यान भी रखना पड़ता है—यों यह सर्जनात्मक साहित्य से कम होता है और गणित भौतिकविज्ञान आदि शुद्ध वैज्ञानिक विषयों में नगण्य। [illegible] कथ्य की दृष्टि से ज्यों ज्यों हम स्थूल से सूक्ष्म की ओर अग्रसर होते हैं त्यों त्यों शैली अथवा कलापक्ष को सँवारने की प्रवृत्ति भी बढ़ती चली जाती है।

शैली के प्रसंग में अन्तिम उल्लेख्य बात यह है कि ऊपर जिस शैली की बात की जा रही थी वह शब्द चयन, चमत्कार, गुण, शब्द शक्ति आदि उन चीज़ों से सम्बद्ध थी जिनका सम्बन्ध भाषा की व्याकरणिक संरचना से नहीं है। किन्तु इसके अतिरिक्त शैली का एक स्वरूप भाषा की व्याकरणिक संरचना से भी सम्बद्ध होता है। वस्तुतः शैली का काफी कुछ सम्बन्ध अनेक में से एक के चयन से है। मूल लेखक इसी प्रकार अनेक में से एक चुनकर अपनी विशिष्ट शैली में बात कहता है और अनुवादक लक्ष्य भाषा में अनेक में एक का चयन करके मूल की शैली को यथासाध्य अनुवाद में लाने का यत्न करता है। अनेक भाषाओं में किसी न किसी स्तर पर व्याकरण (रूप रचना एवं वाक्य रचना) में भी अनेक में से एक के चयन की गुंजाइश होती है। हिन्दी के कुछ उदाहरण हैं—भारत की चीज़ें भारतीय चीज़ें प्रभावित करने वाली रचना प्रभाव डालने वाली रचना प्रभावी रचना भला तुमने स्वीकारा तो—भला तुमने स्वीकार तो किया मैंने उनसे काम कराया—मैंने उनसे काम करवाया आज वह नहीं जाएगा—आज वह नहीं जाने का कमल अब नहीं लड़ता है—कमल अब नहीं लड़ता, मैं आज नहीं जा रहा हूँ—मैं आज नहीं जा रहा मुझसे नहीं हो सकता—मैं नहीं कर सकता यह भी क्या काम है—यह भी कोई काम है—यह भी क्या कोई काम है तू तो बड़ा लड़ाका है चुप भी रह लड़ाका कहीं का चुप भी रह वह अमीर नहीं है—वह कहाँ का अमीर है—वह भी कोई अमीर है—वह अमीर कहाँ है इत्यादि। प्राय सभी भाषाओं में व्याकरणिक स्तर पर इस प्रकार के एकाधिक प्रयोगों में एक चयन का अधिकार मूल लेखक की भाँति ही अनुवादक को भी है। इस चुनाव में कहीं कहीं उसकी अपनी रुचि ही एक मात्र चयन का आधार होती है और ऐसे चयनों से अनुवादक की अपनी निजी शैली अभिव्यक्त होती है।

इस प्रकार अनुवादक यद्यपि मूल कृति की शैली, अनुवाद के पाठक या श्रोता के लिए उपयुक्त शैली आदि कई बातों से बंधा है, किन्तु फिर भी

अनेक बातों—जैसे व्याकरणिक संरचना, शब्द चयन, शब्द शक्ति, गुण, छंद आदि—में उसकी वैयक्तिक रुचि एवं इच्छा भी उसके अनुवाद की शैली की निर्धारिका होती है और इसी रूप में अनुवादक भी एक सीमा तक सर्जक (creative writer) होता है। इसीलिए अन्य सभी बातों के समान होने पर भी वैयक्तिक शैलीय सौन्दर्य तथा सर्जन शक्ति के कारण किसी अनुवादक का अनुवाद बहुत बढ़िया होता है, तो किसी का सामान्य और किसी का घटिया।

निष्कर्षतः अनुवाद की अनेकानेक शैलियाँ होती हैं और हो सकती हैं जो मूल कृति, विषय, अनुवाद का पाठक या श्रोता, अनुवाद का उद्देश्य, तथा अनुवादक की व्यक्तिगत रुचि आदि पर निर्भर करती हैं।



८

अनुवाद और भाषाविज्ञान

अनुवाद में एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में व्यक्त करते हैं। दूसरे शब्दों में अनुवाद भाषा का रूपांतरण है। इसी कारण उसका सीधा सम्बन्ध भाषा के विज्ञान से है। इस बात को अच्छी तरह से समझने के लिए यह जान लेना आवश्यक है कि भाषा है क्या।

भाषा को अनेक रूपों में परिभाषित किया जाता है। बहुत गहराई में न जाकर इस प्रसंग में इतना कह देना ही पर्याप्त होगा कि भाषा ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसकी सहायता से मानव अपने विचार दूसरों पर व्यक्त करता है। कहने का आशय यह है कि भाषा में प्रयुक्त शब्द वस्तुओं भावों विचारों आदि के प्रतीक होते हैं। उदाहरण के लिए पुस्तक मेज घोड़ा चींटी, अच्छाई बुराई, भागना, लिखना पूजना आदि शब्दों को लें। ये शब्द विभिन्न चीजों भावों या क्रियाओं आदि के ध्वनि प्रतीक हैं। इसी कारण इनको सुनते ही उन चीजों जीवों भावों या क्रियाओं आदि का बोध हो जाता है। भाषा इन्हीं ध्वनि प्रतीकों (या शब्दों) की व्यवस्था है। व्यवस्था के कारण ही वक्ता जो कुछ कहता है श्रोता ठीक ठीक वही समझता है। भाषा की व्यवस्था कारक लिंग वचन पुरुष काल अन्वय आदि विषयक उन अनेकानेक नियमों के रूप में दिखाई पड़ती है जो उस भाषा को नियन्त्रित करते हैं और जिनके माध्यम से वक्ता अपनी बात श्रोता तक ठीक ठीक पहुँचा पाता है। यदि यह व्यवस्था न होती तो वक्ता कहता कुछ और श्रोता समझता कुछ और।

भाषा की इस परिभाषा को दृष्टि में रखते हुए अनुवाद पर विचार करें तो निम्नांकित बातें हमारे सामने आती हैं—

(क) अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में करते हैं।

(ख) इन दोनों ही भाषाओं में विभिन्न चीजों भावों क्रियाओं आदि के लिए अपने अपने ध्वनि प्रतीक या शब्द होते हैं। जैसे हिन्दी में 'जल' है तो रूसी में 'वन्' या अंग्रेजी में table में तो हिन्दी में 'मेज' या संस्कृत में 'क्य' है तो हिन्दी में 'कह' आदि।

(ग) इन ध्वनि प्रतीकों या शब्दों के अतिरिक्त हर भाषा की कारक

लिंग, वचन काल पुरुष आदि का व्यक्त करने की अपनी विशेष व्यवस्था भी होती है। उदाहरण के लिए संस्कृत म तीन लिंग हैं तो हिंदी म दो हैं या अंग्रेजी मे क्रिया कर्ता के लिंग के अनुसार नहीं बदलती Ram goes sita goes। तो हिंदी म लिंग के अनुसार बदलती है (राम जाता है, सीता जाती है) या हिंदी मे घोडा शब्द के घोडा घोडे (एकवचन जैसे घोडे की बहुवचन जसे घोडे दौड रहे हैं), घोडा घोडो (जसे ए घोडो) चार रूप होते हैं तो अंग्रेजी horse के केवल दो horse, horses इत्यादि।

(घ) अनुवाद करने म स्रोत भाषा के ध्वनि प्रतिको या शब्दों के स्थान पर लक्ष्य भाषा के ध्वनि प्रतिको या शब्दो को रखने हैं। उदाहरण के लिए horse ran= घोडा दौडा। यहाँ अंग्रेजी म ध्वनिप्रतीक या शब्द था horse तो उसके स्थान पर हिंदी मे अनुवाद करते समय उस जानवर के लिए हिंदी ध्वनि प्रतीक या शब्द 'घोडा' रखा। इसी प्रकार ran के लिए 'दौडा'।

(ङ) ध्वनि प्रतीको को बदलने के साथ साथ अनुवाद करने म, स्रोत भाषा की व्यवस्था के स्थान पर लक्ष्य भाषा की व्यवस्था भी लानी पडती है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी म Ram goes Sita goes दोनो म goes ही है अर्थात् क्रिया कर्ता के लिंग से अप्रभावित है किंतु हिंदी म अनुवाद करना हो तो क्रिया को कर्ता के लिंग के अनुरूप रखना होगा—राम जाता है सीता जाती है। इसी तरह मैंने एक पुस्तक खरीदी मैंने कई पुस्तकें खरीदी, मैंने एक आम खरीदा तथा मैंने कई आम खरीदे म क्रिया लिंग वचन के कम के अनुरूप होने से चार रूपो म है खरीदी खरीदीं खरीदा, खरीदे। किंतु अंग्रेजी म अनुवाद करना हो तो क्रिया के कम से अप्रभावित रहने के कारण चारो वाक्यो मे क्रिया का एक ही रूप होगा baught हिंदी की तरह उसके चार रूप नही होंगे।

हमने देखा कि अनुवाद मे एक भाषा मे कही गई बात को दूसरी भाषा म ले आते हैं और इसके लिए दो बातें की जाती है (क) स्रोत भाषा के शब्दो के स्थान पर लक्ष्य भाषा के शब्दो का प्रयोग, तथा (ख) स्रोत भाषा की व्यवस्था के स्थान पर लक्ष्य भाषा की व्यवस्था का प्रयोग। एक भाषा के शब्दो तथा उसकी व्यवस्था के स्थान पर दूसरी भाषा के शब्दों तथा उसकी व्यवस्था लाने के लिए दोनो भाषाओं की तुलना आवश्यक है। इस तरह अनुवाद मूलत दो भाषाओं की तुलना पर आधारित होता है अत उसका सीधा संबंध भाषाविज्ञान के तुलनात्मक रूप स है। तुलनात्मक भाषाविज्ञान के सिद्धातो के आधार पर स्रोत और लक्ष्य भाषा की जितनी ही तुलनात्मक सामग्री उपलब्ध होगी,

अनुवाद उतना ही अच्छा होगा तथा उतना ही कम समय में किया जा सकेगा।

यह तुलना शब्द समूह तथा भाषा की व्यवस्था दोनों की ही होती है। शब्द समूह की तुलना का अर्थ हुआ अर्थ परिधि की दृष्टि से शब्दों की तुलना। व्यवस्था का अर्थ हुआ ध्वनि, रूपरचना तथा वाक्यरचना की दृष्टि से भाषाओं की तुलना। अनूद्य सामग्री यदि मौखिक न होकर लिखित है तथा उसे अनूदित करके लक्ष्य भाषा में लिखना है तो दोनों की लिपियों की तुलना भी आवश्यक रहती है। निष्कर्ष यह कहा जा सकता है कि भाषाविज्ञान भाषा का जिन जिन दृष्टियों—ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य, अर्थ, लिपि—से अध्ययन करता है अनुवाद के लिए उन सभी दृष्टियों से स्रोत और लक्ष्य भाषा की तुलना की आवश्यकता होती है।

दूसरे शब्दों में यदि भाषा के मौखिक तथा लिखित दोनों रूपों को दृष्टि में रखें तो ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य, अर्थ और लिपि—ये छः ही भाषा के अंग हैं। इन्हीं का प्रयोग भाषा होता है। इसीलिए भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन करने वाला विज्ञान भाषाविज्ञान इन छः अंगों या शाखाओं में ही विभक्त है: ध्वनिविज्ञान, शब्दविज्ञान, रूपविज्ञान, वाक्यविज्ञान, अर्थविज्ञान और लिपिविज्ञान। अनुवाद में—जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है—ध्वनि, शब्द, रूप आदि इन छः अंगों की दृष्टि से स्रोत और लक्ष्य भाषाओं की तुलना करनी होती है, अतः अनुवाद का संबंध भाषाविज्ञान की इन छः शाखाओं से है। आगे स्वतंत्र अध्यायों में अनुवाद और भाषा विज्ञान की इन शाखाओं के संबंधों पर सोदाहरण विचार किया गया है।

इस प्रसंग में एक बात और भी संकेत्य है। भाषाविज्ञान के चार रूप हैं: एककालिक, बहुकालिक (ऐतिहासिक), तुलनात्मक तथा प्रायोगिक। इनमें एककालिक में किसी भाषा के किसी एक काल के रूप का विश्लेषण करते हैं। ऐतिहासिक में कई एककालिक विश्लेषणों को शृंखलित करके उसका इतिहास देखते हैं, तुलनात्मक में दो या अधिक भाषाओं की तुलना करते हैं तथा प्रायोगिक में इन अध्ययनों के परिणामों का अन्य क्षेत्रों में प्रयोग करते हैं। गहराई से देखें तो इनमें एककालिक ही मूल है। किसी एक या कई भाषाओं के एककालिक अध्ययन पर ही शेष तीन आधारित होते हैं। उदाहरण के लिए तुलनात्मक भाषाविज्ञान लें जिससे अनुवाद का सीधा संबंध है। इसमें दो भाषाओं की तुलना की जाती है किंतु तुलना तब तक संभव नहीं जब तक कि दोनों भाषाओं का एक काल का विश्लेषण हमारे पास न हो। यह एक काल स्रोत के लिए भाषा के लिए वह काल होता है जिस काल की

सामग्री का अनुवाद करना होता है तथा लक्ष्य भाषा के लिए वह काल होता है जिस काल की भाषा में अनुवाद करना होता है। ठोस उदाहरण लेना चाहें तो मान लें शेक्सपीयर के किसी नाटक का आज की हिंदी में अनुवाद करना है। इसके लिए शेक्सपियरकालीन अंग्रेज़ी की वर्तमानकालीन हिंदी से तुलना करनी पड़ेगी। दूसरे शब्दों में पहले शेक्सपियरकालीन अंग्रेज़ी का विश्लेषण कर लेंगे और इन दोनों विश्लेषणों के आधार पर दोनों की तुलना करके समानताओं असमानताओं को अलग अलग निकालेंगे। जो चीज़ें दोनों में समान हैं उनका अनुवाद करना कोई समस्या नहीं होती। एक के स्थान पर दूसरे को रख देते हैं। समस्या होती है असमानताओं में। जैसे मान लें स्रोत भाषा में क्रिया में कोई विशेष काल है किंतु लक्ष्य भाषा में वह नहीं है फिर उसका कैसे अनुवाद करें। इसी प्रकार स्रोत भाषा में कोई शब्द है किंतु लक्ष्य भाषा में वह नहीं है (जैसे हिंदी देवदासी के लिए अंग्रेज़ी में कोई शब्द नहीं है), फिर अनुवादक क्या करे। इस प्रकार तुलनात्मक भाषाविज्ञान एककालिक भाषाविज्ञान पर ही निर्भर करता है। इसका अर्थ यह हुआ कि अनुवाद तुलनात्मक भाषाविज्ञान से संबद्ध होते हुए भी मूलतः एककालिक भाषाविज्ञान पर ही आधारित है। एककालिक भाषाविज्ञान ही स्रोत और लक्ष्य भाषा का विश्लेषण कर तुलनात्मक भाषाविज्ञान या तुलना के लिए सामग्री प्रस्तुत करता है।

प्रायोगिक भाषाविज्ञान जैसा कि संकेत किया गया भाषाविज्ञान का वह रूप है जिसमें भाषा के अध्ययन विश्लेषण या उसके निष्कर्षों का अन्य कामों के लिए प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए उच्चारण संबंधी दोषों को दूर करना, टाइपराइटर के की-बोर्ड का विशेष भाषा के लिए विशेष क्रम में क्रम निर्धारित करना, मातृभाषा या अन्यभाषा की शिक्षा देना या कोश, भाषा की पाठ्य पुस्तक या व्याकरण तैयार करना आदि प्रायोगिक भाषाविज्ञान के अंतर्गत आते हैं क्योंकि इनमें भाषाविज्ञान में प्राप्त अध्ययन विश्लेषण या उसके निष्कर्षों का उपयोग किया जाता है। अनुवाद भी इन्हीं की तरह प्रायोगिक भाषाविज्ञान के अंतर्गत ही आता है क्योंकि उसमें भी जाने अनजाने जैसा हमने देखा एककालिक तथा तुलनात्मक भाषाविज्ञान के निष्कर्षों से सहायता ली जाती है।

निष्कर्षतः अनुवाद भाषाविज्ञान से बहुत अधिक संबद्ध है। यह स्वयं प्रायोगिक भाषाविज्ञान के अंतर्गत आता है तथा उसके आधार मूलतः एककालिक भाषाविज्ञान एवं तुलनात्मक भाषाविज्ञान के निष्कर्ष होते हैं।

९

अनुवाद और ध्वनिविज्ञान

अनुवादक जिस सामग्री का अनुवाद करता है उसमें दो प्रकार के शब्द हो सकते हैं। एक तो वे जिनका अनुवाद किया जाता है और दूसरे वे जिनका अनुवाद नहीं किया जाता और जिन्हें थोड़े-बहुत परिवर्तन के साथ प्रायः मूल रूप में ही स्रोत भाषा से उठाकर लक्ष्य भाषा में रख देते हैं। इस दूसरे प्रकार के शब्दों को स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में लाने में अनुवादक को ध्वनिविज्ञान का सहारा लेना पड़ता है। ऐसे शब्द प्रायः व्यक्तिवाचक संज्ञा या पारिभाषिक आदि होते हैं।

ध्वनिविज्ञान एकाधिक प्रकार का होता है जिनमें वर्णनात्मक ध्वनिविज्ञान तथा तुलनात्मक ध्वनिविज्ञान इन दो की ही सहायता प्रायः अनुवादक को लेनी पड़ती है। वर्णनात्मक ध्वनिविज्ञान के आधार पर स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा की ध्वनियों को हमें समझना पड़ता है और फिर तुलनात्मक ध्वनिविज्ञान हमें इस निर्णय तक पहुँचाता है कि स्रोत भाषा की किसी ध्वनि के लिए लक्ष्य भाषा की किस ध्वनि को प्रतिनिधि माना जाए।

वस्तुतः जब अनुवादक के सामने इस प्रकार की समस्या आए तो उसे स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की ध्वनियों की तुलना करना चाहिए। तुलना करने पर ध्वनियों के मोटे रूप से चार वर्ग बन सकते हैं

(क) कुछ ध्वनियाँ दोनों भाषाओं में समान होती हैं।

(ख) कुछ ध्वनियाँ लगभग समान होती हैं।

(ग) कुछ ध्वनियाँ दोनों में होती हैं किंतु एक दूसरे से काफी भिन्न।

(घ) कुछ ध्वनियाँ ऐसी होती हैं जो स्रोत भाषा में होती हैं किंतु उनके समान लगभग समान या उनसे मिलती जुलती ध्वनियाँ लक्ष्य भाषा में नहीं होतीं।

आगे इन्हें क्रमशः लिया जा रहा है।

समान ध्वनियाँ

शुद्ध वैज्ञानिक दृष्टि से कम ही भाषाओं की कुछ ध्वनियाँ आपस में पूर्णतः समान होती हैं किंतु यदि उस शुद्ध वैज्ञानिकता की बात छोड़ दें तो यह कहा

जा सकता है कि काफी भाषाओं की काफी ध्वनियाँ आपस में मोटे रूप में समान होती हैं। उदाहरण के लिए रूसी प ब त द क, ग म् (पे, बे ते, दे का गे, एम)—हिंदी प् ब, त द क ग, म्, अंग्रेजी ग, ब, न् म य्, स फ (G B N M, Y S C F)—हिंदी ग, ब, न् म, य स, फ, हिंदी क ग, न् द प्, ब्, म्—फारसी क ग्, त, द, प ब, म् (काफ, गाफ ते, दाल, पे बे मीम), तथा संस्कृत क ख ग घ श, म त द प ब, म्—हिंदी क, ख ग घ न य न् द प ब, म् आदि व्यंजन समान हैं। इस प्रकार की समान ध्वनियाँ अनुवादक के लिए कोई समस्या नहीं हैं। यह बड़ी सुविधापूर्वक स्रोत भाषा की ध्वनि के लिए लक्ष्य भाषा की समान ध्वनि का प्रयोग कर सकता है।

लगभग समान ध्वनियाँ

लगभग समान ध्वनि का आशय ऐसी ध्वनियों से है जो कुछ बातों में तो समान हैं और कुछ बातों में स्पष्टतः असमान। उदाहरण के लिए संस्कृत च, छ ज झ (स्पर्श)—हिंदी च छ ज, झ (स्पर्श संघर्षी), संस्कृत न् (दंत्य)—हिंदी न् (वर्त्स्य) हिंदी ज (वर्त्स्य)—अरबी ज (जे, दंत्य वर्त्स्य) पंजाबी घ भ—हिंदी घ भ आदि ध्वनियाँ लगभग समान हैं। प्रथम वर्ग की तुलना में इस वर्ग में समानता कम है किंतु अनुवादक स्रोत भाषा की ऐसी ध्वनियों के लिए भी लक्ष्य भाषा में प्राप्त लगभग समान ध्वनियों का प्रयोग करता है, क्योंकि उसके पास कोई और चारा नहीं होता।

भिन्न ध्वनियाँ

इस वर्ग में ऐसी ध्वनियाँ आती हैं जो मूलतः, उच्चारण तथा श्रवण के स्तर पर भिन्न होती हैं। अरबी स्वाद अक्षर का स् तथा से अक्षर का स् ये दोनों हिंदी 'स' से भिन्न हैं इसी प्रकार अरबी जोय ज्वाद तथा जाल के ज हिंदी के ज से भिन्न हैं। भिन्नता के बावजूद भी ये ध्वनियाँ कुछ मिलती-जुलती लगती हैं। अनुवादक इसी कारण भिन्नता का विचार न करके इन्हीं का प्रयोग करता है। अरबी साबुन में स्वाद है तथा साबित में से, किंतु हिंदी में इन दोनों ही शब्दों को सामान्य स से लिखते हैं। इस प्रकार अरबी जालिम (जोय), जरूर (ज्वाद), जात (जाल) तीनों ही हिंदी में सामान्य ज से लिखे जाते हैं। यह उल्लेख्य है कि 'स्वाद' का स् कंठस्थानयुक्त दंत वर्त्स्य अघोष संघर्षी, 'से' का स 'स' से मिलता जुलता जोय का ज् कंठस्थानयुक्त दंतवर्त्स्य घोष संघर्षी आदि हैं।

स्रोत भाषा की ध्वनि का या उससे मिलती जुलती का लक्ष्य भाषा में न होना

सबसे कठिन समस्या तब आती है जब स्रोत भाषा की ध्वनि या उससे मिलती जुलती ध्वनि लक्ष्य भाषा में होती ही नहीं। उदाहरण के लिए मलयालम में तथा तमिल भाषा के पुराने उच्चारण में एक विशेष प्रकार की ध्वनि है जो हिन्दी में नहीं है। तमिल शब्द का ल यही है जिसे हिन्दी प्रदेश में कुछ लोग ल कुछ लोग ळ तथा कुछ लोग य कहते हैं यद्यपि यह ध्वनि इन तीनों से भिन्न है। इसी प्रकार हिन्दी ड ढ ध्वनियाँ रूसी इतालवी फ्रांसीसी आदि में फ्रांसीसी अंग्रेजी आदि कई भाषाओं की घोष तालव्य संघर्षी ध्वनि (झ) हिंदी पंजाबी बंगला असमी आदि में अरबी स्वर यन्त्रमुखी स्पर्श (१) ध्वनि हिन्दी रूसी आदि में तथा अनेक भारतीय भाषाओं की ख घ छ झ ठ ट थ ध फ भ आदि महाप्राण ध्वनियाँ रूसी अंग्रेजी रूमानियान फ्रांसीसी आदि विश्व की अनेक भाषाओं में नहीं हैं। ध्वनि की दृष्टि से अनुवादक के सामने यह सबसे बड़ी समस्या है। यह स्पष्ट है कि ध्वनि के स्तर पर यह समस्या उच्चारण से संबद्ध है और इसकी आवश्यकता प्रायः दुभाषियों को पड़ती है। दुभाषिये ऐसी समस्या का समाधान तीन रूपों में कर सकते हैं। यदि सुननेवालों के लिए बोधगम्यता की दृष्टि से किसी गड़बड़ी की संभावना न हो तो अनुवाद में ऐसे शब्दों को मूल रूप में अर्थात् मूल ध्वनि या ध्वनियों के उच्चारण के समान उच्चरित किया जा सकता है। यदि बोधगम्यता में गड़बड़ी की संभावना हो या दुभाषिया ठीक उच्चारण न कर सके या ऐसे भी यदि मूल उच्चारण देना अपेक्षित न हो तो ध्वनि का लक्ष्य भाषा की निकटतम ध्वनि में सरलीकरण किया जा सकता। मलयालम की उपयुक्त विशेष ध्वनि को हिन्दी में ळ या ल रूप में (तमिळ तमिल) रखना या अंग्रेजी झ को हिन्दी में ज़ (रूज़) या ज (रूज) कर देना सरलीकरण के ही उदाहरण हैं। अरबी के अनेक शब्दों के बीच या अंत में आने वाली स्वरयंत्रमुखी स्पर्श (ऐन) ध्वनि हिंदी में आ ही गई है बाद इनाम मशाल लाल जमा मना। यह भी सरलीकरण ही है। सरलीकरण का अर्थ है पूर्णतः असमान होते हुए भी लक्ष्य भाषा की जो ध्वनि श्रवण में स्रोत भाषा की किसी ऐसी ध्वनि के कुछ समीप लगे उसका प्रयोग कर लेना। उदाहरण के लिए महाप्राण के स्थान पर उसके अल्पप्राण का प्रयोग किया जा सकता है अर्थात् भारत को बारत गांधी को गादी सुभाष को सुबाश, दशरथ को दशरत आदि कहा जा सकता है। कभी-कभी ऐसी ध्वनियों को बिल्कुल छोड़ा भी जा सकता है। अरबी की उपयुक्त ध्वनि (ऐन) हिन्दी में

आए अक्ल, अरब, इज्जत, ऐश, ईसा ईसवी आदि शब्दों में आदि में थी किंतु हिंदी में आकर लुप्त हो गई और उनके बाद आनेवाला स्वर ही केवल शेष रह गया है।

ऊपर इस बात की चर्चा की गई है कि मूल सामग्री में कुछ शब्द ऐसे हो सकते हैं, जिनका अनुवाद नहीं किया जाता और जिन्हें ज्यों-का त्यों या थोड़े बहुत ध्वन्यात्मक परिवर्तन के साथ लक्ष्य भाषा में रख दिया जाता है। विभिन्न भाषाओं से हिंदी में आने वाले इस प्रकार के कुछ शब्द ये हैं

व्यक्तिनाम—टामस (Thomas थॉमस, थोमस, थामस), जान (Jhon जॉन, जान), ख्रुश्चोफ (Khrushchev ख्रुश्चेव) तोलस्तोय (Tolostoy टालस्टाय, टालस्टाय टोलस्टोय येस्पसन (Jesperson जेस्पसन) प्लेटो (Plato प्लातोन, अफ्लातून) ब्रील (Breal ब्रेआल ब्रेअल) मेय (Meillet मौलेट, मेइए), बाल्ज़ाक (Balzac बालजक) तसीतोरी (Tessitori टैसिटोरी, टेसिटरी)। नागरिप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हिंदी विश्वकोश के प्रथम तीन खंडों में चीनी यात्री ह्वेनसांग का नाम नौ रूपों में आया है ह्वेनत्साग युवान्च्वाङ युवानच्वाग युवानचाग हुएनत्साग युवान्च्वाङ ह्वेनत्साग, ह्वेन-त्साग ह्वेनसाग। ऐसे ही अरस्तू (आरिस्टाटिल), सुकरात (साकरटीज़) इत्यादि।

पुस्तक नाम—दस कैपिटल (Das kapital दास डास) कुरान (कुरआन) इत्यादि।

ट्रेड-नाम—नस कापे (कैफे कफे)।

भाषा-नाम—इटलियन (इतालवी) रूसी (रशन), बंगला (बंगाली) आदि।

संस्था नाम—साहित्य अकादमी (साहित्य एकडमी, एकाडमी)।

महाद्वीप नाम—अमेरिका (अमरीका, अमेरीका), यूरप (योरोप, यूरोप योरप) आदि।

देश नाम—अमरीका (अमेरीका अमेरिका), नेपाल (नपाल), बरतानिया (ब्रिटेन) ब्रह्मा (बरमा), इटली (इटैली) कनाडा (कैनाडा, कैनेडा कनेडा)।

नगर नाम—मास्को (मस्क्वा), लंदन (लंडन), प्राग (प्राहा), ओटवा (ओटावा), ओहियो (ओहायो) आदि।

समुद्र नाम—अटलांटिक, (अतलांतिक ऐटलांटिक)।

नदी-नाम—ह्वांगहो (ह्वांगहे), टेम्ज़ (टेम्स थम्स, थेम्ज़)।

विशिष्ट या पारिभाषिक शब्द—गिल गिर (गिलमिन गिलमिन, गिलमिन) ग्रीनिच (ग्रानिज ग्रानिज ग्रानिज ग्रीनिच) रेल्फ (रेल्फेर, रगोसी रेगास) गडार (गडार) न्ड्राग (निड्राग निड्रीन) आदि।

इस प्रकार की सूची अनन्त बढ़ाई जा सकती है। इस स्थल पर मुख्यतः निम्नांकित समस्याएँ उठती हैं—

(क) अनुवादक इन शब्दों की वर्तनी का अनुसरण करे या उच्चारण का—अपवादों की बात और है किन्तु सामान्यतः शब्द के उच्चारण पर ही ध्वनि की दृष्टि से हमारा ध्यान होना चाहिए। Rousseau Meillet Depot के उच्चारण में हम रूसो मेये देपो कहते हैं, वर्तनी का अनुसरण करें तो उनके हिन्दी रूपान्तरण कुछ और ही होंगे। वस्तुतः जिस नाम की वर्तनी उच्चारण से भिन्न है वह वर्तनी उस भाषा में उस शब्द के पुराने उच्चारण का प्रतिनिधित्व करती है और पुराना उच्चारण पुराने काल का होता है अतः उसका अनुसरण नहीं किया जा सकता। इस बात को एक सामान्य शब्द द्वारा समझाया जा सकता है। अंग्रेजी का एक शब्द है Psychology। यह वर्तनी बता रही है कि प्राचीन काल में इसका उच्चारण रहा होगा 'प्साइकालजी', किन्तु उस आधार पर यह नहीं कहा जा सकता कि मनोविज्ञान को अंग्रेजी में 'प्साइकालजी' कहते हैं अपितु यह कहा जाएगा कि उसे 'साइकॉलजी' कहते हैं। इस प्रकार वर्तमान उच्चारण ही अनुवादक के लिए महत्त्वपूर्ण है। वर्तमान का आशय है जिस काल में लिखित सामग्री का वह अनुवाद कर रहा है। इस दृष्टि से हिन्दी में येस्पसन (जेस्पसन नहीं) व्रुस्कोफ (व्रस्चर नहीं), प्लातोन् (प्लेटो या अफलातून नहीं) शाल (फ्रांसीसी नामों में चार्ल्स नहीं) ऐंदनी (एथनी नहीं) तथा वैग्नेर (वैगनर नहीं) का उच्चारण तथा लेखन में प्रयोग होना चाहिए।

(ख) यदि स्रोत भाषा के किसी शब्द का वास्तविक उच्चारण से भिन्न उच्चारण लक्ष्य भाषा में बहुत प्रचलित हो तो अनुवादक क्या करे—ऐसी स्थिति में प्रचलित उच्चारण को ही अपनाना उचित होगा। अनुवादक कोशिश भी करे तो बहुप्रचलित उच्चारण को हटाकर वह वास्तविक उच्चारण को लाद नहीं सकता। एक बार जिसका प्रचार हो गया, हो गया। इस प्रकार स्रोत भाषा में जो उच्चारण प्रचलित है उसी का प्रयोग अनुवादक को करना चाहिए। उदाहरण के लिए प्लेटो का शुद्ध नाम प्लातोन तथा साक्रेटिज या सुकरात का साक्रातीस है किन्तु हिन्दी में उन्हें क्रमशः प्लातोन या

सार्वकालीन नहीं कहा जा सकता। कुछ अनुवादकों ने ऐसा किया भी है किन्तु इन पंक्तियों का लेखक इससे सहमत नहीं है। अगर यह परम्परा चलाएँ तो कितनों का और कहाँ तक हम मूल नाम स्वीकार सकेंगे।

(ग) लक्ष्य भाषा में एक से अधिक उच्चारणों के प्रचलित होने पर अनुवादक किसे अपनाए—कभी-कभी स्रोत भाषा के किसी शब्द के लक्ष्य भाषा में एक से अधिक उच्चारण प्रचलित होते हैं। ऐसी स्थिति में अनुवादक के लिए तीन सुझाव दिए जा सकते हैं (१) उन उच्चारणों में जिसका प्रयोग सर्वाधिक हो अनुवादक उसी का प्रयोग करे। उदाहरण के लिए रेस्टोरेंट, रेस्तोराँ रेस्त्राँ आदि में वह रेस्त्राँ का प्रयोग कर सकता है। (२) यदि एक से अधिक उच्चारण बहुप्रयुक्त हों तो उनमें जो उच्चारण स्रोत भाषा के ठीक उच्चारण के अधिक निकट हो उसका प्रयोग किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए कालेज तथा कालिज दोनों उच्चारण हिन्दी प्रदेश में बहुप्रयुक्त हैं इनमें कालिज अंग्रेज़ी उच्चारण के अधिक निकट है अतः कालेज की तुलना में कालिज का प्रयोग अनुवादक के लिए अधिक उपयुक्त होगा। (३) कभी कभी ऐसा भी हो सकता है कि स्रोत भाषा के किसी शब्द के एकाधिक उच्चारण लक्ष्य भाषा में इतने अधिक प्रचलित हो जाते हैं कि उस भाषा में दोनों प्रायः पूर्ण स्वीकार से होते हैं। ऐसी स्थिति में दोनों को ही उस भाषा में गृहीत मानकर दोनों में किसी का भी प्रयोग किया जा सकता है चाहे वे मूल उच्चारण के निकट हों या नहीं। उदाहरण के लिए हिन्दी में अमरिका और अमरीका की प्राय यही स्थिति है।

सैद्धान्तिक स्तर पर इस प्रसंग में कुछ प्रश्न और भी उठाए जा सकते हैं। क्या अनुवादक अपने अनुवाद को उच्चारण की दृष्टि से मूल के अधिक निकट लाने के लिए स्रोत भाषा की कोई ऐसी ध्वनि लक्ष्य भाषा में ला सकता है जो लक्ष्य भाषा में न हो। मेरे विचार में अनुवादक को यह अधिकार नहीं है। बोलने में अनुवादक कुछ ऐसी ध्वनि से युक्त शब्दों का प्रयोग कर ले यह दूसरी बात है किन्तु किसी भाषा की ध्वनि-व्यवस्था में परिवर्तन लाने या ध्वनियों की संख्या बढ़ाने का उसे कोई अधिकार नहीं है। यथासाध्य उसे अनुवाद इस रूप में करना चाहिए कि वह लक्ष्य भाषा की ध्वनि व्यवस्था के किसी भी रूप में प्रतिकूल न हो और न उसकी ध्वनि-व्यवस्था में किसी भी रूप में किसी परिवर्तन परिवर्धन की आवश्यकता हो।

किसी भाषा के ठीक उच्चारण के लिए उस भाषा के संयुक्त स्वर, संयुक्त व्यंजन अनुनासिक स्वर स्वरानुक्रम (Vowel

क्रम (Consonant sequence) बलाघात (stress) सुरलहर (Intonation), संगम (juncture) तथा आक्षरिक विभाजन (syllabic division) आदि का ध्यान रखना बहुत आवश्यक है। ध्वनिवैज्ञानिक स्तर पर अनुवादक के लिए यह संकेत बहुत आवश्यक है कि उसे अनुवाद में यथासाध्य उपर्युक्त दृष्टियों से लक्ष्य भाषा की प्रकृति को अपने ध्यान में रखना चाहिए, और कहीं भी स्रोत भाषा की ध्वनि व्यवस्था का उस पर प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। उदाहरण के लिए कोई हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद करने वाला 'गया ?' (अर्थात् क्या वह गया ?) को 'went ?' रूप में अनूदित करके हिन्दी सुरलहर का अंग्रेजी में प्रयोग करके अपने अनुवाद-कार्य की इतिश्री समझ ले तो उसे सफल अनुवादक नहीं माना जाएगा। सफल अनुवादक का ध्यान सदा ही लक्ष्य भाषा की प्रकृति पर होता है और इसे वह किसी भी रूप में परिवर्तित नहीं होने देता।

पुनश्च—

ऊपर ध्वनि के सामान्य रूप के आधार पर बात की जा रही थी। यदि और गहराई में जाकर इस समस्या को हम अधिक वैज्ञानिक स्तर पर लेना चाहें तो स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में ध्वनियों को रखते समय हम ध्वनिग्राम (Phoneme) तथा संध्वनि (allophone) की दृष्टि से विचार करना पड़ेगा। ऐसी स्थिति में अनुवाद की समस्या पर आने के पूर्व ध्वनिग्राम तथा संध्वनि को समझ लेना आवश्यक होगा। यों तो इन दोनों को पूरी गहराई से समझने के लिए इनसे संबद्ध बातों को काफी विस्तार से लिया जाना चाहिए किन्तु अनुवाद के प्रसंग में इन्हें मोटे रूप से समझाकर भी काम चलाया जा सकता है। हम सामान्य प्रयोग में यह प्रायः कहते हैं कि अमुक भाषा में इतने स्वरों तथा इतने व्यंजनों का प्रयोग होता है। ये स्वर तथा व्यंजन सामान्यतः ध्वनिग्राम होते हैं। हर ध्वनिग्राम के वास्तविक भाषा में प्रयुक्त विभिन्न रूपों को ही संध्वनि कहते हैं। उदाहरण के लिए अंग्रेजी में एक व्यंजन ध्वनिग्राम क् है जो कभी तो k, कभी c और कभी q आदि के द्वारा लिखा जाता है। इस क् ध्वनिग्राम की मोटे रूप से तीन संध्वनियाँ हैं (१) क का थोड़ा महाप्राणित रूप जो प्रायः कम्प, कोट जैसे शब्दों में मिलता है (२) क का थोड़ा पश्चोच्चरित रूप जो cow जैसे शब्दों में है तथा जो प्रायः क़ के समान है (३) क का सामान्य रूप जो sky जैसे शब्दों में आता है। इसका आशय यह हुआ कि शुद्ध वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो अंग्रेजी में

क की इन तीन सध्वनियों का ही प्रयोग होता है और इन तीनों सध्वनियों के समूह को क् ध्वनिग्राम कहा जाता है। अर्थात भाषा में उच्चारण करते समय हम वास्तविक रूप में सध्वनियों का ही उच्चारण करते हैं, ध्वनिग्राम का नहीं। ध्वनिग्राम तो एक वर्ग की सध्वनियों का प्रतिनिधि माना है। अर्थात् अंग्रेज़ी में क,[1] क,[2] क[3] सध्वनियों का क ध्वनिग्राम प्रतिनिधि है। प्रयोग क[1], क[2] क[3] का होता है, अर्थात् संक्षेप में वर्ग के सदस्यों के नाम न लेकर प्रतिनिधि का ही नाम लेते हैं। इसे यों भी कहा जा सकता है कि हर ध्वनिग्राम के अंतर्गत एकाधिक सध्वनियाँ होती हैं जो भाषा विशेष में प्रयुक्त होती हैं। जब हम किसी भाषा में कुछ स्वरों और कुछ व्यंजनों के प्रयुक्त होने की बात करते हैं तो ये स्वर-व्यंजन तत्वतः ध्वनिग्राम ही होते हैं किंतु वास्तविक रूप से प्रयोग इन ध्वनिग्रामों का न होकर इनकी विभिन्न सध्वनियों का होता है। एक उदाहरण हिंदी से लें। हिंदी में एक व्यंजन ध्वनिग्राम ल है। इसकी कई सध्वनियाँ हैं, जैसे ल[1] (लो लोटा, लोर आदि में) ल[2] (लू लूट आदि), ल[3] (ला लाठी, लाट आदि में), ल[4] (वाल्टी कुलटा, उलटी आदि में) आदि। ये सभी ल सध्वनियाँ आपस में थोड़ी-बहुत भिन्न हैं। हिंदी में वास्तविक रूप में इन्हीं ल सध्वनियों का प्रयोग होता है, किंतु हम जब कहते हैं कि हिंदी में एक व्यंजन ल है तो हम ल ध्वनिग्राम की बात करते हैं जो विभिन्न ल सध्वनियों का प्रतिनिधि है।

इस आधार पर यह स्पष्ट है कि हर भाषा में प्रयोग सध्वनियों का होता है, किंतु अनुवाद में स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में शब्दों को रखते समय हम स्रोत ध्वनिग्राम के स्थान पर लक्ष्य ध्वनिग्राम रखते हैं। अर्थात् स्रोत भाषा में प्रयुक्त सध्वनि से उस ध्वनिग्राम पर जाते हैं जिसका वह सदस्य या उपरूप होती है फिर उस ध्वनिग्राम के स्थान पर लक्ष्य भाषा का निकटतम ध्वनिग्राम लाते हैं और बोलते समय लक्ष्य भाषा में उस स्थिति में प्रयुक्त सध्वनि (लक्ष्य भाषा के ध्वनिग्राम से) का प्रयोग करते हैं। उदाहरण के लिए मान लें अंग्रेज़ी से कोई अनुवाद किया जा रहा है। उसमें pants शब्द है। यदि इसके उच्चारण के अनुरूप हिंदी में बोलना चाहें तो हिन्दी में इसका उच्चारण पैन्टस होगा क्योंकि इसका प अंग्रेज़ी उच्चारण में कुछ महाप्राण है, न् वर्त्स्य है तथा ट् भी वर्त्स्य है। *सध्वनि तथा ध्वनिग्राम* को बीच में लाएं तो क्रम कुछ इस प्रकार होगा—

(क) यदि सुनकर अनुवाद किया जा रहा है तो स्रोत भाषा में शब्द का उच्चारण (सध्वनि के स्तर पर) फट्स→स्रोत भाषा में ध्वनिग्रामों के स्तर

पर उच्चारण पैण्ट- लक्ष्य भाषा में उच्चारण (सध्वनि स्तर पर) पण्ट (क्योंकि हिन्दी में ट वर्त्स्य न होकर प्रतिवेष्टित तालव्य है अत न ण् रूप में उच्चरित होगा। साथ ही उसके अन्त्य स का हिन्दी में लोप हो जाएगा।) इस तरह सध्वनि तथा ध्वनिग्राम के माध्यम से अनुवाद करने से लक्ष्य भाषा में ऐसे शब्द। के उच्चारण में गलती की संभावना नहीं रह जाती।

(ख) यदि किसी लिखित सामग्री से अनुवाद करके बोला जा रहा है तो स्रोत भाषा में शब्द की वर्तनी pants→स्रोत भाषा में शब्द का उच्चारण (सध्वनियों के स्तर पर) पैण्टस→स्रोत भाषा में ध्वनिग्रामों के स्तर पर पैंटस→लक्ष्य भाषा में उच्चारण (सध्वनि के स्तर पर) पेण्ट।

कुछ और उदाहरण हैं स्रोत में वर्तनी mail→स्रोत भाषा में उच्चारण (सध्वनि तथा ध्वनिग्राम स्तर पर) मेइल (एइ संयुक्त स्वर है)→लक्ष्य भाषा में उच्चारण मेल। coat→खोउट (सध्वनि स्तर पर क का थोड़ा महाप्राण रूप ओउ संयुक्त स्वर ट वर्त्स्य)→कोउट (ध्वनिग्राम स्तर पर) →लक्ष्य भाषा में उच्चारण कोट (सध्वनि स्तर पर)। jespersen स्रोत भाषा में येस्प सन् (उच्चारण मोटे रूप में सध्वनि तथा ध्वनिग्राम स्तर पर)→लक्ष्य भाषा में उच्चारण येस्पसन् (स्रोत भाषा की वर्तनी से प्रभावित)। Thermameter→थ मामीटम (अंग्रेजी में इसका उच्चारण सध्वनि तथा ध्वनिग्राम स्तर पर लगभग यही है थ संघर्षी दोनों र लुप्त ट वर्त्स्य)→ लक्ष्य भाषा हिंदी में उच्चारण थमामीटर (सध्वनि स्तर पर संघर्षी थ के स्थान पर स्पर्श थ वर्त्स्य ट के स्थान पर प्रतिवेष्टित तालव्य ट र का आगम वर्तनी के प्रभाव से)।

१०

अनुवाद और अनुलेखन

अनूद्य सामग्री मे दो प्रकार के शब्द मिलते हैं। एक तो वे जिनका अनुवाद किया जाता है और दूसरे वे—जैसे व्यक्तिवाचक संज्ञा या पारिभाषिक शब्द आदि—जिनका अनुवाद नही किया जाता और जिन्हे थोडे-बहुत रूपांतर के साथ प्राय मूल रूप मे ही लक्ष्य भाषा मे लिख दिया जाता है। यहा स्रोत भाषा के इस शब्दो को अनुवाद मे लक्ष्य भाषा मे लिखने की समस्या पर विचार करना है। इसका संबध लिपिविज्ञान से है।

अनुवाद मे ऐसी समस्या दो रूपो मे आती है। यदि अनुवादक किसी से कोई बात सुनकर उसका अनुवाद करके लिख रहा है तो वह स्रोत भाषा की ध्वनि को पहले लक्ष्य भाषा की ध्वनि मे परिवर्तित करता है और फिर लक्ष्य भाषा की उन ध्वनियो के प्रतिनिधि लिपि चिह्नो मे उन्हें लिखता है।

स्रोत भाषा ध्वनि→लक्ष्य भाषा ध्वनि→लक्ष्य भाषा लिपिचिह्न

किंतु यदि वह किसी लिखित सामग्री से अनुवाद कर रहा है तो इस क्रम मे वृद्धि हो जाती है—

स्रोत भाषा लिपिचिह्न→स्रोत भाषा ध्वनि→लक्ष्य भाषा ध्वनि→लक्ष्य भाषा लिपिचिह्न

यहाँ यह उल्लेख्य है कि सामान्यत यह समझा जाता कि लिखित सामग्री से अनुवाद करने मे ऐसे शब्दों मे सीधे स्रोत भाषा लिपिचिह्न के स्थान पर लक्ष्य भाषा लिपिचिह्न रखने से काम चल जाता है—

स्रोत भाषा लिपिचिह्न>लक्ष्य भाषा लिपिचिह्न

किंतु ऐसी धारणा बहुत ठीक नही है। यदि स्रोत भाषा मे शब्द की वतनी उसके उच्चारण के ठीक अनुरूप हो तथा लक्ष्य भाषा मे भी वतनी उस शब्द के उच्चारण के पूर्णत अनुरूप हो तब तो ऐसा हो सकता है, किंतु वतनी और उच्चारण की यह द्विपक्षी अनुरूपता यदि मिलती भी तो अपवादत इसीलिए अनुवादक के लिए अधिक अच्छा यही होता है कि वह स्रोत भाषा की वतनी से उसके उच्चारण पर आए फिर स्रोत भाषा के उच्चारण से लक्ष्य भाषा के उच्चारण पर और फिर लक्ष्य भाषा के उच्चारण से लक्ष्य भाषा में उसकी

वतनी पर। ऐसा करने से गलती की संभावना बिल्कुल नहीं रहती। उदाहरण के लिए मान लीजिए अंग्रेजी सामग्री में Jespersen नाम आया है यदि हम सीधे स्रोत भाषा की वतनी से लक्ष्य भाषा की वतनी पर आना चाहें और अक्षर के लिए अक्षर रखें तो हिन्दी अनुवाद म यह नाम हो जाएगा जस्पेर्सेन जबकि इसे हिंदी मे होना चाहिए येस्पसन। Rousseau या Meillet जैसे फ्रांसीसी नामों म तो और भी गडबड हो जाएगी। अक्षर के लिए अक्षर लिखें तो हिन्दी में य नाम हो जाएगे—'राउस्सयउ' तथा 'मेइल्लेत' जबकि वस्तुत इन्ह होना चाहिए रूसो' और 'मेइय'। अत अनुवादक के लिए सबस निरापद रास्ता यही है कि वह स्रोत भाषा की वतनी से स्रोत भाषा में उच्चारण पर आए फिर स्रोत भाषा के उच्चारण को लक्ष्य भाषा के उच्चारण म ले आए और फिर उसे लक्ष्य भाषा म उसके वतनी के नियमानुसार लिखे।

पुनश्च—

यदि इसे और गहराई से देखा जाय तो वैज्ञानिकता का यह तकाजा होगा कि 'अनुवाद और ध्वनिविज्ञान म सकेतित सध्वनि (allphone) और ध्वनिग्राम (Phoneme) को बीच म लाया जाय। अर्थात् यदि अनुवाद किया जा रहा हो तो ध्वनियो को हम सुनेंगे सध्वनि रूप म, उससे हम ध्वनिग्राम पर जाएगे फिर स्रोत भाषा के ध्वनिग्राम के लिए लक्ष्य भाषा के ध्वनिग्राम का निर्धारण करेंगे, और फिर लक्ष्य भाषा के ध्वनिग्राम के लिए अपेक्षित लिपिचिह्न का लेखन मे प्रयोग करेंगे। यदि लिखित रूप से अनुवाद किया जा रहा हो तो—स्रोत भाषा के लिपिचिह्न→उच्चारण के आधार पर स्रोत भाषा की सध्वनियाँ→स्रोत भाषा के ध्वनिग्राम→लक्ष्य भाषा की सध्वनि→लक्ष्य भाषा की ध्वनिग्राम→लक्ष्य भाषा के लिपिचिह्न। उदाहरण के लिए मान लीजिए स्रोत भाषा अंग्रेजी म Coat शब्द है। लिपिचिह्न के लिए (हिंदी म) लिपि चिह्न रखें तो यह 'कोअट' होगा। साथ ही सध्वनि को भी हिंदी मे सीधे नही रखा जा सकता क्योकि वह लगभग खोउट हो जाएगा। क्योकि 'क' का इस स्थिति मे अंग्रेजी उच्चारण कुछ महाप्राण होता है। अत: स्रोत भाषा के लिपिचिह्न Coat→स्रोत भाषा म उच्चारण (सध्वनि मे) खोउट (क ईषत् महाप्राण है ओउ सयुक्त स्वर है, ट वर्त्स्य है)→उच्चारण (ध्वनिग्राम म) कोउट→लक्ष्य भाषा म उच्चारण (सध्वनि म) कोट→लक्ष्य भाषा म उच्चारण (ध्वनिग्राम म) कोट्→लक्ष्य भाषा म लेखन 'कोट'। इसी तरह Jail→जेइल→जेइल→जेल्→जेल→जल।

पुनश्च—

ग्रनुवाद मे ऐसे शब्दो के लेखन म सामायत दो रास्तों का सुझाव दिया जा सकता है

(क) लिप्यतरण (Transliteration)—ग्रथात् स्रोत भाषा की वतनी म प्रयुक्त ग्रक्षरो के स्थान पर लक्ष्य भाषा म प्राप्त समध्वनीय ग्रक्षरों के न होने पर लगभग समध्वनीय ग्रक्षरों उनके भी न होने पर निकटध्वनीय ग्रक्षरो या उनके भी न होने पर 'ग्रनुवाद ग्रौर ध्वनिविज्ञान' शीषक ग्रध्याय मे दी गई बाता के ग्राधार पर जो भी ग्रक्षर उपयुक्त हो उसका प्रयोग करना। कुछ शब्दो (जैसे ग्रग्रेजी Film के लिए हिंदी फिल्म) म यह रास्ता एक सीमा तक काम कर सकता है किंतु ग्रनुवादक सभी शब्दो (जैसे Rousseau) का लिप्यतरण नही कर सकता। प्रश्न यह उठता है कि इस बात का निणय कैसे किया जाय कि कोई शब्द लिप्यतरणीय है या नही। इसका एक मात्र उत्तर यह है कि हमे यह देखना पडेगा कि स्रोत भाषा मे वतनी तथा उच्चारण म ग्रतर तो नहीं है। यदि ग्रतर है तो लिप्यतरण नहीं किया जा सकता किंतु यदि ग्रतर नही है तो लिप्यतरण किया जा सकता है। इस प्रकार इसके निणय का ग्राधार भी स्रोत भाषा के शब्द का उच्चारण ग्रर्थात् ध्वनि ही है।

(ख) प्रतिलेखन (Transcription)—ग्रर्थात् स्रोत भाषा के शब्द की वतनी पर ध्यान न देकर उसके उच्चारण को ग्राधार मान कर लक्ष्य भाषा म उस उच्चारण के ग्रनुरूप लिखना। उदाहरण के लिए Rousseau का स्रोत भाषा मे उच्चारण चूंकि 'रूसो' जैसा है ग्रत हिंदी में उसे 'रूसो' लिखना।

ऊपर हमने देखा कि लिप्यतरण के निणय का ग्राधार भी उच्चारण ग्रर्थात् ध्वनि ही है इसीलिए मेरे विचार में ग्रनुवादक को लिप्यतरण न करके प्रतिलेखन ही करना चाहिए। यह रास्ता निरापद होता है। ऐसा करने से शब्द यदि लिप्यतरणीय है तो ग्रपने ग्राप लिप्यतरण हो जाएगा ग्रौर नही है तो प्रतिलेखन होगा।

अनुवाद और अर्थविज्ञान

अनुवाद का एक मात्र दायित्व है स्रोत भाषा (*Source language*) में व्यक्त किए गए अर्थ (जिसे विचार, भाव या कथ्य (Content) भी कह सकते हैं) को लक्ष्य भाषा (Target language) में यथावत उतार देना और भाषा विज्ञान की शाखा अर्थविज्ञान का एक मात्र कार्य है भाषा के अर्थ पक्ष का अध्ययन। इस तरह अनुवाद और अर्थविज्ञान दोनों ही भाषा के अर्थ पक्ष से सम्बद्ध हैं। यही कारण है कि अनुवाद को अनेक रूपों में अर्थविज्ञान से सहायता लेनी पड़ती है।

भाषाविज्ञान की अन्य शाखाओं की तरह ही अर्थविज्ञान को भी मुख्यतः चार उपशाखाओं में विभक्त कर सकते हैं: एककालिक अर्थविज्ञान, बहुकालिक (ऐतिहासिक) अर्थविज्ञान, तुलनात्मक व्यतिरेकी (अथवा) तथा प्रायोगिक अर्थविज्ञान। अनुवाद को किसी न किसी रूप में यथावसर इन चारों से सहायता लेनी पड़ती है।

एककालिक अर्थविज्ञान में अन्य चीज़ों के अतिरिक्त किसी एक काल में किसी भाषा के अर्थ का अध्ययन विश्लेषण या निर्धारण आदि होता है, यही कारण है कि अनुवादक को सबसे पहले इस एककालिक अर्थविज्ञान की ही सहायता लेनी पड़ती है। अनुवाद एक भाषा में व्यक्त अर्थ का दूसरी भाषा में प्रेषण है, अतः अनुवादक के सामने पहली समस्या आती है अनूद्य सामग्री के अर्थ का ठीक-ठीक निर्धारण। यदि अनुवादक ने मूल सामग्री के अर्थ को ठीक ठीक नहीं समझा तो फिर उसे दूसरी भाषा में ठीक ठीक रख पाना असम्भव होगा। मूल के अर्थ का ठीक ठीक निर्धारण अनुवाद का आधार है। यहीं तनिक भी ग़लती हुई तो अनुवाद निश्चित रूप से ग़लत होगा।

यहाँ दो प्रश्न उठाए जा सकते हैं: (क) अनुवादक को मूल सामग्री के अर्थ का ज्ञान कैसा हो? (ख) उस अर्थ के निर्धारण या उसे समझने में वह किन किन बातों का ध्यान रखे? आगे दोनों प्रश्नों को अलग अलग लिया जा रहा है।

जहाँ तक पहले प्रश्न का सम्बन्ध है किसी सामग्री के अर्थ का ज्ञान कई स्तरों का हो सकता है। एक अल्पपढ़ (जो पढ़ने की दृष्टि से अनपढ़ तथा

पढ़े लिखे के बीच में है) व्यक्ति धर्मलाभ के लिए टो टोकर रामचरित मानस से कुछ अंश रोज नहा धोकर पढ़ता है और कुछ थोड़ा बहुत अर्थ समझ लेता है। एक दूसरा व्यक्ति जो अंग्रेजी भाषा अच्छी तरह जानता नहीं, किंतु अंग्रेजी फिल्मों को देखते-देखते इतना अभ्यस्त हो जाता है कि संवादों के हर शब्द को न समझते हुए भी कहानी तथा संवादों का सार समझ जाता है। प्रसाद जी का 'आंसू' १७ १८ वर्ष की आयु में मुझे पूरा कंठस्थ हो गया था। उसे पढ़ने में बहुत रस मिलता था। अब पढ़ता हूँ तो पता चलता है कि उस समय उसे मैं ठीक प्रकार से नहीं समझ सका था। हिंदी-साहित्य के अनेक अध्यता प्रसाद के स्कंदगुप्त चंद्रगुप्त को पढ़ते हैं किंतु उनमें कितने उसे पूरी गहराई से समझ पाते हैं? कहने का आशय यह है कि किसी साहित्यिक कृति को या किसी भी सामग्री को समझने के कई स्तर होते हैं। अनुवादक केलिए अनूद्य कृति या सामग्री को समझने का स्तर उपर्युक्त प्रकार का नहीं होना चाहिए। उसे कृति या सामग्री के अर्थ को पूरी गहराई के साथ—शब्दों के कोशार्थ, लक्ष्यार्थ तथा व्यंग्यार्थ को समझते हुए, शब्दबंधों, पदबंधों, उपवाक्यों, वाक्यों के सामान्य अर्थ तथा अभीप्सित अर्थ तक पहुँचते हुए एवं मुहावरे लोकोक्तियों और विशेष प्रयोगों के शब्दार्थ तथा लक्ष्यार्थ के संबंधों को समझ कर उनका अपेक्षित अर्थ हृदयंगम करते हुए—समझना चाहिए। सिद्धांततः यह मानना पड़ेगा कि किसी कृति को उसकी पूरी गहराई के साथ समझने वाले को ही उसका अनुवाद करने का अधिकार है और किसी कृति का सफल अनुवादक उसे अधिक से अधिक गहराई से जानने वालों में एक होता है।

दूसरा प्रश्न है अनुवादक ठीक अर्थ तक पहुँचने में या ठीक अर्थ के निर्धारण में किन किन बातों का ध्यान रखे या किन किन बातों से सहायता ले। यह प्रश्न एक वृहत्तर प्रश्न से जुड़ा है कि किसी भी भाषा में अर्थ का—चाहे वह शब्द का अर्थ हो या शब्दबंध का या उससे बड़ी भाषिक इकाई का—निश्चयन कैसे किया जाए। अर्थ निश्चयन के लिए अनुवादक को मुख्य रूप से निम्नांकित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

(१) स्थान—अनुवादक का इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि स्रोत भाषा की सामग्री किस स्थान या देश के व्यक्ति द्वारा मूलतः लिखित या कथित है। क्योंकि एक ही शब्द अलग अलग स्थानों पर कभी कभी अलग अर्थ का द्योतक होता है। एक बार पाकिस्तान ने अमरीका से ७० ८० हजार रेलवे स्लीपर खरीदे। अमरीकी अंग्रेजी में रेलवे स्लीपर को टाई (tie) कहते हैं, क्योंकि वह दोनों पटरियों को बाँधे रहता है। किसी अमरीकी

में यह खबर छपी। पाकिस्तान के किसी अंग्रेजी अखबार ने बिना विशेष ध्यान दिए वह खबर ज्यों-की त्यों छाप दी। पाकिस्तानी जनता यह पढ़कर बड़ी आश्चर्य चकित हुई कि अमरीका से इतनी ज्यादा टाइयाँ (गले में बाँधने की) क्यों खरीदी जा रही हैं। वहाँ के किसी उर्दू अखबार में इस लेकर एक संपादकीय निकला, जिसमें इसके लिए सरकार को बहुत बुरा भला कहा गया था कि वह इतनी बड़ी संख्या में बाहर से टाई मँगाकर देश के पैसे को बरबाद कर रही है। यदि पाठकों तथा पाकिस्तान के अंग्रेजी पत्रकारों को यह पता होता कि अमरीका में 'टाई' का अर्थ रेलवे स्लीपर है तो यह गलतफहमी न होती। इस प्रकार के काफी उदाहरण दिए जा सकते हैं। अमरीका में 'बैंक' का अर्थ 'बिल' होता है तथा 'बिल' का अर्थ करेंसी नोट। अमरीकी प्रयोग में टैक्सी को कब पेट्रोल को गैसोलीन आर्थिक वर्ष (financial year) को fiscal year, मोटर कार को आटोमोबील लिफ्ट को एलीवेटर तथा 'सिनेमा' को 'मूवी' कहते हैं। इस प्रसंग में अनुवादक यदि इस बात से परिचित है कि अनूद्य सामग्री अमरीकी है तो वह उसका ठीक अर्थ समझ सकता है, और नहीं तो उससे गलती हो जाना स्वाभाविक है। दिल्ली का व्यक्ति किसी के लिए 'चलता पुरजा' विशेषण का प्रयोग करे तो इसका अर्थ 'धूर्त' होगा, किंतु भोजपुरी प्रदेश के व्यक्ति 'चलता पुरजा' का इस अर्थ में प्रयोग नहीं करते। उनके लिए व्यवहार कुशल चतुर, अपना काम निकालने वाला व्यक्ति चलता पुरजा है। इस तरह दिल्ली भाषी के प्रयोग में यह विशेषण अप्रशंसा का सूचक है तो भोजपुरी भाषा के प्रयोग में प्रशंसासूचक। इंगलैंड के लेखकों की कृति में अंग्रेजी का कार्न शब्द प्रायः गल्ला या अनाज का अर्थ देता है तो अमरीका के लेखकों की कृति में मक्का का। मेरठ या पश्चिमी हिंदी प्रदेश के कई भागों के लेखकों की कृति में मौसा 'मौसी' शब्द भाई के ससुर और सास का भी अर्थ देते हैं किंतु बनारस इलाहाबाद या पूर्वी हिंदी क्षेत्र तथा और पूरब के लेखकों में ये शब्द केवल माँ की बहिन और उसके पति का ही द्योतन करते हैं। 'इया' कुछ हिंदी क्षेत्रों (जैसे ब्रज के कुछ भाग) में माँ के लिए प्रयुक्त होता है तो कुछ (जैसे भोजपुरी क्षेत्र के कुछ भाग) में दादी के लिए। एक भाषा की विभिन्न बोलियों के अनेक शब्दों में भी इस प्रकार के क्षेत्रीय अर्थांतर प्रायः मिलते हैं। ऐसी स्थिति में अनुवादक यदि लेखक के स्थान या देश का ध्यान न रखे तो मूल सामग्री का अनपेक्षित अर्थ ग्रहण करने की वह गलती कर सकता है।

(२) काल—काल का ध्यान रखना भी अर्थ निर्धारण में सहायक होता

है। भाषाओं के इतिहास में हम प्रायः पाते हैं कि काल विशेष में किसी शब्द का अर्थ एक होता है किंतु दूसरे काल में उसमें कुछ परिवर्तन आ जाता है। 'हरिजन' मध्यकाल में भक्त के लिए आता था किंतु अब 'अछूत' के लिए आता है। चौरासी वैष्णवन की वार्ता (सन् १५६८ ई०) में आता है — 'पुरुषोत्तम जोसी को, देहानुसंधान रह्यो नाहीं।' यहाँ 'अनुसंधान' का अर्थ 'सुध बुध' है किंतु आज अनुसंधान 'रिसर्च' का समानार्थी है। इसी वार्ता में आता है —'पाछें हाकिम के मनुष्यन ने गोविन्ददास को अपराध कियो।' यहाँ 'अपराध करना' का अर्थ है 'हत्या करना' किंतु आज 'अपराध करना' कुछ और ही है। बिहारी (१५९५-१६६३) में 'अवधि' का अर्थ 'अंतिम सीमा (extremity)' है —'तो तन अवधि अनूप' किंतु अब यह 'समय-सीमा' है। सूरदास (१४७८-१५८३) में आता है — ज्यों ही त्यों रथ आतुर आवो। यहाँ 'आतुर' का अर्थ 'शीघ्र' या 'जल्दी' है। आज आतुर कुछ और है। रसखानि (रचना काल १६१६) में 'उजागर' का अर्थ 'जाग्रत' है —'रहिये सतसंग उजागर में।' अब उजागर का अर्थ पूर्णतः बदल गया है। किसी भी भाषा में इस प्रकार के सैकड़ों उदाहरण लिए जा सकते हैं।

(३) संदर्भ—अर्थ निर्धारण में संदर्भ को प्रायः सबसे महत्त्वपूर्ण कहा जा सकता है। व्यंग्य के प्रसंग में अन्यत्र संकेत किया जा चुका है कि उसे संदर्भ से ही पहिचाना जा सकता है क्योंकि संदर्भ से विहीन कर देने पर व्यंग्ययुक्त वाक्य व्यंग्यविहीन भी हो सकता है। उदाहरणार्थ 'तुम तो बड़े भले आदमी हो उसके साथ तुम्हारा जाना ठीक नहीं' में 'तुम तो बड़े भले आदमी हो' का व्यंग्यविहीन सामान्य अर्थ है, किंतु 'तुम तो बड़े भले आदमी हो कहा था सुबह आओगे, और आए हो शाम को ठीक १२ घंटे बाद' में इसका व्यंग्यपूर्ण प्रयोग है, अतः अर्थ ठीक उल्टा है। अंग्रेजी में बिछुड़ने के प्रसंग में प्रयुक्त so long तथा किसी की लंबाई के प्रसंग में प्रयुक्त so long एक नहीं हैं। पहले का अर्थ 'अच्छा !' है तो दूसरे का 'इतना लंबा'। शब्दों के स्तर पर भी संदर्भ अर्थ निर्धारक होता है। उदाहरण के लिए संस्कृत में 'सैंधव' का अर्थ 'नमक' तथा 'घोड़ा' दोनों होता है। संदर्भ से ही यह पता लगाया जा सकता है कि अनुवादक उसे क्या समझे। मोटे ढंग से यह कह देना पर्याप्त होगा कि जितने भी शब्द, पद, पदबंध, उपवाक्य ऐसे हैं जिनके कोशार्थ, व्यंग्यार्थ, सुरलहर (Intonation) आदि किसी भी कारण से एकाधिक अर्थ हो सकते हैं, संदर्भ से जोड़ने पर ही कोई एक (अपेक्षित) अर्थ देते हैं। बिना संदर्भ पर ध्यान दिए उनके अपेक्षित अर्थ का निर्धारण नहीं हो सकता। भार-

सीय परंपरा में संयोग ('शंख चक्र लिए हरि' में 'हरि' का अर्थ बन्दर या सांप नहीं अपितु विष्णु), विप्रयोग ('शंखचक्ररहित हरि' में भी हरि=विष्णु), विरोध (कर्णार्जुनों में अर्जुन=पार्थ पांडवों में एक। वृक्ष नहीं), प्रयोजन ('स्थाणुभज' में 'स्थाणु' का अर्थ खंभा नहीं अपितु शिव') औचित्य (जिस प्रसंग में जो उचित हो) सामर्थ्य (जैसे 'मधुमत्त कोकिल' में 'मधु' का अर्थ 'वसंत' होगा, शहद नहीं। शहद में मस्त करने की शक्ति नहीं है) आदि भी अर्थ निर्धारण में सहायक कहे गए हैं। मैं इन सभी को संदर्भ के ही अन्तर्गत रखने के पक्ष में हूँ। उपर्युक्त उदाहरणों में संदर्भ से ही विप्रयोग, विरोध साहचर्य आदि का पता चलता है, अतः इन्हें संदर्भ के बाहर नहीं रखा जा सकता। हाँ संदर्भ के भीतर ये या इस प्रकार के अन्य और भी भेद आवश्यकतानुसार माने जा सकते हैं।

(४) लिंग के आधार पर भी कई भाषाओं में अर्थ निर्धारण में सहायता मिलती है। उदाहरण के लिए संस्कृत में 'मित्र' शब्द के दो अर्थ हैं सूर्य, दोस्त। लिंग के आधार पर इस शब्द के अर्थ का निर्धारण सरलता से किया जा सकता है। 'मित्र' शब्द यदि पुल्लिंग में प्रयुक्त हुआ हो तो उसका अर्थ 'सूर्य' होगा तथा नपुंसक लिंग में हुआ हो तो 'दोस्त' होगा। इसी तरह 'आम्र' शब्द वृक्ष विशेष के अर्थ में पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है तथा फल विशेष के अर्थ में नपुंसक लिंग में। 'गो' स्त्रीलिंग में 'गाय' का अर्थ देता है तथा पुल्लिंग में 'बैल' का।

(५) वचन—कुछ भाषाओं में एकवचन में शब्द विशेष का अर्थ कुछ होता है तथा बहुवचन में कुछ और। उदाहरणार्थ अंग्रेजी में wood woods, air airs, water waters iron irons जैसे काफी शब्द हैं जिनमें अर्थ भेद है। अनुवादक को अर्थ निर्धारण में इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए नहीं तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। हिन्दी में एक व्यक्ति के लिए (एकवचन में) भी कहा जाता है 'बेचारों ने मेरी बड़ी मदद की'। यहाँ 'बेचारों' एकवचन है बहुवचन नहीं। इसी तरह 'मैंने उनके दर्शन किए' में 'दर्शन' एकवचन है यद्यपि उसका प्रयोग बहुवचन में हुआ है।

(६) समास—अनेक समस्त पदों के अर्थ मूल शब्दों के अर्थ से भिन्न हो जाते हैं। उदाहरण के लिए 'जल' और 'वायु' के अर्थ से 'जलवायु' का अर्थ नहीं जाना जा सकता। अतः समस्त पदों के अर्थ निर्धारण में अनुवादक को सतर्कता बरतनी चाहिए। मूल शब्दों के अर्थ से कोई अनुवादक परिचित

हो और समस्त रूप में जो अलग अर्थ है, उससे परिचित न हो तो गलती हो जाने की प्राय सम्भावना रहती है। गृहयुद्ध, लोकसभा, राज्यसभा, आदि समस्त पद इसी प्रकार के हैं।

(७) उपसर्ग और प्रत्यय—इनके कारण भी अर्थ परिवर्तित, सीमित या विशेष हो जाता है, अत अनुवादक का ध्यान अर्थ निर्धारण के समय इन पर भी जाना चाहिए। उदाहरण के लिए 'आहार' 'विहार' 'सहार' 'प्रहार' या क्रोधी' क्रोधित आदि शब्द देखे जा सकते हैं।

(८) शब्द शक्ति—शब्दों का सर्वदा वाच्यार्थ ही नहीं लिया जाता, अपेक्षानुसार लक्ष्यार्थ और व्यग्यार्थ का भी ध्यान रखना पड़ता है। 'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी आँचल में है दूध और आँखो मे पानी' मे आँचल न तो आँचल' है और न पानी 'पानी'। 'राम बडा गधा है' मे 'गधा' 'गधा' नही है। इस प्रकार अनुवादक को इस बात पर भी ध्यान देना आवश्यक है कि अनूद्य सामग्री मे किन किन शब्दो का क्या क्या अर्थ लिया जाय अभिधार्थ लक्ष्यार्थ, व्यग्यार्थ। 'पूरा गाँव भूख से मर रहा है' मे मरने वाला 'गाँव' नही है गाव के लोग' हैं।

(९) व्यग्य—व्यग्य मे कहा गया वाक्य प्राय अपने मूल अर्थ का उलटा अर्थ देता है। ऐसे स्थलो पर अनुवादक ने यदि व्यग्य को व्यग्य न समझकर उसका सीधे अनुवाद कर दिया तो अनुवाद मूल का ठीक उल्टा हो जाता है। उदाहरण के लिए 'चतुर हो तो ऐसा देखो तो अपना काम किस खूबी से निकाल लिया' का प्रयोग सामान्य एव व्यग्य दोनो ही दृष्टियो से हो सकता है। किसी व्यक्ति ने सचमुच ही चातुरी के साथ अपना काम निकाल लिया हो तो इसका सामान्य अर्थ होगा, किंतु यदि कोई व्यक्ति अपनी मूर्खता के कारण अपना काम न निकाल सका हो तो इसका अर्थ ठीक उल्टा हो जाएगा। तुम तो बडे अच्छे हो', 'भई वाह क्या सुन्दर वर खोजा है', 'कमाल की पुस्तक लिखी है 'लिखना तो कोई तुम से सीखे तुम तो बडे ही भोले भाले हो 'हाँ तुम तो बडे गदे कपडे पहनते हो, तुम्हारी गरीबी के क्या कहने, खाने-खाने को मुहताज हो 'जी हाँ वदसूरत हो तो तुम जैसा आदि इस प्रकार के सकडो उदाहरण लिए जा सकते हैं। व्यग्य का पता सदर्भ से प्राय लग जाता है किंतु इसके लिए अनुवादक द्वारा सतर्कता अपेक्षित है।

(१०) मुहावरे तथा विशेष प्रयोग—अनूद्य सामग्री मे अनुवादक के लिए इन दोनो को पहचानना बहुत आवश्यक है क्योंकि प्राय इनके अलग अलग शब्दो के अर्थ के आधार पर अपेक्षित अर्थ को ज्ञात नहीं किया जा सकता।

उदाहरण के लिए पार्टी पार्टी होना या to throw a party अनेक मुहावरे तथा विशेष प्रयोग हैं। इनमें पार्टी को पकड़ो अनुवादक शब्द समझकर ठीक अर्थ नहीं जान सकता न भी को पाना समझकर फि) अनुवादक अपेक्षित अर्थ तक पहुँच सकता है। इस प्रकार अर्थ के निश्चयनार्थ अनुवादक के लिए यह आवश्यक है कि वह सामान्य शब्द तथा सामान्य प्रयोगों से अलग मुहावरेदार अभिव्यक्तियों तथा विशिष्ट प्रयोगों को पहचाने तथा सन्दर्भ में अलग उनका अर्थ समझे।

(११) बलाघात (stress)—बलाघात के कारण भी कुछ भाषाओं में अन्तर पड़ जाता है। उदाहरण के लिए रूसी भाषा में Zamok शब्द में बलाघात यदि a पर होगा तो इस शब्द का अर्थ होगा किला किन्तु यदि बलाघात o पर होगा तो इसका अर्थ ताला होगा। muka ruka आदि कई अन्य रूसी शब्दों में भी बलाघात परिवर्तन से अर्थ-परिवर्तन की बात देखी जाती है। अंग्रेजी में कई शब्द संज्ञा तथा क्रिया दोनों होते हैं। उनमें भी बलाघात का अन्तर होता है। जैसे present में पहली ई पर बलाघात हो तो यह शब्द संज्ञा होगा किन्तु दूसरी ई पर हो तो क्रिया होगा। अनुवादक को ऐसी भाषाओं से अनुवाद करते समय ठीक अर्थ जानने के लिए बलाघात का ध्यान रखना चाहिए। दुभाषिये के रूप में अनुवादक को बलाघात का पता उच्चारण पर ध्यान देने से चल जाता है। लिखित भाषा में अनुवाद करते समय इसका पता विशेष चिह्न या प्रसंग से चलता है।

वाक्य स्तर पर भी बलाघात का ध्यान रखना आवश्यक है। मैं इलाहाबाद नहीं जा रहा में यदि इलाहाबाद पर बलाघात होगा तो इसका एक अर्थ होगा किन्तु यदि नहीं पर होगा तो इसका दूसरा अर्थ हो जाएगा। मोहन आया और खाना खाकर चला गया में और and का अर्थ दे रहा है किन्तु यदि उस पर बल दें तो उसका अर्थ more या an other हो सकता है। इस तरह ठीक अर्थ समझने के लिए बलाघात पर ध्यान देना भी आवश्यक है।

(१२) सुरलहर (Intonation)—चीनी आदि कई तान भाषाएँ (Tone language) ऐसी हैं जिनमें सुरलहर में परिवर्तन से शब्द का अर्थ बदल जाता है। उदाहरण के लिए चीनी शब्द मा का उच्चारण एक सुरलहर में किया जाए तो इसका अर्थ घोड़ा होता है दूसरी सुरलहर में एक कपड़ा तीसरी में माँ और चौथी में गाली देना। इसी प्रकार अफ्रीका की एफिक भाषा में ekere didie वाक्य का एक सुरलहर में अर्थ होगा तुम्हारा क्या नाम है? दूसरी में तुम क्या सोचते हो? चीनी भाषा की एक बोली में

'मैन' का विभिन्न सुरलहरों में अर्थ धुआँ, नमक, आँख, हंस होता है। ऐसी भाषाओं से अनुवाद करते समय अनुवादक का ध्यान सुरलहर पर न जाए तो अर्थ का अनर्थ हो जाएगा। हिन्दी आदि अन्य प्रकार की भाषाओं में भी सुर-लहर कभी कभी अर्थ निर्धारण में बड़ा सहायक होता है। 'हाँ' का एक सुर-लहर में सामान्य अर्थ होगा तो दूसरे में 'मत'। 'राम आ गया', 'राम आ गया ?' 'राम आ गया !' में भी अर्थांतर है। इस प्रकार की भाषाओं में लिखित रूप से यदि अनुवाद करना हो तो विराम चिह्न एक सीमा तक अर्थ-निर्धारण में सहायक होता है।

स्रोत भाषा की सामग्री का ठीक अर्थनिर्धारण करने के बाद अनुवादक का ध्यान लक्ष्य भाषा में उसके 'समानार्थी स्वाभाविक अभिव्यक्ति' खोजने की ओर जाता है। इस प्रसंग में भी उसे काफी सतर्कता बरतनी चाहिए ताकि अनूदित सामग्री का लक्ष्य भाषा भाषी ठीक वही अर्थ ग्रहण कर सकें जो मूल सामग्री का स्रोत भाषा भाषी ग्रहण करते हैं। अनुवादक को इस प्रसंग में भी उपर्युक्त बातों (लक्ष्य भाषा के संदर्भ लिंग, वचन, स्थान आदि) का ध्यान रखना चाहिए।

'समानार्थी स्वाभाविक अभिव्यक्ति' का प्रयोग विशेष अर्थ में मैं कर रहा हूँ। इसमें 'समानार्थी' का अर्थ है 'स्रोत भाषा में अभिव्यक्त अर्थ के समान अर्थवाली' तथा 'स्वाभाविक' का अर्थ है लक्ष्यभाषा के स्वभाव या प्रकृति के अनुकूल अर्थात् जो अनुवाद न लगे, लक्ष्यभाषा की प्रकृति की दृष्टि से अटपटा न लगे, पढ़ने पर लगे कि उस भाषा में ही वह मूलतः लिखी गई है। इस तरह 'समानार्थी' अर्थविज्ञान से सम्बद्ध है तथा 'स्वाभाविक' शब्द, रूप मुहावरे तथा वाक्य रचना आदि से अर्थात् भाषा की व्यवस्था से।

गहराई में विचार करें तो 'समानार्थी अभिव्यक्ति' भी दो प्रकार की हो सकती है (क) ठीक वही अर्थ वाली अभिव्यक्ति जो स्रोत-सामग्री में है। इसे हम लोग 'एकार्थी' (स्रोत तथा लक्ष्य, दोनों अर्थ की दृष्टि से एक हो) भी कह सकते हैं। (ख) 'निकटतमार्थी' अर्थात् मूल के निकटतम अर्थ रखने वाली।

समानार्थी { एकार्थी
निकटतमार्थी

यह बात ध्यान देने की है कि स्रोत और लक्ष्य भाषा विशेष की विशिष्ट सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के कारण अनुवाद प्रायः निकटतमार्थी ही हो पाते हैं, एकार्थी अपेक्षाकृत बहुत कम होते हैं।

उदाहरण के लिए पानी पानी होना या to throw a party क्रमशः मुहावरे तथा विशेष प्रयोग हैं। इनमें पानी को अंग्रेजी अनुवादक वाटर समझकर ठीक अर्थ नहीं जान सकता न थ्रो को फेंकना समझकर हिंदी अनुवादक अपेक्षित अर्थ तक पहुँच सकता है। इस प्रकार अर्थ के निश्चयनार्थ अनुवादक के लिए यह आवश्यक है कि वह सामान्य शब्दों तथा सामान्य प्रयोगों से अलग मुहावरेदार अभिव्यक्तियों एवं विशिष्ट प्रयोगों को पहचाने तथा शब्दार्थ से अलग उनका अर्थ समझे।

(११) बलाघात (stress)—बलाघात के कारण भी कुछ भाषाओं में अन्तर पड़ जाता है। उदाहरण के लिए रूसी भाषा में Zamok शब्द में बलाघात यदि a पर होगा तो इस शब्द का अर्थ होगा किला किंतु यदि बलाघात o पर होगा तो इसका अर्थ ताला होगा। muka, ruki आदि कई अन्य रूसी शब्दों में भी बलाघात परिवर्तन से अर्थ परिवर्तन की बात देखी जाती है। अंग्रेजी में कई शब्द संज्ञा तथा क्रिया दोनों होते हैं। उनमें भी बलाघात का अंतर होता है। जैसे present में पहली ई पर बलाघात हो तो यह शब्द संज्ञा होगा किंतु दूसरी ई पर हो तो क्रिया होगा। अनुवादक को ऐसी भाषाओं से अनुवाद करते समय ठीक अर्थ जानने के लिए बलाघात का ध्यान रखना चाहिए। दुभाषिये के रूप में अनुवादक को बलाघात का पता उच्चारण पर ध्यान देने से चल जाता है। लिखित भाषा से अनुवाद करते समय इसका पता विशेष चिह्न या प्रसंग से चलता है।

वाक्य स्तर पर भी बलाघात का ध्यान रखना आवश्यक है। मैं इलाहाबाद नहीं जा रहा में यदि इलाहाबाद पर बलाघात होगा तो इसका एक अर्थ होगा किंतु यदि नहीं पर होगा तो इसका दूसरा अर्थ हो जाएगा। मोहन आया और खाना खाकर चला गया में और and का अर्थ दे रहा है किंतु यदि उस पर बल दें तो उसका अर्थ more या another हो सकता है। इस तरह ठीक अर्थ समझने के लिए बलाघात पर ध्यान देना भी आवश्यक है।

(१२) सुरलहर (Intonation)—चीनी आदि कई तान भाषाएँ (Tone language) ऐसी हैं जिनमें सुरलहर में परिवर्तन से शब्द का अर्थ बदल जाता है। उदाहरण के लिए चीनी शब्द मा का उच्चारण एक सुरलहर में किया जाए तो इसका अर्थ घोड़ा होता है दूसरी सुरलहर में एक कपड़ा तीसरी में माँ और चौथी में गाली देना। इसी प्रकार अफ्रीका की 'एफिक' भाषा में ekere didie वाक्य का एक सुरलहर में अर्थ होगा तुम्हारा क्या नाम है? दूसरी में तुम क्या सोचते हो? चीनी भाषा की एक बोली में

येन' का विभिन्न सुरलहरों में अर्थ धुआ, नमक, आँख, हंस होता है। ऐसी भाषाओं से अनुवाद करते समय अनुवादक का ध्यान सुरलहर पर न जाए तो अर्थ का अनर्थ हो जाएगा। हिन्दी आदि अन्य प्रकार की भाषाओं में भी सुर-लहर कभी कभी अर्थ निर्धारण में बड़ा सहायक होता है। 'हाँ' का एक सुर लहर में सामान्य अर्थ होगा तो दूसरे में 'मत'। 'राम आ गया', 'राम आ गया ?' 'राम आ गया !' में भी अर्थान्तर है। इस प्रकार की भाषाओं में लिखित रूप से यदि अनुवाद करना हो तो विराम चिह्न एक सीमा तक अर्थ-निर्धारण में सहायक होता है।

स्रोत भाषा की सामग्री का ठीक अर्थनिर्धारण करने के बाद अनुवादक का ध्यान लक्ष्य भाषा में उसके 'समानार्थी स्वाभाविक अभिव्यक्ति' खोजने की ओर जाता है। इस प्रसंग में भी उसे काफी सतर्कता बरतनी चाहिए ताकि अनूदित सामग्री का लक्ष्य भाषा भाषी ठीक वही अर्थ ग्रहण कर सकें जो स्रोत सामग्री का स्रोत भाषा भाषी ग्रहण करते हैं। अनुवादक को इस प्रसंग में भी उपर्युक्त बातों (लक्ष्य भाषा के संदर्भ लिंग, वचन, स्थान आदि) का ध्यान रखना चाहिए।

'समानार्थी स्वाभाविक अभिव्यक्ति' का प्रयोग विशेष अर्थ में मैं कर रहा हूँ। इसमें समानार्थी का अर्थ है स्रोत भाषा में अभिव्यक्त अर्थ के समान अर्थवाली तथा स्वाभाविक का अर्थ है 'लक्ष्यभाषा के स्वभाव या प्रकृति के अनुकूल अर्थात् जो अनुवाद न लगे लक्ष्यभाषा की प्रकृति की दृष्टि से अट-पटा न लगे, पढ़ने पर लगे कि उस भाषा में ही वह मूलतः लिखी गई है। इस तरह समानार्थी अर्थविज्ञान से सम्बद्ध है तथा 'स्वाभाविक' शब्द, रूप मुहा-वरे तथा वाक्य रचना आदि से अर्थात् भाषा की व्यवस्था से।

गहराई में विचार करें तो 'समानार्थी अभिव्यक्ति' भी दो प्रकार की हो सकती है (क) ठीक वही अर्थ वाली अभिव्यक्ति जो स्रोत-सामग्री में है। इसे हम लोग 'एकार्थी' (स्रोत तथा लक्ष्य दोनों अर्थ की दृष्टि से एक हों) भी कह सकते हैं। (ख) निकटतमार्थी' अर्थात् मूल के निकटतम अर्थ रखने वाली।

समानार्थी { एकार्थी / निकटतमार्थी }

यह बात ध्यान देने की है कि स्रोत और लक्ष्य भाषा विशेष की विशिष्ट सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के कारण अनुवाद प्रायः निकटतमार्थी ही हो पाते हैं, एकार्थी अपेक्षाकृत बहुत कम होते हैं।

एकार्थी अभिव्यक्ति' तथा निकटतमार्थी अभिव्यक्ति पर यहाँ कुछ गहराई से विचार करने की आवश्यकता है। ये अभिव्यक्तियाँ यों तो शब्द, पदबंध, पद, वाक्यांश, उपवाक्य, वाक्य, मुहावरा, लोकोक्ति, विशिष्ट प्रयोग आदि सभी स्तरों पर हो सकती हैं, किंतु यहाँ केवल शब्द स्तर पर ही उनके विभिन्न पक्षों और कोटियों को स्पष्ट किया जा रहा है। अन्य स्तरों पर भी इसी प्रकार उन्हें देखा और समझा जा सकता है।

मान लें स्रोत भाषा का एक शब्द 'क' है तथा लक्ष्य भाषा में उसके लिए 'ख' शब्द उपलब्ध है। हर शब्द की अपनी अर्थ परिधि होती है। इन दोनों की अर्थ परिधियाँ मान लें ये हैं—



अब यदि दोनों के अर्थ बिल्कुल एक हैं तो 'क' के लिए अनुवाद में 'ख' को रखना 'एकार्थी अभिव्यक्ति' होगी। किन्तु यदि दोनों में थोड़ा भी अन्तर है तो अर्थ की दृष्टि से वे एक न होकर मात्र 'निकट' माने जाएँगे। किन्तु जैसा कि ऊपर कहा गया स्रोत भाषा के 'क' शब्द के लिए लक्ष्य भाषा में 'ख' ही निकटतम शब्द है अतः उसे निकटतमार्थी अभिव्यक्ति कह सकते हैं।

एकार्थी अभिव्यक्ति में दोनों शब्दों की अर्थ परिधि समान होगी। एक के द्योतक वृत्त को दूसरी के द्योतक वृत्त के ऊपर रखें तो कोई अंतर नहीं मिलेगा। एक दूसरे के ठीक ऊपर आ जाएगा



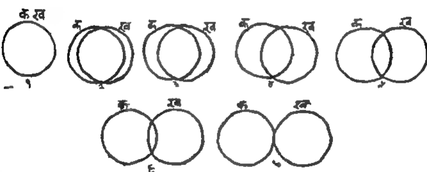
किन्तु निकटतमार्थी अभिव्यक्ति के अनेक भेद हो सकते हैं। हो सकता है कि स्रोत भाषा के शब्द के लिए लक्ष्य भाषा में प्राप्त शब्द अर्थ परिधि की दृष्टि से थोड़ा ही भिन्न हो। ऐसी स्थिति में उनके द्योतक वृत्तों द्वारा उनकी समानता तथा अन्तर को यों दिखाया जा सकता है—



इस रेखाचित्र से स्पष्ट है कि 'क' के अर्थ का बिंदुयुक्त भाग 'ख' मे नहीं आ रहा है तथा 'ख' का बिंदुयुक्त अंश 'क' मे नही आ रहा। अर्थात् बीच के बिंदुविहीन अंश से द्योतित अर्थ ही दानो मे समान है, बिंदुयुक्त रेखांकित अंश अपने अपने अलग हैं। दो भाषाओं के समान शब्दो की अर्थ की दृष्टि से तुलना की जाए तो इस प्रकार कम या अधिक अंतरो के अनेक भेद हो सकते हैं। चार प्रकार के अंतरो के आधार पर उन्हें यो दिखाया जा सकता है—



यदि एकार्थी, निकटतमार्थी तथा भिन्नार्थी को एक साथ दिखाना चाहे तो—



१ मे 'क' 'ख' एक दूसरे पर हैं अर्थात् दोनो एकार्थी हैं। जैसे अंग्रेजी one तथा हिन्दी एक। निकटतमार्थी २ से ६ तक हैं। २ मे क' 'ख' म अर्थ की निकटता अधिक है किन्तु ३ ४ ५, ६ म वह क्रमश कम होती गई है। ७ म दोनों अलग अलग हैं, भिन्नार्थी हैं अर्थात् ७ मे दो ऐसे शब्द आएँगे जिनमे अर्थ की समानता है ही नहीं।

'१' सर्वोत्तम अनुवाद कहा जाएगा, २ ३, ४, ५ ६ क्रमश एक दूसरे मे खराब माने जाएगे। किन्तु अनुवाद करते समय १ के न मिलने पर २, २ के न मिलने पर ३ तथा आगे इसी प्रकार (अंतत ६ से) काम चलाना पड़ता है। यहाँ तो निकटतमार्थी की ये पाँच (२ ३ ४, ५, ६) स्थितियाँ दिखाई गइ। ऐसी और अधिक या कम स्थितियाँ भी हो सकती हैं।

अब तक हम लोग अनुवाद की दृष्टि से स्रोत भाषा की सामग्री और

भाषा में उसके रूपांतर के बीच अर्थ की समानता पर एक दृष्टि से एक दिशा में विचार कर रहे थे। इस समस्या पर एक दूसरी दिशा में भी विचार किया जा सकता है। स्रोत भाषा के शब्द की अर्थ परिधि और लक्ष्य भाषा में उसके स्थान पर प्रयुक्त शब्द की अर्थ परिधि पूर्णतः एक हो तो



दोनों एक दूसरे पर होंगे। किंतु कभी कभी मूल की तुलना में अनुवाद के शब्द की अर्थ परिधि छोटी हो जाती है। ऐसे अनुवाद के दोष को मैं अर्थ संकोच दोष कहना चाहूँगा। मूल सामग्री के क शब्द के स्थान पर अनुवाद में 'ख' शब्द रखें और उसकी अर्थ परिधि कम हो तो अर्थ संकोच दोष हो जाएगा—



मात्रा के आधार पर अर्थ संकोच दोष के अनेक भेद किए जा सकते हैं —







कुछ उदाहरणों द्वारा यह बात और स्पष्ट हो जाएगी। 'गीदड़' शब्द बंगला तथा हिन्दी दोनों भाषाओं में है। यदि हिन्दी अनुवादक बंगला से अनुवाद करते समय बंगला गीदड़ (उस जंगल में बहुत से गीदड़ हैं) के स्थान पर हिन्दी में 'गीदड़' शब्द का प्रयोग करे तो अर्थ-संकोच दोष आ जाएगा क्योंकि बंगला में गीदड़ का अर्थ 'लोमड़ी' और सियार दोनों होता है। जबकि हिन्दी में केवल सियार। मान लें हिन्दी में कहीं प्रयोग है 'मृगराज सिंह'। उर्दू में अनुवाद करने वाला मृग के पुराने अर्थ से परिचित नहीं है और वह 'मृग' को 'हिरन' समझकर 'मृगराज' का उर्दू में अनुवाद कर देता है 'हिरनों का राजा' तो यहाँ उसके अनुवाद में अर्थ-संकोच की गलती मानी जाएगी क्योंकि यहाँ मृग का अर्थ है 'पशु' और अनुवादक 'पशु' के स्थान पर 'हिरन' का प्रयोग कर रहा है—

मानलें एक हिन्दी का वाक्य है 'राम अक्षत लेने गया है'। इसका अंग्रेजी अनुवाद क्या होगा ? वस्तुतः अक्षत, चावल, भात तीनों के लिए सामान्यतः अंग्रेजी मे केवल 'राइस' है। अगर अक्षत के लिए केवल 'राइस' शब्द का प्रयोग करें तो यह गलती अर्थ विस्तार की कही जाएगी, क्योंकि 'राइस' की अर्थ सीमा अक्षत की अर्थ सीमा से बड़ी है। 'राइस' में चावल तथा भात दोनों समाहित हैं जबकि अक्षत मे वे नहीं हैं। ऐसे स्थानों पर 'अक्षत' शब्द का ही अंग्रेजी में भी प्रयोग करके उसे पाद टिप्पणी में समझा देना कदाचित् अच्छा होगा। किंतु मान लें कि ऐसा नहीं किया गया और अक्षत की रचना पर ध्यान देकर अनुवादक उसे unbroekn rice कर देता है तो भी यह अर्थ विस्तार की अशुद्धि होगी क्योंकि सभी unbroken rice को अक्षत नहीं कह सकते।

अनुवाद मे अर्थ की दृष्टि से एक तीसरे प्रकार का दोष भी आ सकता है जिसे अर्थादेश दोष कहा जा सकता है। अनुवाद में अर्थादेश दोष का अर्थ है एक अर्थ वाले शब्द के स्थान पर दूसरे अर्थ वाले शब्द को रख देना। ऊपर 'अंकल' का उदाहरण संकोच और विस्तार दोष के प्रसंग मे लिया जा चुका है। His all the five uncles came वाक्य का अनुवाद 'उसके सभी पाँच चाचे आए' करें और uncle में मूलतः चाचा, फूफा, मामा, ताऊ, मौसा हों तो यह अर्थसंकोच दोष होगा। 'उसके फूफा ने कहा' का अनुवाद अंग्रेजी के His uncle said करें तो अर्थ विस्तार दोष होगा। कुछ स्थितियों मे ऐसे ही शब्दों में अर्थादेश दोष भी हो सकता है। कल्पना कीजिए कि अंग्रेजी का तीन अंकों का कोई नाटक है। पहले अंक मे एक व्यक्ति किसी को संबोधित करता है 'अंकल'—। नाटक के तीसरे अंक में इस बात का अर्थस्पष्ट संकेत है—जिसको पकड़ने के लिए नाटक का अत्यन्त सतर्क पठन आवश्यक है—कि जिसे वह 'अंकल' कह रहा है वह वस्तुतः उसके पिता की बहिन का पति है। किसी व्यक्ति को नाटक के केवल प्रथम अंक का अनुवाद करना है। ऐसे में संभावना तो यह हो सकती है कि वह पूरा नाटक पढ़े बिना पहले अंक का अनुवाद कर दे और तब सहज ही वह 'अंकल' का अनुवाद 'चाचा जी' करेगा। दूसरी सम्भावना यह भी हो सकती है कि वह नाटक आगे भी पढ़े किंतु चूँकि कई रिश्तों को जोड़ने पर यह पता चलता है कि वह व्यक्ति उस के पिता की बहिन का पति है और उसे अनुवाद केवल पहले अंक का करना है वह आगे यों ही केवल सरसरी निगाह से पढ़ रहा है, अतः उसका ध्यान इस रिश्ते की ओर जाता ही नहीं। तीसरी संभावना यह भी हो सकती है कि

उसका ध्यान तो इस रिश्ते की ओर जाता है किन्तु पहले अंक के 'अंकल' शब्द के अनुवाद के प्रसग में वह इसका ध्यान नही रख पाता। इन तीनो स्थितियों मे भी यह असभव नही है कि अनुवादक 'अंकल' शब्द का अनुवाद चाचा जी' करे। ध्यान देने पर यह स्पष्ट हुए बिना नही रहेगा कि महा फ्फा जी' के लिए उसने 'चाचा जी' का प्रयोग कर दिया, अर्थात् 'अंकल श का इस प्रसग म जो मूल अर्थ है उसे वह न पकड सका, और उसके स्थान पर उसने अनुवाद मे दूसरे अर्थ की अभिव्यक्ति कर दी। इस प्रकार अर्थादि शीय भूल हो गई। एक अर्थ के स्थान पर दूसरे अर्थ का आदेश' या 'आगम हो गया।

वस्तुत अंग्रेजी 'अंकल' का हिन्दी मे सामान्य प्रतिशब्द तो 'चाचा जी' है किन्तु अनुवादक को इस शब्द का अनुवाद करने के पूर्व पूरे टेक्स्ट को भली भाति पढकर यह पता लगा लेना चाहिए कि अंकल' कहा जाने वाला व्यक्ति सचमुच चाचा ही है या ताऊ मौसा, फूफा, मामा म से कोई। आंट' या 'आंटी' का 'चाची' या 'चाची जी' अनुवाद करने मे भी इसी प्रकार की अर्थादेशीय भूल हो सकती है क्योकि वे मौसी, मामी बुआ, ताई भी हो सकती हैं। इसी प्रकार कजिन ब्रदर' मौसेरा, चचेरा, फुफेरा या ममेरा कोई भी भाई हो सकता है या 'कजिन सिस्टर मौसेरी चचेरी, फुफेरी या ममेरी कोइ भी बहिन हो सकती है।

वस्तुत जब भी स्रोत भाषा का एक शब्द लक्ष्य भाषा के एक से अधिक शब्दों का प्रतिनिधित्व करता है तो लक्ष्य भाषा मे अनुवाद करते समय इस प्रकार की अर्थादेशीय अशुद्धि की सम्भावना बराबर बनी रहती है। पूरे टेक्स्ट को पढकर कभी कभी तो इस प्रकार की अशुद्धि से बचा जा सकता है, किंतु मान लीजिए पूरे टेक्स्ट मे भी कोई ऐसा सकेत न हो जिससे ठीक अर्थ का पता चल सके, तो फिर अनुवादक को असहाय होकर किसी भी अर्थ को लेकर अपना काम चलाना पडता है, यद्यपि ऐसी स्थिति मे अशुद्धि होने की पूरी सम्भावना रहती है। उदाहरण केलिए मान लीजिए किसी बगीचे का वर्णन है। फारसी मे लिखा है 'घुसते ही बाएँ हाथ यासमीन का लहलहाता पौदा आपका स्वागत करेगा।' सामान्यत यासमीन' का अर्थ चमेली लिया जाता है अत अनुवादक 'यासमीन' का अनुवाद चमेली करेगा, किन्तु हो सकता है कि बगीचे में सचमुच घुसने पर आपको चमेली के स्थान पर जुही मिले, क्योंकि फ़ारसी में जुही को भी 'यासमीन ही कहते हैं। ऐसी गलती से बचने के लिए अनुवादक को हमेशा कोई-न कोई सूत्र मिल ही जाय, कोई आवश्यक नहीं। चमेली और

जुही के लिए अंग्रेजी मे भी एक ही शब्द है 'जस्मिन्'। अत अंग्रेजी अनुवाद म भी इस प्रकार की अनिवार्य गलती हो सकती है।

इस प्रसग म ऐतिहासिक सामग्री के अनुवाद का भी एक उदाहरण देखा जा सकता है। मान लीजिए इतिहास की किसी अंग्रेजी पुस्तक म दो व्यक्तियो के सम्बन्ध पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि एक दूसरे का 'अंकल' था। उन दोनो के सम्बन्धो पर और किसी भी प्रकार की कोई सामग्री या किसी भी प्रकार का कोई सूत्र नही है। हिन्दी अनुवादक के सामने केवल एक ही चारा है कि वह अंकल का अनुवाद 'चाचा' करे। अनूदित सामग्री के प्रकाशित होने के बाद हो सकता है कि कोई नई सामग्री ऐसी मिले जिससे उन दोनो के वास्तविक सम्बन्ध (ताऊ मामा फूफा मौसा) का पता चले और तब इस अनुवाद म अर्थादेशीय दोष आ जाएगा। इसका अर्थ यह है कि अनुवादक से इस प्रकार की अनिवार्य अशुद्धि हो सकती है और हो सकता है कि अशुद्धि का पता बाद म चले या यह भी सम्भव है कि अशुद्धि तो है किन्तु उसका पता कभी भी न चले।

अनुवाद में अर्थादेश दोष के कुछ और भी उदाहरण लिए जा सकते हैं। संस्कृत म 'परिवार' का अर्थ है 'परिजन' या 'नौकर चाकर'। मध्ययुग में परिवार शब्द मे नौकर चाकर के अतिरिक्त कुटुंब का भाव भी आ गया था अर्थात इस शब्द में अर्थ विस्तार हुआ था। आधुनिक हिंदी तक आते आते इस शब्द के अर्थ में मध्ययुग की तुलना में अर्थ संकोच हुआ और अब इसका अर्थ केवल कुटुंब है

मूल संस्कृत
परिवार { नौकर चाकर
×

मध्ययुगीन अर्थ
नौकर चाकर
कुटुंब

आधुनिक हिंदी अर्थ
×
कुटुंब

अब यदि किसी संस्कृत सामग्री का मध्ययुगीन भाषा में अनुवाद करें और मूल सामग्री के 'परिवार' शब्द के स्थान पर अनुवाद में भी 'परिवार' रखें तो अनुवाद में अर्थ विस्तार दोष आ जाएगा यदि मूल मध्ययुग का हो और संस्कृत में अनुवाद करें और 'परिवार' के स्थान पर 'परिवार' शब्द रखें तो अर्थ संकोच दोष आ जाएगा, किंतु यदि संस्कृत मूल का आज की हिंदी में अनुवाद करें और 'परिवार' के स्थान पर 'परिवार' रखें तो अर्थादेश दोष आ जाएगा क्योंकि परिवार का संस्कृत में अर्थ आज के हिंदी अर्थ से सर्वथा भिन्न था। ऐसे अनेक उदाहरण मिल सकते हैं जहाँ दो भाषाओं में अनेकानेक कारणों से समान शब्द होते

हैं, किन्तु उनके अर्थ समान नहीं होते। ऐसी स्थिति में एक भाषा से दूसरी में अनुवाद करते समय मूल भाषा में प्रयुक्त किसी शब्द के स्थान पर लक्ष्य भाषा में भी उसी शब्द का प्रयोग करने से यह दोष प्रायः आ जाता है। जैसा कि आगे हम देखेंगे संस्कृत पतग—हिंदी पतग, संस्कृत शीपक—हिन्दी शीपक, मलयालम उपायास—हिन्दी उपन्यास, मराठी सशोधन—हिन्दी सशोधन, हिन्दी बनिया—उड़िया बाणिया आदि में अर्थ के स्पष्ट अतर हैं। अनुवाद में मूल में प्रयुक्त इन शब्दों के स्थान में लक्ष्य भाषा में भी यदि कोई अनुवादक इन्हीं का प्रयोग करे तो उसका अनुवाद अर्थादेश दोष का शिकार हो जाएगा। इसीलिए अनुवादक को इस प्रकार के समान शब्दों से बहुत सतर्क रहना चाहिए।

दो भाषाओं में शब्द की समानता मुख्यत तीन कारणों से होती है (क) दोनों भाषाएं मूलत एक भाषा से निकली हों। जैसे हिंदी पजाबी सस्कृत-ग्रीक, मलयालम-तेलुगु, मराठी सिंहली। (ख) एक का दूसरी पर प्रभाव पड़ा हो। जैसे सस्कृत हिंदी, फारसी उर्दू, अंग्रेजी हिन्दी पुर्तगाली मराठी। ऐसा भी सभव है कि दोनों ने एक दूसरे को प्रभावित किया हो। जैसे हिन्दी बगाली। (ग) किसी अन्य भाषा का दोनों पर प्रभाव पड़ा हो। जैसे अंग्रेजी का हिंदी पजाबी पर या सस्कृत का मराठी बगाली पर। इस समानता का परिणाम यह होता है कि अनुवादक स्रोत भाषा के किसी शब्द को लक्ष्य भाषा में पाकर अनुवाद में उसे ही रख देने के लोभ का सवरण नहीं कर पाता। किंतु ऐसा प्रायः होता है कि ये समस्रोतीय शब्द अर्थ परिवर्तन के कारण अर्थ की दृष्टि से समान नहीं होते और इस तरह वह अनुवाद कभी तो हास्यास्पद हो जाता है और कभी गलत। मूल सामग्री का भाव उसमें नहीं आ पाता। यहाँ कुछ भाषाओं से सार्थिक अंतरवाले समस्रोतीय समान शब्द को देखा जा सकता है। सस्कृत और हिंदी में काफी शब्द समान हैं, किंतु उन समान शब्दों में ऐसे भी शब्द कम नहीं हैं जो अर्थ की दृष्टि से एक नहीं हैं। सस्कृत 'जघा' का अर्थ 'घुटने और टखने' के बीच का भाग है किंतु हिंदी में इसका अर्थ 'घुटने' और 'कमर' के बीच का भाग 'जाँघ' है। गुजराती जांघ सिंधी उड़िया-पजाबी जघ, असमी-बंगला जाङ, कश्मीरी जंग के अर्थ भी हिंदी के समान हैं। अब यदि सस्कृत से अनुवाद करने में हिंदी, गुजराती या बंगला आदि में इसी शब्द का प्रयोग कर दिया जाय तो अर्थादेश दोष आ जायगा। इसी प्रकार 'शीपक' का सस्कृत में अर्थ सिर है किंतु हिंदी में 'हेडिंग' है। पतग' संस्कृत में 'गुड्डी' को नहीं कहते। 'पदवी' सस्कृत में मार्ग, पद [redacted] किन्तु हिन्दी में 'उपाधि' है। 'प्रणाली' संस्कृत में नाली है किन्तु

अर्थ नहीं है। 'पेट' मराठी में पेला या डब्बा है किंतु हिंदी में इसका नया अर्थ विकसित हो गया है। 'आन्दोलन' 'प्रथा' 'अनुरोध' आदि अन्य अनेक शब्दों के भी हिंदी वाले अर्थ संस्कृत में नहीं हैं। तमिल तथा हिंदी में भी अनेक शब्द समान हैं किंतु अर्थ में पर्याप्त अंतर है। 'चिमनी' तमिल में 'चिमलि' है और उसका अर्थ 'मिट्टी का तेल' है। इसी तरह तमिल में 'चाल' का अर्थ लालच है तथा कुलि (हिंदी कुली) का मजदूरी। किलाम (हिंदी निलाम) का काम इलाका (हिंदी इलाका) का महकमा अनुमति का स्कूल आदि में प्रवेश (admission) भी तथा इनाम का मुफ्त सेवा भी है। मलयालम तथा हिंदी के भी कुछ उदाहरण लिए जा सकते हैं। श्रीमती-श्रीमान मलयालम में 'सम्पन्न' भी है। ऐसे ही 'नर' का अर्थ बूढ़ा आदमी, शासनम् का 'भाषण', तथा रूपा का रुपया। तमिल तेलुगु कन्नड मलयालम में 'उपन्यास' शब्द है किंतु उसका अर्थ इन सभी भाषाओं में 'भाषण' है अर्थात् हिंदी से इन भाषाओं में या इन भाषाओं से हिंदी में अनुवाद करते समय 'उपन्यास' के स्थान पर 'उपन्यास' नहीं रखा जा सकता। गुजराती में 'हल्ला' आक्रमण है जबकि हिंदी में शोर शराबा, 'बावड़ी' गुजराती में 'छोटा कुआँ' है जब कि हिंदी में छोटा ताल, 'बलात्कार' गुजराती में अत्याचार (violence oppression) है जबकि हिंदी में कुछ और तथा 'संशोधन' गुजराती में शोध है जबकि हिंदी में 'सुधार'। 'सड़ना' पंजाबी में 'जलना' है लेकिन हिंदी में 'सड़ना'। असमी में 'दमाक' (हिंदी दिमाग) गुस्सा है 'घाम' पसीना भी है, 'हरकत' हानि भी है, 'विचार' खोज भी है 'विचित्र' सुंदर है तथा 'छाता' छाता भी है। इसी तरह कन्नड में 'कवि' बुद्धिमान भी है। मराठी में 'अबीर' चंदनयुक्त सुगंधित चूर्ण है और 'आबहवा' मौसम भी है। उड़िया में 'काठ' ईंधन है जब कि हिंदी में लकड़ी। 'उजला' (सं० उज्ज्वल) शब्द हिंदी उड़िया दोनों में है किंतु उड़िया में इसका अर्थ धोबी है 'अनाज' (सं० अन्नाद्य) भी दोनों में है पर उड़िया में इसका अर्थ तरकारी या सब्जी है। 'रोजगार' उड़िया में आमदनी या आय का अर्थ देता है, किंतु हिंदी में इससे सर्वथा भिन्न। इसी तरह 'पुष' उड़िया में ९वाँ महीना है किंतु हिंदी 'पूस' १०वाँ। 'फागुण' उड़िया में ११वाँ महीना है किंतु हिंदी 'फागुन' १२वाँ है। उड़िया में 'बणिया' सुनार है, 'चमक' डर या आश्चर्य है, 'जिगर' जिद है, 'नाति' लड़के का लड़का है और 'नानी' बड़ी बहन या बुआ है जबकि हिंदी में इनके अर्थ सर्वथा भिन्न हैं।

निष्कर्षत अनुवादक को अर्थ के स्तर पर इन दोषों (संकोच, विस्तार, आदेश) से यथासाध्य बचने का यत्न करना चाहिए।

अर्थ की दृष्टि से अनुवाद में और भी अनेक बातें ध्यान में रखने की हैं। दो-तीन का संकेत यहाँ किया जा रहा है।

कभी कभी स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा में एक ही अर्थ या भाव के लिए अभिव्यक्ति में समानता नहीं होती। उदाहरण के लिए अंग्रेज़ी में first floor हिंदी में दूसरी मंजिल है और ground floor पहली मंजिल है। असावधान अनुवादक first floor का अनुवाद पहली मंजिल या second floor का दूसरी मंजिल या Third floor की तीसरी मंजिल कर दे तो गलत हो जाएगा। ऐसे ही issuless Couple का अनुवाद असावधानी से निःसंतान माता पिता किया जा सकता है। किंतु वास्तविकता यह है कि संतान पैदा होने के पूर्व Couple माता पिता की संज्ञा का अधिकारी नहीं हो सकता। इसका ठीक अनुवाद—निःसंतान दंपति या पति-पत्नी होगा।

हर भाषा में (अर्थ की) सूचना देने की क्षमता समान नहीं होती। यही कारण है कि एक वाक्य का दूसरी भाषा में अनुवाद आवश्यक नहीं कि उतनी ही सूचनाएँ दे जितनी सूचनाएँ स्रोत भाषा का वाक्य दे रहा है। राम आज कल दवा पी रहा है का अंग्रेज़ी अनुवाद होगा Ram is taking medicine these days किंतु क्या अर्थ के स्तर पर दोनों वाक्य समानार्थी हैं? शायद नहीं। अंग्रेज़ी वाक्य में अर्थ विस्तार हो गया है क्योंकि taking या लेना में 'पीना' भी संभव है और खाना भी। आशय यह है कि यह हिंदी वाक्य अपेक्षाकृत अधिक सटीक (exact) सूचना दे रहा है और अंग्रेज़ी वाक्य की सूचना उतनी सटीक नहीं है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि 'राम आजकल दवा खा रहा है' का भी अंग्रेज़ी अनुवाद यही होगा। इस सटीक सूचना के अभाव के कारण ही अंग्रेज़ी Ram is taking medicine these days को हिंदी में कहना कठिन था—इसीलिए राम आज कल दवा ले रहा है प्रयोग चल पड़ा। यदि यह प्रयोग अंग्रेज़ी के प्रभाव से न चला होता तो अंग्रेज़ी से हिंदी अनुवाद में अर्थादेश दोष आ जाने की संभावना होती ('खाना' के स्थान पर 'पीना' या 'पीना' के स्थान पर 'खाना' के कारण) तथा हिंदी से अंग्रेज़ी अनुवाद में तो अर्थ विस्तार की संभावना है ही। निष्कर्षत स्रोत और लक्ष्य भाषा में सूचना शक्ति के समान न होने पर बहुत सतर्कता रखनी चाहिए नहीं तो अनुवाद दोषपूर्ण हो जाता

१२

अनुवाद और वाक्यविज्ञान

वाक्यविज्ञान भाषाविज्ञान की एक शाखा है जिसमें भाषा के वाक्यों की रचना का अध्ययन होता है और अनुवाद में एक भाषा के वाक्यों का दूसरी भाषा में रूपांतर करते हैं दूसरे शब्दों में एक भाषा की वाक्य रचना को दूसरी भाषा की प्रकृति के अनुकूल वाक्य रचना में परिवर्तित करते हैं इस तरह विभिन्न भाषाओं के वाक्यों के विश्लेषण का विज्ञान वाक्यविज्ञान अनुवाद में निश्चित ही बहुत सहायक हो सकता है।

प्राचीन काल में अनेक लोगों का यह मत था कि अनुवाद शाब्दिक literal होना चाहिए। इस तरह अनुवाद में शब्द का या शब्द स्तर का विशेष महत्त्व था। कुछ यूनानी तथा रोमन अनुवादकों ने बाइबिल के ऐसे ही अनुवाद किए, किन्तु उन शाब्दिक अनुवादों के (भाव तथा शैली की दृष्टि से) अटपटेपन ने यह शीघ्र ही स्पष्ट कर दिया कि अनुवाद में शब्द या शब्द स्तर उतना महत्त्वपूर्ण नहीं होता जितना अर्थ या भाव महत्त्वपूर्ण होता है और अर्थ या भाव शब्द स्तर पर न होकर वाक्य स्तर पर ही होते हैं। वस्तुतः ध्यान देने की बात यह है कि अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में होता है और भाषा की सहज मूलभूत इकाई वाक्य है शब्द नहीं। मनुष्य वाक्यों के माध्यम से ही सोचता बोलता और समझता है। यहाँ तक कि कभी बातचीत में हम एक शब्द का प्रयोग करते भी हैं तो वह एक शब्द भी पूरे वाक्य के संदर्भ में ही बोला और समझा जाता है—

राम—घर चलोगे ?

मोहन—हाँ।

यहाँ हाँ एक शब्द नहीं है। वक्ता और श्रोता दोनों ही के लिए वह हाँ घर चलूँगा वाक्य का संक्षिप्त रूप है। इस तरह भाषा में अर्थ या भाव हमेशा वाक्य स्तर पर ही होते हैं और इसीलिए अनुवाद भी वाक्य का ही होना चाहिए। इससे यह बात स्वतः सिद्ध है कि अच्छा अनुवाद वाक्यविज्ञान

की व्यावहारिक जानकारी के बिना किया ही नही जा सकता।

सम्बद्ध विषय पर निम्नाकित शीर्षकों के अतर्गत विचार किया जा रहा है।

(१) बाह्य-सरचना (Deep Structure) तथा आतरिक सरचना (Surface structure)—भाषाओं मे वाक्यो के सामान्यत एक ही अर्थ होते हैं। जैसे 'राम जा रहा है।' किंतु कुछ वाक्य ऐसे भी होते हैं जिनके एकाधिक अर्थ होते हैं। उदाहरण के लिए एक वाक्य लें—

शीला गानेवाली है।

इस वाक्य के दो अर्थ हैं (१) शीला अब गाएगी, (२) शीला गाने का काम करती है। इसका अर्थ यह है कि बाह्य सरचना में एक वाक्य होता हुआ भी आतरिक सरचना में यहाँ दो वाक्य हैं। एक है 'शीला गाएगी' जिसे 'शीला गानेवाली है' रूप में कहा गया है, और दूसरा है 'शीला गाने का काम या पेशा करती है' और इसे भी 'शीला गानेवाली है' रूप में कहा गया है। आतरिक सरचना में दो वाक्य होने के कारण ही इस वाक्य के दो अर्थ हैं। अनुवादक के लिए यह आवश्यक है कि वह देख ले कि वाक्य कहीं एक से अधिक अर्थोंवाला तो नहीं है, और यदि है तो उसकी आतरिक सरचना के आधार पर उस प्रसग मे अनुवाद करने से पहले उसका ठीक अर्थ निश्चित कर लेना चाहिए और उसी का अनुवाद करना चाहिए। इस बात का ध्यान न रखने वाला अनुवादक अनेकार्थी वाक्यो में एक अर्थ के स्थान पर दूसरे को लेकर अनुवाद करने की गलती कर सकता है।

यहाँ कुछ ऐसे वाक्य या वाक्याश देखे जा सकते हैं, जिनके एकाधिक अर्थ हैं। एकाधिक अर्थ आतरिक रूप में दिखाए गए हैं।

(क) बाह्य—मुझे, तुम्हें दो रुपये देने हैं।
आतरिक—(१) तुम मुझे दो रुपये दोगे।
(२) मैं तुम्हें दो रुपये दूँगा।
(३) तुम मेरे दो रुपये के कर्जदार हो।
(४) मैं तुम्हारा दो रुपये का कर्जदार हूँ।

(ख) बाह्य—मैंने दौड़ते हुए शेर को मारा।
आतरिक—(१) जब मैंने शेर को मारा तो मैं दौड़ रहा था।
(२) जब मैंने शेर को मारा तो शेर दौड़ रहा था।

(ग) बाह्य—मुझे मन भर मिठाई चाहिए।
आतरिक—(१) मुझे एक मन मिठाई चाहिए।
(२) मुझे मन (जी) भर मिठाई चाहिए।

(घ) बाह्य—shooting of the hunter ।
आंतरिक—(१) शिकारी का मारना
(२) शिकारी को मारना
(ङ) बाह्य—मुकुल की पेंटिंग
आंतरिक—(१) मुकुल की बनाई पेंटिंग
(२) पेंटिंग जिसका मालिक मुकुल है ।
(३) पेंटिंग जो मुकुल (के स्वरूप) की है ।
(च) बाह्य—दाढ़ी मुझे अच्छी लगती है ।
आंतरिक—(१) दाढ़ी देखना मुझे अच्छा लगता है ।
(२) दाढ़ी मेरे चेहरे पर अच्छी लगती है ।
(छ) बाह्य—खाते जाओ ।
आंतरिक—(१) खाते हुए जाओ ।
(२) खाकर जाओ ।
(३) go on eating

इस प्रकार के अनेकार्थक वाक्यों या वाक्यांशों के अनुवाद के समय अनुवादक का ध्यान निश्चित रूप में आंतरिक स्तर पर व्यक्त अर्थ पर ही होना चाहिए, अन्यथा, अर्थ का अनर्थ हो सकता है क्योंकि आवश्यक नहीं कि स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा में बाह्य और आंतरिक स्तर पर वाक्य रचना में सवदा समानता हो ।

(२) निकटतम अवयव (Immidiate constituent)—वाक्य जिन विभिन्न पदों या खंडों से बनते हैं उन्हें वाक्य के अवयव कहते हैं। किसी वाक्य का ठीक अर्थ जानने के लिए यह जानना आवश्यक है कि वाक्य में किस अवयव का निकटतम अवयव कौन सा है, क्योंकि निकटतम अवयव के आधार पर ही अर्थ की इकाइयाँ बनती हैं। पहले निकटतम अवयव को समझ लें। एक वाक्य है—

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
राम	का	मित्र	मोहन	श्याम	के	घर	जा	रहा	है।

इसमें १० अवयव हैं। यदि विभिन्न स्तरों पर इनकी निकटता देखें तो १० को ७ में रखा जा सकता है—

राम का	मित्र	मोहन	श्याम के	घर	जा रहा	है।
१	२	३	४	५	६	७

आप फिर इन ७ को ५ में—

राम का मित्र मोहन श्याम के घर जा रहा है।
१ २ ३ ४

फिर ४ को ३ में—

राम का मित्र मोहन श्याम के घर जा रहा है।
१ २ ३

फिर ३ को २ में—

राम का मित्र मोहन श्याम के घर जा रहा है।
१ २

फिर २ को १ में—

राम का मित्र मोहन श्याम के घर जा रहा है।
१

वाक्य में अर्थ की प्रतीति इसी क्रम से निकटतम अवयवों के आधार पर होती है। इसे एक साथ यों भी रख सकते हैं—

राम का मित्र मोहन श्याम के घर जा रहा है।

पद अर्थ के स्तर पर निकटतम अवयव बनते हैं, एक स्थान पर होने के कारण नहीं। उपर्युक्त वाक्य में 'मोहन' तथा 'श्याम' एक साथ आए हैं किन्तु वे निकटतम अवयव नहीं हैं, क्योंकि अर्थ के स्तर पर उनका आपस में सीधा सम्बन्ध नहीं है। Is he going ? वाक्य में Is तथा going दूर दूर हैं, किन्तु वे निकटतम अवयव हैं, क्योंकि अर्थ के स्तर पर वे आपस में सम्बद्ध हैं। अर्थ समझने में निकटतम अवयवों को समझना आवश्यक है। उदाहरणार्थ—

सुन्दर फूल और फल रखे हैं।

में निकटतम अवयवों का विभाजन दो रूपों में सम्भव है, इसीलिए इनके दो अर्थ हैं—

(१) सुदर फूल और फल रस हैं।

(२) सुदर फूल और फल रस हैं।

पहले मे सुदर केवल फूल का विशेषण है किन्तु दूसरे मे वह फूल और फल दोनो का विशेषण है। इस तरह अर्थ इस विभाजन से बधा है या विभाजन इस वाक्य का वक्ता या लेखक के भाव से बधा है। इसीलिए अनेक वाक्यो मे निकटतम अवयवो का सम्बन्ध एकाधिक रूपो मे हो सकता है अत उनके एकाधिक अर्थ हो सकते हैं। निष्कर्षत किसी वाक्य का ठीक अर्थ जानने के लिए अवयवो के आपसी सम्बन्ध जानना आवश्यक है इसीलिए अनुवादक को भी निकटतम अवयवो का ध्यान रखना चाहिए। मान लीजिए हिंदी मे है

सुदर फूल और फल

तथा हम सस्कृत मे अनुवाद करना है। यदि

सुदर फूल और फल

रूप मे मानकर अनुवाद करें तो होगा—

सुदर पुष्प सुदर फल च

किन्तु यदि

सुन्दर फूल और फल

मानें तो अनुवाद होगा—

सुन्दर पुष्प फल च

एक दूसरा उदाहरण लें—

बैठो मत जाओ

यदि

बैठो मत जाओ

निकटतम अन्वय के आधार पर स्पष्ट है कि एक दहाई है 'रात दिन का अंतर' (vast difference) और दूसरी है रात दिन (round the clock) का अनुवाद में इसका ध्यान रखना पड़ेगा।

(३) सहप्रयोग—वाक्य में सहप्रयोग का अपना विशेष महत्व है। 'सहप्रयोग' मेरा अपना बनाया हुआ शब्द है। सहप्रयोग से मेरा आशय यह है कि हर भाषा में शब्द विशेष के साथ विशेष अर्थों में सभी शब्दों का प्रयोग नहीं होता। अनेक पर्यायों में एक या कुछ ही शब्द उस शब्द के साथ उस अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण के लिए हिन्दी में नाश्ता अर्थ में जलपान शब्द प्रयुक्त होता है। यद्यपि जल के पर्याय हिन्दी में पानी नीर, अंबु आदि कई हैं किन्तु नाश्ते के अर्थ में पानी के साथ पानी नीर अथवा अंबु (पानीपान नीरपान अंबुपान) का सहप्रयोग नहीं हो सकता। होता है केवल जल (जलपान) का सहप्रयोग। अर्थात् इस विशेष अर्थ में हिन्दी में जल और पान इन दो का ही सहप्रयोग सम्भव है। सहप्रयोग का सभी भाषाओं में समास और वाक्य रचना के स्तर पर महत्व है। ऊपर का उदाहरण समास का था। वाक्य में भी उदाहरण लिया जा सकता है। उदाहरण के लिए हिन्दी में 'भोजन और खाना पर्याय हैं किंतु खाने के अर्थ में खाना धातु का प्रयोग इन दोनों के साथ नहीं हो सकता। खाना खाना तो ठीक है किंतु भोजन खाना नहीं हो सकता। भोजन का सहप्रयोग खाना के साथ नहीं अपितु करना के साथ होता है। बंगला में सिगरेट खाते हैं पर हिन्दी में पीते हैं। अंग्रेजी में to play a radio होता है पर हिन्दी में रेडियो बजाना। इसी तरह हिन्दी में 'चाय पीना' किन्तु अंग्रेजी में टी के साथ ड्रिंक का सहप्रयोग नहीं है टेक (to take tea) का है। अंग्रेजी में to play on violin पर हिंदी में वायलिन बजाना। सहप्रयोग की दृष्टि से हिन्दी अंग्रेजी के कुछ वाक्य दर्शनीय हैं —

(१) बत्ती जलाओ।

Burn the lamp

light the lamp (गलत)

(२) उसने मैच में एक गोल किया।

He made a goal in the match

He scored a goal in the match (गलत)

(३) The doctor felt my pulse

डाक्टर ने मेरी नब्ज महसूस की। (गलत)

संस्कृत में अनुवाद करना है। अनुवादक यदि 'बुद्धिमान् महिला' का प्रयोग करेगा तो गलत हो जाएगा। उसे 'बुद्धिमती महिला' कहना पड़ेगा। इसी प्रकार संस्कृत में 'सुंदर स्त्री' न होकर 'सुन्दरी स्त्री' होगा। इस सावधानी के साथ ही इस बात की सावधानी भी आवश्यक है कि सादृश्य के कारण ऐसे लगिक रूप न बन जाएं जो अपरिनिष्ठित हों। उदाहरण के लिए हिन्दी-उर्दू में अच्छा अच्छी-अच्छे या बुरा बुरी-बुरे के सादृश्य पर लड़ाका लड़ाकी लड़ाके, सुनहरा-सुनहरी सुनहरे या ताजा ताजी-ताजे का प्रयोग परिनिष्ठित नहीं है। परिनिष्ठित उर्दू में ताजा खबर ठीक है न कि 'ताजी खबर'। इसी तरह 'ताजा पानी' तथा 'लड़ाका औरत' ठीक हैं न कि 'ताजा पानी' और 'लड़ाकी औरत', यद्यपि ये भी बोले जाते हैं। अनुवादक के गलती करने की संभावना उस स्थिति में और भी बढ़ जाती है जब स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा में एक ही अर्थ में प्रयुक्त शब्दों में लिंग भेद हो। उदाहरण के लिए हिंदी जहाज, चाँद, वसंत, पतझड़ पुल्लिंग हैं किंतु अंग्रेजी ship, moon spring Autumn समानार्थी होते हुए भी स्त्रीलिंग है। हिन्दी वाक्य 'चाँद ने बादलों में अपना मुंह छिपा लिया है' को The moon has hid his fase behind clouds नहीं कह सकते। his के स्थान पर her का प्रयोग करना पड़ेगा। इसी तरह 'जहाज और उसकी सभी नौकाएं तूफान में नष्ट हो गईं' को *The ship and all his boats were destroyed in the storm* नहीं कह सकते। यहाँ भी his के स्थान पर her का प्रयोग शुद्ध होगा। इसके विपरीत मौत तथा जाड़ा हिंदी में स्त्रीलिंग हैं तो death और अंग्रेजी में winter पुल्लिंग हैं।

इस तरह अनुवादक को स्रोत तथा लक्ष्य भाषा में व्याकरणिक लिंग से सम्बद्ध प्रायोगिक विशेषताओं एवं नियमों से परिचित होना चाहिए तथा इस ओर से सतर्क रहना चाहिए।

(५) वचन—वचन-सम्बन्धी नियम भी हर भाषा के अपने होते हैं। अनुवादक का इस सम्बन्ध में सतर्क रहना चाहिए। उदाहरण के लिए हिन्दी में 'दर्शन' का प्रयोग बहुवचन (बहुत दिनों के बाद आपके दर्शन हुए) में होता है। इसी प्रकार 'उसके प्राण निकल गए' न कि 'निकल गया'। अंग्रेजी की वचन सम्बन्धी कुछ बातों का उल्लेख भी यहाँ उपयोगी होगा। sheep, deer cod आदि कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके एकवचन बहुवचन के रूप समान होते हैं। संख्यावाचक विशेषणों के बाद pair, stone gross, hundred, thousand के भी बहुवचन नहीं बनाते He gave me five thousand rupees He

weights above nine stone कुछ संज्ञाओं का अंग्रेज़ी में प्रयोग हमेशा बहु-वचन रूप में ही होता है Spectacles, scissors pants, trousers, tongs, pincers, bellows, billiands, measles, panties, slags, mumps, annals आदि। हिन्दी में कुछ शब्द बहुवचन में होने पर भी एकवचन रूप में भी वाक्य में आते हैं 'वह दस दिन ('दिनों' का प्रयोग भी होता है पर कम) तक नहीं आएगा', 'उसके पिता एक सौ दस वर्ष (वर्षों का भी प्रयोग हो सकता है किन्तु कम ही होता है) तक जीवित रहे।'

कुछ भाषाओं में एकवचन के स्थान पर आदर के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है। अंग्रेज़ी वाक्य—

Nehru was a very good speaker

नेहरू बड़े अच्छे वक्ता थे।

के हिन्दी रूपांतर से बात स्पष्ट हो जाएगी। सर्वनाम विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण में यह बात देखी जा सकती है

क१ He is coming

क२—वे आ रहे हैं।

ख१—चपरासी लंबा है।

ख२—अध्यापक लंबे हैं।

ग१—सभा के अध्यक्ष गए।

ग२—श्रोतागण गए।

ग३—माइकवाला गया।

घ१—लड़का दौड़ता आया है।

घ२—पिता जी दौड़ते आए हैं।

अनुवादक को लक्ष्य भाषा के नियमों के अनुसार ऐसी स्थितियों में स्रोत भाषा के वचन में जहां अपेक्षित हो परिवर्तन कर देने चाहिए।

(६) पुरुष—अनुवाद में कभी-कभी सर्वनाम के पुरुष में भी परिवर्तन अपेक्षित होता है

He said that he will go

उसने कहा मैं जाऊँगा।

(७) कारक चिह्न—भाषा की प्रकृति के अनुसार अनुवादक को वाक्य में प्रयुक्त कारक चिह्नों को भी कभी-कभी बदलना पड़ता है—

He has faith *in* his wife

उसे अपनी पत्नी पर विश्वास है।

His name was mentioned *at* the lecture

भाषण में उसके नाम का उल्लेख हुआ था।

We will have to go a little ahead *of* time

हम समय से कुछ पहले जाना होगा।

(८) पदक्रम—हर भाषा में वाक्य में पदों का विशेषक्रम होता है। अनुवाद में यह ध्यान रखना चाहिए कि स्रोत भाषा के पदक्रम की छाया लक्ष्य भाषा में किए गए अनुवाद में न पड़े। उदाहरण के लिए 'राम लक्ष्मणश्च' के स्थान पर 'राम और लक्ष्मण' का सम्भवत अनुवाद 'रामश्च लक्ष्मण' संस्कृत के अनुकूल न होगा। अंग्रेजी में यदि तीनों पुरुष साथ आएँ तो पहले अन्य पुरुष फिर मध्यम पुरुष और तब उत्तम पुरुष का क्रम रखा जाता है। 'मैंने और रामने उसका समर्थन किया' का अनुवाद 'I and Ram supported him' गलत होगा। शुद्ध अनुवाद होगा Ram and I supported him

इसी प्रकार विशिष्ट प्रभाव उत्पन्न करने के लिए पदक्रम में परिवर्तन भी कर लिया जाता है

तो मैं जाता हूँ।

तो जाता हूँ मैं।

किंतु आवश्यक नहीं कि हर भाषा में इसके नियम समान हों। अनुवादक को इस अंतर का ध्यान रखना चाहिए।

(९) व्याकरणिक परिवर्तन—स्रोत भाषा की वाक्य रचना लक्ष्य भाषा की वाक्य रचना के समान ही नहीं होती। इसीलिए लक्ष्य भाषा के अनुरूप वाक्य बनाने के लिए स्रोत भाषा के वाक्य के शब्दों में कभी कभी व्याकरणिक परिवर्तन करने पड़ते हैं। यों भी अनुवादक कभी कभी विशेष संदर्भ में ऐसे परिवर्तन कर लेता है। जैसे कभी विशेषण का काम संज्ञा से लेते हैं—

He is controller of time

समय का नियंत्रण उसके हाथ में है।

Private members bussiness gets more *generous* allotment of time in the Parliament of United Kingdom than in the Indian Parliament

भारतीय संसद के मुकाबले युनाइटिड किंगडम की संसद में गैर सरकारी सदस्यों के काम के लिए समय नियत करने में अधिक उदारता बरती जाती है।

तो कभी क्रिया का विशेषण में—

I shall not go

मैं नही जाने का।

या क्रियाविशेषण और क्रिया दोनो के स्थान पर सिर्फ क्रिया—

वह अपनी चीजें फिर से सजा रहा है।

He is rearranging his things

या क्रियाविशेषण के लिए विशेषण—

He speaks well

वह अच्छा वक्ता है।

या क्रियाविशेषण से विशेषण और विशेषण से क्रियाविशेषण—

It can *safely* be asserted that the sittings af the Indian Legislatures occupy an *average* five hours per sitting

यह कहना निरापद होगा कि भारतीय विधानमडलो की बैठकों मे औसतन पाँच घटे प्रति बैठक लगते हैं।

या सज्ञा के लिए क्रिया—

He is a begger

वह भीख मांगता है।

या क्रिया के लिए सज्ञा—in the Legislative Assembly the relative precedence of bills by non offical members was determined by ballot to be held according to a prescribed procedure on such day not being less than 15 days before the day with reference to which the ballot was held, as the President directed

विधान सभा म गैर सरकारी सदस्यों के विधेयकों की आपेक्षिक पूर्वता मत पर्ची डालकर निश्चित की जाती थी। इसके लिए मतदान निर्धारित प्रणाली के अनुसार प्रधान के निर्देशन में होता था और जिस दिन के सदभ म पर्ची डालनी होती थी, मतदान उससे कम से-कम पद्रह दिन पहले हो जाता था।

आदि। कहने का आशय यह है कि किसी वाक्य के अनुवाद मे आवश्यक नही है कि शब्द अपने मूल व्याकरणिक रूप में ही आएँ, उनमे परिवतन भी हो सकता है और होता है।

(१०) काल—वाक्यों में विभिन्न-कालों के द्योतन में कभी-कभी तो स्रोत और लक्ष्य भाषा में पूरी समानता मिलती है, किंतु कभी कभी असमानता भी मिलती है और वैसी स्थिति में अनुवादक को बडी सावधानी से अनुवाद करना चाहिए। राम जाता है तथा 'राम जा रहा है दोनों के लिए सस्कृत में 'राम गच्छति'

ही होगा । सामान्यत फ्रांसीसी म भी इन दोनों का अन्तर नहीं है । 'मैं पढ़ता हूँ' (सामान्य वर्तमान) तथा 'मैं पढ़ रहा हूँ' (सातत्य या अपूर्ण वर्तमान) दोनों को ज जाप्री कहेंगे । अंग्रेजी रूसी जर्मन फ्रेंच आदि में तुलना करने पर अनुवाद विषयक ऐसी अनेक समस्याएं सामने आती हैं । फ्रांसीसी वर्तमानकाल अंग्रेजी में हमेशा वर्तमानकाल से ही नहीं व्यक्त होगा । अमरीका की होपी (Hopi) भाषा में अन्य अनेक भाषाओं की तरह काल नहीं होते । क्रियाओं का प्रयोग वहाँ मात्र पूर्णता अपूर्णता पर आधारित है । ऐसी भाषाओं में या से अनुवाद भी एक समस्या बन जाता है । अंग्रेजी I worked को हिंदी में कहेंगे 'मैंने काम किया' किंतु Those days I worked there में I worked का 'मैंने काम किया' के अतिरिक्त 'मैं काम करता था' भी हो सकता है । I am suffering from fever का उसी काल में हिन्दी अनुवाद होगा 'मैं ज्वर से पीड़ित हो रहा हूँ' किंतु हिंदी में इस प्रकार का वाक्य नहीं बनता अत ठीक अनुवाद होगा— 'मुझे ज्वर है' या 'मैं ज्वरग्रस्त हूँ' या 'मैं ज्वर से पीड़ित हूँ' ।

अंग्रेजी के सातत्यबोधक वर्तमान को हिंदी में रह+हो से व्यक्त करते हैं । Ram is going का 'राम जा रहा है' । किंतु हर संदर्भ में आँख मूँदकर इस प्रकार का अनुवाद नहीं किया जा सकता । उदाहरण के लिए

The birds are sitting on a tree

को 'चिड़िया पेड़ पर बैठ रही हैं' नहीं कह सकते । इस Present continuous का अनुवाद पूर्ण वर्तमान रूप में करना होगा—चिड़ियाँ पेड़ पर बैठी हैं । इस तरह स्रोत तथा लक्ष्य भाषा मे काल बोधक समानता होने पर भी कभी कभी स्रोत भाषा के एक काल के स्थान पर लक्ष्य भाषा के किसी दूसरे काल का प्रयोग करना पड़ता है । इसी तरह where are you staying ? का 'यहाँ आप ठहर रहे हैं' केवल भविष्य के लिए कहेंगे वर्तमान व्यक्त करने के लिए पूर्ण का प्रयोग होगा— आप कहाँ ठहरे हैं ?

एक दूसरा उदाहरण लें । 'मैं कल आया' म 'आया' को भूतकाल के रूप came से अनूदित किया जाएगा किंतु 'तुम बैठो म अभी आया' मैं भूतकालिक रूप 'आया' के लिए अपूर्ण वर्तमान I am just coming का प्रयोग किया जाएगा । अर्थात् यहाँ हिन्दी भूतकाल का अनुवाद अंग्रेजी मे अपूर्ण वर्तमान से होगा । 'गिरा' भूतकाल का रूप है किंतु 'लड़का कल गिरा' के अंग्रेजी अनुवाद म जहाँ एक तरफ इसे भूतकालिक रूप से व्यक्त किया जाएगा वहीं 'बचाओ लड़का गिरा' के अनुवाद म भविष्य काल से ।

(११) वाच्य—अनुवाद म कभी-कभी वाक्यो मे वाच्य का अंतर भी करना पड़ता है ।

All states were despotically ruled
सभी राज्य स्वेच्छाचारी शासकों के अधीन थे ।

+ + +

The national spirit in India was kept alive by congress
कांग्रेस ने भारत में राष्ट्रीय भावना को जीवित रखा ।

(१२) छोड़ना—अनुवाद में कभी कभी ऐसा भी करना पड़ता है कि स्रोत सामग्री के वाक्य को लक्ष्य भाषा में ले आते समय एक या अधिक शब्द छोड़ देते हैं । इसका मुख्य कारण स्रोत तथा लक्ष्य भाषा में प्रयोगों का अंतर है । वस्तुतः अनुवादक को भाषा के प्रयोग का ध्यान रखना चाहिए न कि इस बात का कि जितने शब्द मूल वाक्य में हों उतने ही अनुवाद में भी हों । यहां कुछ ऐसे उदाहरण लिए जा रहे हैं —

Ram *is* not going to day
राम आज नहीं जा रहा ।
He is returning *back*
वह लौट रहा है ।
भारतीय प्राय प्रकृति से बहुत धार्मिक होते हैं ।
Indians are generally by nature very religious
How far is *it* Ghaziabad to Delhi ?
गाजियाबाद से दिल्ली कितनी दूर है ?
Right now I can not say anything
अभी मैं कुछ नहीं कह सकता ।
I want to buy *a* few things
मैं कुछ चीजें खरीदना चाहता हूं ।
At what time is this lecture ?
यह भाषण किस समय है ?
मुझे ठीक-ठीक पता नहीं है ।
I dont know exactly
in *the* city *of* venice
'वेनिस में' अथवा वेनिस शहर में
He fired three *rounds of* bullet
उसने तीन गोलियाँ चलाई ।
Take him *to the* hospital
उसे अस्पताल ले जाओ ।
He is taking *his* meals

वह खाना खा रहा है ।
I have learnt *my* lessons
मैंने पाठ याद कर लिया है ।
He is *a* good man
वह अच्छा आदमी है ।
I have met *a* lot of Bangalis
मैं बहुत से बंगालियों से मिला हूँ ।

(१३) जोड़ना—कभी-कभी कुछ जोड़ना भी पड़ता है —
बेकार में इतना वक्त बर्बाद हुआ ।
A lot of time wasted *to no purpose*
I *rented* the house to him
मैंने उसको मकान किराए पर दिया ।
उसने तीन गोलियाँ चलाईं ।
He fired three rounds of bullet

यदि स्रोत भाषा को लक्ष्य तथा लक्ष्य को स्रोत मान लें तो छोड़ने में जो उदाहरण लिए गए हैं वे जोड़ने के हो सकते हैं ।

(१४) अन्य प्रकार के परिवर्तन—अनुवाद में भाषा के सहज प्रयोग के अनुसार वाक्य में कुछ अन्य प्रकार के परिवर्तन भी करते हैं । कुछ उदाहरण हैं —

what art thou that usurp st
this time of night
क्या है तू जो घनी रात पर टूट पड़ा है । (हैमलेट बच्चन पृ० २१)
It stalks away
सधे डग भरते जाता है । (हैमलेट, बच्चन, पृ० २१)
You look pale
तुम पीले पड़ गए हो । (हैमलेट बच्चन पृ० २१)
I will receive it sir with all diligence of spirit
श्रीमन् मैं बड़ी तत्परता के साथ उसे सुनने को प्रस्तुत हूँ । (हैमलेट बच्चन, पृ० १७६)
I beseech you remember
मैंने कुछ प्रार्थना की थी याद है । (हैमलेट बच्चन, पृ० १७६)
It faded on the crowing of the cock
ज्यों ही मुर्गा बोला वह लुप्त हो गया । (हैमलेट, बच्चन पृ० २५)
राम यहाँ प्राय: आता है ।
Ram is a frequent visitor to this place

उसके पास न० २ का पैसा है ।
He has black money
I am very much h re
मैं यहीं हूँ ।' या 'मैं बिल्कुल यहीं हूँ ।
He is 25 years old
वह २५ का है अथवा 'वह २५ वर्ष का है ।'
His remark is altogether beside the mark
(उसकी बात निशान के पास ही है)
उसकी बात नितांत अप्रासंगिक है ।
Your answer is below the mark
(तुम्हारा उत्तर अङ्क के नीचे है)
तुम्हारा उत्तर संतोषजनक नहीं है ।
It is an intresting poin
(यह एक रोचक बिंदु है)
यह रोचक (बात) है ।
The poem reads well
(कविता अच्छी पढ़ती है)
Tiwari and sons
(तिवारी और पुत्र)
तिवारी एवं संतति
विराजिए ।
Please sit down
He is about to come
वह आया चाहता है ।
उसने दावत दी ।
He threw a party
big guns
(बड़ी तोपें)
बड़े लोग
As a matter of fact
(तथ्य के पुद्गल के रूप में)
'सच पूछो तो' या 'वस्तुतः या' 'वास्तविकता यह है कि
In coure of time

(समय के पाठ्यक्रम म)
धीरे धीरे या जसे जसे समय बीतेगा'
I have not taken any tea today
(मैंने आज काई चाय नही ली)
मैंने आज चाय बिलकुल या एकदम नही पी।
I am leaving this evenig
मैं आज रात या शाम जा रहा हू ।
He had faith in what I said
उसे मेरी बात का विश्वास था।
came across the writings of
की रचनाए पढने का अवसर मिला।
By the way your name please
अच्छा आपका नाम ?
We do a lot of things for you
इसके अनुवाद मे 'चीज नही काम होगा।
He dose not wear a long beared
वह लबी दाढी नहीं रखता।
If you ask trury
सच पूछिए तो—
The train is in motion now
गाडी अब चल रही है।
The Govt did not know what to do
सरकार किंकर्तव्यविमूढ हो रही।
Between 7 A M and 8 A M
पूर्वाह्न मे ७ और ८ के बीच
ठीक है तो हम चलेंगे।
Fine, then we shall start
लडके जाने की जल्दी कर रहे हैं।
लडके जाने की जल्दी में हैं।
The boys are in a hurry to leave

When a little over two years ago I approached Maulana Azad with the repuest that he should write his biogrophy
दो साल से कुछ अधिक समय हुआ मैंने मौलाना आजाद से निवेदन किया
किया कि आप अपनी आत्मकथा लिखिए।

एक वाक्य से अधिक वाक्य अथवा अधिक वाक्य से एक वाक्य

मूल सामग्री के एक वाक्य का अनुवाद कभी कभी एकाधिक वाक्यों या अधिक का एक में किया जाता है। उदाहरणार्थ—

Apart from a share to be paid to his nearest surviving relatives, royalties from this book will therefore go to the council for the annual awa d to two prizes for the best essay on Islam by a non Muslim and on Hinduism by a Muslim citizen of India or Pakistan

(नीचे की पुस्तक पृ० ६)

अत इस किताब की रायल्टी का एक हिस्सा तो उनके निकटतम जीवित संबंधियों का चला जाएगा और बाकी परिषद् को दे दिया जाएगा। परिषद् इस रकम से प्रतिवर्ष दो पुरस्कार दिया करेगी—एक पुरस्कार तो इस्लाम पर किसी गैर मुसलमान द्वारा लिखे गये सर्वश्रेष्ठ निबंध पर दिया जाएगा और दूसरा हिन्दू धर्म पर भारत या पाकिस्तान के किसी मुसलमान नागरिक द्वारा लिखे गए सर्वश्रेष्ठ निबंध पर।

(नीचे की पुस्तक पृ० ग)

As I have already stated Maulana Azad was not in the bagining very willing to undertake the preparation of this book As the book progressed his interest grew (India Wins Freedom—Abul kalam Azad preface By H kibir P 8)

मैं बता चुका हूँ शुरू शुरू मे मौलाना साहब यह किताब तैयार करने का काम उठाने के लिए राजी न थे पर ज्यो ज्यो किताब आगे बढी, उनकी दिलचस्पी भी बढती गई। (अनुवाद महेन्द्र चतुर्वेदी पृ० ग)

साधारण वाक्य के लिए मिश्रित वाक्य

I advise you go to the doctor

मेरी सलाह है कि आप डाक्टर के यहा जायें।

इसी प्रकार मिश्रित के लिए साधारण या संयुक्त अथवा संयुक्त के लिए मिश्रित या साधारण भी हो सकता है।

उपवाक्य के लिए पदबंध

कभी स्रोत सामग्री के उपवाक्य के लिए लक्ष्य भाषा में उपवाक्य का प्रयोग न करके पदबंध का भी प्रयोग करते हैं। दो उदाहरण है

I heard what he said—मैंने उसकी बात सुनी।

I have faith in what you say—मुझे आपकी बात पर विश्वास है।

१२

अनुवाद और रूपविज्ञान

वाक्य रूपों (या पदों) से बनते हैं और अनुवाद में एक भाषा के वाक्यों का रूपान्तर दूसरी भाषा में करते हैं। इस तरह अनुवाद में स्रोत भाषा के रूपों या रूप समुच्चयों के स्थान पर लक्ष्य भाषा के समानार्थी रूपों या रूप समुच्चयों को रखते हैं। इसीलिए रूपविज्ञान का अनुवाद से बहुत सीधा संबंध है। रूपविज्ञान में भाषा विशेष की रूप रचना का अध्ययन विश्लेषण करते हैं तथा तद्विषयक नियमों का निर्धारण करते हैं। अनुवादक के लिए यह बहुत आवश्यक है कि वह स्रोत और लक्ष्य भाषा की रूप रचना से भली भांति परिचित हो क्योंकि रूप ही वह ईंट (मसाला संयुक्त) है जिससे भाषा के भवन को बनाने वाली वाक्य रूपी दीवार खड़ी होती है।

रूप रचना का अर्थ है किसी भाषा में मूल शब्दों या धातुओं के आधार पर भाषा में प्रयुक्त होनेवाले विभिन्न रूपों की रचना। हिन्दी का आधार मान तथा शब्द रचना को भी रूप रचना में सम्मिलित कर लें तो इसके मुख्यतः निम्नांकित प्रकार हो सकते हैं

(क) प्रत्ययों से शब्दों की रचना। जैसे—

(१) संज्ञा से विशेषण—क्रोध+ई=क्रोधी

(२) विशेषण से संज्ञा—सुन्दर+ता=सुन्दरता

(३) संज्ञा से क्रियाविशेषण—कृपा से कृपया

(४) विशेषण से क्रियाविशेषण—मुख्य से मुख्यत

(५) सर्वनाम से विशेषण—तुम से तुम्हारा

(६) संज्ञा से क्रिया—जूता से जुतिया (ना)

(७) क्रिया से विशेषण—सो से सोना या सोया

(८) क्रिया से क्रियाविशेषण—सो से सोते

(ख) उपसर्ग से शब्दों की रचना जैसे—

(१) संज्ञा से संज्ञा—वि+भाग=विभाग।

(२) प्रत्यय से विशेषण—वि + ज्ञ = विज्ञ
(३) विशेषण से विशेषण—सु + विज्ञ = सुविज्ञ।
(४) सज्ञा से विशेषण—ला + जवाब = लाजवाब।
(५) सज्ञा से क्रियाविशेषण—आ + जीवन = आजीवन।
(६) विशेषण से क्रियाविशेषण—दर + असल = दरअसल।

(ग) समासो से शब्दो की रचना जैसे—
जिलाधीश राजकुमार

'क', 'ख', 'ग', मे दो या तीन के मिश्ररूप भी हो सकते हैं। जैसे—अव्यावहारिकता।

(घ) पुल्लिग रूपो मे स्त्रीलिंग रूप। जैसे—लडका लडकी, चला-चली, अच्छा अच्छी, दौडता-दौडती।

(ङ) एकवचन से बहुवचन—लडका लडके, चला चले, दौडता दौडते, बडा बडे।

(च) मूल रूप से विकृत रूप—लडका लडके अच्छा अच्छे।

(छ) सज्ञा तथा सर्वनाम से कारकीय रूपो की रचना। जैसे—'घोडा' से घोडे ने घोडा पर घोडा या तू, से 'तुम, तुझे', 'तुम्हे' आदि।

(ज) विशेषण के तुलनाबोधक रूप—बहुतर, बहुतरीन, लघुतर लघुतम, श्रेष्ठ, श्रेष्ठतम।

(झ) धातु से क्रियारूप। जैसे—
(१) कालबोधक—है था आदि।
(२) कृदंत—चलता चला चलना आदि।
(३) तिडन्त—चल चलू चलो आदि।

स्रोत तथा लक्ष्य दोनो भाषाओ की रूप रचना तथा शब्द रचना से परिचित होना अनुवादक के लिए इसलिए आवश्यक है कि वह उनके आधार पर स्रोत भाषा के चयन को पहचान सकता है, उसके अनुरूप लक्ष्य भाषा से चयन कर सकता है, तथा नवनिर्मित शब्दों या रूपो को पहचान सकता है, और आवश्यक होने पर लक्ष्य भाषा में नए शब्दो या रूपो का निर्माण कर सकता है।

रूप के क्षेत्र मे चयन के आगे संकेत 'अनुवाद और चयन' मे दिए गए हैं।

अनुवादक एक सीमा तक कारयित्री प्रतिभावाला (Creative) भी होता है। यह आवश्यक नही कि वह हमेशा उन्हीं शब्दो और शब्द रूपो का प्रयोग

करे जो भाषा में पहले से प्रचलित हों। किसी भाषा भाषी की तरह ही अनुवादक को भी इस बात का पूरा अधिकार होता है कि वह भाषा की निर्माण शक्ति (Potentiality) का आवश्यकता पड़ने पर पूरा पूरा उपयोग करे, उठाए नए शब्दों नए रूपों को बनाए। किंतु वे शब्द वे रूप ऐसे होने चाहिएँ जो उस भाषा में ग्राह्य हो सकें। इसके लिए यह आवश्यक होगा कि उस भाषा में शब्द रचना और रूप रचना के नियमों से अनुवादक भलीभाँति परिचित हो। नियमों से सुपरिचित व्यक्ति ने ही जब देखा कि प्रभावशाली शब्द का प्रभाव बहुप्रयोग से कम हो गया तो उसने हिंदी में नया शब्द 'प्रभावी' चला दिया। नियम से सुपरिचित अनुवादक ने ही पाकिस्तानी घुस पैठ के समय अंग्रेज़ी 'इनफिल्ट्रेटर' के लिए हिंदी में उपयुक्त शब्द न मिलने पर 'घुसपैठिया' शब्द गढ़ लिया, जो इनफिल्टेटर' तथा इनट्रूडर के लिए अब प्रयोग में है। किसी अनुवादक ने ही अंग्रेज़ी फिल्माइज़ के लिए हिंदी में फिल्माना शब्द चला दिया। अनुवादक का शब्द रचना और रूप रचना का ज्ञान इतना गहरा होना चाहिए कि वह यहाँ तक समझ सके कि क्रोध में ई प्रत्यय से बनाने वाला विशेषण क्षणिक स्थिति का द्योतक न होकर प्रकृति का द्योतक (क्रोधी) होता है जब कि इत प्रत्यय से बनने वाला विशेषण (क्रोधित) विशिष्ट समय की मानसिक स्थिति का द्योतक होता है। एक बार रेडियो के एक प्रोग्राम पर्यायों की खोज में मैं श्री रामचन्द्र टंडन बच्चन जी तथा मैंने अंग्रेज़ी initiative के लिए हिंदी में पहलकदमी (चहलकदमी के सादृश्य पर) का निर्माण किया था और अब यह शब्द चल पड़ा है। To take initiative के लिए पहलकदमी करना। इस प्रकार शब्द रचना और रूप रचना का ज्ञान या इसके सिद्धांत (मुख्यत स्रोत और लक्ष्य भाषा के) अनुवादक के लिए उपयोगी ही नहीं अनिवार्यत आवश्यक हैं।

किसी भी भाषा में रूप रचना के केवल सामान्य नियम ही नहीं होते। उसके अपवाद भी होते हैं। सामान्य व्यक्ति केवल सामान्य नियमों से परिचित होता है किन्तु अनुवादक को उन अपवादों से भी परिचित होना चाहिए। अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो सकता है या गलती हो सकती है। उदाहरण के लिए हिन्दी में सभी धातुओं में आ ई ए ई जोड़कर भूतकालिक रूप बनते हैं—चला चली चले चलीं पढ़ा, पढ़ी पढ़े पढ़ीं। किंतु कर दे ले, जा (क्रिया की किए का दिया दी दिए दीं गया, गई गए गईं) आदि अपवाद हैं। आकारांत पुल्लिंग के रूप ए आ ओ लगाकर बनते हैं घोड़ा घोड़े घोड़ा घोड़ा किंतु पिता राजा मामा काका बाबा लाला देवता आदि अपवाद हैं। अंग्रेज़ी में कुछ शब्दों में बहुवचन के लिए एस (hats books,

roses) जोडते हैं, कुछ म en (oxen brotheren, यो brathers भी होता है और brotheren तथा brothers म अतर है), कुछ मैं f को v करके जाडते हैं (thieves, knives, lives, wolves किन्तु chief roof, dwarf, safe, hoof, proof अपवाद हैं इनम s ही जोडा जाता है), o अत मे हो तो es जोडते हैं (potatoes, mangoes, Corgoes पर dynamo अपवाद है उसम केवल s जुडता है), और कुछ में कुछ भी नही जोडते (sheep, cod, deer आदि)। कुछ रूप केवल बहुवचन म आते हैं (News, Politics, thanks, tongs आदि), तो कुछ क दोनो रूप होन हैं पर एकवचन मे एक अथ होता है और बहुवचन म दो Colour effect, manner moral pain आदि। कुछ का एकवचन में एक अथ हाना है तो बहुवचन में दूसरा good force air water iron wood आदि। हिंदी में सामान्यत आकारात विशेषण का ईकारात एकारान्त हो जाता है (अच्छा, अच्छी, अच्छे) किंतु बढ़िया, घटिया, लडाका आदि बहुत से विशेषणो के नही भी होता। पुरानी हिंदी म चिडिया का चिडियें तथा इद्रिय का इद्रियें बहुवचन होता था, अब चिडियाँ, इद्रियाँ ही होता है। 'तू' का बहुवचन 'तुम' है और 'मैं' का 'हम'। किंतु तुम का ता सवदा ही तथा हम का भी कभी-कभी एकवचन मे प्रयोग होता है और तब उनके बहुवचन क्रमश तुम लोग हम लाग या तुम सब' 'हम सब होते है। इसी तरह लिंग रूप तथा अन्य रूपा म भी अनेक बातें ध्यान मे रखन की है।

निष्कषत अनुवादक को स्रोत भाषा की रूप रचना और शब्द रचना की पूण जानकारी होनी चाहिए ताकि वह मूल सामग्री को ठीक से समझ सके तथा उसे लक्ष्य भाषा की रूप रचना तथा शब्द रचना की भी पूरी जानकारी होनी चाहिए ताकि आवश्यकतानुसार वह नए शब्दों या नए रूपों का निर्माण कर सके तथा अपने प्रयोग मे अपवादो से परिचित होकर गलतियो से बच सके।

पुनश्च—

कभी कभी ऐसा होता है कि स्रोत भाषा में कोई सामान्य शब्द एक लिंग का होता है किंतु लक्ष्य भाषा में उसका प्रतिशब्द दूसरे लिंग का मिलता है। ऐसी स्थिति में अनुवादक को अनुवाद मे लिंग परिवतन कर लेना चाहिए, नही तो अथ को ठीक अभिव्यक्ति नही हो पाती। उदाहरण के लिए 'घोडा स्वामिभक्त जानवर है' का रूसी में अनुवाद करना हो तो हमें 'घोडा' के लिए लोशज शब्द का प्रयोग करना होगा जो स्त्रीलिंग शब्द है। उसके पुल्लिंग रूप का प्रयोग नही किया जा सकता क्योंकि हिंदी में जै

के लिए सामान्य शब्द 'घोड़ा' है उसी तरह रूसी में लोशाद है। हिंदी में जैसे 'घोड़ा स्वामिभक्त होता है' में घोड़ी भी समाहित है उसी तरह रूसी 'लोशाद' में घोड़ा भी समाहित है। हिंदी में यदि कहें कि, 'घोड़ी स्वामिभक्त होती है,' तो आशय यह होगा कि 'घोड़ा शायद नहीं होता'। इसी प्रकार रूसी में पुल्लिंग के प्रयोग से गड़बड़ी हो जाएगी।

कुछ भाषाओं में (संस्कृत आदि) द्विवचन के रूप अलग होते हैं। जिन भाषाओं में ऐसे रूप नहीं हैं संख्यावाचक शब्द के साथ बहुवचन रूप रखकर काम चलाना पड़ता है। ऐसे ही कुछ भाषाओं में त्रिवचन के भी रूप अलग होते हैं।

वाक्यविज्ञान में हम देख चुके हैं कि कभी-कभी अनुवाद में स्रोत भाषा के एक व्याकरणिक रूप के स्थान पर लक्ष्य भाषा में दूसरे व्याकरणिक रूप को रखना पड़ता है। जैसे विशेषण के स्थान पर संज्ञा या क्रियाविशेषण आदि। लिंग परिवर्तन के कारण कुछ भाषाओं में अर्थ भी परिवर्तित हो जाता है। अनुवादक को इसका भी ध्यान रखना चाहिए। उदाहरणार्थ घड़ा घड़ी चीटा चींटी पत्र पत्री ताला ताली, नाला नाली साला साली (चाचा चाची की तरह साली साला की बीवी नहीं है, बहिन है) डाक्टर डाक्टराइन डाक्टरनी डाक्टरानी आदि।

१४

अनुवाद और शब्दविज्ञान

शब्दविज्ञान जैसा कि नाम से स्पष्ट है भाषाविज्ञान की वह शाखा है जिसमे शब्दों का अध्ययन विश्लेषण होता है। शब्द अर्थ के स्तर पर भाषा की लघुतम स्वतन्त्र इकाई है। अर्थात् (१) शब्द भाषा की एक इकाई है (२) इसका अर्थ होता है (३) अर्थ के स्तर पर भाषा की यह सबसे छोटी इकाई है। (४) यह स्वतन्त्र होता है। इसीलिए अलग से भी शब्द का प्रयोग होता है तथा भाषा को समझने के लिए शब्द कोश बनाए जाते हैं।

शब्द में भाषा की वे सारी मूल इकाइयाँ आती हैं जो सार्थक और स्वतन्त्र होती हैं। अर्थात् मूल सज्ञा, सर्वनाम विशेषण धातु तथा अव्यय। इन्ही शब्दोंमे सबध-तत्त्व जोडकर कारकीय रूप और क्रिया रूप बनते हैं और रूपो से वाक्य बनता है तथा एक भाषा के वाक्यो का दूसरी भाषा मे अनुवाद किया जाता है। अर्थात् शब्द वह इट है जिसे सबध तत्त्व (प्रत्यय या कारक चिह्न आदि) के गारे से आपस मे जोडकर वाक्य रूपी दीवार चुनते है और इसी दीवार से भाषा का महल खडा होता है। फिर जब अनुवाद एक भाषा के वाक्यो का दूसरी भाषा के वाक्यो मे रूपातरित करके किया जाता है तो सहज ही अनुवाद और शब्दविज्ञान आपस मे बहुत अधिक सबधित है। यह कहना अन्यथा न होगा कि बिना शब्द (विज्ञान) की सहायता के अनुवाद हो ही नही सकता।

शब्दविज्ञान मे शब्द रचना तथा शब्दो के वर्गीकरण आदि आते हैं। अनुवाद करते समय आवश्यकतानुसार हमे उपसर्ग प्रत्यय तथा समास आदि के द्वारा नए शब्दो की रचना करनी पडती है तथा पुराने शब्दो को वर्गीकृत करके उन्हें देखना पडता है कि किस प्रकार के अनुवाद मे किस प्रकार के शब्दो का प्रयोग किया जाय। शब्द-रचना के सबध मे 'अनुवाद और रूपविज्ञान' के अतर्गत सकेत किए जा चुके हैं। यहाँ शब्दो के वर्गीकरण तथा तदनुसार शब्दो के चयन सबधी कुछ ऐसी बातो को लिया जाएगा जिनसे अनुवाद का सबध है।

अनुवादक को स्रोत भाषा के भावों या विचारों को सफलतापूर्वक और सटीक रूप में लक्ष्य भाषा में व्यक्त करने के लिए लक्ष्य भाषा के शब्द भंडार को वर्गीकृत करके अपने लिए शब्द चुनना पड़ता है। हिंदी आदि भाषाओं के शब्द भंडार को निम्नांकित आधारों पर वर्गीकृत किया जा सकता है—

(१) इतिहास—इतिहास के आधार पर भारतीय भाषाओं के शब्दों को चार वर्गों में रखा जा सकता है—

तत्सम—शुद्ध संस्कृत शब्द। जैसे कृष्ण, गृह, दधि नत्य।

तद्भव—तत्सम शब्दों से बिगड़कर या विकसित होकर बने शब्द। जैसे कान्ह घर, दही, नाच। परवर्ती तद्भव या अर्धतत्सम को भी इसी के अंतर्गत मैं रखना चाहूँगा। जैसे चन्दर (चन्द्र) किशन (कृष्ण), सुरेन्दर (सुरेन्द्र) करम (कर्म) आदि।

विदेशी—इसमें तत्सम विदेशी भी आते हैं (जैसे लार्ड सिगनल, वाक स्टेशन जुल्म मर्ज़ी बाग़, दारोग़ा) और तद्भव विदेशी (लाट, सिगल काग टेसन जुलुम मरजी बाग दरोगा) भी।

देशज—इनमें वे शब्द आते हैं जो उपर्युक्त में किसी में नहीं हैं, जैसे तेंदुआ थोथा अटकल धूम, मूसा, चूहा अलबत्ता आदि।

इतिहास के आधार पर कई परिस्थितियों में अनुवादक को चयन करना पड़ता है। मान लीजिए कोई अनुवादक मौलाना आज़ाद की पुस्तक का अनुवाद कर रहा है तो उसकी भाषा उर्दू की ओर झुकी हुई हिंदुस्तानी रखना उपयुक्त होगा इसीलिए अधिकतर उसे विदेशी (अरबी फारसी, तुर्की) तथा तद्भव से काम चलाना पड़ेगा। अंग्रेज़ी के बहुप्रचलित शब्द भी आ सकते हैं, किंतु संस्कृत के तत्सम शब्द कम ही आएँगे। अरबी फारसी तुर्की शब्द प्राय अपने तत्सम रूप में आएँगे। तिलक की गीता के हिंदी अनुवाद में तत्सम तथा तद्भव का प्रयोग करेगा। विदेशी का अधिक नहीं करेगा। गांधी जी की किसी पुस्तक का अनुवाद उन शब्दों में होगा जो बोलचाल की हिंदुस्तानी में प्रयुक्त होते हैं। आधुनिक भारत से संबद्ध कोई नाटक या उपन्यास है और उसमें किसी विद्यार्थी, वकील डाक्टर या अफसर की बातचीत का हिंदी अनुवाद करना है तो अंग्रेज़ी शब्द उसमें काफी रखने पड़ेंगे। डॉक्टर 'मेरी पत्नी अस्वस्थ हैं' न कह कर 'मेरी वाइफ बीमार है' कहेगा। वैद्य जी मेरी पत्नी अस्वस्थ है कह सकते हैं। हकीम की बीवी की तबीयत खराब होगी नासाज़ भी हो सकती है। किसी पंजाबी व्यक्ति की बातचीत में स्वाभाविकता लाने के लिए परवर्ती तद्भव (सुरेन्दर, महेन्दर, धरम, चन्दर)

तथा हिन्दी जनता द्वारा समझे जाने वाले पंजाबी शब्द (गल, वगो, सस आदि) अनुवादक के द्वारा प्रयुक्त हो सकते हैं। सीता के लिए 'राजकुमारी' (तत्सम) शब्द चलेगा तो जहाँनारा के लिए शाहजादी (विदेशी)। किसी मुसलमान के मुहँ में 'आदाब अर्ज' फबेगा तो पंडित जी के मुह में प्रणाम या पालागन। नई पीढ़ी का ग्रेजुएट 'हलो' (अंग्रेजी) कहेगा।

इसी तरह यदि बच्चों के लिए कोई अनुवाद किया जा रहा है तो उसमें प्रयुक्त शब्द भंडार बोलचाल का (अर्थात् कठिन संस्कृत या कठिन फारसी अरबी से रहित) होगा, प्रौढ़ साक्षरों का भी लगभग यही होगा, किंतु कोई अनुवाद सुशिक्षित लोगों के लिए होगा तो उसमें यह बंधन नहीं होगा।

(२) अर्थ—अभिधार्थी—जिनका केवल अभिधार्थ हो।

लक्षणार्थी—जिनका लक्षणार्थ भी हो।

व्यंजनार्थी—जिनका व्यंग्यार्थ भी हो।

शैली प्रधान साहित्य का अनुवादक इसका ध्यान रखता है। 'वह मूर्ख है', 'वह गधा है', में 'मूर्ख' अभिधार्थी है तथा 'गधा' लक्षणार्थी। 'उसको काम दे रहे हो, वह तो गधा है' में गधा व्यंजनार्थी है। अभिधामूलक अभिव्यक्ति स्थूल और भोंडी होती है, अतः शैलीकार उससे यथासाध्य बचता है। लक्षणा मूलक और व्यंजनामूलक अभिव्यक्ति सांकेतिक, प्रतीकात्मक, सूक्ष्म और पैनी होती है, अतः शैलीकार भरसक उसका ही प्रयोग करना चाहता है।

अर्थ के आधार पर और प्रकार से भी चयन करना पड़ता है। उदाहरण के लिए शृंगार रस के प्रसंग में कृष्ण के लिए मदनमोहन, राधारमण, गोपी-वल्लभ, रसिकबिहारी, किशोरीरमण नाम अधिक उपयुक्त होंगे तो वीर रस के प्रसंग में मुरारी और कंसनिकंदन तथा वात्सल्यरस के प्रसंग में गोपसखा, देवकीनंदन, नंदकिशोर आदि।

(३) ध्वनि—अनुप्रास, वर्ण मैत्री, ध्वन्यात्मकता की दृष्टि से भी शब्दों का चयन होता है। कोई व्यक्ति सूखे पेड़ का वर्णन कर रहा हो तो

नीरसतरुरिह विलसति पुरतः

की तुलना में

शुष्को वृक्षस्तिष्ठत्यग्रे

कहना उचित होगा, क्योंकि इससे अर्थ की ध्वनि से समानता है। पहले में विरोध है। यों कुछ लोगों को पहला भी पसंद आ सकता है। 'घंटा बज रहा' की तुलना में 'घंटा टनटना रहा' अधिक सक्षम अभिव्यक्ति है। 'घन घमंड नभ गरजत घोरा' तथा 'कंकण किंकिण नूपुर धुनि सुनि' में तुलसी ने जो

ध्यान रखा है उसका ध्यान यथासाध्य हर अनुवादक को रखना पड़ेगा।

(४) तुक—तुकांत छंद में अनुवाद करनेवाले को तुक के आधार पर भी शब्दों का चयन करना पड़ता है। मान लें ऊपर की पंक्ति में बाला शब्द आ चुका है और दूसरी पंक्ति में पुष्पहार' अर्थ का कोई शब्द रखना है स्वभावतः हार' का प्रयोग न करके अनुवादक 'माला' का प्रयोग करेगा। इसी तरह विख्यात के तुक में बदनाम, सांक्षिप्त, कलंकित को छोड़कर कुख्यात' चुनना पड़ेगा। तुकांत अनुवाद में इसके अनेक उदाहरण मिल सकते हैं।

(५) मात्रा—मात्रा के आधार पर एक दो तीन, चार, पाँच आदि मात्रा के शब्द हो सकते हैं। मात्रिक छंद में अनुवाद करने वाले व्यक्ति को यथावसर मात्रा के आधार पर भी शब्द चयन करना पड़ता है। ऐसा न करने पर छंद दोष आ जाता है।

(६) वर्ण—वर्ण के आधार पर एक दो, तीन आदि वर्णों के शब्द हो सकते हैं। वर्णिक छंद में अनुवाद करनेवाले को शब्द चयन में वर्ण संख्या का ध्यान रखना पड़ता है।

(७) प्रयोग—प्रयोग के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं

सामान्य—जो सामान्य भाषा में प्रयुक्त होते हैं। जैसे घास, अन्न, आग, फूल हवा, कागज घर, रागनी आदि।

अर्धपारिभाषिक—जो सामान्य भाषा में तो सामान्य शब्द के रूप में तथा विशिष्ट विषयों में पारिभाषिक शब्द के रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे धातु (सामान्य भाषा में सोना चाँदी आदि धातु तथा व्याकरण में क्रिया की धातु) या बोली (सामान्य भाषा में बोलना' अर्थ में भाषाविज्ञान में dialect अर्थ में)।

पारिभाषिक—जो विशिष्ट विज्ञानों या विषयों में सुनिश्चित अर्थ में प्रयुक्त होते हैं तथा जो सामान्य भाषा में प्रायः नहीं आते। उदाहरणार्थ—भाषाविज्ञान—ध्वनिग्राम, संलिपि घोषीकरण, क्षतिपूरक दीर्घीकरण, गणित—दशमलव दर्शन—अद्वैतवाद, शुद्धाद्वैतवाद।

वाङ्मय में दो प्रकार की कृतियाँ होती हैं

(क) शैलीप्रधान या अभिव्यक्तिप्रधान—इनमें उपन्यास नाटक, कहानी, कविता, ललित निबंध आदि आते हैं। इनमें प्रायः सामान्य शब्दों का तथा कुछ अर्धपारिभाषिक शब्दों का प्रयोग होता है। इस श्रेणी की कृतियों का अनुवादक आवश्यकतानुसार इतिहास, अर्थ, ध्वनि, तुक मात्रा तथा वर्ण के अनुसार वर्गीकृत शब्दों से अपना शब्द भंडार चुनता है। इस श्रेणी में

अनुवादक को शब्द चयन में बहुत अधिक श्रम करना पड़ता है।

(ख) तथ्य या सूचना प्रधान अथवा वैज्ञानिक या शास्त्रीय—इनमें गणित, भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान, भाषाविज्ञान, व्याकरण, दर्शन आदि की कृतियाँ आती हैं। इनमें सामान्य शब्दों का सामान्य अर्थों में प्रयोग होता है तथा पारिभाषिक शब्दों का विशिष्ट पारिभाषिक अर्थ में। अर्धपारिभाषिक शब्द अपने दोनों प्रयोगों में आते हैं। इस श्रेणी के अनुवादक के लिए मुख्य समस्या पारिभाषिक शब्दों या अभिव्यक्तियों की होती है। इस दृष्टि से यदि लक्ष्य भाषा संपन्न हो तो अनुवाद में विशेष कठिनाई नहीं पड़ती।

पारिभाषिक शब्दावली पर आगे अलग से लिखा जा रहा है।

१५

अनुवाद और चयन

मूल लेखक की तरह अनुवादक भी चयन करता है। चयन के द्वारा वह आदर अनादर औपचारिकता अनौपचारिकता शुद्धवादिता सामान्यवादिता, मानकता अमानकता, मापिक प्रभाव बोलचालीय रूप (कलोक्वियल) विशिष्ट वर्गीय रूप (स्लग) कथोपकथन मे आपसी सबध धर्म शिक्षा भावना तथा वक्ता के सामाजिक स्तर आदि अनेक बातो का सकेत करता है। चयन ध्वनि, शब्द रूप, वाक्य समास तथा सधि आदि कई स्तरो पर होता है। कुछ उदाहरण हैं—

ध्वनि स्तर पर चयन—

गरीब-गरीब	खबर खबर	कानून-कानून
लाड लाट	स्टेशन टेसन	सिगनल सिगल
आश्चय अचरज	धरित्री धरती	जमीन जमीन
शोर-सोर	जुल्म जुलुम	क्षत्रिय छत्रिय
शाक साग	प्रकट प्रगट	मिट्टी माटी-मट्टी
वीणा बीना	वधू बहू	गृह घर
आवेगा आएगा	खायगा खाएगा	वह वो इत्यादि

शब्द स्तर पर चयन—

आना पधारना-तशरीफ लाना	तुम आप जनाब	विराजना बैठना-तशरीफ रखना
जल पानी	कलम-लेखनी	पत्र चिट्ठी-पाती
स्कूल विद्यालय	पक्षी चिड़िया परिंदा	भोजन-खाना
वृक्ष पेड	वस्त्र कपड़ा	सुन्दर खूबसूरत

आरम प्रारम शुभारम शुरुआत श्रीगणेश

विश्वविद्यालय यूनिवर्सिटी

प्रणाम नमस्कार-नमस्ते राम राम-जयहिंद आशीर्वाद-पालागन-सलाम

कृष्ण-काला	पीत-पीला	श्वेत-सफेद

कम्यूनिस्ट साम्यवादी	लाइब्रेरी पुस्तकालय	राजा बादशाह
मनुष्य आदमी इंसान	राजकुमार शाहजादा	उपवन बाग़ गार्डन
देश मुल्क	पुष्प फूल गुल	पंचम पाँचवाँ
प्रथम पहला अव्वल	द्वितीय दूसरा	वर्ष साल
शत सौ	एकादश ग्यारह	पावरोटी डबलरोटी
हाट बाज़ार मार्किट	बैठक ड्राइंगरूम	संगीत म्युज़िक इत्यादि

रूप स्तर पर चयन—

तू-तुम	तेरा-तुम्हारा	मुझे मेरे को
मुझसे मेरे से	तुझमें-तेरे में	तुझपर तेरे पर
करिए-कीजिए	किया करा	मैं हम
मेरा हमारा	ताजा (खबर)-ताज़ी (खबर)	लड़का (औरत) लड़की (औरत)
कर-करो कीजिए करें	खारी (पानी) खारा (पानी)	आइयो आना आइएगा
राज का राजा का	पटना से पटन स	गये का गया का इत्यादि

वाक्य स्तर पर—

मैं नहीं जाऊँगा।
मैं नहीं जाने का।
मैं नहीं जानेवाला।
× ✓
राम नहीं आ रहा है।
राम नहीं आ रहा।
× ✓
राम ने कहा कि मैं जाऊँगा।
राम ने कहा कि वह जाएगा।
राम ने कहा, 'मैं जाऊँगा।'
× ×
यह काम मुझसे नहीं होगा।
यह काम मुझसे नहीं किया जाएगा।
यह काम मेरे द्वारा नहीं होगा।

राम नहीं आता है।
राम नहीं आता।
× ×
राम एक अच्छा लड़का है।
राम अच्छा लड़का है।
× ×
पटना बड़ा गंदा है।
पटना बहुत गंदा है।
पटना शहर बहुत गंदा है।
पटना शहर में बहुत गंदगी है।
पटना शहर में बड़ी गंदगी है।
× ×

× ×

वह बोला।

वह बोल पड़ा।

वह बोल उठा

वह बोल गया

× ×

मुझे स्वीकार है।

मुझे इनकार नहीं है।

मुझे इनकार कब?

मुझे इनकार कब है?

मुझे इनकार कहाँ है?

मैंने इसे इनकार कब किया?

लड़का जो कल पेड़ से गिरा था आज मर गया

जो लड़का कल पेड़ से गिरा था आज मर गया।

वह लड़का जो कल पेड़ से गिरा था आज मर गया।

कल पेड़ से जो लड़का गिरा था आज मर गया।

× × ×

वह भी आज आ पड़ा।

वह भी आज आ गया।

वह भी आज आ मरा।

मोहन गया।

मोहन चला गया। इत्यादि

समास स्तर पर—

अयोध्या के नरेश—अयोध्या नरेश

पिता की अनुमति—पित्रनुमति

राजा का दरबार—राजदरबार

राजा का पुत्र—राजपुत्र

कुश का आसन—कुशासन

मातापिता—माता और पिता

कपड़े में छान करके—कपड़छन करके

घोड़े जैसा मुखवाला—घुड़मुहा इत्यादि

संधि स्तर पर—

अति उत्तम अत्युत्तम

सप्त ऋषि—सप्तर्षि

कुश आसन—कुशासन

यावत् जीवन—यावज्जीवन

एक एक—एकैक

प्रथम आशा—प्रथमाशा

तब ही—तभी

प्रथम अध्याय—प्रथमोध्याय इत्यादि

अनुवादक को चयन पर दो दृष्टियों से विचार करना चाहिए। एक तो यह कि क्या मूल लेखक ने चयन किया है। यदि किया है तो चयन के द्वारा वह क्या कुछ व्यंजित करना चाहता था। दूसरे जो वह व्यंजित करना चाहता था उसकी अभिव्यक्ति के लिए लक्ष्य भाषा में चयन की परिधि क्या है? फिर उस पूरी परिधि में अनुवादक को अपना चयन करके अभिव्यक्ति करनी चाहिए। इस प्रकार मूल लेखक के चयन का विश्लेषण करके अनुवादक मूल के अर्थ को अधिक स्पष्टता से समझ सकता है फिर स्वयं चयन करके मूल के प्रति ईमानदार हुआ अधिक न्याय कर सकता है।

पुनश्च—

ऊपर अनुवाद के प्रसग मे चयन को बात की गई।

वस्तुत अनुवाद के लिए प्राप्त सामग्री मुख्यत दो प्रकार की होती हैं

(क) सूचना प्रधान—इसमे सूचनाएँ होती हैं या तथ्य होते हैं। गणित, भौतिकी, भूगाल वाणिज्य आदि से सबद्ध सामग्री इसी वग की होती हैं इस वग के साहित्य के मूल लेखक या अनुवादक को कोई खास चयन नही करना पडता।

(ख) शैली प्रधान—इसमे शैली बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। कविता उप न्यास कहानी, ललितनिबध आदि इसी श्रेणी मे आते हैं। शैली की प्रधानता होने से इस वग के साहित्य के मूल लेखक को बडी सतकता से चयन करना पडता है। इसीलिए ऐसी सामग्री के अनुवादक के लिए भी चयन आवश्यक हो जाता है।

शैली प्रधान सामग्री के अनुवादक को दो दिशाओ म चयन का विचार करना पडता है।

मूल सामग्री←अनुवादक→अनुवाद

पहले तो मूल सामग्री को अच्छी तरह समझने के लिए वह उस चयन पर अपनी दृष्टि दौडाता है जो रचना के मूल लेखक न किया होगा। क्योंकि मूल लेखक के चयन का अनुमान लगाए बिना वह अनुवाद के लिए अपेक्षित गह राई स मूल को समझ नही सकता। मान लीजिए मूल म एक वाक्य है—

मोहन बोल उठा।

इसका ठीक अथ ऐसे नही जाना जा सकता। यदि अनुवादक यह सोच सक कि मूल लखक ने 'मोहन बोल पडा' मोहन बोला' मोहन बोल गया आदि का प्रयोग न करके 'मोहन बोल उठा का प्रयोग किया है तो उसके सामने उठा का विशेष अथ आ गया पडा आदि म नही है आ सकेगा और तभी वह मूल भाव को ठीक पकड सकेगा।

इसके बाद उसके सामने चयन की दूसरी समस्या आती है लक्ष्य भाषा म। वह उस भाव के लिए लक्ष्य भाषा म देखने का यत्न करता है कि कुल कितनी अभिव्यक्तियाँ हो सकती हैं और फिर उनमे से वह अपने लिए अपेक्षित अभि व्यक्ति का चयन करता है।

इस प्रकार मूल लेखक के चयन पर दृष्टि दौडाकर वह बिलकुल सटीक अथ जानने का यत्न करता है तो लक्ष्य भाषा मे चयन करके अनुवाद में सर्वो-त्तम सभव अभिव्यक्ति ला पाता है।

यह उदाहरण वाक्य के स्तर पर था। ध्वनि, शब्द तथा रूप के स्तर पर भी यही होता है। उदाहरण के लिए 'मिलन' फिल्म म सुनीलदत्त नूतन को सिखाता है शोर नही 'सोर। क्या यह दा स का भेद निरथक है ? कदापि नही। इसी प्रकार गगा जमुना' फिल्म मे वैजयती माला गाती है 'जुलुम भयो'। वह जुल्म' नही कहती जुलुम' भी नही। जुलुम कहती है। यह ध्वनि परिवतन भी निरथक नही है। गीतकार जानबूझ कर इसका प्रयोग कर रहा है। ध्वनि चयन के द्वारा वह कुछ कह रहा है। शुद्ध शब्द जुल्म' म वह रोमासोचित सहज मनगढ सौंदय नही है जो जुलुम मे हैं। ऐसे भी 'तुम मूख हो' और 'तुम मूरख हो' एक नही है। यहाँ तक ध्वनि की बात थी। शब्द और रूप के आधार पर भी देखा जा सकता है कि चयन मूल लेखक और अनुवादक दोनो ही को अपनी और यथातथ अभिव्यक्ति देने म सहायक होता है।



१६

अनुवाद और भाषा की सूचना-शक्ति

हर भाषा की सूचना शक्ति समान नहीं होती। अनेक विषयों में हम पाते हैं कि एक भाषा की सूचना अधिक सटीक और सूक्ष्म होती है जब कि दूसरी भाषा में वह स्थूल होती है। उदाहरण के लिए हिंदी वाक्य 'उसने रोटी खाई' में उसने से यह पता नहीं चलता कि वह 'पुरुष' है या स्त्री', जबकि इसके अंग्रेजी रूपांतर में he या she का प्रयोग होने से इस बात का पता लग जाता है। दूसरी तरफ अंग्रेजी वाक्य He is my uncle से यह पता नहीं चलता कि यह रिश्ता क्या है क्योंकि अंकल शब्द बहुत स्थूल सूचना ही दे सकता है। इसके विपरीत हिंदी में uncle के स्थान पर चचा, फूफा, मौसा, मामा ताऊ आदि का प्रयोग होगा और इन शब्दों से रिश्ते का ठीक पता चल जाता है।

स्रोत और लक्ष्य भाषा में, जिस विषय में सूचना शक्ति समान नहीं होती, उसका अनुवाद करने में अनुवादक के सामने कठिनाई उपस्थित हो जाती है और अनुवादक के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि ठीक अनुवाद करने के लिए वह अपेक्षित सूचना सन्दर्भ से आस पास के वाक्यों से या कहीं से भी एकत्र करे। बिना इसके उसका ठीक अनुवाद नहीं हो सकता। ऊपर के ही वाक्य उसने रोटी खाई का अनुवाद अंग्रेजी में नहीं किया जा सकता जब तक कि उस के लिंग का पता नहीं चल जाए। इसी प्रकार He is my uncle का हिंदी अनुवाद तब तक नहीं हो सकता, जब तक कि uncle का ठीक रिश्ता ज्ञात न हो। और यदि अनूद्य सामग्री से इस तरह की अपेक्षित सूचना नहीं मिलती और कहीं अन्यत्र से भी नहीं मिल पाती तो अनुवादक को अनुमान से अनुवाद करना पड़ता है जो गलत भी हो सकता है सही भी। ऐसे अनुवादों में गलती उन तीनों प्रकारों की हो सकती है जिनका उल्लेख 'अर्थविज्ञान और अनुवाद' में अन्यत्र किया जा चुका है अर्थ संकोच (जैसे अंग्रेजी जैस्मिन का हिंदी चमेली) अर्थ विस्तार (जैसे हिंदी जुही का फारसी यासमीन) तथा अर्थादेश (जैसे अंग्रेजी में 'बूथा' अर्थ में प्रयुक्त 'माट' के लिए हिंदी चाचो)।

इसके विपरीत जिन विषयों में स्रोत और लक्ष्य भाषा की सूचना शक्ति समान होती है अनुवादक को इस प्रकार की कठिनाई नहीं होती।

१७

मुहावरों के अनुवाद की समस्या

अनुवाद में जिन विभिन्न प्रकार की समस्याओं से अनुवादक को जूझना पड़ता है उनमें एक महत्त्वपूर्ण समस्या मुहावरों के अनुवाद की है। सामान्य शब्दावली के माध्यम से की गई अभिव्यक्ति की तुलना में मुहावरों के माध्यम से की गई अभिव्यक्ति जितनी अधिक प्रभावशाली तथा व्यंजक होती है उन का अनुवाद भी उतना ही कठिन होता है।

अनुवाद करते समय स्रोत भाषा में किसी मुहावरे के मिलने पर अनुवादक का प्रयास सबसे पहले लक्ष्य भाषा में उस मुहावरे के शब्द तथा अर्थ दोनों दृष्टियों से समान मुहावरे की खोज की दिशा में होना चाहिए। स्रोत और लक्ष्य भाषा में कुछ ऐसे मुहावरे भी मिल जाते हैं जिनमें शब्द और अर्थ (या भाव) दोनों की समानता हो। यह समानता कई कारणों से हो सकती है इनमें सबसे प्रमुख कारण एक भाषा का दूसरी पर प्रभाव है। उदाहरण के लिए मान लें कि कोई अनुवादक अंग्रेज़ी से हिन्दी या हिन्दी से अंग्रेज़ी में अनुवाद कर रहा है। अंग्रेज़ी भाषा ने अन्य क्षेत्रों की भाँति मुहावरों के क्षेत्र में भी हिन्दी भाषा को प्रभावित किया है, अतः यह स्वाभाविक ही है कि दोनों में अनेक मुहावरे ऐसे मिलते हैं जो शब्द और अर्थ दोनों ही दृष्टियों से समान हैं। कुछ उदाहरण—

अंग्रेज़ी—To keep in the dark
हिन्दी—अँधेरे में रखना
अंग्रेज़ी—White lie
हिंदी—सफेद झूठ
अंग्रेज़ी—White elephant
हिंदी—सफेद हाथी
अंग्रेज़ी—iron curtain
हिंदी—लौह आवरण
अंग्रेज़ी—cold war
हिंदी—शीत युद्ध
अंग्रेज़ी—Broken hearted
हिन्दी—भग्न हृदय
अंग्रेज़ी—Bird s eye view
हिन्दी—विहगम दृष्टि
अंग्रेज़ी—To gird up
हिन्दी—कटि बद्ध होना
अंग्रेज़ी—To throw mud
अंग्रेज़ी—कीचड़ उछालना
अंग्रेज़ी—To get blood thirsty
हिंदी—खून का प्यासा होना
अंग्रेज़ी—To throw dust into one s eyes
हिन्दी—(किसी की) आँखों में धूल झोंकना
अंग्रेज़ी—Black market
हिन्दी—काला बाजार

इसी प्रकार मध्यकाल में फारसी भाषा का हिंदी भाषा पर अन्य क्षेत्रों की भाँति मुहावरों के क्षेत्र में प्रभाव पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप इन दोनों भाषाओं में अनेक मुहावरे शब्द तथा अर्थ दोनों ही दृष्टियों से समान हैं। उदाहरण के लिए—

फ़ारसी—दर्दां तुश करदन
हिन्दी—दाँत खट्टे करना
फ़ारसी—मार ए-आस्तीन

हिन्दी—आस्तीन का साँप

फारसी—दस्त अज जान शुस्तन

हिन्दी—जान से हाथ धोना

फारसी—कमर बस्तन

हिन्दी—कमर बाँधना

फारसी—अंगुश्त ब दन्दाँ

हिन्दी—दाँतों तले उँगली दबाना

फारसी—आब शुदन

हिन्दी—पानी पानी होना

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि प्रभाव के समान स्रोत के कारण स्रोत तथा लक्ष्य भाषा में अर्थ तथा शब्द दोनों ही दृष्टि से समान मुहावरे मिल जाते हैं। उदाहरण के लिए समान स्रोत के कारण निम्नांकित मुहावरे हिन्दी मराठी, हिन्दी बंगला तथा हिन्दी गुजराती आदि में समान हैं—

फारसी—अंगूर तुर्श शुदन (मूल स्रोत)

हिन्दी—अंगूर खट्टे होना

मराठी—द्राक्ष आंबट होणें

अंग्रेजी—grapes are sour

फारसी—जमीन ओ आसमान यक करदन (मूल स्रोत)

हिन्दी—जमीन आसमान एक करना, आकाश पाताल एक करना

मराठी—आकाश पाताल एक करणें

अंग्रेजी—To throw dust into one's eyes

मराठी—डोळ्यांत धूळ फेकणें

बँगला—चोखे धूला देओया

हिन्दी—आँखों में धूल झोंकना या फेंकना

अंग्रेजी—To build castle in the air (मूल)

हिन्दी—हवाई किले बनाना

गुजराती—हवाई किल्ला बांधवा

वस्तुतः आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में संस्कृत, फारसी तथा अंग्रेजी से अनेक मुहावरे आए हैं। अतः उनमें शाब्दिक तथा आर्थिक समानता है।

स्रोत तथा लक्ष्य भाषा के मुहावरों में कभी-कभी शब्द और अर्थ की दृष्टि से ऐसी समानता भी मिलती है जिसके कारण के बारे में कुछ कहना कठिन

है। सम्भव है यह आपसी प्रभाव या लेन देन, समान स्रोत, समान अनुभव या सर्वांगवाद हो। कुछ उदाहरण हैं —

फारसी—कमर बस्तन
अंग्रेजी—To gird up one's lions, To gird oneself
हिन्दी—गुस्सा पी जाना
गुजराती—गुस्सो पी जवो
मराठी—बारा घाटांचे पाणी पिणें
हिन्दी—बारह घाट का पानी पीना
हिन्दी—कोल्हू का बैल
मराठी—घाण्याचा बैल (घाणा-कोल्हू)
गुजराती—घाणद ना बळद चालवा
हिन्दी—कोल्हू में पेर चलाना
बंगला—डुमुर फूल
हिन्दी—गूलर का फूल
हिन्दी—नानी याद आना
पंजाबी—नानी याद आउणा
हिन्दी—ईद का चाँद
बंगला—ईदेर चाँद
उड़िया—निज गोड़र निज कोराड़ि मारिब
हिन्दी—अपने पाँव पर आप कुल्हाड़ी मारना
मराठी—द्राविड़ी प्राणायाम करणें।
हिन्दी—द्राविड़ प्राणायाम करना।
हिन्दी—छुरी की धार चलना
गुजराती—तलवार धार चालवं
मराठी—कमर टूटणें
हिन्दी—कमर टूटना
हिन्दी—आग में घी डालना
बंगला—आगुने घी ढाला
उड़िया—अग्निर कता हुबा
हिन्दी—आँखों का काँटा होना
हिन्दी—घाट घाट का पानी पीना
गुजराती—घाट घाट ना पाणी पीवा

मराठी—आकाश पाताल चे अंतर
हिंदी—आकाश पाताल का अंतर
हिंदी—आग लगाना
मराठी—आग लावणें
मराठी—तोंड काळे करणें
हिंदी—मुंह काला करना
हिन्दी—बात का बतंगड़ करना
गुजराती—वातनुं वतेसर करवुं
गुजराती—आँख लाल-पीली करवी
हिन्दी—आँख लाल पीली करना
मराठी—राइ चा पर्वत करणें
हिन्दी—राई का पर्वत करना
पंजाबी—अपने पैरां ते कुहाड़ी मारना
हिंदी—अपने पांव पर आप कुल्हाड़ी मारना
हिन्दी—अंगूठा दिखाना
उड़िया—बूढ़ा आंगुठि देखाइबा
(उड़िया में अंगूठा को बुढ़ाआंगुठि कहते हैं)
मराठी—डाळ न शिजणें
हिन्दी—दाल न गलना
उड़िया—हाथ पाउ पाउ बाहा धरिबा
हिन्दी—उंगली पकड़कर पहुँचा पकड़ना
हिन्दी—गागर में सागर भरना
गुजराती—गागरमां सागर समाववो

स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय लक्ष्य भाषा में समान मुहावरों की खोज करने में जल्दी नहीं करनी चाहिए। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि लक्ष्य भाषा में स्रोत भाषा के उक्त मुहावरे के लिए एक से अधिक मुहावरे होते हैं जिनमें एक भाव की दृष्टि से लगभग समान होता है, दूसरा भाव की दृष्टि से पूर्णतः समान होता है तथा तीसरा भाव तथा शब्द दोनों की दृष्टियों से पूर्णतः समान होता है। स्पष्ट ही तीसरा मुहावरा ही अनुवाद के लिए सर्वोत्तम है। उदाहरण के लिए मान लीजिए हिन्दी से गुजराती में अनुवाद किया जा रहा है और हिन्दी में 'गुस्सा पी जाना' का प्रयोग है। गुजराती में लगभग इसी अर्थ में 'क्रोध गटी जवो' का प्रयोग होता है। अनु

वादक जल्दी मे अनुवाद म इसका प्रयोग कर सकता है किंतु गुजराती म इसी भाव का एक दूसरा भी मुहावरा है गुस्सा पी जवो'। स्पष्ट ही भाव तथा शब्द दोनो ही दृष्टियों से समान होने के कारण अधिक सटीक अनुवाद यह दूसरा ही होगा। किंतु इस बात से भी अनुवादक को सतर्क रहना चाहिए कि कहीं ऐसा तो नहीं है कि शब्दसाम्य होने पर भी अपेक्षित भाव साम्य नहीं है। कभी कभी समान शब्दावली तथा भाव मे कुछ समानता होने पर भी दो भाषाओं के मुहावरे अर्थ म पूर्णत एक नहीं होते। उदाहरण के लिए—

हिन्दी—चारपाई पकडना
मराठी—अंथरूणास खिळणें
(बिस्तर से चिपकना)

दोनों काफी समीप हैं किंतु हिन्दी मुहावरे का प्रयोग थोडे बीमार होने पर भी हो सकता है जबकि मराठी का बहुत अधिक बीमार होने पर। अनुवादक को इन ऊपरी समानता वाले मुहावरों से बचना चाहिए।

इसी तरह अंग्रेजी To build castle in the air का हिन्दी मे मन के लड्डू खाना' अनुवाद भी हो सकता है किन्तु हवाई किले बनाना अधिक अच्छा होगा।

अनुवादक को स्रोत और लक्ष्य भाषा मे यदि आर्थिक और शाब्दिक दोनों ही दृष्टियों से समान मुहावरे न मिलें तो अर्थ की दृष्टि से समान तथा शब्द की दृष्टि से लगभग समान मुहावरों की खोज की जानी चाहिए। अनेक भाषाओं म ऐसे मुहावरे मिल जाते हैं। उदाहरण के लिए—

हिन्दी—आँखो म धूल झोंकना
गुजराती—आंखमा धूल नाखवी
अंग्रेजी—To add fuel to flame
हिन्दी—आग मे घी डालना
गुजराती—अंगूठो बतावो (अंगूठा बताना)
हिन्दी—अंगूठा दिखाना
पंजाबी—नेडे ना लग्गण देणा
हिन्दी—पास न फटकने देना
गुजराती—डोळा काडवा
हिन्दी—आँखें निकालना
हिन्दी—गला भर आना

मराठी—कंठ दाटून येणें
यों मराठी में 'गला भरून यणें (लगना) भी होता है।
हिंदी—उंगली पकड़कर पहुँचा पकड़ना
गुजराती—आगळी आपता पोंचो पकड्यो (उंगली देते हुए पहुँचा पकड़ना
मराठी—नाक तोंड मुरडणें (नाक मुह मोड़ना)
हिंदी—नाक भौं सिकोड़ना
हिंदी—जान हथेली पर लेना
मराठी—तळ हातावर शिर घेणें
मराठी—साता समुद्रापलीकडे (सात समुद्र के परली ओर)
हिंदी—सात समुंदर पार
बंगला—अमस्यार चाद
हिंदी—ईद का चाद
(मूलत इन दोनो म अतर है किन्तु प्रयोगत ये अथ की दृष्टि स समान हैं)

अनुवादक को यदि उपयुक्त प्रकार के शाब्दिक एव आर्थिक समानता वाले मुहावरे न मिलें तो शाब्दिक समानता को छोड केवल आर्थिक समानता पर ध्यान देने के अतिरिक्त उसके पास कोई और चारा नहीं रह जाता। उदाहरण क लिए हिन्दी म अथ विशेष म छठी का दूध याद आना मुहावरा चलता है। मान लीजिए पजाबी म कोई व्यक्ति अनुवाद कर रहा है। पजाबी म यह मुहावरा नहीं है। इस अथ मे वहा नानी याद आणा' चलता है। इस का अथ यह हुआ कि पजाबी म अनुवाद करने वाले को छठी का दूध याद आना के स्थान पर पजाबी म नानी याद आणा रखना पडेगा। हिन्दी में नानी याद आ ना' भी चलता है अत पजाबी से हिन्दी अनुवाद म इस मुहावरे म दोनों स्तरों पर समानता उपलब्ध है। इस प्रकार के आर्थिक समानता वाले मुहावरे काफी भाषाओं मे मिल जाते हैं।

हिंदी—ऊल जलूल बातें करना
मराठी—अघळ पघळ बोलणें
हिंदी—मूसलाधार बरसना
मराठी—आभाळास भोंक पडणें
(आकाश में सेंध पडना)
अंग्रेजी—To rain cats and dogs
मराठी—जीभ मोकळी सोडणें
(जीभ स्वतंत्र छोड़ना)

हिन्दी—जीभ की लगाम ढीली करना
अग्रज़ी—Cock and bull story
हिन्दी—बे सिर-पर की बात
हिंदी—अपनी आँख से पूछना
अग्रज़ी—To take the evidence of one's eyes
अग्रज़ी—apple of discard
हिंदी—झगडे की जड
हिंदी—भगीरथ प्रयत्न
अंग्रेजी Herculean effort
उड़िया—आखि रे आखि मिशिवा (आख से आख मिलना)
हिंदी—आखें चार होना
हिंदी—आखें पथराना
उड़िया—आखिरु पाणि मरिबा
(आख से पानी मरना)
हिंदी—काला अक्षर भस बराबर होना
मराठी—अक्षर शत्रु असणें
अंग्रेजी—cast in the same mould
हिंदी—एक ही थली के चट्टे बट्टे होना
हिंदी—ऊट के मुह म जीरा
अंग्रेजी—A drop in the ocean
अंग्रेजी—To have on the brain
हिन्दी— का भूत सवार होना
— ..की धुन सवार होना
की सनक सवार होना
हिन्दी—मन म चोर होना
अग्रज़ी—To have no arriere pensee

यदि स्रोत भाषा के किसी मुहावरे का शाब्दिक और आर्थिक दोना दृष्टियों से कोई समान मुहावरा लक्ष्य भाषा मे न मिले तथा केवल आर्थिक या भाव की समानता वाले मुहावरे की खोज में भी निराश होना पड़े तो अनुवादक स्रोत भाषा के मुहावरे का लक्ष्य भाषा म शाब्दिक अनुवाद करने की बात सोच सकता है, किंतु इसके साथ एक ही शर्त है। उस अनूदित मुहावरे को लक्ष्य भाषा मे वही भाव या अर्थ व्यक्त करना चाहिए जो मूल

मुहावरा स्रोत-भाषा में कर रहा हो। यदि ऐसा नहीं है तो अनुवाद नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए अंग्रेजी का एक मुहावरा है To put the cart before the horse इससे युक्त किसी अंग्रेजी सामग्री का हिंदी अनुवाद करते समय इसे 'घोड़े के आगे गाड़ी रखना' रूप में अनूदित किया जा सकता है या मराठी 'जिभेचा पट्टा चालू करणें' को हिंदी 'जीभ का पट्टा चालू करना' या अंग्रेजी Not to know the a b c of को हिन्दी में 'क ख ग घ न जानना' या 'का क स ग न जानना', A fish out of water' का 'जल के बाहर मछली' To lick the boots of ' को 'किसी के जूते चाटना' (यद्यपि इसके लिए तलवे चाटना या सहलाना चलता है) कहा जा सकता है किंतु To beat about the bush का हिंदी अनुवाद 'झाड़ी के आस पास पीटना' नहीं किया जा सकता और न To find one self in hot water को हिंदी में 'अपने को गर्म पानी में पाना' या हिंदी 'पानी पानी होना' या 'नौ दो ग्यारह होना' को अंग्रेजी में Nine and two make eleven या To become water water ही किया जा सकता है। इसका आशय यह हुआ कि किसी मुहावरे का शाब्दिक अनुवाद करने के पूर्व इस बात पर अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिए कि लक्ष्य भाषा में वह हास्यास्पद तो नहीं होगा और वही भाव दे सकेगा या नहीं जो मूल मुहावरा स्रोत भाषा में दे रहा है।

स्रोत भाषा में शब्द अर्थ या केवल अर्थ की समानता वाले मुहावरे न मिलने पर तथा ऊपर कथित कारणों से मुहावरे के शाब्दिक अनुवाद के योग्य न होने पर, अनुवादक के सामने दो ही रास्ते रह जाते हैं या तो वह मुहावरे में अनुवाद न करे, सीधी सादी भाषा में उसका भावार्थ व्यक्त कर दे या फिर उक्त मुहावरे के भाव वाला कोई नया मुहावरा लक्ष्य भाषा में स्वयं गढ़ ले। इन दोनों में पहला रास्ता ही अधिक सरल और निरापद होता है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी का एक मुहावरा है जो मूलतः उपमा अलंकार पर आधारित है dead like a dodo। 'डोडो' एक प्राचीन जंतु है जो अब विलुप्त हो चुका है। इस मुहावरे का अर्थ है 'ऐसा मरा हुआ कि फिर जीने की संभावना न हो।' हिन्दी में इसके समान कोई मुहावरेदार अभिव्यक्ति कम से कम मुझे नहीं याद आ रही है। 'डोडो की तरह मृत' हिंदी में नहीं चल सकता। ऐसी स्थिति में इसे सीधे शब्दों में 'बिल्कुल ही मर चुका है' या कुछ इसी प्रकार कहना पड़ेगा। अर्थात् अनुवाद मुहावरे में न करके सीधे शब्दों में करना पड़ता है। कुछ अंग्रेजी और हिन्दी मुहावरों के हिन्दी

और अंग्रेजी म इस प्रकार के भावानुवाद यो किए जा सकते हैं

To beat about the bush	विषय से हटकर बोलना या लिखना मुख्य प्रश्न या बात पर न आना
To beat black and blue	मारते मारते नील डाल देना बड़ी बुरी तरह मारना
To go to the dogs	बर्बाद हो जाना
To pay back in the same coins	जैसे को तैसा देना, जैसे के साथ तैसा व्यवहार करना

(ईंट का जवाब पत्थर से देना' इसके समान लगता है किंतु वस्तुत इसमे जवाब 'समान' न होकर अधिक' है।)

आँख का पानी उतर जाना	To become shameless
गधे को बाप बनाना	To flatter a fool for expediency
दाँत खट्टे करना	To give a tight fight
गाँठ का पूरा आँख का अंधा	having a full purse and an empty head
पत्थर पर दूब जमना	An impossible phenomenon to occur
पानी न मांगना	To die instantly
आँखें बिछाना	To give a very cordial welcome
पानी से पहले पुल बाँधना	To make preparation to counter an unseen crisis
सिर पड़े का सौदा	a matter with no alternative

अनुवाद म सबसे अधिक मुहावरों के साथ प्राय यही करना पड़ता है। कुछ अन्य उदाहरण हैं—

मराठी—उम्बरास फूल येणें
(गूलर का फूल लाना गूलर के पेड म फूल नहीं लगते)
हिंदी—असम्भव काय करना
मराठी—पासगास न पुरणें
(पासग को भी न पूरा करना)
हिंदी—बहुत कम होना
(ऊँट के मुँह में जीरा होना भी कुछ अर्थों मे हो सकता है।)

मराठी—रत्नापोटी गारगोटी होणें
(रत्न के पेट में कीचड़ की गोटी होना)

हिन्दी—अच्छे के घर बुरी सन्तान होना

पंजाबी—रसोई दी इट्ट मोरी लाणा

हिन्दी—अच्छी चीज बुरी जगह लगाना उच्च कुल के या गुणी के लड़के (या लड़की) से निम्न कुल या दुर्गुणी की लड़की (या लड़का) का संबंध करना।

मराठी—अवदशाबाईचा फेरा येणें
(अवदशाबाई—बुराई की अधिष्ठात्री देवी)

हिन्दी—बहुत बुरी स्थिति आना

अंग्रेजी—To have at one s fingers ends

हिन्दी—कंठस्थ होना

अंग्रेजी—Tooth and nail

हिन्दी—जी जान से, पूरी शक्ति से

अंग्रेजी—To give a blank cheque

हिन्दी—खुली छूट देना

किन्तु जैसा कि ऊपर संकेतित है एक दूसरा रास्ता भी जहाँ सम्भव हो अनुवादक द्वारा अपनाया जाना चाहिए। अनुवाद का काय creative काय है और किसी मुहावरे का अनुवाद मुहावरे में न करके सीधे सादे शब्दों में उसे व्यक्त करना उस creativity को क्षति पहुँचाना है। मुहावरे से युक्त अभिव्यक्ति में अर्थ की गहराई, व्यंग्यात्मकता के कारण सामान्य शब्दों की अभिव्यक्ति से अधिक होती है। इसीलिए जब हम अनुवाद में किसी मुहावरे के स्थान पर सादे सादे शब्दों का प्रयोग करते हैं तो वह अनुवाद प्राय मात्र कामचलाऊ होता है। मूल की पूरी अर्थवत्ता अपनी व्यंग्यात्मकता के साथ लक्ष्य भाषा में नहीं उतर पाती। इस तरह अनुवाद मूल की गहराई तक नहीं पहुँच पाता। कम से कम मेरे विचार में इसीलिए कुशल अनुवादक को पूरा अधिकार है कि कोई और रास्ता न होने पर स्रोत भाषा के मुहावरे के लिए लक्ष्य भाषा में यदि संभव हो तो सहज, सटीक तथा लक्ष्य भाषा की प्रवृत्ति के अनुकूल कोई मुहावरा गढ़ ले। उदाहरण के लिए मान लीजिए हिन्दी में किसी सामग्री में मुहावरा आया 'जिस पत्तल में खाना उसी में छेद करना'। अनुवाद अंग्रेजी में किया जा रहा है। अंग्रेजी में इसके समान मुहावरा कम से कम मेरी जानकारी में कोई नहीं है। अनुवादक चाहे तो इसके भाव को

सीधे माध्य अंग्रेजी शब्द में व्यक्त कर सकता है, किन्तु कदाचित् अधिक अच्छा यह होगा कि वह To blow off a roof that provides shelter या To cut off the hand that feeds जैसा कोई मुहावरा गढ़ ले। ऐसा करने से मूल अभिव्यक्ति की गहराई प्राय अक्षुण्ण रह जाती है, उसको क्षति नहीं पहुँचती। इसी तरह 'पानी में रहकर मगर से बैर करना' को अंग्रेज़ी में To live in Rome and strife with Pope रूप में मुहावरा गढ़ कर व्यक्त किया जा सकता है।

मुहावरों के अनुवाद में एक यह बात विशेष रूप से उल्लेख्य है कि कभी-कभी मुहावरों को अनुवादक पहचान नहीं पाता और वसी स्थिति में उनके शब्दों को सामान्य शब्द समझ कर वह सीधे अनुवाद कर देने की गलती कर बैठता है जिससे ग्रंथ का अनर्थ हो जाता है या कभी कभी अपेक्षित अभिव्यक्ति नहीं हो पाता। उदाहरण के लिए एक वाक्य है 'कल को वह शैतान मुझे मार बैठे तो कौन जिम्मेदार होगा?' इसमें 'कल को' वस्तुतः भविष्य में के अर्थ का मुहावरा है। इस बात को न पकड़ सकने के कारण अंग्रेज़ी में अनुवाद करने वाला इसे tomorrow रूप में अनूदित करने की गलती कर सकता है। इसी तरह blod faced निर्भीक मुख' या धृष्टमुखी या निर्भीक' या ढीठ' नहीं है अपितु निर्लज्ज या बेशर्म है blue blood नीला खून वाला' न होकर कुलीन या 'अभिजात' है तथा blue book नीली पुस्तक' न होकर अधिकृत रिपोट है। वस्तुत होता यह है कि लोकोक्तियाँ तो प्राय पानी में तेल की बूँद की तरह अभिव्यक्ति में अलग रहती हैं अत उन्हें अनुवादक सरलता से पहचान लेता है, अत अनुवाद में गलती होने की सम्भावना अपेक्षाकृत कम रह जाती है किन्तु मुहावरे अभिव्यक्ति में दूध पानी की तरह घुले मिले रहते हैं अत उन्हें पहचानना अपेक्षाकृत कठिन होता है। इसीलिए उनके अनुवाद में गलती होने की सम्भावना अधिक रहती है।

एक बात और। पूरे मुहावरे को एक भाषिक इकाई मानकर अनुवाद करना चाहिए। उदाहरण के लिए He fell in love with her का वह प्रेम में गिरा उसके साथ या वह उसके साथ प्रेम में गिरा' अनुवाद नहीं हो सकता। fall in love with एक भाषिक इकाई है अत पूरे को एक साथ लेना पड़ेगा शब्द शब्द नहीं वरना वह शाब्दिक अनुवाद हो जाएगा, जो निरर्थक और हास्यास्पद होगा। इसी प्रकार 'मेरा सर चक्कर खा रहा है' में सर चक्कर खाना को एक भाषिक इकाई मानकर अनुवाद करना चाहिए। यदि इस वाक्य में सर चक्कर खाना' तीनों को तीन स्वतन्त्र भाषिक इकाइयाँ मानने की गलती कोई अनुवादक कर बैठे तो My head is eating circle जैसा हास्यास्पद और निरर्थक अनुवाद हो जाएगा।

१८

लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्या

लोकोक्तियाँ प्रायः सभी भाषाओं में अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती हैं। किन्तु वे अभिव्यंजना की दृष्टि से जितनी ही सशक्त होती हैं, कुछ थोड़े अपवादों को छोड़कर, अनुवाद करने की दृष्टि से उतनी ही अधिक कठिन होती हैं। अच्छा से अच्छा अनुवादक भी जहाँ सामान्य शब्दों द्वारा की गई अभिव्यक्तियों का किसी भाषा में बड़ी सरलता से अनुवाद कर लेता है वहीं लोकोक्तियुक्त अभिव्यक्ति उसके लिए प्रायः टेढ़ी खीर बन जाती है। इसके कई कारण हैं। सबसे बड़ा कारण तो यह है कि एक से अधिक भाषाओं की सामान्य शब्द आधारित अभिव्यक्ति पर अधिकार पाना (वह अधिकार चाहे अभिव्यक्ति को समझने का हो या अपने भावों को अभिव्यक्त करने का) अपेक्षाकृत सरल होता है, किन्तु लोकोक्ति आधारित अभिव्यक्ति पर अधिकार काफी कठिन होता है। इन पंक्तियों के लेखक ने प्रयोग करके देखा कि काफी सुशिक्षित व्यक्ति भी पूरी गहराई के साथ केवल अपनी मातृभाषा की लोकोक्तियों को ही समझ पाते हैं तथा केवल उन्हीं का पूरी अयथता के साथ प्रयोग कर पाते हैं। इस प्रकार का प्रयोग मैंने उच्चतम कक्षाओं को अंग्रेजी पढ़ाने वाले हिन्दी तथा पंजाबी भाषी प्राध्यापकों, अहिन्दी प्रदेशों में उच्चतम कक्षाओं को हिन्दी पढ़ाने वाले अहिन्दी भाषी प्राध्यापकों तथा रूस में हिन्दी पढ़ाने वाले उज्बेक एवं रूसी भाषी अध्यापकों के साथ किया और इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि कुछ बहुप्रचलित लोकोक्तियों को छोड़कर शेष अनेक लोकोक्तियों का ज्ञान सम्बद्ध अध्यापकों को या तो था ही नहीं या था भी तो बहुत सही या गलत। केवल ऐसे कुछ लोगों को अपवादतः मैंने अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा की लोकोक्तियों से पूरी गहराई के साथ परिचित पाया जो उक्त भाषा के क्षेत्र में काफी दिनों तक रहते रहे हैं तथा उस भाषा के भाषियों का जीवन ही वे भाषा, समाज, संस्कृति आदि सभी दृष्टियों से जीते रहे हैं। वस्तुतः लोकोक्तियों की जड़ें भाषाविशेष के जीवन और संस्कृति में बहुत गहरी होती हैं। यह कहना अत्युक्ति न होगी कि कुछ विशेष शब्दों को छोड़ दें तो भाषा के सामान्य शब्दों की जड़ें लोकोक्तियों की

तुलना में कम गहरी होती हैं। यही कारण है कि अपनी मातृभाषा को छोड़कर किसी अन्य भाषा के सामान्य शब्दों पर अधिकार पाना जितना सरल है उसकी लोकोक्तियों पर अधिकार पाना प्रायः उतना ही कठिन है। किसी भी भाषा के मातृभाषियों के जीवन को पूरी तरह जिए बिना उनकी परंपराओं से परिचित हुए बिना उनकी अनेक लोकोक्तियों को ठीक से समझा नहीं जा सकता। हाँ दो या तीन भाषाओं के क्षेत्रों की सीमा पर रहने वाले व्यक्ति दो या तीन भाषाओं पर प्रायः मातृभाषा जैसा अधिकार रखते हैं अतः वे अपवादतः उन दोनों या तीनों भाषाओं की लोकोक्तियों से काफी परिचित होते हैं।

इसके साथ साथ एक काफी बड़ी कठिनाई यह भी है कि एक भाषा से दूसरी भाषा के शब्दकोश तो काफी मिल जाते हैं किन्तु एक भाषा से दूसरी भाषा के लोकोक्तिकोश एकाध अपवादों को छोड़कर प्रायः नहीं हैं और शब्दकोशों में, चाहे वे कितने भी बड़े क्यों न हों लोकोक्तियाँ या तो होती ही नहीं या होती भी हैं तो बहुत कम। ऐसी स्थिति में शब्दों पर आधारित अभिव्यक्तियों के अनुवाद में आवश्यकता पड़ने पर कोशों से सहायता ली जा सकती है और ली जाती है, किन्तु लोकोक्ति के क्षेत्र में यह द्वार भी प्रायः बंद है।

एक बात और। द्विभाषिक लोकोक्ति कोश बनाना भी कोई सरल कार्य नहीं। इसका प्रमुख कारण यह है कि जहाँ तक शब्दों का प्रश्न है दो भाषाओं में सत्तर अस्सी या कभी-कभी नब्बे प्रतिशत तक समानार्थी (एकार्थी न सही निकटार्थी) शब्द मिल जाते हैं, अतः शब्दकोश बनाना सरल है। किन्तु दो भाषाओं की लोकोक्तियों में समानार्थी लोकोक्तियाँ शायद बीस-पच्चीस प्रतिशत से ज्यादा न होंगी। और समानार्थी लोकोक्ति न मिलने पर किसी अन्य भाषा में शब्दों के माध्यम से किसी अन्य भाषा की लोकोक्तियों को समझा पाना काफी कठिन है—कम से कम उन लोकोक्तियों का जो अपनी अर्थवत्ता में बहुत सतही नहीं हैं। नौ की लकड़ी नब्बे खर्च स्तर की लोकोक्तियों को सरलता से समझाया जा सकता है बुढ़िया के मरने का डर नहीं डर है जमराज के परचने का स्तर की लोकोक्तियों को भी किसी प्रकार समझा लिया जा सकता है किन्तु करवा कुम्हार का घी जजमान का पंडित बोलें स्वाहा' स्तर की लोकोक्तियों का तो भाव ही समझाया जा सकता है। ऐसी लोकोक्तियाँ अपनी पूरी अर्थवत्ता के साथ बहुत मुश्किल से समझाई जा सकती हैं। वस्तुतः इस स्तर की लोकोक्तियाँ जीवन में घुल मिलकर समझी जा सकती हैं शब्दों के माध्यम से इनका पूरा व्यंग्य समझा पाना कठिन है।

इन्हीं कारणों से लोकोक्तियों का अनुवाद कर पाना काफी कठिन है।

यदि कोई स्रोत भाषा से पूरी तरह परिचित हो तो भी स्रोत भाषा की केवल कुछ प्रतिशत लोकोक्तियों की ही समान लोकोक्तियाँ लक्ष्य भाषा में खोज पाएगा क्योंकि कुछ प्रतिशत ही समान हो सकती हैं।

इस प्रसंग में यह भी उल्लेख्य है कि लोकोक्तियों के वास्तविक अनुवाद का अर्थ यदि उनके द्वारा व्यक्त सामान्य भाव या विचार को अन्य भाषा में उतार लिया जाय, तो काफी लोकोक्तियों को अनूदित किया जा सकता है, किन्तु सच पूछा जाय तो लोकोक्तियों की प्रमुख विशेषता में अर्थवत्ता मात्र सामान्य शब्दों द्वारा व्यक्त भाव या विचार से कहीं अधिक गहरी होती है और यह गहराई लोकोक्ति में ही निहित होती है। यदि हम अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद कर रहे हों और Grapes are sour को अंगूर खट्टे हैं रूप में अनूदित करें तो स्रोत भाषा की लोकोक्ति का अर्थ बिम्ब बिना बिखरे या खंडित हुए लक्ष्य भाषा में उतर जाता है किंतु Rome was not built in a day को उकताए गूलर नहीं पकती द्वारा पूरी तरह व्यक्त नहीं किया जा सकता। Can the Ethopian change his skin का समानार्थी अनेक स्थानों पर 'कहीं गधा भी घोड़ा बन सकता है' दिया गया है किन्तु इन दोनों का अर्थ बिम्ब काफी भिन्न है। यह अंग्रेजी लोकोक्ति काफी सतही है किन्तु 'कहीं गधा
हिन्दी लोकोक्ति की अर्थवत्ता काफी गहरी है। इसी प्रकार 'Near the church further from heaven' तथा 'चिराग तले अँधेरा' यद्यपि समान समझी जाती हैं और दोनों में व्यक्त विचार भी एक सीमा तक समान हैं, किन्तु दोनों का सम्पूर्ण प्रभाव एक नहीं है। अंग्रेजी भाषी इस अंग्रेजी लोकोक्ति से जो अर्थबिम्ब ग्रहण करता है वह ठीक वही नहीं है जो हिन्दी भाषी 'चिराग तले अँधेरा' से ग्रहण करता है।

इन सारी कठिनाइयों के बावजूद अनुवादक को इस समस्या से जूझना ही पड़ता है। उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति प्रेमचन्द का अंग्रेजी या रूसी या किसी अन्य भाषा में अनुवाद कर रहा हो तो इन सारी कठिनाइयों के होते हुए भी प्रेमचन्द द्वारा प्रयुक्त लोकोक्तियों के अनुवाद से उसका पिंड नहीं छूट सकता।

अनुवादक के सामने जब लोकोक्ति के अनुवाद की समस्या आए तो उसका प्रयास सबसे पहले स्रोत भाषा की लोकोक्ति के समान (पूरी अर्थवत्ता या पूरे अर्थबिम्ब की दृष्टि से) लोकोक्ति लक्ष्य भाषा में खोजनी चाहिए। यदि लोकोक्ति अपने भाषा भाषियों की किसी विशिष्ट सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, भौगोलिक या सामाजिक बात या तथ्य आदि से

सम्बद्ध नहीं है, तथा समान अनुभव या प्रभाव आदि किसी भी कारण से एक से अधिक भाषाओं की सम्पत्ति बन चुकी है, तो बहुत सम्भव है कि स्रोत भाषा म उसी या कुछ अन्य रूप म मिल जाए। जल्दी म कामचलाऊ अनुवाद करके अनुवाद का आगे नही बढ जाना चाहिए। इस प्रकार की समान लोकोक्तियाँ पूरे लोकोक्ति भडार की तो कुछ ही प्रतिशत होती हैं किन्तु बहु प्रयुक्त लोकोक्तियो म एसी काफी हो सकती हैं।

लोकोक्तियों की यह समानता कई कारणो से हो सकती है

(१) आपसी प्रभाव या समान स्रोत के कारण

ऐसा प्राय होता है कि विभिन्न भाषा भाषियो के आपसी सम्पर्क के कारण जब हमारा परिचय भाषा और साहित्य तक बढता है तो अनेक शब्द, मुहावरे तथा लोकोक्तिया एक भाषा से दूसरी भाषा मे चली जाती हैं। उदाहरण के लिए मध्य युग मे फारसी भाषा मुसलमानो के साथ भारत मे आई और उसस अनक लोकोक्तियाँ मूल या अनूदित रूप मे भारतीय भाषाओ में आ गई। इसस एक तरफ तो फारसी और भारतीय भाषाओ मे अनेक लोकोक्तियाँ समान हो गई, जसे फारसी हिन्दी—

फारसी—कोह कन्दन व मूश बरावुदन।

हिन्दी—खोदा पहाड, निकली चुहिया।

फारसी —व अदाज़े गलीम पा दराज़ कुन।

हिन्दी—तेता पाँव पसारिए जेती लानी सौर।

अनक फारसी लोकोक्तिया तो एसी है जो प्राय अपने मूल रूप म ही भारतीय भाषाओ म ग्रहण करली गई हैं—

माल मुफ्त दिल ब रहम।

दर आयद दुरुस्त आयद।

तदुरुस्ती हजार नमत।

इस फारसी प्रभाव स भारतीय भाषाओ म आपस मे भी, कई समान लोकोक्तियाँ प्रयुक्त होने लगी हैं। उदाहरणार्थ—

फारसी—नीम हकीम खतर ए जान।

उर्दू—नीम हकीम खतर ए जान।

कश्मीरी—नीम हकीम गव खतरे जान।

हिन्दी—नीम हकीम खतरे जान।

या

फारसी—अक्लमदारा इशारा काफी अस्त।

हिन्दी—मुसलमान के लिए इस्लाम राज्य।
राजस्थानी—चनर न हमारा भला।
या
फारसी—सग ए मुल्ला ता मस्जिद।
हिंदी—मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक।
बंगला—मोलार दौड़ मस्जिद तक।
या
मराठी—स्वत भिकारी, दाराशी धुमा दरवेश।
हिंदी—खुद मियां मगन द्वार दरवेश।
आधुनिक काल में इसी प्रकार अंग्रेजी का भी भारतीय भाषाओं पर प्रभाव पड़ा है जिसके कारण एक तरफ तो अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं में तथा दूसरी तरफ भारतीय भाषाओं में आपस में समान लोकोक्तियाँ प्रयुक्त होने लगी हैं। जैसे—
अंग्रेजी—An empty mind is devil s workship
हिंदी—खाली दिमाग शैतान का घर।
अंग्रेजी—Necessity is the mother of invention
हिंदी—आवश्यकता आविष्कार की जननी है।
अंग्रेजी—One fish infects the whole watar
हिंदी—एक मछली सारे तालाब को गंदा करती है।
अंग्रेजी—All well that ends well
हिंदी—अंत भला सो भला।
अंग्रेजी—Forsed labour is better than idlenss
कश्मीरी—वेहनस्र खोनस्र बगारय जान।
(बैठने से बगार अच्छी)
हिंदी—बेकार से बेगार भली।
अंग्रेजी—It requires two hands to clap
हिंदी—एक हाथ से ताली नहीं बजती।
कश्मीरी—अकि अथस्र छ नस्र वजान चप्रर।
अंग्रेजी—As you sow, so shall you reap
कन्नड—बितिदंते बळ दुकों।
हिन्दी—जैसा बोएगा वैसा काटेगा।
फारसी तथा अंग्रेजी की तरह संस्कृत भी भारतीय भाषाओं के लिए

लोकोक्तियों का स्रोत रही है और आज भी हैं—

सस्कृत—अर्धो घटो घोषमुपैति नूनम् ।
हिन्दी—अधजल गगरी छलकत जाय ।
बगला—आध गगरी जल करे छल छल ।
तलगू—निंड कुड तोणकदु ।
(भरी गगरी छलकती नही)
कश्मीरी—छरमय मम्मट छि बजान ।
(खाली मटकी अधिक आवाज करती है)
कन्नड—तुबिद कोड तुळुकुवदिल्ल ।
यह आश्चर्यजनक है कि अग्रेजी मे भी ठीक यही लोकोक्ति मिलती है—
Empty vessal makes much noise
सस्कृत—अति दर्पे हता लका अति दर्पे च कौरवा
असमी—अति दर्पे हत लका
हिन्दी—बहुत घमड लका नासे
उडिया—गतस्य शोचना नास्ति
हिन्दी—बीत का क्या सोचना
सस्कृत—यथा राजा तथा प्रजा
मलयालम—यथा राजा तथा प्रजा
हिन्दी—जसा राजा वसी प्रजा

सस्कृत की कुछ लोकोक्तियाँ तो प्राय अपने मूल रूप म ही भारतीय भाषाओ म मिलती हैं—

सस्कृत—अल्पविद्या भयकरी
असमी—अल्पविद्या भयकरी
हिन्दी—अल्पविद्या भयकरी
सस्कृत—यथा राजा तथा प्रजा
हिन्दी—यथा राजा तथा प्रजा
मलयालम—यथा राजा तथा प्रजा

आधुनिक भारतीय भाषाओ ने भी एक दूसरे को लोकोक्ति के क्षेत्र मे प्रभावित किया है। विशेषत हिन्दी का प्रचार प्रसार अधिक है अत उसका अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। हिन्दी की अनक लोकोक्तियाँ प्राय अपने मूल रूप म या थोड़े बहुत परिवतन के साथ बंगला, गुजराती,

उड़िया मराठी पंजाबी आदि अनेक आधुनिक भारतीय भाषाओं में मिलती है। कुछ उदाहरण हैं—

हिंदी—नाम बड़ा दर्शन थोड़ा
बंगला—नाम बड़ा दर्शन थोड़ा
हिंदी—छोटा मुंह बड़ी बात
बंगला—छोटे मुंह बड़ी बात
हिंदी—घर की मुर्गी दाल बराबर
बंगला—घरेर मुर्गी दाल बराबर
हिंदी—जहाँ न पहुँचे रवि तहाँ पहुँचे कवि
उड़िया—जहिं न पहंच रवि, तहिं बि पहंचे कवि
हिंदी—अपना हाथ जगन्नाथ।
असमी—आपोन हाथ जगन्नाथ।
असमी—अस्सी की आमदनी चौरासी का खर्च
मराठी—अंशीची प्राप्ति चौर्यायशीचा खर्च
हिंदी—एक और एक ग्यारह होते हैं।
कश्मीरी—अख त अख गव काह
(एक और एक ग्यारह होते हैं।)
हिंदी—दमड़ी की बुढ़िया टका सिरमुंडाई
तेलगू—दम्मिडी मुद्दु एगानि क्षारमु।
(दमड़ी की बुढ़िया टका सिरमुंडाई)
हिंदी—ऊंट के मुंह में जीरा
उड़िया—उट मुह रे जीरा।

इसी प्रकार अन्य भारतीय भाषाओं ने भी हिंदी तथा दूसरी भाषाओं को प्रभावित किया है। इस तरह भी इस क्षेत्र में समानताएँ बढ़ी हैं। उदाहरण के लिए हिंदी कुत्ते की दुम सौ बरस गाड़ा टेढ़ी की टेढ़ी मूलतः कदाचित् तेलगू की लोकोक्ति कुक्क तोक वंकर (कुत्ते की दुम टेढ़ी) पर आधारित है।

अब तक हम लोग विभिन्न प्रकार के प्रयत्न या परोक्ष प्रभावों के कारण लोकोक्ति के क्षेत्र में समानता की बात कर रहे थे। इन विशेष की विभिन्न भाषाओं में लोकोक्तियों की अनेक समानताएँ ऐसी भी मिलती हैं जिनके कारण के बारे में कुछ कहना कठिन है। ये समानताएँ प्रभाव, समान चिंतन या संयोग आदि किसी से भी उद्भूत हो सकती हैं। कुछ उदाहरण हैं—

संस्कृत—अति परिचयादवज्ञा।

अंग्रेजी—Familiarity breeds contempt
हिन्दी—आप भला तो जग भला
अंग्रेजी—Good mind good find
कन्नड़—ता ओळ्ळेर निद्दरे जगत्ते ओळ्ळेदु
अंग्रेजी—Every man's house is his castle
हिन्दी—अपना मकान कोट समान
अंग्रेजी—Pride goeth before a fall
हिन्दी—घमंडी का सिर नीचा
फारसी—अक्लमंदरा इशारा काफी अस्त
अंग्रेजी—To the wise a word may suffice
राजस्थानी—तैरू री पहली राड
(तैराक की स्त्री पहले विधवा होती है)
मराठी—पोहणाराच बुडतो।
अंग्रेजी—Good swimmers are often drowned
बंगला—कोथाय राजा भोज कोथाय गंगाराम तेली
हिन्दी—कहाँ राजा भोज कहाँ गंगुआ तेली
हिन्दी—जल में रहे मगर से बैर।
बंगला—जले बास करे कुमीरेर सगे बाद
असमी—नाचिब नाजाने चोताल बेंका।
हिन्दी—नाच न जाने आंगन टेढ़ा।
बंगला—नाच न जानल उठानेर दोष अथवा नाच न जानले उठान बाँका।

हिन्दी—अंधों में काना राजा।
कश्मीरी—अन्यन मञ्ज कोंय सोदर।
(अंधों में काना सुंदर)

संस्कृत—दूरतः पर्वताः रम्याः।
तेलगु—दूरपु कोंडलु नुनुपु
(दूर के पहाड़ चिकने होते हैं)

हिन्दी—जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोय
कश्मीरी—यसरधि दय, तस क्या परि भय।
संस्कृत—बहुजन गता तेन पन्था

कन्नड—एल्जन नडेवदु राजपथ

(पाँच व्यक्ति जिस रास्ते पर हैं वही राजपथ है)

तेलगू—कोडि कूपटि लेक पान तेल्लवारदा ?

(क्या मुर्गे और अंगीठी के बिना पौ नहीं फटती)

हिंदी—क्या मुर्गा नहीं बोलेगा तो सवेरा नहीं होगा ?

हिन्दी—सुनिए सबकी करिए मन की।

असमी—पररपरा शुना, किन्तु निजर मते करा।

हिंदी—चोर की दाढ़ी में तिनका।

कश्मीरी—चरि चूरस दारि क्राइ।

(भूली मछली के चोर की दाढ़ी में तिनका)

एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते समय स्रोत और लक्ष्य भाषा में इस प्रकार की समान लोकोक्तियों की खोज की जानी चाहिए।

इस प्रसंग में अनुवादक के लिए एक अन्य बात का भी ध्यान रखना बहुत आवश्यक है। कभी कभी ऐसा भी होता है कि शाब्दिक समानता के बावजूद लोकोक्तियों के अर्थ में अंतर होता है। यह ऐसा ही है जैसे हिंदी बंगला तथा दक्षिण की कई भाषाओं में 'उपन्यास' शब्द है। किंतु हिन्दी बंगला में इसका अर्थ 'उपन्यास' है जबकि दक्षिण भारत की भाषाओं में इसका अर्थ है भाषण। इस शाब्दिक समानता देखकर अनुवादक ने यदि हिंदी से कन्नड़ में अनुवाद करते समय हिंदी 'उपन्यास' का अनुवाद कन्नड़ में 'उपन्यास' कर दिया तो अर्थ का अनर्थ हो जाएगा। इसी तरह की गड़बड़ी की संभावना लोकोक्तियों के क्षेत्र में भी होती है। उदाहरण के लिए भोजपुरी की एक लोकोक्ति है 'ढेर गिहथिन मांठा पातर', अर्थात् मट्ठा बनाने में यदि कई गृहस्थिनें लग जाएं तो वह पतला हो जाता है ठीक नहीं होता।' तेलगू में कहते हैं 'मन्दि एक्कुवन मज्जिग पलुचन' अर्थात् आदमी ज्यादा हों तो मट्ठा पतला होता है। इन दोनों लोकोक्तियों में ऊपरी स्तर पर काफी साम्य लगता है किंतु अर्थतः दोनों भिन्न हैं। भोजपुरी लोकोक्ति का अर्थ है 'ढेर जोगी मठ का उजाड़' जब कि तेलगू लोकोक्ति का अर्थ है 'तीन बुलाए तेरह आए दे दाल में पानी'। अनुवादक को इन ऊपरी समानताओं से सतर्क रहना चाहिए।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि दोनों में समान लोकोक्ति न मिलने पर अनुवादक उसी भाव को लेकर दूसरी लोकोक्ति से काम चला लेता है। ऐसा तभी करना चाहिए जब यह पूर्ण निश्चय हो जाय कि समान लोकोक्ति लक्ष्य

भाषा में नहीं है। उदाहरण के लिए मान लें अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं और अंग्रेजी में Empty vessal makes much noise का प्रयोग है। अनुवादक समान भाव देखकर इसके स्थान पर 'थोथा चना बाजे घना' का प्रयोग कर सकता है, किन्तु वस्तुतः 'अधजल गगरी छलकत जाय' लोकोक्ति अधिक उपयुक्त है। यों कुछ क्षेत्रों में 'अधजल—' लोकोक्ति का प्रयोग अयोग्य या अज्ञानी बहुत ज्ञान बघारता है के लिए भी होता है। इसी प्रकार संस्कृत 'अर्धो घटो घोषमुपैति नूनम्' का अंग्रेजी में Shollow brooks are more noisey रूप में भी अनुवाद हो सकता है किन्तु अधिक उपयुक्त होगा Empty vessal makes much noise तेलगू 'निंडु कुंड तोणकदु' (भरी गगरी छलकती नहीं) का भी अंग्रेजी में, Empty vessal— तथा हिन्दी में अधजल गगरी — ही उपयुक्त अनुवाद होगा, Shallow brooks — या 'थोथा चना—' नहीं। कहने का आशय यह है कि 'भाव और शब्द' दोनों की समानतावाली लोकोक्ति केवल भाव की समानतावाली लोकोक्ति की तुलना में अनुवाद के लिए अधिक उपयुक्त होती है।

अनुवाद की दृष्टि से अगला प्रश्न यह उठता है कि यदि उपयुक्त प्रकार की समान लोकोक्तियाँ स्रोत तथा लक्ष्य भाषा में न मिलें तो अनुवादक क्या करे? स्पष्ट ही शब्द और भाव दोनों की समानता वाली लोकोक्ति न मिलने अनुवादक को अपना ध्यान समान भाव वाली लोकोक्ति पर केन्द्रित करना पड़ेगा यद्यपि इस प्रकार की लोकोक्तियों का अर्थ बिम्ब स्रोत तथा लक्ष्य भाषा में सर्वत्र एक-सा नहीं होता। किन्तु इसके प्रयोग के अतिरिक्त अनुवादक के लिए कोई और चारा नहीं होता। इस प्रकार की लोकोक्तियाँ विभिन्न भाषाओं में काफी मिल जाती हैं। कुछ उदाहरण लिए जा सकते हैं—

अंग्रेजी—A bad carpenter quarrels with his tools

हिन्दी—नाच न जाने आँगन टेढ़ा

अंग्रेजी—Traitors are the worst enemies

हिन्दी—घर का भेदी लंका ढावे

अंग्रेजी—killing two birds with one stone

हिन्दी—एक पंथ दो काज

हिन्दी—भैंस के आगे बीन बजाए भैंस खड़ी पगुराय

अंग्रेजी—Throwing pearl before a swine

अंग्रेजी—Out of sight out of mind

हिन्दी—आँख ओट पहाड़ ओट

अंग्रेजी—Every dog has his day
हिंदी—घूड़े के दिन भी फिरते हैं।
हिन्दी—कहीं बूढ़े भी तोते पढ़ते हैं ?
अंग्रेजी—Can you teach on old woman to dance ?
अंग्रेजी—Let us see which way the wind blows ?
हिंदी—देखें किस करवट ऊँट बैठता है ?
संस्कृत—दूरत पवता रम्या
फारसी—आवाजे दुहुल अज दूर खुश मी नुमायद
तमिल—समयक्कोडु मातु साविरक्कायितु
हिंदी—नौ नक्द न तेरह उधार
अंग्रेजी—One bird in hand is better than three in the bush
राजस्थानी—सात मामा रो भाणजो भूखो मर।
भोजपुरी—दू घर क पहुना कि खात खात मरे कि भुक्खन मरे।
पंजाबी—दुनिया मनदी ओरा नूं।
हिंदी—जाकी लाठी वाकी भैंस।
हिंदी—ढाक के तीन पात।
तेलगू—गोरें तोक वेत्तडे। (भेड़ की पूंछ हमेशा एक बित्ते की होती है)
हिंदी—साच को आंच कहां ?
कश्मीरी—पजिस छु ने अवाल। (सत्य का पतन नहीं होता)
हिंदी—आंख का अंधा नाम नयनसुख।
गुजराती—पटमा पावन पाणी नहिं ने नाम दरियावगा।
मराठी—नाम सानुबाई हाती कथलाचा वाला नाही।
असमी—चकुगो कुगा नाम है छ पद्मलोचन।
तेलगू—कूचुंटे लव लेडु पद बलरामुडु (बैठ जाने पर स्वयं उठ नहीं
सकता, किंतु नाम है बलराम)
अंग्रेजी—It is no use crying over spilt milk
हिन्दी—अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गई खेत।
अंग्रेजी—Like father like son
Like tree like fruit
भोजपुरी—जइसन माई आइसन धीया।
जइसन कोंहर आइसन धीया।

राजस्थानी—ईस जिसा पाया राड जिसा जाया
(जैसी पट्टी (पलंग के) वैसे पाए, जैसी स्त्री वैसी संतान)
अंग्रेजी—Everybody's business is nobody's business
हिन्दी—साझे की हाँडी चौराहे पर फूटे।
हिन्दी—कभी घी घना कभी मुट्ठी चना कभी वह भी मना।
बंगला—एक दिन रूटि, एक दिन दाल चिरकुटि।
संस्कृत—बहु वरभे लघुक्रिया।
अंग्रेजी—Barking dogs seldom bite
असमी—यत गर्जे तत न बर्षे।
अंग्रेजी—A drop in the ocean
हिन्दी—ऊँट के मुह म जीरा।
असमी—एक थामी माजात एटा जालुक।
(एक हड़ा कढी मे एक दाना मिच)
तेलगू—कुक्कनु पिलिचे कानि कटे गत्ति
चेपुद मचिदि (कुत्ते को बुलाने की अपेक्षा स्वयं मल को साफ कर लेना अच्छा है।)
हिन्दी—आप काज महाकाज।
उड़िया—जेहि पद्म तहिं भ्रमर
हिन्दी—जहाँ गुड होगा वहा कीटे होंगे।
कश्मीरी—चूठिम वुछिथ चूठ रंग रटान।
(सेब को देखकर सेब रंग पकड़ता है)
हिन्दी—खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता (या पकड़ता) है।
अंग्रेजी—Boys make boys
फारसी—जबान ए खल्क नक्कारए खुदा।
कश्मीरी—यि लूख वनन तिय छु पोज।
(जो लोग कहें वही सच है)
अंग्रेजी—Health is wealth
हिन्दी—एक तंदुरुस्ती हजार न्यामत।
हिन्दी—आप भला तो जग भला।
तेलगू—नोरू मंचिदेते उरु मंचिदि।
(यदि मुह अच्छा हो तो गाँव अच्छा)
हिन्दी—बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।

कश्मीरी—खर चाह जानि जाफ़रानुक स्वाद ।
(गधा क्या जाने केसर का स्वाद)
कन्नड़—बेळेयुव सिरि मोळकेयल्ले काणुत्ते ।
हिन्दी—होनहार बिरवान के होत चीकने पात ।
पूत के पाँव पालने में पहचाने जाते हैं ।
तेलुगु—पु पु पुट्टगने परिमळिस्तुदि ।
(फूल जन्म के साथ ही महकने लगता है)
अंग्रेज़ी—*A figure among cyphers*
हिन्दी—अन्धों में काना राजा ।
कन्नड़—कुरुडरल्लि मल्लु गण्णे श्रेष्ठ ।
तेलुगु—काकि पिल्ल काकिकि मुद्दु ।
(कौए का बच्चा कौवे को लाडला)
हिन्दी—अपना पूत सबको प्यारा ।
अंग्रेज़ी—*Union is strength*
हिन्दी—एक और एक ग्यारह होते हैं ।
हिन्दी—नया मुल्ला दिनभर नमाज़ पढ़ता है ।
तेलुगु—नडुमंतरपु वैष्णवानिकि नामानु मेंडु ।
(नया वैष्णव खूब तिलक लगाता है)
अंग्रेज़ी—*Cut your coat according to your cloth*
कन्नड़—हासिगे इद्दष्टे कालु चाचु ।
हिन्दी—तेता पाँव पसारिए जेती लाँबी सौर ।
हिन्दी—कोई भी अपने दही को खट्टा नहीं कहता ।
अंग्रेज़ी—*Every potter praises his own pot*
कश्मीरी—उल्टा चोरे गिरिक बान्धे । (उल्टा चोर गृहस्वामी को बाँधे)
हिन्दी—उलटा चोर कोतवाल को डाँटे ।

कभी कभी ऐसा भी होता है कि स्रोत भाषा की किसी एक लोकोक्ति के भाव की लक्ष्य भाषा में एक से अधिक अभिव्यक्तियाँ होती हैं । ऐसी स्थिति में अनुवादक को सावधानी से चयन करना चाहिए । उदाहरण के लिए अंग्रेज़ी *Bringing coal to Newcastle* के लिए हिन्दी में 'उल्टी गंगा बहाना' की तुलना 'उल्टे बाँस बरेली को' लोकोक्ति अधिक उपयुक्त होगी । इसी प्रकार कश्मीरी 'माघि शीन केनुन' (माघ में बर्फ़ बेचना) के लिए 'उल्टे बाँस बरेली को' की तुलना में 'उल्टी गंगा बहाना' अधिक उपयुक्त होगी । (या इन

का सामान्यत प्रयोग मुहावरे के रूप में होता है) ऐसे ही अंग्रेजी Familia rity breeds contempt के भाव की अभिव्यक्ति हिन्दी मे 'घर की मुर्गी दाल बराबर' लोकोक्ति भी करती है किन्तु 'घर का जोगी जोगना आन गाँव का सिद्ध' में जोगना' contempt के अधिक समीप है अत यह दूसरी लोकोक्ति अनुवाद के लिए अधिक उपयुक्त है। यो यदि संस्कृत की लेना चाहे तो 'अति परिचयादवज्ञा' और भी उपयुक्त होगी। अंग्रेजी मे Too many cooks spoil th broth के लिए 'घर जोगी मठ का उजाड' हिन्दी में चलती है किन्तु भोजपुरी लोकोक्ति ढर गिहथिन मठा पातर खान पान के सम्बद्ध (समान वातावरण) होने के कारण उसके अधिक निकट है। राजस्थानी मे 'घणी दायां जाप री नास कर (बहुत दाइयाँ जच्चे का नाश करती हैं) लोकोक्ति चलती है जो समान भाव की होने पर भी वातावरण की दृष्टि से केवल कामचलाऊ ही मानी जा सकती है।

अनुवादक के सामने सबसे कठिन समस्या तब आती है जब उसे स्रोत भाषा की किसी लोकोक्ति के लिए लक्ष्य भाषा म न तो शब्द और भाव की समानतावाली लोकोक्ति मिलती है, और न केवल भाव की समानता वाली। अर्थात ऊपर उल्लिखित दोनो वर्गों म किसी प्रकार की नहीं मिलती। ऐसी स्थिति म उसके सामने तीन ही रास्ते रह जाते हैं (१) लोकोक्ति का शब्दानुवाद करद, (२) लोकोक्ति का भावानुवाद कर दे अथवा (३) लोकोक्ति के अर्थ या भाव को व्यक्त करने वाली कोई लोकोक्ति गढ लें। इन तीनो को आगे अलग अलग लिया जा रहा है।

शब्दानुवाद

स्रोत भाषा की लोकोक्ति का शब्दानुवाद केवल वहीं किया जा सकता है, जहाँ उस अनुवाद से लक्ष्य भाषा भाषी वही अर्थ ग्रहण करें जो स्रोत भाषा भाषी स्रोत भाषा की लोकोक्ति से ग्रहण करते हैं। उदाहरण के लिये मान लीजिए मराठी से हिन्दी अनुवाद किया जा रहा है। अनूद्य सामग्री में मराठी लोकोक्ति आई जो चढ़ेल तोच पडेल और हिन्दी म समान अर्थ वाली लोकोक्ति नहीं मिली तो 'जो चढता है वो गिरता है' रूप म अनुवाद कर देने म हानि नहीं [redacted]। हाँ अच्छा यह हो कि जो अनुवाद किया जाय वह लोकोक्ति सा लगे। अरबी म एक कहावत है 'अजात गद्दार विअसात फ्ल'। इसका अर्थ है जो पेड अच्छी जाति का न होगा उसका फल भी बुरा होगा।' हिन्दी में इसका समानार्थी लोकोक्ति नहीं है। इसका लोकोक्ति अनुवाद

किया जा सकता है जैसा पेड़ वैसा फल'।

एक बार मैं रूसी से अनुवाद कर रहा था। रूसी सामग्री में एक लोकोक्ति मिली बस बोगा शीरे दरोगा (अर्थात् बिना भगवान के रास्ता चौड़ा होता है। इसका आशय यह है कि भगवान् में विश्वास न रखने पर जीवन का रास्ता आसान हो जाता है) हिंदी में इसके समानांतर कोई लोकोक्ति मिलने का प्रश्न ही नहीं उठता। अन्त में मैंने इसका लोकोक्तिवत् अनुवाद—जो प्राय शब्दानुवाद ही है—किया 'बिना भगवान् रास्ता आसान'। अंग्रेजी की एक लोकोक्ति है A man is known by the company he keeps हिन्दी में इसे 'मनुष्य अपनी संगत से पहचाना जाता है' रूप में रखा जा सकता है। हिन्दी में कुछ अन्य भाषाओं की लोकोक्तियों के लोकोक्तिवत् शब्दानुवाद इस प्रकार हो सकते हैं—

असमी—थान हेरुवाले मान हेराय।

(स्थान को देने पर मान भी समाप्त हो जाता है)

हिन्दी—स्थान से गिरा, मान से गिरा।

असमी—आकाशात थुइ पगाल मुखत परे।

हिन्दी—आकाश पर थूके, मुंह पर पड़े।

असमी—रामर खाय, रावणर गीत गाय।

हिन्दी—राम का खाए, रावण का गीत गाए।

संस्कृत—भार्या रूपवती शत्रु।

हिन्दी—सुन्दर पत्नी जी का जंजाल।

असमी—विड़ाली चाले बाघ चाब नालागे।

(बिल्ली को देख लो तो बाघ को देखने की आवश्यकता नहीं)

हिन्दी—बिल्ली को देखा तो बाघ को भी देख लिया।

अंग्रेजी—Do evil and look for like

हिन्दी—कर बुरा, पा बुरा।

फारसी—हर जा के गुलस्त खारस्त।

हिन्दी—जहाँ फूल, तहाँ काँटा।

फारसी—अज़ दीदा दूर अज़ दिल दूर।

हिन्दी—आँख से दूर दिल से दूर।

अंग्रेजी—No living man, all things can

हिन्दी—दुनियाँ के सब काम, किसने किया तमाम।

अंग्रेजी—All that glitters is not gold

हिन्दी—हर चमकती चीज सोना नही होती ।
अंग्रेजी—Angry man is seldom at ease
हिंदी—क्रोधी को चैन कहा ?
अंग्रेजी—Who looks not before finds himself behind
हिन्दी—जो न देखे अगाडी, सदा रहे पिछाडी ।
अंग्रेजी—Chains of gold are stronger than chains of iron
हिन्दी—सोने की जंजीर लोहे की जंजीर से मजबूत होती है ।
अंग्रेजी—The coin most current is flattery
हिंदी—सबसे चलता सिक्का खुशामद है ।

भावानुवाद

शब्दानुवाद ठीक न बैठने पर अनुवादक को भावानुवाद करना पडता है । सच पूछा जाय तो अनुवाद करने मे सबसे अधिक लोकोक्तियो के साथ प्राय यही करना पडता है क्योकि बहुत कम लोकोक्तियो का भाषातर उपयुक्त पद्धतिया मे किसी एक द्वारा किया जा सकता है । अनुवादक यदि भाव को गद्यात्मक शब्दावली मे न रखकर लोकोक्ति रूप मे रख सके तो अधिक उपयुक्त होता है । असमी की एक लोकोक्ति है—

कमारे कि जाने दुखितर लो
यमे कि जाने एबेटि पो ।

अर्थात् न तो लुहार गरीब के लोहे की परवा करता है और न मौत विधवा के अकेले पुत्र की । हिन्दी मे—

एक का दुख दूसरा क्या जाने ।

रूप मे इसे रूपातरित किया जा सकता है । कुछ अन्य उदाहरण है—
सस्कृत—लोभ पापस्य कारणम् ।
हिन्दी—शब्दानुवाद लोभ पाप का कारण है ।
भावानुवाद लोभ पाप का बाप (लोकोक्तिवत्) ।
अंग्रेजी—Diet cures more than the Doctors
हिन्दी—पथ्य सबसे बडा डाक्टर है ।
अंग्रेजी—Abstinence is the best regimen
हिन्दी—परहेज सबसे अच्छा नुस्खा है ।
अंग्रेजी—Adversity flatters no man

हिंदी—आफत आई, दोस्त गए।

अंग्रेजी—when a thing is done, advice comes too late

हिंदी—होनी थी सो हो चुकी सीख करे अब क्या ?

अंग्रेजी—Bare words buy no barley

हिंदी—सिर्फ बातों से काम नहीं चलता।

अंग्रेजी—Beads along the neck and the devil in the heart

हिंदी—गले में माला, दिल में काला।

अंग्रेजी—Business is the salt of life

हिंदी—काम जीवन की जान।

लोकोक्ति के भाव को व्यक्त करनेवाली नई लोकोक्ति

अनुवादक को इस पद्धति का अनुसरण बहुत ही कम कोई अन्य रास्ता बिल्कुल ही न मिलने पर करना चाहिए। उदाहरण के लिए अंग्रेजी की एक लोकोक्ति है—

Blood is thicker than water

इसकी समानान्तर लोकोक्ति हिंदी में है या नहीं कहना कठिन है। कम से कम मुझे इस समय स्मरण नहीं आ रहा है। इसका अनुवाद खून पानी से गाढ़ा होता है हिंदी भाषी जनता के मन में स्रोत भाषा का अर्थ बिम्ब उभारने में असमर्थ है। इसका अर्थ देने वाली हिंदी में नई लोकोक्ति बनाई जा सकती है 'अपने अपने गैर गैर' या अपने और गैर में बड़ा फर्क है।' हिंदी लोकोक्ति टके की हंडिया गई कुत्ते की जाति पहचानी गई की अंग्रेजी में कोई समानान्तर लोकोक्ति नहीं है। इन्हीं शब्दों को अंग्रेजी में अनूदित करने से भी बात नहीं बनेगी। ऐसी स्थिति में अंग्रेजी में अनुवाद करनेवाला समान भाव की नई लोकोक्ति बना सकता है। अंग्रेजी में 'Close sits my shirt, but closer my skin' या Hope is a good breakfast but is a bad supper' आदि सैकड़ों ऐसी लोकोक्तियाँ हैं जिनके लिए हिंदी अनुवादक को शायद यही रास्ता अपनाना पड़ेगा। इसी प्रकार हिंदी की 'दान की बछिया के दाँत नहीं देखे जाते' या 'तीन कनौजिया तेरह चूल्हे' आदि अनेक लोकोक्तियों के अंग्रेजी आदि यूरोपीय भाषाओं में अनुवादक को भी कदाचित् इसी पद्धति का सहारा लेना पड़ सकता है।

हर भाषा में कुछ लोकोक्तियाँ ऐसी भी होती हैं जिनमें सामान्य लोकोक्तियों की व्यंजना या उनका चुटीलापन नहीं होता। वे सामान्य कथन होती हैं। हिंदी में खेती मौसम, शकुन तथा जाति सम्बन्धी ऐसी अनेक लोकोक्तियाँ

है। घाघ और भडडरी की काफी कहावतें इस श्रेणी की है। इनमे कुछ का किसी भी रूप मे सीधे अनुवाद (जो लक्ष्य भाषा म बोधगम्य हो) असभव है। इन को कवल विस्तार से अनूद्य सामग्री के मूल पाठ मे, पादटिप्पणी मे या परिशिष्ट म समझाया जा सकता है। उदाहरण के लिए हिन्दी की

अद्रा चौथ, मघा पचव'।

(आर्द्रा नक्षत्र बरसता है, तो आर्द्रा, पुनवसु, पुष्य और श्लेषा ये चारों नक्षत्र बरसते हैं। यदि मघा बरसता है तो मघा, पूर्वा, उत्तरा, हस्त और चित्रा ये पाँचो नक्षत्र बरसते हैं।)

सिंह गरज, हथिया लरजे।

(सिंह नक्षत्र म गरजने से हस्त से वर्षा धीमी होती है।)

मघा, भूमि अघा।

(मघा की वृष्टि म पृथ्वी अघा जाती है।)

आदि इसी वग की हैं।

१६

काव्यानुवाद

यों तो काव्य में उपन्यास, कहानी, नाटक आदि भी समाहित हैं किन्तु यहाँ 'काव्य' शब्द का प्रयोग कविता अर्थ में किया जा रहा है।

कविता के अनुवाद को लेकर काफी विवाद रहा है। बहुतों की धारणा यह रही है कि कविता का अनुवाद हो ही नहीं सकता। मुख्यतः काव्यानुवाद को ही दृष्टि में रखकर इस प्रकार की बातें कही गई हैं—

(१) All translations seems to me simply an attempt to solve an unsolvable problem —Humboldt

(२) It is useless to read Greek in translations Translators can but offer us a vague equivalent —Virginia Woolf

(३) There is no such thing as translation —May

(४) Traduttori traditori (अनुवादक वंचक होते हैं)

—एक इतालवी कहावत

(५) The flowering moments of the mind drop half their petals in speech and 3/4 in translation

(६) Nothing which is harmonised by the bond of Muses can be changed from one language to another without destroying its sweetness—Dante

(७) Translation of a literary work is as tasteless as a stewed strawberry—H de Forest Smith

(८) Translaion is meddling with inspiration—Showerman

(९) Ideas can be translated but not the words and their associatians—Sydney

वस्तुतः कविता का अनुवाद करना बहुत कठिन तो है किन्तु वह असंभव है, यह नहीं कहा जा सकता। विश्व में अब तक कई हजार कविताओं के अनुवाद हुए हैं। इन अनुवादों को एकदम अनधिकृत अथवा अग्राह्य मानकर अस्वीकार नहीं कर सकते। इस समय भी ऐसे अनुवाद हो रहे हैं, और आगे

भा होते रहेंगे। ऐसी स्थिति मे, जो हो चुका है, हो रहा है, भविष्य में भी होता रहेगा, उसे कैसे कह दें कि नहीं हो सकता।

हाँ, यह अवश्य है कि कविताओं के बहुत कम ही अनुवाद मूल का पूरी तरह—कथ्य और कथन शैली दोनों दृष्टियों से—प्रतिनिधित्व करते हैं। किन्तु हम यह कब कहते हैं कि मूल कविता और उसका अनुवाद दोनों एक हैं, या दोनों में अभिव्यक्ति और कथ्य की दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है। अन्तर तो होना ही है। आखिर एक मूल और दूसरा अनुवाद जो ठहरा। और अगर हम यह मानकर चलें कि मूल मूल है और अनुवाद अनुवाद, अतः दोनों पूर्णतः समान नहीं हो सकते, तो फिर यह मानने का प्रश्न ही नहीं उठता कि काव्यानुवाद सम्भव नहीं है। जो लोग काव्यानुवाद की असम्भाव्यता के प्रति विश्वासी हैं, वे कदाचित् यह देखकर असम्भव होने की बात करते हैं कि प्रायः अनुवाद मूल की बराबरी नहीं कर पाता। यदि ऐसा है तो वह तो सचमुच ही नहीं कर पाता, और कर भी नहीं सकता। आखिर एक मूल है और दूसरा उसका रूपांतर।

गर्ज यह कि काव्यानुवाद—जो किसी कविता का यथासम्भव निकटतम समतुल्य होता है ठीक मूल ही नहीं होता—हो सकता है किया जा सकता है। यह बात दूसरी है कि कभी तो वह मूल के काफी निकट पहुँच जाता है, कभी दूर रह जाता है, और कभी काफी दूर। वैसे तो किसी भी रचना का अनुवाद सरल नहीं होता किन्तु कविता का इसलिए और भी कठिन होता है कि कई बातों में कविता अन्य रचनाओं से अलग होती है, इनमें से कुछ वे तत्त्व होते हैं जो अन्य में नहीं होते और जिन्हें अनुवाद में ला पाना काफी कठिन होता है। यहाँ कुछ इस प्रकार के तत्त्वों पर विचार किया जा रहा है।

इस प्रसंग में सबसे बड़ी बात यह है कि कविता जो कुछ प्रभाव पाठक या श्रोता पर डालती है वह न तो अकेले कथ्य (content) का होता है न अकेले कथन या अभिव्यक्ति (expression) का। वह दोनों का ही योग होता है। और ये दोनों भी एक सीमा तक एक दूसरे पर आश्रित होते हैं —गद्यानुवाद की तुलना में बहुत अधिक। कथ्य की विशिष्टता विशिष्ट अभिव्यक्ति पर और अभिव्यक्ति की विशिष्टता विशिष्ट कथ्य पर निर्भर करती है। किन्तु हर भाषा में कथ्य और अभिव्यक्ति का यह तालमेल उसी अनुपात में नहीं बैठाया जा सकता और न तो हर भाषा में कथ्य और अभिव्यक्ति के योग से एक-सा प्रभाव ही उत्पन्न किया जा सकता है। यही कारण है कि काव्यानुवाद में प्रायः मूल प्रभाव का, या वह प्रभाव उत्पन्न करने वाले मूल काव्य

शब्दों का कुछ अंश छूट जाता है और कुछ ऐसा अंश भी जुड़ जाता है जो मूल में नहीं होता। और लोग इस जुड़ने को इस आधार पर आवश्यक भी मानते हैं कि इससे वह कमी एक सीमा तक पूरी हो जाती है जो 'कुछ छूट जाने' से उत्पन्न होती है किन्तु वास्तविकता यह है कि यह जोड़ने से अनुवाद में जान तो आ जाती है किन्तु वह मूल से और अधिक दूर हो जाता है क्योंकि जो तत्त्व जुड़ते हैं वे प्राय: वही नहीं होते जो छूट जाते हैं वे प्राय: किसी-न किसी रूप में उनसे भिन्न होते हैं। इस और अधिक दूर जाने का गणितीय रूप में यों दिखाया जा सकता है क=मूल कविता, ख=अनुवाद में छूट तत्त्व ग=अनुवादक द्वारा जोड़े गए नए तत्त्व। स्पष्ट ही 'क-ख' क के अधिक निकट है बनिस्बत (क—ख)+ग के। फिट्जजेराल्ड ने उमरख़य्याम के अनुवाद में अपनी ओर से काफी जोड़ा है। उन्होंने स्पष्ट कहा है '... अनुवादक को अपनी रुचि के अनुसार मूल को फिर से ढालना चाहिए—भूसा भरे गीध की अपेक्षा मैं जीवित गौरैया पसंद करूँगा। इस तरह के अंश जोड़ने या सरसार करने के पक्षपाती थे। जो भी हो यह स्पष्ट है कि इस छूट जाने से अनुवाद मूल से दूर पड़ जाता है और जोड़ने या सरसार करने से और भी दूर पड़ जाता है अत: यह अनुवाद से अधिक मूल पर आधारित नई रचना सा हो जाता है।

बोरिस पास्तरनाक की कविता The Wind का धर्मवीर भारती द्वारा किया गया अनुवाद जोड़ने छोड़ने का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है—

This is the end of me but you live on
The wind crying and complaining
Rocks the house and the forest
Not each pine tree seperately
With the whole boundless distance
Like the hulls of sailling ships
Ridding as anchor in a bay
It shakes them not out of mischief
And not in aimless fury
But to find for you, out of its grief
The words of a lullaby

मैं व्यतीत हुआ, पर तुम अभी हो, रहो।
हवा चीख़ती चिल्लाती हुई हवा—झकझोर रही है
मकानों को, जंगलों को

छोड़ के अलग अलग पेड़ों को नहीं
वरन सबको एक साथ—तमाम सीमाहीन दूरियों को—
किसी खाड़ी में लंगर डाले हुए, लहरों पर उठते गिरते हुए
तमाम जहाजों की तरह
और हवा उन्हें भकझोर रही है
केवल चंचलतावश नहीं
न निष्प्रयोजन क्रोध से सन्धी होकर
वरन अपनी चरम पीड़ा में से
मन्थन से से
तुम्हारी सारी के लिए उपयुक्त शब्द
खोजते हुए।

काव्यानुवाद की मुख्य कठिनाइयाँ निम्नांकित हैं—

(क) स्रोत भाषा के सभी शब्दों के लिए लक्ष्यभाषा में प्राप्त शब्द प्रातरिक, बाह्य तथा प्रभाव की दृष्टि सवदा समान नहीं होते।

(ख) अलंकारों का अनुवाद काफी कठिन है और कभी कभी तो असम्भव सा हो जाता है।

(ग) काव्यानुवाद में छन्द की स्थिति भी अलंकारों से कम जटिल नहीं है।

(घ) काव्यानुवादक कवि होता है और वह अपने व्यक्तित्व को मूल रचना और अनुवाद के बीच में लाने से अपने को रोक नहीं पाता—शायद पा भी नहीं सकता।

(ङ) काव्य की अर्थ रचना और अभिव्यंजना की जटिलताएँ प्रायः अनूद्य नहीं होतीं, या बहुत कम ही होती हैं।

(च) विशिष्ट कविता का अनुवाद विशिष्ट व्यक्तिनिष्ठ तथा विशिष्ट मूडनिष्ठ होता है।

(छ) तत्त्वतः एक भाषा की काव्य रचना अर्थतः अभिव्यंजित और प्रभावतः केवल उसी भाषा में हो सकती है किसी अन्य में नहीं।

आगे संक्षेप में इन पर विचार जा रहा है।

— साहित्यकार साहित्य में शब्दों का प्रयोग चुन कर करता है। कवि कविता लिखने में और भी अधिक चयन करता है। उसमें वह जिन शब्दों का प्रयोग करता है वे शब्द प्रायः अपने कोशीय अर्थ या सामान्य अर्थ के अतिरिक्त अपनी ध्वनि से कुछ और अर्थ भी देते हैं।— अर्थ का यह सम्बन्ध

उन चुने हुए शब्दों की विशेषता होती है और इनके कारण कविता में एक विशेष जीवंतता आ जाती है। अनुवाद में प्राय उस शब्द का प्रतिशब्द कोशीय अर्थ ही दे पाता है। इसे यों भी कह सकते हैं कि प्राय कविता का अनुवादक कोशार्थ स्तर का ही अनुवाद कर पाता है ध्वनि या वर्णमैत्री आदि के स्तर का अनुवाद इस लिए सम्भव नहीं हो पाता कि हर भाषा में इस प्रकार के शब्द होते ही नहीं जिनमें अर्थ और ध्वनि का यह सम्बन्ध हो। मान लें किसी हिन्दी कविता में बिजली शब्द आया है। स्पष्ट ही बिजली में तेजी और तरलता की भी ध्वनि है। उसके स्थान पर अंग्रेजी में thunder या thunderbolt रखें तो इनमें 'कड़क' है और lighting रखें तो 'चकाचौंध' है। इस तरह काव्यभाषा में ये शब्द बिजली के पर्याय नहीं हैं। यद्यपि सामान्य भाषा में हैं। इसका आशय यह हुआ कि इन शब्दों के द्वारा अनुवाद करने में मूल की तेजी और तरलता चली गई और नये तत्त्व 'कड़क' या 'चकाचौंध' की वृद्धि हो गई। अर्थात् कुछ घट गया और कुछ बढ़ गया।

एक बात और। हर भाषा के हर शब्द का अपना अर्थबिम्ब होता है जो सांस्कृतिक भौगोलिक तथा सामाजिक पृष्ठभूमि से सम्बद्ध होता है। दूसरी भाषा का उसी का समानार्थी शब्द उस पृष्ठभूमि में युक्त न होने के कारण वैसा अर्थ बिम्ब नहीं उभार सकता। किसी अंग्रेजी कवि की कविता में प्रयुक्त Spring शब्द का ठीक प्रतिशब्द हिन्दी में वसन्त इसलिए नहीं हो सकता कि अंग्रेजी भाषी के मन में स्प्रिंग शब्द में इंग्लैंड के स्प्रिंग का चित्र है जो भारतीय वसंत के चित्र से सर्वथा भिन्न है। अतः उस कविता के हिन्दी के अनुवाद को पढ़नेवाले पाठक के मन में जो अर्थबिम्ब उभरेगा वह भारतीय वसंत का होगा जबकि होना चाहिए इंग्लैंड के स्प्रिंग का। ऐसे ही रूस का जाड़ा और अरब का जाड़ा एक नहीं हो सकता न भारत की गर्मी और फ्रांस की गर्मी। काव्यभाषा में प्रयुक्त इन शब्दों का प्रतिनिधित्व इसीलिए किसी भी दूसरी भाषा के समानार्थी शब्दों द्वारा कदापि नहीं किया जा सकता।

काव्य की भाषा प्राय अलंकार प्रधान होती है किन्तु एक भाषा के अलंकारों को दूसरी भाषा में ठीक ठीक उतार पाना कठिन और कभी कभी तो असम्भव हो जाता है। यों तो अर्थालंकार भी उपमानों की असमानता के कारण कभी-कभी अनुवाद में कठिनाई उत्पन्न करते हैं (जैसे वह उल्लू जैसा है में उल्लू मूर्खता का प्रतीक है किन्तु इसका अंग्रेजी अनुवाद करना हो और उल्लू के स्थान पर owl रख दें तो काम नहीं चलेगा क्योंकि अंग्रेजी में उल्लू बुद्धिमान माना जाता है) किन्तु अनुप्रास आदि शब्दालंकारों में तो यह कठिनाई

और भी बढ़ जाती है। 'कनक कनक ते सौगुनी···' का किसी भाषा में में तब तक अनुवाद नहीं हो सकता, जब तक उस भाषा में भी कोई ऐसा शब्द न हो जिसका अर्थ 'सोना' तथा 'धतूरा' दोनों हो। यही स्थिति—

रहिमन पानी राखिए बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे मोती मानुस चून।

की भी है। 'चमक', 'इज्जत', 'पानी' तीन-तीन अर्थ वाला एक शब्द हो तब वहाँ इसका अनुवाद हो सकेगा। और देव पतिविदुषि 'नैषधराजगत्या' के अनुवाद में तो नल, इन्द्र, अग्नि, यम वरुण इन पाँच अर्थों वाला एक शब्द चाहिए। (आगे अलंकारों पर अलग से भी विचार किया गया है।)

कविता छन्द बद्ध होती है और हर छन्द की अपनी गति होती है अतः उसका अपना प्रभाव भी होता है। साथ ही उसका एक सीमा तक कविता के भाव से सम्बन्ध भी होता है। फिर अनुवादक क्या करे? भारतीय भाषाओं में एक प्रकार के छन्द हैं तो फारसी आदि में दूसरी तरह के हैं और यूरोपीय भाषाओं में तीसरी तरह के। ऐसी स्थिति में दो ही रास्ते अनुवादक के सामने हैं। या तो वह लक्ष्य भाषा में प्राप्त उपयुक्त छन्द में अनुवाद कर दे, पर ऐसा करने से मूल छन्द का सारा प्रभाव समाप्त हो जाएगा, या फिर वह स्रोत सामग्री के छन्द में ही अनुवाद करे। किन्तु इससे भी बात नहीं बनेगी। एक तो उस छन्द को उस भाषा में उतार पाना हमेशा आसान नहीं होगा दूसरे यदि उतार भी लें तो स्रोत सामग्री का छन्द स्रोत भाषा भाषियों पर परम्परागत रूप जो प्रभाव डालता आ रहा है, लक्ष्य भाषा भाषी पर अनभ्यस्त होने के कारण वह प्रभाव नहीं डाल पाएगा। इस तरह अनुवादक के एक तरफ कुआँ है तो दूसरी तरफ खाई। यह असमंजस है। मूल छन्द का जो प्रभाव मूल भाषा भाषियों पर पड़ता है अनुवादक किसी भी तरह से लक्ष्य भाषा भाषी पर नहीं डाल सकता।

कविता का अनुवाद प्रायः कवि ही करते हैं। वस्तुतः कवि हृदय ही काव्यानुवाद के साथ न्याय कर सकता है क्योंकि कविता का अनुवाद अन्य अनुवादों से इस बात में भिन्न होता है कि एक तरह प्रकार से पुनर्रचना होता है। कविता का अनुवाद मूल कविता का एक नया संस्करण होता है। अनुवादक मूल काव्य को हृदयंगम करके पुनर्रचना करता है। विज्ञान, वाणिज्य या यहाँ तक कि कहानी उपन्यास नाटक आदि के अनुवाद में भी हम देखते हैं कि एक सामग्री का अनुवाद दो या चार अनुवादक अलग अलग करें तो उनके अनुवादों में आपस में बहुत अधिक अन्तर नहीं होता, किन्तु कविता में ऐसा

नही होता । एक ही कविता के कई व्यक्तियो द्वारा किए गए अनुवादो को देखें तो उनमे काफी अतर मिलेगा। ऐसा केवल इसीलिए होता है कि काव्यानुवाद पुनररचना है, अत उसमे अनुवादक कवि का अपना व्यक्तित्व बडा प्रभावी होता है। इसी कारण एक व्यक्ति द्वारा किया गया काव्यानुवाद दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता है। दूसरे शब्दो मे हर अनुवादक उस मूल का अपने अपने ढग से सस्करण प्रस्तुत करता है। उदाहरण के लिए उमर खय्याम की एक रुबाई अपने कुछ अनुवादो के साथ यहाँ देखी जा सकती है—

आमद सहरे निदा ज़े मयखान ए मा।
के रिंद खराबाती व दीवान ए मा।
बरखेज कि पुरकुनेम पमाना ज़े मय
ज़ाँ पेश कि पुरकुनद पैमान ए मा।

(सुबह होते ही मदिरालय से आवाज आई कि ऐ पीनेवाले व मेरे दीवाने। उठ और शराब से अपने प्याले को भर ले। कल इसके कि हमारे शरीर की मिट्टी से बने प्याले भर अर्थात् हम मर जाए)

—उमर खय्याम

Dreaming when Dawn s left hand was in the sky
I heard a voice within the tavern cry
Awake my little ones and fill the cup
Before Life s Liquor in its cup be dry

—Fitsgerald (Rubaiyat of Omar Khayyam 2)

अगडाता था अरुण खडा जब बढा वाम कर अम्बर म
मुझे सुन पडा स्वप्न राज्य म तब यह स्वर मदिरा घर मे
व्यथ सूखने के पहले ही जीवन प्यालो मे हाला
जाग जाग अब मरे शिशु दल ढाल ढाल मधु पी प्याला।

—केशव प्रसाद पाठक (रुबाइयात उमर खय्याम २)

वाम-कनर कर ने उषा के
जब पहला प्रकाश डाला,
सुना स्वप्न म मैंन सहमा
गूज उठी या मधुशाला—
उठो, उठो ओ मरे बच्चो,
पात्र भरा न विलम्ब करो,
सूख न जाव जीवन-हाला,

रह जावे रीता प्याला।
—मैथिलीशरण गुप्त (रुबाइयात उमर खय्याम, २)

उषा ने ले अँगड़ाई, हाथ
दिए जब नभ की ओर पसार,
स्वप्न में मदिरालय के बीच
सुनी तब मैंने एक पुकार—
उठो, मेरे शिशुओ नादान,
बुझा लो पी पी मदिरा भूख,
नहीं तो तन-प्याली की शीघ्र
जायगी जीवन मदिरा सूख।'
—बच्चन (खैयाम की मधुशाला, २)

पौ फटते ही मधुशाला में, गूंजा शब्द निराला एक
मधुबाला से हम हँस कर था कहता था मतवाला एक—
"स्वाग बहुत है रात रही पर थोड़ी ढालो ढालो शीघ्र
जीवन ढल जाने के पहले ढालो मधु का प्याला एक।
—रघुवंश लाल गुप्त (उमर खय्याम की रुबाइयाँ, २)

खोलकर मदिरालय का द्वार
प्रात ही कोई उठा पुकार
मुग्ध श्रवणों में मधु रव घोल
जाग उन्मन मदिरा के छात्र!
ढुलक कर यौवन मधु अतमाल
शेष रह जाए नहीं मृदु मात्र
ढाल जीवन मदिरा जी खोल
लबालब भर ले उर का पात्र।
—सुमित्रानंदन पंत (मधुज्वाल, २)

मूल और अनुवादों की तुलना से यह स्पष्ट है कि हर अनुवादक ने मूल बात को अपने ढंग से कहा है। काव्यानुवाद में यह बहुत बड़ी बाधा है कि अन्य अनुवादों की तुलना में इसमें अनुवादक का व्यक्तित्व मूल और अनुवाद के बीच में अधिक आ जाता है अतः मूल और अनुवाद में अंतर पड़ जाता है, और यह अंतर वैज्ञानिक साहित्य सूचना साहित्य या उपन्यास कहानी, नाटक आदि के अनुवादों की तुलना में बहुत ज्यादा होता है।

निश्चयत सफल काव्यानुवाद बहुत ही कठिन कार्य है किन्तु वह असम्भव नहीं है। अगर उसे असम्भव कहते हैं तो कविता का अनुवाद असम्भव है का अर्थ केवल यह हुआ कि अनुवाद मूल कविता से प्राय अभिव्यक्ति में तथा कभी-कभी कथ्य में भी हट जाता है अत उसे सैद्धान्तिक स्तर पर पूर्ण अनुवाद नहीं कह सकते। किन्तु वास्तविकता यह है कि अनुवाद में इतना तो मानकर ही चलना पड़ेगा, और मुख्यत कविता के अनुवाद में कि वह मूल नहीं होगा, मूल का अनुवाद ही होगा और अनुवाद अनुवाद को छोड़ दें तो, मूल के निकट ही होता है मूल नहीं होता हो भी नहीं सकता—न तो कथ्य में न कथन में और न इन दोनों के सम्मिलित प्रभाव में।

× × ×

काव्यानुवाद की असम्भाव्यता में विश्वास रखनेवालों का ध्यान एक बात की ओर प्राय नहीं जाता कि ऊपर जिन कठिनाइयों का सकेत किया गया है, वे सभी प्रकार के काव्यानुवादों में नहीं मिलती। यदि स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा में सांस्कृतिक भाषा पारिवारिक और कालिक अन्तर हो तो तब तो वे मिलती हैं किन्तु यदि अन्तर न हो तो वे काफी कम हो जाती हैं और कभी-कभी तो समाप्त भी हो जाती हैं। उदाहरण के लिए फ्रांसीसी से हिन्दी में अनुवाद करने में जो कठिनाई होगी उसकी तुलना में अंग्रेजी में अनुवाद करने में बहुत कम होगी। एस ही संस्कृत से प्राकृत या प्राकृत से संस्कृत में या बँगला से हिन्दी या हिन्दी से बँगला में अनुवाद करने में उपयुक्त कठिनाइयाँ बहुत कम होती हैं। कभी कभी तो केवल सामान्य शाब्दिक और व्याकरणिक परिवर्तन से ही काम चल जाता है

संस्कृत—ललित लवंग लता परिशीलन कोमल मलय समीरे।
मधुकर निकर करम्बित कोकिल कूजित कुंज कुटीरे।
हिन्दी—ललित लवंग लताएँ छूकर बहता मलय समीर।
अलि सकुल पिक के कूजन से मुखरित कुंज कुटीर।

× × ×

सामान्य भाषा में कही गई बात का अनुवाद अपेक्षाकृत बहुत सरल होता है, किंतु काव्य भाषा अपनी अर्थ रचना में बहुत जटिल होती है। यह जटिलता ही काव्य के सौन्दर्य को जननी है, किन्तु साथ ही, यही जटिलता काव्यानुवाद में सबसे अधिक बाधक भी होती है। इसीलिए जिन पंक्तियों की काव्यभाषा अर्थ रचना के स्तर पर जितनी ही जटिल होती है उनका अनुवाद उतना ही

कठिन होता है तथा उसके अनुवाद के, मूल से उतना ही दूर चले जाने की आशंका भी उतनी ही अधिक होती है। इसी तरह जिस साहित्यिक रचना का अभिव्यंजना पक्ष जितना ही स्थूल और सपाट होगा उसका अनुवाद उतनी ही सरलता से किया जा सकेगा, किन्तु इसके विपरीत जिसका अभिव्यंजना पक्ष जितना ही सूक्ष्म और जटिल होगा, उसका भाषांतरित करना उतना ही कठिन होगा तथा उस के, मूल से, उतना ही दूर हट जाने की आशंका होगी। यही कारण है कि 'सूक्ष्म और जटिल अभिव्यंजना प्रधान' तथा 'अथ जटिल' रचना का अनुवाद सभी के वश का नहीं उसको छंदबद्ध कर पाना तो और भी कठिन है और इसी कारण कम ही अनुवादक इसमें समर्थ होते हैं। इसके अतिरिक्त, यदि किसी में ऐसी क्षमता है तो भी वह ऐसी रचना का अनुवाद अन्य अनुवादों की तरह जब भी चाहे, नहीं कर सकता। किसी मौलिक रचना के लेखक की तरह ही ऐसा अनुवाद भी बहुत कुछ विशिष्ट 'मूड' या 'मानसिक स्थिति' पर निर्भर करता है। यही नहीं समर्थ काव्यानुवादक, उपयुक्त 'मूड' के होने पर भी किसी कवि की कुछ ही रचनाओं का अनुवाद सफलतापूर्वक कर सकता है। सभी का नहीं। और जब, एक कवि की भी सभी कविताओं का कोई एक काव्यानुवादक सफल अनुवाद नहीं कर सकता तो फिर, सभी प्रकार के कवियों की सभी प्रकार की रचनाओं के एक व्यक्ति द्वारा अनुवाद किए जाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। इसके विपरीत अन्य किसी प्रकार के अनुवादों में ऐसी कठिनाई नहीं होती। इस रूप में विशिष्ट काव्य रचना का अनुवाद भी, विशिष्ट काव्य रचना की तरह ही, विशिष्ट मूड निष्ठ होता है।

इस बात को यों भी समझा जा सकता है कि कविता अनुभूति है और सच्ची अनुभूति अनूद्य नहीं हो सकती। साथ ही कोई कवि अपने जिन क्षणों को कविता में उतारता है, उसके अपने होते हैं। किसी भी कवि के सारे क्षणों को कोई भी दूसरा कवि अनुवादक जी नहीं सकता, जिए भी नहीं हो सकता चाहे वह मूल कवि की तुलना में कितना भी बड़ा कवि क्यों न हो। इसी लिए किसी छोटे से छोटे कवि की भी सारी कविताओं का अच्छा अनुवाद कोई एक अनुवादक चाहे वह कितना भी बड़ा कवि क्यों न हो नहीं कर सकता, उसे करना भी नहीं चाहिए। अनुवादक यदि अच्छा अनुवाद करना चाहता है—मूल के साथ पूरा न्याय तो वह कदाचित् नहीं कर सकता किंतु कम से कम वह यदि चाहता है कि मूल के साथ अन्याय न हो—तो उसे किसी कवि की कविताओं से केवल कुछ अपनी रुचि और अनुभूति के अनुकूल चुन

लेनी चाहिए, और उन्ही का अनुवाद करना चाहिए। हिंदी मे ऐसा करने वाले धर्मवीर भारती अपने काव्यानुवादो म उन लोगो (मैं नाम नही लेना चाहता) की तुलना मे बहुत अधिक सफल हैं, जिन्होंने किसी एक कवि को लेकर उसकी बहुत सारी कविताओ का अनुवाद कर डाला है। इन पंक्तियों के लेखक ने भी काव्यानुवाद किए हैं और मेरी यह निश्चित मान्यता है कि अन्य प्रकार के अनुवादो की तरह काव्यानुवाद थोक का धंधा नही हो सकता।

× × ×

हर कवि भाषा विशेष का ही होता है वह जो कुछ कहता है वह केवल उसी भाषा म कहा जा सकता है और उसी रूप म कहा जा सकता है। उस की महानता मूल रचना म होती है, और मूल को पढकर ही हम उसकी महानता के दर्शन हो सकते है। अनुवाद के द्वारा हमे कवि की छाया ही मिल सकती है कवि नही इसीलिए काव्यानुवाद का काम उन लोगो का मूल रचयिता या रचना का परिचय मात्र देना होता है, जो भाषा की कठिनाई के कारण उसका परिचय पाने मे असमर्थ होते हैं। काव्यानुवाद का काम यह कभी नही होता हो भी नही सकता कि वह रचयिता या रचना को उसके कथन और कथ्य की पूरी गरिमा के साथ लक्ष्य भाषा म ला दे।

× × ×

पश्चिम म यह भी एक विवाद रहा है कि कविता का अनुवाद पद्य म करें या गद्य म। वस्तुत इन दोनो के पक्ष विपक्ष म बहुत कुछ कहा जा सकता है।

कविता का अनुवाद पद्य म होना चाहिए, इसके पक्ष म निम्नांकित बातें हैं (१) कविता और कविता से इतर साहित्यिक रचना में सबसे स्पष्ट भेद यह रहा है कि कविता छन्दबद्ध होती है, चाहे वह मुक्त छन्द ही क्यों न हो। अत छन्द स कविता का अनादिकाल से सम्बन्ध है। ऐसी स्थिति म उसका अनुवाद छन्दबद्ध होना चाहिए। (२) मूल रचना छन्दबद्ध है, अत उसके गद्यानुवाद म उसका एक यह अत्यन्त आकर्षक तत्त्व छूट जाता है, और अनुवाद अन्य बातो के अतिरिक्त इस एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तत्त्व की दृष्टि से भी मूल से अलग हट जाता है तथा घटकर रह जाता है। (३) कविता काव्य आनन्द के लिए पढी जाती है केवल भाव या विचार के लिए नही, और यह काव्यानन्द अन्य बातो के अतिरिक्त छन्दबद्धता या उसके कारण आए संगीतात्मक तत्त्व लय, ध्वनि आदि म भी होता है। ऐसी स्थिति म गद्यानुवाद पाठक को वह काव्यानन्द नहीं दे सकता जो पद्यानुवाद या छन्दा . दे सकता है। (४) अनुवाद का अर्थ ही है कि वह अधिक से अधिक

मूल के समान या समीप हो। मूल कविता है, अतः अनुवाद भी कविता ही होना चाहिए। (४) काव्य का काव्यत्व काव्योचित भाषा संरचना तथा शब्द-क्रम आदि ऐसी बातों में भी होता है जो गद्यानुवाद में नहीं आ पाती, अतः गद्यानुवाद काव्यानुवाद के लिए उपयुक्त नहीं है।

इसके विपरीत निम्नांकित बातें गद्यानुवाद के पक्ष में जाती हैं : (१) हर अनुवादक छन्द में अनुवाद नहीं कर सकता। छन्दानुवाद सहज प्रतिभा, श्रम तथा अभ्यास के बिना सम्भव नहीं। (२) पद्य में छन्द, तुक, गति आदि के बंधन होते हैं, अतः अनुवाद को मूल के समीप नहीं रखा जा सकता। यही कारण है कि विश्व में जितने भी पद्यानुवाद हुए हैं वे अनेक दृष्टियों से मूल से दूर हैं। जैसे कहीं कोई शब्द छोड़ दिया गया है तो कहीं कोई शब्द जोड़ दिया गया है और कहीं कुछ परिवर्तन करके संक्षेप या विस्तार कर दिया गया है। (३) कविता में शब्दों का चयन होता है। छन्दानुवाद में मूल के चयन को ला पाना कठिन होता है। इसीलिए छन्दानुवाद सटीक नहीं हो पाता। लक्ष्य भाषा में चयन की गुंजाइश होने पर भी छन्दानुवाद में उसका लाभ नहीं उठाया जा सकता।

इस प्रसंग में क्षतिपूरक सिद्धांत (Theory of Compensation) की बात भी कुछ लोग करते हैं। अर्थात् पद्यानुवाद या छन्दानुवाद ही करना चाहिए। इससे कुछ छूटने के साथ कुछ जुड़ भी जाता है अतः क्षतिपूर्ति (Compensation) हो जाती है। मेरी आपत्ति यह है कि क्षतिपूर्ति तो हो जाती है, किन्तु अनुवाद 'अ' के छूटने से तथा 'ब' के जुड़ने से मूल से दूर चला जाता है।

अंत में, मेरी अपनी राय यह है कि कविता का अनुवाद पहले तो पद्य रूप में ही करने का प्रयास करें, यदि ठीक अनुवाद न हो पा रहा हो तो मुक्त छन्द में अनुवाद करें। और यदि उसमें भी कठिनाई हो रही हो तब गद्य में अनुवाद करें।

२०

नाटक का अनुवाद

यों तो सभी प्रकार के सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद कठिन होता है, किन्तु सभी की कठिनाइयाँ समान नहीं होतीं। नाटक के अनुवाद की कठिनाइयाँ काव्य आदि के अनुवाद से कई बातों में भिन्न हैं। समानताएँ केवल दो हैं। एक तो यह कि दोनों ही सृजनात्मक अतः शैली प्रधान या अभिव्यंजना प्रधान हैं अतः अनुवादक को कथ्य के अतिरिक्त कथन पद्धति पर भी पर्याप्त ध्यान देना पड़ता है, दूसरे नाटक कविताओं या छन्दों से युक्त होते हैं या कभी-कभी अपवादतः कुछ स्थलों को छोड़कर पूरे-के पूरे काव्यमय या कविता में होते हैं, अतः नाटक के ऐसे स्थलों का अनुवाद तत्त्वतः काव्यानुवाद ही होता है, नाटकानुवाद नहीं।

नाटक दो प्रकार के होते हैं 'मात्र पठनीय', 'अभिनेय'। ठीक इसी प्रकार नाटक के अनुवाद भी दो प्रकार के हो सकते हैं 'मात्र पठनीय', 'अभिनेय'। मूल नाटक 'मात्र पठनीय' हो या अभिनेय', यदि अनुवादक अपने अनुवाद को मात्र पठनीय' बनाना चाहता है तो कोई खास ऐसी परेशानी नहीं होती, जसी केवल नाटक के अनुवाद तक सीमित हो। वह अनुवाद प्रायः वैसे ही किया जाएगा, जैसे उपन्यास या कहानी आदि का होता है। उसकी भाषा आवश्यकतानुसार मूल नाटक की भाषा के अनुरूप, या विशिष्ट पाठक वर्ग की दृष्टि से जो उपयुक्त हो, रखी जा सकती है। वास्तविक समस्या वहाँ आती है जहाँ अनुवादक अपने अनुवाद को अभिनेय भी बनाना चाहता है।

नाटक के अनुवादक के लिए सबसे आवश्यक शर्त यह है कि उसे रंगमंच का ज्ञान होना चाहिए मूल नाटक की मंच परम्परा का तथा जिस काल की जिस भाषा में अनुवाद किया जा रहा है, उसकी मंच परम्परा का। मूल की परम्परा को जाने बिना अनुवादक नाटक के उन प्रतीकात्मक संकेतों को नहीं पकड़ पाएगा तथ लक्ष्य भाषा की रंग परम्परा के ज्ञान के बिना वह उन्हें

अपने अनुवाद में नाटकोचित या रंगोचित दृष्टि से नहीं उतार पाएगा। उसे मूल की सजीव साज सज्जा, प्रकाश प्रभाव, ध्वनि संयोजन आदि के प्रति संवेदनशील होकर मूल को समझना होगा तथा लक्ष्य भाषा की सजीव साज सज्जा, प्रकाश प्रभाव, ध्वनि-संयोजन आदि के अनुकूल नाटक को रूपायित करना होगा—मात्र भाषांतरित नहीं। हिन्दी में शेक्सपियर के कुछ नाटकों के बच्चन जी ने तथा रांगेय राघव ने अनुवाद किए हैं। इन अनुवादों में काव्यात्मकता तो है किन्तु इन दोनों ही अनुवादकों को रंगमंचीय मंत्र में गति न होने के कारण अनुवादों में नाटकोचित प्रभाव का सर्वथा अभाव है, तथा वे पद्यानुवाद होकर भी सफल नाट्यानुवाद नहीं हैं।

भाषा शैली की दृष्टि से नाटक के अनुवादक के सामने कई प्रकार की समस्याएँ आती हैं। मात्र पठनीय साहित्य की भाषा कैसी भी हो, कोई बहुत अन्तर नहीं पड़ता। हर पाठक अपनी योग्यता या सुविधानुसार, व्यक्ति, शब्द-कोश या किसी अन्य भाषा में अनुवाद की सहायता से उसे धीरे धीरे या तेज़ी से पढ़ और समझ सकता है। कोई नाटक ही क्यों न हो हर पाठक अपने अपने ढंग से उसे पढ़ता जाएगा। किन्तु अभिनय नाटक में ऐसा नहीं हो सकता। इसीलिए उसके अनुवादक को एक साथ कई समस्याओं से जूझना पड़ता है। पहली बात तो यह है कि नाटक संवादात्मक होता है अतः भाषा संवादोचित होनी चाहिए छोटे छोटे वाक्य, सरल और सहज शब्दावली ताकि सुशिक्षित अल्पशिक्षित अशिक्षित सभी सुनते ही समझ जाएँ। मात्र शब्दार्थ और भावार्थ ही नहीं ध्वनि या व्यंजना भी। नाटक पढ़ने वाला तो अपनी योग्यतानुसार धीरे धीरे समझते हुए पढ़ सकता है शब्दकोष की सहायता ले सकता है, किसी से पूछ सकता है किन्तु नाटक देखने वाले के लिए यह सब संभव नहीं। एक वाक्य के अर्थ पर सोचने के लिए वह रुका कि दो चार वाक्य पात्र के मुँह से निकल गए। किसी से पूछने शब्दकोश देखने या किसी दूसरी भाषा में किए गए अनुवाद से सहायता लेने का तो प्रश्न ही नहीं। दूसरे संवादों की भाषा प्रसाद के नाट्य पात्रों की तरह न होकर मुहावरे और लोकोक्तियों से युक्त होनी चाहिए। मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ बोल-चाल की भाषा की शक्ति भी है उसका सौंदर्य भी हैं और उसमें सहजता भरने के साधन भी हैं। तीसरे नाटक में पात्र अनेकानेक स्तरों के होते हैं मोची मजदूर, किसान, वकील डॉक्टर विद्यार्थी या सुशिक्षित अर्धशिक्षित, अल्पशिक्षित अशिक्षित या विशिष्ट क्षेत्रीय या प्रांतीय (जैसे बंगाली पंजाबी राजस्थानी हरियाणवी सिंधी आदि) या विशिष्ट वित्तीय स्थिति के विशिष्ट

आयु के, विशिष्ट परिवार के या विशिष्ट परम्परा आदि के । इन सभी की भाषा शैली एक सी नहीं हो सकती । डॉ० रघुवीर जैसा शुद्धतावादी और संस्कृत प्रेमी व्यक्ति सड़क को 'रथ्या' कहेगा, तो प० सुन्दरलाल जैसा मिश्रण वादी और हिन्दुस्तानी प्रेमी 'राजकुमारी दमयन्ती' को 'शहजादी देवसना' कहेगा। वकील, डाक्टर या विश्वविद्यालय के विद्यार्थी की भाषा में काफी शब्द अंग्रेजी के होंगे, बंगाली 'स' को 'श' (शब शब) बोलेगा तो बिहारी या हरियाणी 'श' को भी 'स' (सहर महर) उच्चरित करेगा तथा मैथिल या सिंधी 'ड' को 'र' (घोड़ा घोरा)। पंजाबी के प्रकृत उच्चारण में गाड़ी गड्डी हो जाएगी और राजेन्द्र 'रजिन्दर'। मानक (standerd) अवमानक (substa ndarad) विशिष्ट भाषा (jrogn) अपभाषा (slang) का भी अन्तर पड़ेगा मुझे मेरे को किया-करा, कीजिए करिए, जुल्म जुलुम, स्टेशन इस्टेसन, मैंने खाया—मैं खाया, हाथी आया—हाथी आई आदि । इस तरह ध्वनि, शब्द रूप रचना तथा वाक्य रचना सभी दृष्टियों से पात्रों में कुछ न कुछ अन्तर पड़ेगा । अनुवादक को लक्ष्य भाषा से ऐसे प्रयोगों को चुन चुनकर पात्र के अनुकूल भाषा शैली का प्रयोग करना पड़ता है । सभी पात्रों की भाषा एक रस सपाट तथा विशिष्टता रहित रखने से संवाद की सहजता और जीवंतता नष्ट हो जाती है ।

नाटक के संवाद अभिनय से सम्बद्ध होते हैं । अतः अनुवादक को केवल मूल संवाद ही नहीं देखना चाहिए बल्कि मूल में संवाद और अभिनय में जिस ताल मेल की संभावना है, अनुवाद में भी वह लाने का यत्न करना चाहिए । यह तालमेल अलग अलग क्षेत्रों में अलग अलग प्रकार का हो सकता है । इसीलिए अनुवादक को मूल नाटक और स्रोत भाषा की ऐसी परम्पराओं तथा रूढ़ियों आदि से परिचित होना चाहिए ।

हर संस्कृति में नाटक या मंच की दृष्टि से कुछ बातें वर्जित होती हैं, और कुछ आवश्यक होती हैं। यह आवश्यक नहीं कि कोई नाटक जिस संस्कृति में लिखा गया हो वह उन दृष्टियों से उस संस्कृति के पूर्णतः समान हो जो लक्ष्य भाषा की है । इस तरह अनुवादक को इन तथाकथित वर्जनाओं तथा अनिवार्यताओं का भी ध्यान रखना चाहिए ।

नाटक संवादात्मक कहानी, कार्यव्यापार और अभिनय का समन्वित रूप होता है । अनुवादक का ध्यान इन तीनों पर पूरा पूरा होना चाहिए ।

२१

वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद

वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की समस्या काव्यानुवाद आदि से काफी अलग है। विभिन्न देशों में जैसे जैसे वैज्ञानिक प्रगति हो रही है और विज्ञान विषयक वाङ्मय का सृजन हो रहा है वैज्ञानिक अनुवाद की आवश्यकता बढ़ती जा रही है किन्तु यह बड़े आश्चर्य की बात है कि साहित्यिक पुस्तकों की तुलना में वैज्ञानिक पुस्तकों के अनुवाद बहुत कम हुए हैं या हो रहे हैं। इस दिशा में अग्रगामी केवल अंग्रेजी जर्मन रूसी तथा जापानी भाषाएँ ही हैं, जिनमें वैज्ञानिक वाङ्मय के भी काफी अनुवाद होते रहते हैं। भारतीय भाषाओं में भी कुछ अनुवाद हो रहे हैं किन्तु उनकी संख्या नगण्य है। हिन्दी में तो फिर भी पुस्तकें अनूदित होकर आई हैं अन्य भारतीय भाषाओं में तो यह काम और भी कम हुआ है।

पीछे इस बात की ओर संकेत किया जा चुका है कि हमारे वाङ्मय में रचनाएँ मोटे रूप से दो प्रकार की होती हैं (१) अभिव्यक्ति या शैली प्रधान (२) तथ्य या कथ्य प्रधान। इसका यह अर्थ नहीं है कि पहले वर्ग में दूसरे के तत्त्व नहीं होते या दूसरे में पहले के तत्त्व नहीं होते। होते हैं किन्तु एक में एक मुख्य होता है तो दूसरे में दूसरा। पहले वर्ग में कविता उपन्यास कहानी नाटक ललित निबन्ध आदि आते हैं तो दूसरे में वैज्ञानिक साहित्य। वैज्ञानिक साहित्य चूंकि तथ्य या कथ्य या सूचना प्रधान होता है अतः उसके अनुवाद में शैली का विशेष प्रश्न नहीं उठता। इसीलिए वैज्ञानिक वाङ्मय का अनुवाद करना अभिव्यक्ति प्रधान साहित्य की तुलना में सरल होता है। उसमें अभिव्यक्ति या भाषिक संरचना की वह जटिलता नहीं होती जिससे अनुवाद कठिन या असंभव सा हो। वैज्ञानिक साहित्य की शैली अपवादों को छोड़कर प्रायः सपाट होती है अतः अनुवादक को शैली पर अपना ध्यान केन्द्रित करने की विशेष आवश्यकता नहीं होती।

वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में मुख्य समस्या पारिभाषिक शब्दों की

होती है। पीछे 'अनुवाद और शब्दविज्ञान' में हम चुके हैं कि शब्द प्रयोग की दृष्टि से तीन प्रकार के होते हैं सामान्य अपारिभाषिक, पारिभाषिक। विश्व में अंग्रेजी रूसी, जर्मन फ्रेंच आदि कई भाषाएँ ऐसी हैं जिनमें पारिभाषिक शब्दों का अभाव प्राय नहीं है। इसके मुख्य कारण दो हैं एक तो इन भाषाओं के वैज्ञानिक ही विश्व में अग्रणी हैं अत प्राय नई चीजें ये ही बनाते हैं, खोजते हैं तथा नई संकल्पनाओं को जन्म देते हैं और इन सभी के लिए नए शब्द भी बनाते चलते हैं। दूसरे इन भाषाओं में आधुनिक काल में वैज्ञानिक ग्रन्थ लेखन तथा अनुवाद की सुदीर्घ परम्परा है। इस तरह परंपरागत विज्ञान तथा आधुनिक आविष्कारों एवं खोजों के संदर्भ में ये भाषाएँ पारिभाषिक शब्दों की दृष्टि से सम्पन्न हैं और इसीलिए इनके यहाँ अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली कोई समस्या नहीं है। दूसरी ओर हिन्दी, बंगला मराठी, पश्तो ईरानी अरबी आदि अपेक्षाकृत अविकसित देशों की भाषाएँ हैं जिनको उपयुक्त दोनों ही सुविधाएँ प्राप्त नहीं रही हैं। इसी कारण उनके सामने वैज्ञानिक अनुवाद में पारिभाषिक शब्दों की समस्या है। भारत या अरब आदि में प्राचीनकाल में कुछ विज्ञानों का विकास हुआ था तथा अरबी संस्कृत आदि में उस काल की आवश्यकताओं की दृष्टि से पर्याप्त पारिभाषिक शब्द थे किंतु वे शब्द चिकित्सा दर्शन ज्योतिष गणित तथा प्रारंभिक रसायन आदि कुछ ही विषयों के थे। आधुनिककाल में एक तो विज्ञान के अनेकानेक नए विषय विकसित हो गए हैं दूसरे, पुराने विषयों में इतना विकास हो गया है कि पुरानी शब्दावली से काम नहीं चलाया जा सकता। इसलिए अरबी या संस्कृत से शब्द ग्रहण करने वाली भाषाओं के सामने भी शब्दावली की समस्या है।

चीज नहीं होती। अनुवादक को यदि स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का समुचित ज्ञान है तो वह अनुवाद कर लेता है। किन्तु इसके विपरीत वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में विषय का ज्ञान अनिवार्यतः आवश्यक है। विषय का ज्ञान न होने से अनुवादक अनेक प्रकार की गलतियाँ कर सकता है। उदाहरणतः —

गणित में—

(१) A finite point set has no limit points इस वाक्य में अगर has का अनुवाद 'में' कर दिया जाय तो एकदम गलत होगा। यहाँ has का अनुवाद 'के' करना होगा— परिमित समुच्चय के सीमा बिन्दु नहीं होते।' इसी तरह Since P has limit points, P must be infinite में भी has का रूपांतर 'के' होगा 'में' नहीं। विषय का अजानकार 'में' अनुवाद कर देगा जो गलत होगा।

(२) Let {sn} be a sequence containing all rationals इस का अनुवाद होगा— मान लीजिए {sn} सब परिमेय संख्याओं का अनुक्रम है।' यहाँ containing का यह अर्थ नहीं है कि परिमेय संख्याएं शामिल हैं और उनके अलावा भी कुछ और संख्याएं हैं।

(३) Hence closed neighbourhoods are closed इसका अनुवाद होगा— अतः संवृत प्रतिवेश संवृत समुच्चय होते हैं।' यहाँ समुच्चय अपनी तरफ से जोड़ना पड़ेगा। यदि अनुवाद 'अतः संवृत प्रतिवेश संवृत होते हैं' करें तो इसका कोई मतलब नहीं होगा। स्पष्ट ही विषय से अपरिचित अनुवादक यह निरर्थक अनुवाद ही कर सकेगा।

(४) We can write

$$\Phi Q - \Phi_P = PQ\left(\frac{\partial \Phi}{\partial s}\right)PQ$$

where $\left(\frac{\partial \Phi}{\partial s}\right)$ PQ denotes the distance rate of chang of ϕ for displacement in the direction of PQ यहाँ distance rate का अर्थ है दूरी के सापेक्ष यानी with respect to distance जो विषय का जानकार ही समझ सकता है।

(५) Consideer Vortias k at A, z_1, and k at B z_2, outside the circular cylinder $/z/=a$ गणित न जानने वाला इसका

जाएँ तो 'ये गुण' वैज्ञानिक लेखन में होने चाहिए, अतः वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में भी इनकी अनिवार्यता स्वतः सिद्ध है।

इस बात को यहाँ थोड़े विस्तार से देखा जा सकता है—

वैज्ञानिक अनुवाद बहुत स्पष्ट तथा पूर्ण होना चाहिए। सृजनात्मक साहित्य में तो अस्पष्टता भी कभी-कभी गुण होती है किन्तु वैज्ञानिक साहित्य में यह सबसे बड़ा दुर्गुण है। इसी तरह सृजनात्मक साहित्य में बहुत कुछ पाठक की कल्पना के लिए अनकहा भी छोड़ देते हैं। आनन्द के उद्देश्य से पढ़नेवाला पाठक उसे जानने के लिए कल्पना के घोड़े दौड़ाकर आनंदित होता है। किन्तु वैज्ञानिक साहित्य में ऐसा नहीं होना चाहिए। वैज्ञानिक साहित्य के अनुवादक को अपना अनुवाद इतना स्पष्ट और पूर्ण करना चाहिए कि पाठक को मूल सामग्री में दी गई सूचना अपरिवर्तित तथा पूर्णरूप में बिना किसी कठिनाई के प्राप्त हो सके।

वैज्ञानिक अनुवाद को स्पष्ट तथा सटीक बनाने के लिए यह भी आवश्यक है कि अनुवादक न तो अपनी साहित्यिक शैली का उसमें कौशल दिखाए न मूल और अनुवाद के बीच में अपनी रुचि और अपने व्यक्तित्व को आने दे और न आकर्षक ध्वनि योजना के लोभ में शब्द जाल से उसे बोझिल या कठिन बना दे।

वैज्ञानिक अनुवाद की भाषा अत्यन्त सरल तथा अभिधा प्रधान होनी चाहिए। यदि अनुवादक ने लक्षणा या व्यंजना लाने का यत्न किया तो उसमें दुरूहता और सन्दिग्धता आ जाएगी।

पुराने ज़माने में भारत, अरब तथा यूरोप में वैज्ञानिक साहित्य पद्य में भी लिखा जाता था। हिन्दी में मध्यकाल की अनेक पाण्डुलिपियाँ ऐसी हैं जो ज्योतिष, चिकित्सा आदि का विवेचन छन्दों में करती हैं। आधुनिक काल में लोगों का ध्यान छन्दबद्धता या साहित्यिक शैली की असुविधा की ओर गया, और रॉयल सोसायटी ने इसके विरुद्ध आवाज़ उठाई और इस बात को बल के साथ प्रचारित किया कि वैज्ञानिक साहित्य की भाषा सरल, स्पष्ट तथा असंदिग्ध होनी चाहिए तथा उसे गद्य में लिखा जाना चाहिए।

वैज्ञानिक साहित्य के अनुवादक को शब्द चयन विशेष तो नहीं करना पड़ता, किन्तु यदि पड़े तो उन ऐसे शब्दों को ही चुनना चाहिए जिनका अर्थ पूर्णतः निश्चित हो। अर्थ में किसी भी प्रकार की द्वयर्थकता या गुंजाइश न हो। साथ ही पूरे अनुवाद में एक शब्द का सर्वत्र एक ही अर्थ में प्रयोग करना चाहिए।

रण कर सके तथा उसके सुनने में उस पर जो प्रतिक्रिया हो वह लेखक और विषय से सम्बद्ध हो, ऐसा न हो कि लक्ष्य भाषा उसे सुनकर कुछ न समझ सके। (ग) अनुवादक यदि न तो मूल नाम अनुवाद को देना चाहता है न तो मूल नाम का अनुवाद ही करना चाहता है तो उसे मूल लेखक की तरह विषय, आकर्षण संक्षेप आदि उन बातों को दृष्टि में रखते हुए जिनका ऊपर उल्लेख किया जा चुका है नए सिरे से नाम के बारे में सोचना चाहिए। उदाहरणार्थ माइका वाल्तारी के प्रसिद्ध उपन्यास Egyption के हिन्दी अनुवाद का नाम है वे देवता मर गए।

अनूदित पुस्तकों या कविताओं आदि के नाम या शीर्षक प्रायः चार प्रकार के मिलते हैं (१) मूल नाम ही अनुवाद का भी (२) मूल नाम का ज्यों-का त्यों अनुवाद (३) मूल नाम का भावानुवाद, (४) नया नाम। मेरे विचार में अनुवादक को नाम या शीर्षक के लिए चुनाव इसी क्रम से करना चाहिए। पहला सम्भव न हो तो दूसरा, दूसरा सम्भव न हो तो तीसरा और वह भी सम्भव न हो तो चौथा। इस सम्बन्ध में कोई ऐसा निश्चित नियम नहीं बनाया जा सकता, अनुवादक जिसका आँख मूँदकर अनुसरण कर सके।

कुछ उदाहरणों के द्वारा इस दिशा में कुछ और बातें भी कही जा सकती हैं। एक फिल्म आई थी Around the world हिंदी में उसका शब्दानुवाद होता दुनिया के इर्द गिर्द किन्तु यह नाम अच्छा नहीं होता अतः अनुवाद किया गया था 'दुनिया की सैर' जो निश्चित रूप से बहुत अच्छा अनुवाद था। बार्कर की राजनीति शास्त्र की एक प्रसिद्ध पुस्तक है Principle, of the Social and Political theory। इसका सीधा अनुवाद होगा 'सामाजिक और राजनीतिक सिद्धांत के सिद्धान्त' क्योंकि Principle तथा theory दोनों को हिंदी में प्राय सिद्धांत ही कहते हैं किन्तु यह शीर्षक अच्छा नहीं लगता अतः ...के मूलभूत सिद्धांत या कुछ ऐसा ही नाम रखना उचित होगा। एक दूसरी पुस्तक है Age and Image। इस नाम में ध्वनि मैत्री का सौन्दर्य है जो इसके सीधे अनुवाद में सम्भव नहीं था। हिन्दी अनुवादक ने इसका नाम रखा है काल और कला। कहना न होगा कि इस नाम में ध्वनि-सौंदर्य है और यह आकर्षक छोटा तथा अच्छा है। नेहरू जी की पुस्तक *Discovery of India* का सीधा अनुवाद होता भारत की खोज, किन्तु नेहरू जी के सुझाव पर नाम रखा गया भारत की कहानी।

यह पीछे कहा जा चुका है कि अनुवाद की भाषा लेखक, विषय, पाठक

प्रति की दृष्टि से रखन हुए रखनी चाहिए और पुस्तक के नाम की भाषा पुस्तक की भाषा के अनुकूल होनी चाहिए। मौलाना आज़ाद की पुस्तक है India wins freedom और उनका हिन्दी अनुवाद है आज़ादी की कहानी'। इस नाम म स्वत त्रता शब्द उतना अच्छा न होता जितना अच्छा आज़ादी' है।

एक पुस्तक है A Guide to Diplomatic Practice। इसके अनुवाद म guide शब्द को दर्शिका' या 'मार्गदर्शिका' रूप मे रखें तो नाम मे एक प्रकार का सस्तापन आ जाएगा अत राजनयिक व्यवहार की रूपरेखा' या इस प्रकार का कोई नाम अच्छा रहेगा। काव्यशास्त्र की एक प्रसिद्ध पुस्तक है On Sublime। हिन्दी मे इसके दो अनुवाद है उदात्त के विषय मे तथा काव्य में उदात्त तत्त्व'। कहना न होगा कि पहले नाम मे अंग्रेज़ी की छाया है अत दूसरा नाम अपेक्षाकृत अच्छा माना जाएगा।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने Light of Asia का अनुवाद बुद्धचरित तथा Riddle of the Universe का विश्व प्रपंच नाम म किया है। उन का अनुवाद जितना अच्छा बन पड़ा है नामो के मौलिक कदाचित् उतने ही खराब हैं। एशिया ज्योति तथा विश्व की पहेली शायद अधिक अच्छे नाम होते।

वस्तुत नाम ज्यों का त्यों यदि न रखना हो तथा उसका शब्दानुवाद या भावानुवाद भी न सम्भव हो तो अनुवादक म सृजन प्रतिभा तथा कल्पना जितनी उर्वर होगी वह उतना ही अच्छा नाम रख सकेगा। ऐसा नामकरण न तो अनुवादविज्ञान के क्षेत्र मे है और न अनुवादशिल्प के। यह अनुवादकला के क्षेत्र म है और इसीलिए अनुवादक की सृजन शक्ति पर निर्भर करता है।

अनुवाद कर दे तो वह उपमान लक्ष्य भाषा भाषी को अपेक्षित सौन्दर्य बोध नहीं करा सकता।

वस्तुत यहाँ भी स्थिति दो प्रकार की हो सकती है। एक तो वह जब स्रोत सामग्री में प्रयुक्त उपमान से लक्ष्य भाषा भाषी बिल्कुल अपरिचित हैं और दूसरी वह जब लक्ष्य भाषा भाषी उस चीज से परिचित हैं, यद्यपि उस उपमान के रूप में उससे उनका परिचय नहीं है। पहली स्थिति में अनुवादक के आगे दो रास्ते हो सकते हैं। वह अलंकार को छोड़कर उसके भाव को ले ले। जैसे जाँघ कदली के खंभे की तरह हैं के स्थान पर जाँघें सुडौल, चिकनी लोमरहित स्वच्छ तथा कांतियुक्त हैं या फिर वह जाँघों को कदली के खंभे जैसा ही कहे और पाद टिप्पणी में या अन्यत्र यह समझा दे कि उस भाषा या साहित्य में सुन्दर जाँघों की उपमा कदली स्तंभ से दी जाती है, क्या कि वह सुडौल चिकना लोमरहित स्वच्छ होता है। दूसरी स्थिति में बिना परिवर्तन के या पाद टिप्पणी आदि में व्याख्या किए अनुवादक उसका अनुवाद कर सकता है। जैसे चाँद सा सुन्दर मुखड़ा ऐसे भी लोगों के लिए सौन्दर्य बोध करा देगा जिनके साहित्य में सौन्दर्य के लिए चाँद से उपमा देने की परंपरा नहीं है।

अनुवादक के सामने सबसे जटिल समस्या अंतिम स्थिति में आती है जब कोई उपमान स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा दोनों में हो किन्तु दोनों में उसके द्वारा व्यक्त भाव या विचार असमान या विरोधी हों। उदाहरण के लिए 'उल्लू' हिन्दी में मूर्खताद्योतक उपमान है जबकि अंग्रेजी में वह बुद्धिमता द्योतक है। हिन्दी में वह मूर्ख है के लिए प्राय कहते हैं वह उल्लू है जबकि अंग्रेजी में कहते हैं—वह उल्लू जैसा बुद्धिमान है (He is as wise as an owl या He is wise as an owl)। अब यदि हिन्दी से कोई व्यक्ति अंग्रेजी में या अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद कर रहा हो तो क्या उसे इस उपमान का स्रोत भाषा के अर्थ में प्रयोग करना चाहिए। स्पष्ट ही ऐसा करना न केवल हास्यास्पद होगा अपितु वह भाव-बोध में भी बाधक होगा। ऐसी स्थिति में अनुवादक के सामने दो ही रास्ते हैं। या तो वह अलंकार को छोड़कर अलंकार द्वारा व्यक्त बात को सीधे शब्दों में (जैसे वह बहुत बुद्धिमान है) कह दे या फिर लक्ष्य भाषा में उस अर्थ में जिस उपमान का प्रयोग होता हो उसका प्रयोग करे।

हिन्दी में सौन्दर्य के लिए कामदेव से उपमा दी जाती है 'वह कामदेव जैसा सुन्दर है।' मान लीजिए इसका अनुवाद अंग्रेजी में करना है। अंग्रेजी में

रोमिया का प्रेम देवता क्यूपिड कामदेव का पर्याय है, किंतु वह कामदेव की तरह सौन्दर्य का उपमान नहीं है। पहले क्यूपिड स्वरूप की दृष्टि से बड़ा ही भयावह माना जाता था। अर्थात् कामदेव का ठीक उलट था, अब वह बालक रूप में माना जाता है। इस प्रकार सौन्दर्य बोध की दृष्टि से अंग्रेजी में उपमान रूप में उस का प्रयोग बिल्कुल भी सार्थक नहीं है। ग्रीक पौराणिक कथा में अपोलो (Apollo) सूर्यदेवता हैं जो काव्य, संगीत, औषधि तथा धनुर्विद्या आदि अधिष्ठाता माने जाते हैं और जो सुन्दर भी कहे जाते हैं। उन्हें कामदेव के स्थान पर रखा जा सकता है या फिर as handsome as a god भी कहने की परम्परा है, अत उसका प्रयोग भी किया जा सकता है।

मान लीजिए किसी की अत्यधिक कोमलता को लक्ष्य करके किसी ने कहा है 'वह छुई मुई है'। इसे अंग्रेज़ी में उतारना है। छुई मुई को अंग्रेजी में tuch me not, mosa या mimosa pudica कहते हैं। किन्तु इनमें किसी को भी कोमलता के प्रतीक के रूप में अंग्रेजी परम्परा में नहीं माना गया है। ऐसी स्थिति में यदि अनुवादक इनमें किसी का प्रयोग करेगा तो अंग्रेजी पाठक तक उसका कथ्य नहीं पहुंच सकेगा। उसे शायद she is delicate as a flower या इसी तरह कुछ कहना पड़ेगा।

डालना पड़ता है।[1] उमर खय्याम के प्रसिद्ध अनुवादक फिटजेराल्ड तथा अनेक अन्य काव्यानुवादकों ने ऐसा ही किया है। यदि कोई व्यक्ति मूल रूबाइयों को अंग्रेजी अनुवाद के साथ रखे तो कभी कभी तो यह कहना भी कठिन हो जाता है कि वह अनुवाद भी है। ऐसे ही अनुवादों को देखकर इटली में कहावत प्रचलित हुई होगी—अनुवादक वंचक होते हैं (ट्राडुत्तोरे ट्राडीतोरे), क्योंकि माना जाता है कि अनुवादक किसी और की बात को अपने शब्दों में कह रहा है, किन्तु वह मूल को आधार मानकर कभी कभी अपनी बात—जैसा कि फिटजजराल्ड ने किया था—कहने लगता है और इस तरह वह एक प्रकार का धोखा देता है।

अनुवादक की यह वंचकता अनुवाद को कभी-कभी मूल से काफी अलग खींच ले जाती है। पिछले युद्ध के जमाने में गेहूं के आटे की कमी हो गई थी अतः शकरकंद का आटा दुकानों पर बिकता था। शकरकन्द के लिए अंग्रेजी में 'स्वीट पोटेटो' शब्द है। अंग्रेजी के इस शब्द का अनुवाद करके अनेक दुकानों पर हिन्दी में बोर्ड लगा था 'मीठे आलू का आटा'। अनुवादों से ऐसे हजारों उदाहरण खोज जा सकते हैं।

एक बार अनुवादन की इस विडंबना या इस वंचकता की सीमा देखने के लिए मैंने शान्तिप्रिय द्विवेदी के कुछ नक्शों में कुछ सुंदर अंशों का अंग्रेजी फ्रांसीसी जर्मन रूसी तमिल चीनी तथा जापानी में अनुवाद करवाया। इन भाषाओं से उन अंशों का फिर हिन्दी में दूसरे अनुवादकों से अनुवाद कराया, और फिर अन्य अनुवादकों से उनका पुनः इन भाषाओं में अनुवाद करवाया गया तथा फिर इन भाषाओं से इन कुछ अन्य अनुवादकों से हिन्दी में लाया गया। अन्त में इनकी आपस में तथा मूल सामग्री से तुलना पर यह पता चला कि मूल एकता का लगभग ५० प्रतिशत अंश भिन्नता में परिवर्तित हो चुका था। यह है अनुवादक की वंचकता और अनुवादन की विडंबना।

किन्तु इन सब बुराइयों एवं कठिनाइयों के बावजूद अनुवाद अनेक दृष्टियों से विश्व को एक सूत्र में बांध रहा है, उसके सहारे ही भिन्न भाषा भाषी न केवल एक दूसरे के क्या मिलाकर विश्व का ज्ञान बढ़ा रहे हैं अपितु एक दूसरे के सुख-दुख को अपना मानकर तादात्म्य का भी अनुभव कर रहे हैं। अतः सारी विडंबनाओं के बावजूद अनुवाद आज के युग की अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है, और उसे लाख गाली देकर भी हम उससे पीछा नहीं छुड़ा सकते।

[1] I am persuaded that—the translator must recast the original into his own likeness—better a live sparrow than a stuffed eagle.—Fitzgerald

२५

असफल साहित्यकार अनुवादक हो जाता है !

साहित्य जगत में प्राचीन काल से ही इस प्रकार की अनेक मान्यताएँ प्रचलित रही हैं जो केवल दुर्बल आधारों पर ही अर्धचिन्तनशील लोगों द्वारा व्यक्त की गई हैं तथा जिनमें कोई तत्व की बात नहीं है। हिन्दी जगत में जब आलोचना का प्रचार हुआ तथा अनेक आलोचक इस क्षेत्र में आने लगे और कवियों और कथा नाटक लेखकों के गुण दोषों का विवेचन होने लगा तो साहित्यकार अपने दोषों को देखकर बहुत खीझा और उसने कहना शुरू किया 'असफल साहित्यकार आलोचक बन जाता है'। पश्चिम में भी इस प्रकार की बातें समय समय पर कही जाती रही हैं। हिन्दी का ही दूसरा उदाहरण लें तो अनेक तथाकथित साहित्यकार यह कहते रहे हैं कि जो साहित्य के क्षेत्र में सफल नहीं हो सका, भाषाशास्त्री बन बैठा। अनुवाद को लेकर भी इस प्रकार की अनेक बातें यूरोप में तथा अन्यत्र कही जाती रही हैं। डेनहम ने लिखा है—

Such is our pride our folly or our fate
The few but such as can not write translate

फ्रैंकलिन ने भी लगभग इसी प्रकार के विचार व्यक्त किए थे—

hands impure dispense
The sacred steams of ancient eloquence,
Pedants assume the tasks for scholars fit
And blockheads rise interpreters of wit

इसमें कोई भी सन्देह नहीं कि अन्य अनेक क्षेत्रों की भाँति अनुवाद के क्षेत्र में भी ऐसे लोग हैं जो प्रतिभाशाली नहीं हैं या जिन्हें कोई और काम में सफलता नहीं मिली तो अनुवादक बन बैठे किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि सारे के सारे अनुवादक ऐसे ही हैं। रवीन्द्रनाथ ठाकुर रामचन्द्र शुक्ल प्रेमचन्द तथा बच्चन जैसे उच्च कोटि के साहित्यकारों ने भी अनुवाद किए हैं, और

अच्छे अनुवाद किए हैं। वस्तुत कोई आवश्यक नहीं कि असफल साहित्यकार बढिया अनुवादक हो या सफल साहित्यकार घटिया अनुवादक हो। चारो बातें देखने म आती हैं बहुत स लोग साहित्य रचना मे सफल नहीं होते किन्तु अनुवाद में बहुत सफल होत हैं बहुत से लोग साहित्य रचना तथा अनुवाद दोनो म सफल होते हैं बहुत से लोग साहित्य रचना तथा अनुवाद दोनो म असफल होते है और बहुत स लोग साहित्य रचना मे सफल होते हैं किन्तु अनुवाद मे असफल रहते हैं। वस्तुत मौलिक साहित्य लेखन तथा अनुवाद के लिए हर दृष्टि से समान गुणो की आवश्यकता नहीं है, इसीलिए दोनो क्षेत्रा म सफलता असफलता प्राय एक दूसरे से बहुत अधिक सम्बद्ध नहीं है।

अनुवाद और अनुवाद-चिंतन की परम्परा

भाषा का जन्म व्यक्तियों में आपसी विचार विनिमय के प्रयत्न में हुआ तो अनुवाद का जन्म दो भाषा भाषी व्यक्तियों या समुदायों में विचार विनिमय सम्भव बनाने के लिए। इसका प्रारम्भ कदाचित् ऐसे व्यक्तियों से हुआ होगा जो भाषा-क्षेत्रों की सीमा पर रहने के कारण दो या अधिक भाषाओं के जानकार रहे होंगे तथा आवश्यकता पड़ने पर उन विभिन्न भाषाओं के व्यक्तियों के बीच दुभाषिए का काम करते रहे होंगे। प्राचीनतम दुभाषिए ऐसे लोग भी हो सकते हैं जो मूलतः किसी अन्य भाषा के भाषी रहे होंगे किंतु किसी अन्य भाषा के क्षेत्र में रहने के कारण वहाँ की भी भाषा सीख गए होंगे। इस बात का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि अनुवाद की प्राचीनतम परम्परा का प्रारम्भ भाषा के जन्म के कुछ ही समय बाद हो गया होगा। अनुवाद की यह परम्परा बहुत दिनों तक मौखिक रही होगी। बाद में लिपि के प्रचार के बाद लिखित अनुवाद की परम्परा चली होगी। किंतु यह मात्र अनुमान है। उतनी पुरानी परम्परा के किसी प्रमाण के मिलने का प्रश्न ही नहीं उठता।

ईसा से लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व असीरिया का राजा सैरगोन (Sargon) अपने बहुभाषा भाषी साम्राज्य में अपने वीरतापूर्ण कार्यों की घोषणा विभिन्न भाषाओं में कराया करता था। ये घोषणाएँ मूलतः वहाँ की राजभाषा असीरियन में लिखी जाती थीं और फिर विभिन्न भाषाओं में अनूदित होती थीं। विश्व में अनुवाद का अब तक ज्ञात यह प्राचीनतम उल्लेख है। इसी प्रकार लगभग इक्कीस सौ वर्ष ईसवी पूर्व हम्मूरबी (Hammurobi) के शासनकाल में बबीलोन एक बहुभाषा भाषी नगर था। ऐसा उल्लेख मिलता है कि वहाँ भी राज्यादेशों के अनुवाद जनता के लाभार्थ विभिन्न भाषाओं में कराए जाते थे। पुराने अनुवादकों के उपयोग के लिए कुछ कोशकारों ने विभिन्न भाषाओं के तुलनात्मक कोश भी बनाए थे जिनमें से कुछ क्यूनीफार्म लिपि में ठीकरों पर मिले भी हैं। चौथी पाँचवीं सदी ई० पू० में यहूदियों में सामूहिक रूप से

धर्मशास्त्र सुनाने की परम्परा थी। सुनने वालों में कभी कभी ऐसे लोग भी होते थे जो हिब्रू अच्छी तरह नहीं समझ पाते थे। उन्हें दुभाषिये आर्मेइक भाषा में अनुवाद करके समझाते थे।

ये अनुवाद के बारे में सूचनाएं मात्र थीं। वास्तविक अनुवाद अभी तक बहुत पुराना नहीं मिला है। विश्व का प्राचीनतम प्राप्त अनुवाद दूसरी सदी ई० पू० का है जो रोजेटा प्रस्तर (Rosetta stone) पर है। इसमें हीरोग्लाइफिक तथा देमानिक (मिस्र की दो प्राचीन) लिपियों में मिस्री इतिहास तथा संस्कृति सम्बन्धी मूल सामग्री है तथा साथ ही उसका यूनानी भाषा में अनुवाद भी है।

यूनान

फुटकर उदाहरणों की बात छोड़ दें तो पश्चिम में अनुवाद की व्यवस्थित परम्परा बाइबिल के अनुवादों से चली। बाइबिल की पुरानी पोथी (Old Testament) की भाषा हिब्रू है। मिस्र तथा एलेक्जंड्रिया में ऐसे काफी यहूदी थे जो यूनानी भाषा भाषी थे तथा जिन्हें हिब्रू नहीं आती थी। इनके लिए यूनानी में पुरानी पोथी के अनुवाद की आवश्यकता प्रतीत हुई। परिणामत तीसरी दूसरी सदी ई० पू० में इसके कई यूनानी अनुवाद किए गए। इस अनुवादों में सप्तुआगित (Saptuagint) नामक अनुवाद प्राचीनतम है। कहा जाता है कि बहत्तर अनुवादकों ने इसे बहत्तर दिन में पूरा किया था। यह अनुवाद बहुत ही शाब्दिक है। इसीलिए इस अनुवाद की शैली यूनानी भाषा की प्रकृत शैली से भिन्न है तथा सेमिटिक शैली के अपेक्षाकृत अधिक अनुरूप है। ऐसे ही पुरानी पोथी का दूसरी सदी में अक्विला (Aquila) ने यूनानी में अनुवाद किया था जो इतना शब्द प्रति शब्द है कि शैली बहुत अटपटी हो गई है अनेक स्थल बिल्कुल ही अबोधगम्य हैं तथा कभी-कभी तो अनुवाद में मूल भाव आ ही नहीं सका है।

प्राचीन यूनानियों में बाइबिल के अनुवाद को लेकर दो सिद्धान्तों का भी उल्लेख किया जाता है अनुवाद का भाषावैज्ञानिक सिद्धान्त (Philological theory of translation तथा अनुवाद का प्रेरणात्मक सिद्धान्त (Inspirational theory of Translation)। पहले के अनुसार अनुवादक को दोनों भाषाओं का अधिकारी विद्वान होना चाहिए ताकि वह सहज भाषांतर कर सके दूसरे के अनुसार बाइबिल का ठीक अनुवाद केवल भाषा ज्ञान तथा विषय ज्ञान से नहीं हो सकता। उसके लिए यह भी आवश्यक है कि अनुवादक

ईश्वर की प्रेरणा से वशीभूत हो। यह पुनीत कार्य दैवी प्रेरणा के बिना संभव नहीं है।

प्राचीन यूनानियों में (तथा रोमियो में भी) बाइबिल के अनुवाद को लेकर एक अन्य दृष्टि से भी दो मान्यताओं का उल्लेख मिलता है। धर्म के अधिकतर धार्मिक मत्र की तरह बाइबिल के शब्दों तथा उसके क्रम को महत्वपूर्ण मानते थे। इसीलिए वे शब्दानुवाद के पक्षपाती थे—ऐसा शब्दानुवाद जिसमें शब्द के लिए शब्द हो, साथ ही यथासाध्य शब्दों का क्रम भी प्रायः मूल के समान ही हो। अर्थात् शब्दों तथा शब्द क्रमों के परिवर्तन से बाइबिल के पाठ को धार्मिक दृष्टि से क्षति पहुँचने की उन्हें आशंका थी। एक अन्य दृष्टि से भी कुछ लोग बाइबिल के शब्दानुवाद के पक्षपाती थे। उनका विश्वास था कि भावानुवाद से बाइबिल को समझना सरल हो जाएगा अतः गैरईसाई भी उसे पढ़ सकेंगे। किन्तु ऐसा होना नहीं चाहिए। बाइबिल धार्मिक ग्रन्थ है और उसका मत्र की तरह महत्व है अतः गोपनीयता की रक्षा के लिए उस के अनुवाद को कुछ असरल तथा अटपटा होना ही चाहिए ताकि ईसाइयों को छोड़कर अन्य लोग उसे कम से कम पढ़ और समझ सकें। इसके विपरीत कुछ लोग ऐसे थे जिनका बल इस बात पर था कि मूल सामग्री का भाव अनुवाद में आना चाहिए और इसके लिए लक्ष्य भाषा की प्रकृति को देखते हुए शब्दों तथा शब्द क्रमों आदि में परिवर्तन आवश्यकतानुसार किया जा सकता है।

यूनानी में प्राप्त प्राचीन साहित्य में और कोई अनूदित कृति नहीं है। वस्तुतः विश्व में विभिन्न क्षेत्रों में यूनानी उस जमाने में अग्रणी थे अतः उस समय तक उन्हें स्वाभावतः किसी अन्य भाषा से कुछ लेने या अनुवाद करने की कोई खास आवश्यकता नहीं पड़ी थी।

रोम

अनुवाद की परम्परा में यूनानियों के बाद रोमियों का नाम आता है। रोमियों द्वारा अनूदित ग्रन्थों को मुख्यतः दो वर्गों में रखा जा सकता है (क) धार्मिक (ख) अन्य

पहले अन्य को लिया जा रहा है। इसमें काव्य, नाटक आदि साहित्यिक ग्रन्थ तथा तत्वज्ञान एवं समाजदर्शन आदि के चिंतन प्रधान ग्रन्थ आते हैं। इन क्षेत्रों में यूनानी अपने समय के अग्रणी थे अतः मुख्यतः उन्हीं के ग्रन्थों के लटिन में अनुवाद हुए। उदाहरण के लिए लगभग २४० ई० पू० में लिवि-

शास्त्र, तर्कशास्त्र, जादू, भाषणकला, नीति कथा आदि के थे, जिनमें से मुख्य वृहस्पति सिद्धान्त, सुश्रुत, चरक, विषविद्या, महाभारत (अंशत), अर्थशास्त्र तथा पंचतन्त्र आदि हैं।

९वीं १०वीं सदी में यूनानी वाङ्मय के प्लेटो, अरस्तू आदि सभी कृती लेखकों की महत्वपूर्ण कृतियों के बगदाद में अरबी अनुवाद किए गए।

अरबी अनुवाद के सम्बन्ध में दो-तीन बातें उल्लेख्य हैं। एक तो यह कि सारे-के सारे अनुवाद भावानुवाद हैं। प्रयास केवल बात, तथ्य तथा कथा आदि को स्वच्छन्द रूप से धारा प्रवाह अरबी में उतारने का है। शब्द प्रति शब्द का आग्रह बिल्कुल नहीं है। दूसरे प्राचीन काल में अरब ही एकमात्र ऐसा देश है जहाँ अनुवाद का काम किसी संस्था को सौंपा गया ताकि वह व्यवस्थित रूप से हो सके। खलीफा अल मामून ने ८३० ई० में बतुल हिक्मा (ज्ञान गृह) नामक एक संस्था स्थापित की जिसका कार्य उच्च अध्ययन, शोध तथा अनुवाद आदि था। अंतिम बात यह है कि गणित, ज्योतिष, नीतिकथा आदि में यूरोप पर भारतीय प्रभाव मुख्यतः इन अरबी अनुवादों से ही होता पड़ा था।

स्पेन, जर्मनी, फ्रांस आदि

मध्य युग में अनुवाद की यूनानियों तथा रोमियों की परम्परा आगे बढ़ती रही। पश्चिमी यूरोप में ग्रीक में लिखे गए धार्मिक निबन्धों के पादरियों द्वारा प्रयुक्त शुद्ध लैटिन में अनुवाद हुए। बेद (Bede) ने ७३५ ई० में जान के गास्पल का अनुवाद किया। १२वीं सदी में स्पेन का तालेदो विद्या का एक बहुत बड़ा केन्द्र बनने के साथ साथ यूनानी भाषा के गौरव ग्रन्थों के लैटिन अनुवाद का भी केन्द्र बन गया। ये ग्रन्थ प्राय सीधे यूनानी से अनूदित न होकर अरबी या सीरियाई आदि भाषाओं के माध्यम से होते थे। कुछ ग्रन्थों के तो यूनानी से सीरियाई में, सीरियाई से अरबी में और फिर अरबी से लैटिन में अनुवाद हुए। अनुवाद कला की दृष्टि से इस काल में विशेष चिंतन तो नहीं हुआ किन्तु अपवादतः कुछ लोगों ने इस दिशा में भी विचार व्यक्त किए। उदाहरण के लिए १२वीं सदी के अंत में ममानिडस (Maimonides) ने अनुवाद में शब्द के लिए शब्द पद्धति का विरोध किया, क्योंकि इससे अनुवाद में प्राय अव्यवस्थितता और सदिग्धता दोष आ जाता था।

पुनर्जागरण काल में यूरोप का ध्यान अपने प्राचीन काल पर गया और प्राचीन काल में यूनान, साहित्य और संस्कृति का अक्षय भंडार था ही अतः यूरोपीय भाषाओं में यूनान के गौरव ग्रन्थों के अनुवादों की एक बाढ़

ही आ गई। किन्तु अनुवाद कला की दृष्टि से ये अनुवाद बहुत अच्छे स्तर के न थे। इनकी तुलना में बाइबिल आदि धार्मिक साहित्य के अनुवाद कहीं अच्छे थे, क्योंकि इनके अनुवादक धर्म भावना के कारण अधिक सतर्कता और निष्ठा के साथ अपना कार्य करते थे।

१६वीं सदी में अनुवाद के क्षेत्र में पूरे यूरोप में सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति प्रोटेस्टेंट धर्म के समर्थक जर्मनी के मार्टिन लूथर (१४८३-१५४६) थे। उनके पहले फ्रांसीसी, अंग्रेजी, डच, चेक, जर्मन आदि भाषाओं में बाइबिल की नई पोथी के अनुवाद हो चुके थे। लैटिन के समझने वाले कम होते जा रहे थे, और विभिन्न देशों की भाषाओं का महत्त्व राजनीतिक कारणों से बढ़ता जा रहा था। उस काल में भी अनुवाद के क्षेत्र में शब्द प्रति शब्द और भाव प्रति भाव का विवाद समाप्त नहीं हुआ था। एक ओर निकोलस फॉन वाइल (Nicolas von Wyle) शब्द प्रति शब्द का समर्थन कर रहे थे तो दूसरी ओर बुद्धिवादी नेता एरासमस (Erasmus) की मान्यता 'भाव प्रति भाव' का प्रभाव अनुवाद-क्षेत्र में बढ़ता जा रहा था। पुराने शब्दशानुवादों की तुलना में अनुवाद को अर्थयुक्त (Meaningful) बनाने पर बल दिया जा रहा था। लूथर ने जर्मन भाषा में १५२२ ई० में बाइबिल की नई पोथी का अनुवाद प्रकाशित किया। १५३४ तक उनकी पूरी बाइबिल आ गई। किसी अनुवाद का किसी भाषा पर इतना प्रभाव नहीं पड़ा होगा जितना लूथर की बाइबिल का जर्मन भाषा पर पड़ा। स्त्री पुरुष, बड़े छोटे सभी उसे पढ़ने लगे और जर्मन भाषा का परिनिष्ठित रूप उसी के आधार पर निश्चित हुआ। मार्टिन लूथर पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने अनुवाद में बोधगम्यता पर पूरा बल दिया। यह शायद तत्कालीन ऐसे शब्दानुवादों की प्रतिक्रिया थी जो मूलनिष्ठता के नाम पर अधिकांशतः अबोधगम्य होते थे। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि बाइबिल के अनुवाद का अर्थ है अन्य भाषा भाषी तक बाइबिल की बातों को पहुँचा देना। यदि अनुवाद ऐसा नहीं कर सका तो उसका होना न होना बराबर है। मार्टिन लूथर में अनुवाद सिद्धान्त के रूप में ७-८ बातें हैं (१) अनुवाद पूर्णतः बोधगम्य होना चाहिए। (२) मूल पाठ के शब्द क्रम को आवश्यक होने पर परिवर्तित कर देना चाहिए। (३) अपेक्षित अर्थों की अभिव्यक्ति के लिए ऐसे सहायक शब्द (सहायक क्रिया आदि) अनुवाद में जोड़े जा सकते हैं जो मूल पाठ में नहीं है। (४) मूल पाठ में अप्रयुक्त संयोजक वियोजक आदि भी अनुवाद में प्रयुक्त किए जा सकते हैं। (५) स्रोत भाषा के ऐसे शब्द जिनके समानार्थी अन्य भाषा में न उपलब्ध हों छोड़ दिए

थी। ऐल्फ्रेड (८४९ ९०१) राजा योद्धा तथा विद्वान् होने के साथ साथ अच्छा अनुवादक भी था। उसने बीड के इतिहास तथा कई अन्य ग्रंथों का अनुवाद किया था। तभी से चलते चलते १५वीं १६वीं सदी तक अंग्रेजी में अनुवाद की एक सुदृढ़ परम्परा स्थापित हो गई थी। जान विक्लिफ (१३२०-१३८४) ने अंग्रेजी में बाइबिल की नई पोथी का पहला अनुवाद किया। उसके बाद हिब्रू यूनानी तथा जरोम के लैटिन अनुवाद के आधार पर अंग्रेजी में बाइबिल के कई अनुवाद आए। यूनानी लैटिन तथा स्पेनिश आदि कई भाषाओं से अनेक गौरव ग्रंथों के अनुवाद भी प्रकाशित हुए। टॉमस नार्थ ने १५७९ में प्लूटार्क की प्रसिद्ध यूनानियों और रोमनों की जीवनियों का अनुवाद प्रकाशित किया जिससे शेक्सपीयर ने जूलियस सीजर आदि अपने कई नाटकों के लिए कथा वस्तु ली। जार्ज चापमन ने १५९८ (१६१६ में बाद होमर के इलियड का अनुवाद पूरा किया। अनुवाद के क्षेत्र में अंग्रेजी की उल्लेख्य उपलब्धि माना जाता है बाइबिल का अधिकृत संस्करण[1] (Authorised Version १६११)। राजा जेम्स प्रथम ने १६०४ में ४७ अनुवादकों को बाइबिल का अधिकृत रूपांतर प्रस्तुत करने के लिए नियुक्त किया था। अधिकृत संस्करण उसी का परिणाम था। वस्तुतः यह सर्वथा नया अनुवाद नहीं था। जैसा कि इसकी भूमिका में स्पष्ट कहा गया है यह तब तक के हुए अच्छे अनुवादों के श्रेष्ठतम अंशों का चयन है। इसीलिए इसमें अनुवाद के सिद्धान्त के सम्बन्ध में कोई नई बात नहीं है। बाइबिल का यह रूपांतर काफी अच्छा है यद्यपि इसकी भाषा बोलचाल की नहीं है। कुछ अन्य दृष्टियों से भी इसकी आलोचनाएं हुई हैं। बाइबिल के एक प्रसिद्ध विद्वान् एच. ब्राउटन ने इसका बड़ा विरोध किया था। उन्होंने कहा था कि इस अनुवाद को देख कर मुझे जो दुख हुआ है मृत्युपर्यन्त दूर नहीं हो सकता। यह अनुवाद बहुत ही खराब है। मुझे चाहे टुकड़े टुकड़े कर दिया जाय किंतु ऐसा अनुवाद चर्चों के ऊपर थोपने को मेरी आत्मा बर्दाश्त नहीं कर सकती।[2] बाइबिल के

---

१ जवाहरलाल नेहरू इसके सम्बन्ध में 'डिस्कवरी आफ इंडिया' में लिखते हैं— The hard discipline reverent approach and the insight of the English translation of the Authorised Version of the Bible not only produced a noble book but gave to the English language strength and dignity

२ The translation bred in me a sadness that will grieve

इस अधिकृत संस्करण का प्रारम्भ में बहिष्कार हुआ, किंतु अन्त में यह सम्मानित भी हुआ और अनेक सदियों तक अनेक भाषाओं में बाइबिल के अनुवाद इससे प्रभावित होते रहे हैं। आगे चलकर इसके कई संशोधित संस्करण (The English Revised Version, American Revised Version, Revised Standard Version) प्रकाशित हुए, साथ ही बाइबिल के अंग्रेजी अनुवाद के वैयक्तिक प्रयास (जैसे मोफट तथा नाक्स आदि के) भी होते रहे।

१७वीं १८वीं सदी में धर्मेतर ग्रंथों के अनुवाद काफी हुए। उनके अनुवादकों ने अनुवाद में काफी स्वच्छंदता बरती और शब्दों पर विशेष ध्यान न देकर स्रोत सामग्री की मूल भावना को अनुवाद में अक्षुण्ण रूप में लाने का यत्न किया। मूलतः इस स्वच्छंदता को लाने का श्रेय आब्राहम काउली (A Cowley) को है। उन्होंने पिंडार (Pindar) के संबोध गीतों (Odes) के अनुवाद में काफी स्वच्छंदता बरती। इस स्वच्छंदता के पक्ष में उन्होंने लिखा है—यदि कोई पिंडार के संबोधगीतों का शब्द प्रति शब्द अनुवाद करे तो ऐसा लगता कि एक पागल ने दूसरे पागल की रचना का अनुवाद किया है। इसीलिए मैंने अपनी इच्छानुसार लिया, छोड़ा और जोड़ा है।[१] ड्राइडेन (Drryden) ने काउली के अनुवाद को बहुत अच्छा नहीं माना और उसे अनुकरण (imitation) कहा। ड्राइडेन (१६८) के अनुसार अनुवाद ३ प्रकार के होते हैं (क) शब्द-प्रति शब्द अनुवाद—इसे उन्होंने metaphrase, a word for word and line for line type of rendering कहा है। (ख) भाव प्रति भाव अनुवाद—इसे उन्होंने paraphrase कहा है। इसमें शब्द पर बल न देकर भाव पर बल देते हैं। (ग) अनुकरण—इसे उन्होंने imitation कहा है। इसमें अनुवादक

---

me while I breath It is so ill done Tell His Majesty that I had rather be rent in pieces with wild horses than any such translation by my consent should be urged upon poor churches

१ If a man should undertake to translate Pindar word for word it would be thought one mad man had translated another I have in these two odes of Pindar taken left out and added what I please, nor made it so much my aim to let the reader know precisely what he spoke as what was his way and manner of speaking

नाम है An Essay on the Principles of Translation इसमे टिटलर ने अनुवाद के लिए तीन बातें आवश्यक मानी है—(क) अनुवाद मे मूल का पूरा कथ्य या भाव आना चाहिए (ख) अभिव्यक्ति शैली वही होनी चाहिए जो मूल की हो (ग) अनुवाद म मौलिक लेखन सा सहज प्रवाह होना चाहिए। टिटलर ने पूर्ववर्ती सिद्धान्त चिन्तकों की समीक्षा करते हुए तथा ग्रीक लटिन, स्पनिश फ्रेंच, जमन आदि भाषाओ मे किए गए अनुवादो से उदाहरण देते हुए विषय को इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि एक तरफ तो इस दिशा म सारा पूर्ववर्ती चिंतन एक स्थान पर सामने आ गया है और दूसरे सम्बद्ध सारी समस्याओ पर प्रकाश पडा है। टिटलर द्वारा ली गई कुछ मुख्य समस्याए ये हैं अनुवादक को स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा का कितना ज्ञान हो, अनुवादक के लिए भाषा के अतिरिक्त विषय का कितना ज्ञान आवश्यक है अनुवाद म मूल की शैली कहाँ तक आ सकती है स्रोत तथा मूल भाषा म अन्तर का अनुवाद पर क्या प्रभाव पड सकता है, क्या कविता का अनुवाद गद्य म हो सकता है अनुवाद म मूल रचना सा सहज प्रवाह कैसे लाए, मुहावरो का अनुवाद कसे करें तथा श्रेष्ठ अनुवादक के क्या लक्षण हैं आदि। प्राय यह माना जाता है कि अनुवाद म यथासाध्य न कुछ छोडें न कुछ जोडें। टिटलर ने कहा है कि यदि मूल भाव की दृष्टि से स्रोत सामग्री म कुछ अश अनावश्यक हो तो अनुवादक उसे छोड सकता है इसी प्रकार यदि मूल कथ्य को अधिक स्पष्ट करने या उस पर कुछ बल देने के लिए कुछ बातें जोडनी आवश्यक हो तो अनुवादक कुछ अपनी ओर से जोड भी सकता है। नाइडा आदि कई आधुनिक अनुवादशास्त्री भी इसे ठीक मानते हैं। इन पक्तियो का लेखक इससे बहुत सहमत नही है। अनुवादक का काम व्याख्या आदि नही। उसे तो मूल को अनुवाद मे यथासाध्य यथावत् उतारने का प्रयास करना चाहिए। मूल लेखक की न तो कमियो को उसे कम करने का अधिकार है और न उसकी विशेषताओ म वृद्धि करने का। टिटलर ने कहा है कि यदि कोई अश अस्पष्ट या सन्दिग्धार्थी हो तो वहाँ सर्वाधिक ठीक अर्थ का अनुवाद ही अनुवादक को करना चाहिए। मैं इससे भी सहमत नही हूँ। मूल के गुण-दोष अनुवाद म रहने ही चाहिए। टिटलर ने एक बात बहुत अच्छी कही है कि अनुवादक को उस चित्रकार जैसा होना चाहिए जो उन्ही रग का प्रयोग नही करता जिनका मूल चित्रकार ने किया है किन्तु वह मूल चित्र को देखकर अपने रंगों म ऐसा चित्र बनाता है जो मूल जैसा ही प्रभाव डालता है। वह मूल के स्पर्शों का अनुकर्ता नही होता

किंतु अपने स्पर्शों से मूल से पूर्ण समानता ला देता है। अनुवादक उसी की भांति मूल की आत्मा को पकड़ता है।

१६ वीं सदी में भी अनुवाद तो होते ही रहे किंतु, कुछ लोग यह भी कहने लगे, कि, अनुवाद करने योग्य' का 'अनुवाद नहीं किया जा सकता (Nothing worth translating can be translated)। इस सदी में अनुवाद में कुछ लोगों ने तकनीकी सटीकता (Technical Accuracy) पर बहुत बल दिया। अरेबियन नाइट्स के इस प्रकार के कुछ अनुवाद हुए भी हैं, जो तकनीकी दृष्टि से बहुत अच्छे हैं, किंतु उनमें पूर्वी संस्पर्श (eastern touch) बिल्कुल नहीं हैं जो वस्तुतः अनिवार्यतः आवश्यक है।

प्रसिद्ध आलोचक और कवि मैथ्यू आनल्ड (Mathew Arnold १८२२-१८८८) भी अनुवादक तथा अनुवाद चिंतक थे। उन्होंने होमर के कुछ अंशों को अंग्रेजी षटपदी में रूपान्तरित करने का प्रयास किया, तथा १८६०-६१ में 'आन ट्रान्सलेटिंग होमर' नामक चार भाषण दिए जिसमें १६ वीं सदी से उस समय तक अंग्रेजी में हुए अनुवादों का मूल्यांकन भी था। फ्रांसिस न्यूमैन का होमर का अंग्रेजी में अनुवाद कुछ ही समय पूर्व प्रकाशित हुआ था। न्यूमन की मान्यता यह थी कि अनुवाद को मूलनिष्ठ होना चाहिए उसमें मूल रचना की सभी विशेषताओं को आ जाना चाहिए। इसके लिए उसने होमर की शब्दावली को भी अपने अनुवाद में प्रयुक्त किया यद्यपि वह तत्कालीन अंग्रेजी के लिए बहुत पुरानी थी। आनल्ड यद्यपि स्वयं मूलनिष्ठ अनुवादक था, किंतु उसने इस अत्यधिक मूलनिष्ठता की कटु आलोचना की जिसका उत्तर देने के लिए न्यूमन ने होमरिक ट्रांसलेशन इन थ्यूरी एंड प्रैक्टिस—ए रिपलाई टू मैथ्यू आनल्ड नाम की एक पुस्तिका प्रकाशित की। आनल्ड के अनुवाद विषयक मुख्य सिद्धांत ये हैं (१) अनुवाद का मुख्य गुण मूलनिष्ठता है किंतु उसे न तो अत्यधिक मूलनिष्ठ होना चाहिए न अत्यधिक मूलमुक्त। (२) अनुवाद ऐसा होना चाहिए कि उसे सुन या पढ़कर वही प्रभाव पड़े जो मूल के श्रोताओं या पाठकों पर पड़ता रहा हो।[१] किंतु वह यह भी मानता था यह प्रभाव सामान्य व्यक्तियों के आधार पर नहीं नापा जा सकता। इसके लिए उपयुक्त व्यक्तियों को कसौटी मानना चाहिए। (३) अनुवादक को मूल रचनाकार से तादात्म्य स्थापित कर उसके भाव तथा शैली विषयक मूल विशेषताओं को आत्मसात करके

---

१ A translation should affect us in the same way as the original may be supposed to have [illegible] its [illegible] hearers

ही कुछ अंश ऐसे थे जो मूलत उस मूल भाषा में रचे गए थे जो इन दोनों भाषाओं की जननी थी और आज जो रूप इन दोनों में उपलब्ध हैं वे कदाचित् जननी भाषा से उन पुत्री भाषाओं में सहज परिवर्तन के कारण हुए (किए गए नहीं) रूपांतर हैं। (ख) कुछ वर्णित ग्रंथों या अंशों के लौकिक संस्कृत में भी इस प्रकार के अनुवाद किए गए। ऐसे अनेक अंश मिल जाते हैं जो दोनों में भावत तथा कभी कभी शब्दत भी समान हैं। (ग) संस्कृत के नाटकों में स्त्रियों सेवक सेविकाओं विदूषकों तथा अभिनेता आदि के द्वारा विभिन्न प्राकृतों का प्रयोग हुआ है। उदाहरण के लिए अश्वघोष के नाटकों (मागधी शौरसेनी अर्धमागधी) भास के नाटकों (शौरसेनी मागधी), मृच्छकटिक (शौरसेनी अवन्ती मागधी चाण्डाली) कालिदास के नाटकों (शौरसेनी महाराष्ट्री मागधी) श्रीहर्ष के नाटकों (महाराष्ट्री शौरसेनी) तथा मुद्राराक्षस (शौरसेनी महाराष्ट्री मागधी) आदि में ऊपर संकेतित प्राकृतों का प्रयोग हुआ है। इन सभी में प्राकृत अंशों की संस्कृत छाया भी है। ये छायाएं भी विभिन्न प्राकृतों से संस्कृत में एक प्रकार के अनुवाद ही हैं। (घ) गुणाढ्य की वड्डकहा (बृहत्कथा) मूलत पैशाची में लिखी गई थी। संस्कृत में कदाचित् इसके छोटे-बड़े कई अनुवाद हुए जिनमें तीन आज भी उपलब्ध हैं (१) बुद्ध स्वामी का 'बृहत्कथाश्लोकसंग्रह (२) क्षेमेन्द्र की बृहत्कथामंजरी तथा (३) सोमदेव का कथासरित्सागर। (ङ) गुप्त साम्राज्यकाल के पूर्व प्राकृतों का विशेष प्रचार था किंतु इस काल में संस्कृत का प्रभाव बढ़ा और संस्कृत में उच्चकोटि की रचनाएं हुई। उत्तराध्ययन की टीकाओं में उल्लिखित प्राकृत कथाओं का लक्ष्मी वल्लभ ने संस्कृत रूपांतर किया। इस आधार पर इस संभावना को अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि प्राकृत साहित्य के कुछ अन्य श्रेष्ठ अंशों को भी संस्कृत में लाया गया होगा। प्राकृत जैन धर्म विषयक अनेक ग्रंथों जैसे पंचसंग्रह विंसतिविंसिका कम्मपयडि पंचास्तिकाय समराइच्चकहा आदि के भी संस्कृत में अनुवाद या छायानुवाद हुए हैं। (च) शृंगाररस के छंदों का महाराष्ट्री प्राकृत का प्रसिद्ध संग्रह गाहाकोस (गाथाकोष—जिसे प्राय गाहासत्तसई या गाथासप्तशती कहते हैं) संस्कृत के कवियों के लिए भी एक लोकप्रिय रहा है। इसके संग्रहकर्ता सातवाहन कहे जाते हैं। संस्कृत के आर्यासप्तशती तथा अमरुशतक एवं हिंदी के बिहारी आदि के कई छंद इसके छंदों के पूर्णत या अंशत अनुवाद या छायानुवाद हैं।

आधुनिक काल में संस्कृत में काफी अनुवाद हुए हैं जो हिंदी, अंग्रेजी, फ़ारसी, जर्मन, कन्नड, मराठी, गुजराती, तमिल आदि अनेक भाषाओं से

किए गए हैं, जिनमें कुछ मुख्य शेक्सपियर के हैमलेट, टेम्पस्ट, गेटे का फॉस्ट, रवीन्द्रनाथ ठाकुर का कालेर यात्रा, उमर खैयाम की रुबाइयाँ, बिहारी सतसई, रसिकप्रिया आदि हैं। बाइबिल के भी लगभग बीस संस्कृत अनुवाद हो चुके हैं।

जहाँ तक संस्कृत से अनुवाद का प्रश्न है ग्रीक, अरबी, फारसी, अंग्रेजी, जर्मन, फ्रांसीसी, रूसी, इतालवी, तिब्बती, चीनी, बर्मी, जापानी, प्राकृत, हिंदी, मराठी, बंगला आदि कई सौ भाषाओं में संस्कृत वाङ्मय के अनेकानेक ग्रंथ रत्नों के अनुवाद हुए हैं। संस्कृत का पचतंत्र बाइबिल के बाद विश्व का वह प्राचीनतम ग्रंथ है, जिसके बहुत पहले विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुके हैं।

पालि

भारतीय पालि साहित्य में अनुवाद ग्रंथ प्राय नहीं मिलते। भारतीय पालि में अनुवाद के नाम पर अधिक से अधिक यह कहा जा सकता है कि अशोक के शिलालेखों पर प्राप्त सामग्री मूलत कदाचित् परिनिष्ठित पालि में लिखी गई होगी और फिर स्थानीय बोलियों में उनका अनुवाद करके उन्हें शिलाकित किया गया होगा। हाँ बरमा की पालि में मनुस्मृति आदि कुछ संस्कृत ग्रंथ ग्रंथों के अवश्य अनुवाद हुए। जहाँ तक पालि से अन्य भाषाओं में अनुवाद का प्रश्न है, प्राचीन काल में चीनी में पालि धम्मपद का मुक्तानुवाद हुआ था। तिब्बती जापानी आदि में अनुवादों के होने की संभावनाएँ तो हैं, किंतु इस प्रकार का कोई प्रमाण अभी तक मिला नहीं है। पहली सदी से तिब्बत तथा चीन में भारतीय ग्रंथों के अनुवादों की परंपरा चली। प्राय लोग यह सोचते हैं कि उस परंपरा में पालि ग्रंथों के अनुवाद भी हुए किंतु अभी तक जो ग्रंथ मिले हैं वे प्राय सारे-के सारे बौद्ध संस्कृत ग्रंथों के अनुवाद हैं न कि पालि ग्रंथों के। हाँ आधुनिक काल में हिंदी अंग्रेजी सिंहली बरमी तिब्बती चीनी जापानी आदि अनेक भाषाओं में पालि ग्रंथों के अनुवाद हुए हैं।

प्राकृत अपभ्रंश

प्राकृत अपभ्रंश में पूरी की पूरी कोई अनूदित रचना तो कदाचित् नहीं मिलती किंतु संस्कृत के वाल्मीकि रामायण, मेघदूत, अभिज्ञान शाकुंतल आदि अनेक रचनाओं की कुछ पंक्तियों या अंशों के छायानुवाद महावीर चरिउ पउमचरिउ भविसयत्तकहा सुदसण चरिउ आदि प्राकृत अपभ्रंश की कृतियों में मिल जाते हैं। कुछ जैनाचार्यों ने संस्कृत में कुछ प्रबंध काव्य लिखे थे।

अन्य जैनाचार्यों ने प्राकृत में भी इसी प्रकार की रचनाएँ कीं। उनमें भी यत्र तत्र छायानुवादित पंक्तियाँ मिलती हैं। प्राकृत रचनाओं का भी इस प्रकार कुछ प्रभाव अपभ्रंश रचनाओं पर मिलता है। अपभ्रंश की सिद्ध रचनाओं पर इस प्रकार का कुछ पालि प्रभाव भी है। प्राकृत अपभ्रंश की कई रचनाओं के पूर्ण या अपूर्ण अनुवाद जर्मन, अंग्रेजी, इतालवी, गुजराती तथा हिंदी आदि में हुए हैं। अपभ्रंश के सिद्ध साहित्य का तिब्बती अनुवाद भी हुआ था, जिसे राहुल जी ने खोज निकाला था।

अपभ्रंश की कुछ रचनाओं की कुछ पंक्तियों के अनुवाद या छायानुवाद हिंदी की कुछ पुरानी रचनाओं में भी मिल जाते हैं। उदाहरण के लिए कबीर आदि में सिद्ध साहित्य की अनेक पंक्तियाँ कुछ शाब्दिक परिवर्तनों के साथ मिलती हैं। पाहुड दोहा में आता है—मंडिय मुंडिम मुंडिया सिर मुंडिय चित्त ण मुंडिया। कबीर कहते हैं—

दाढ़ी मूंछ मुंडाय के हुआ घोटम घोट।
मन को काहे न मूंडिया ...।

कबीर का प्रसिद्ध छंद है—

पढ़ते पढ़ते जग मुआ पंडित भया न कोय।
एकहि आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय॥

पाहुड दोहा में भी आता है—

बहुयइ पढियइ मूढ पर तालू सुक्कइ जेण।
एक्कु जि अक्खरु त पढ ...।

रामचरित मानस की भी अनेक पंक्तियाँ स्वयंभू के पउम चरिउ की पंक्तियों पर आधृत हैं।

हेमचंद्र में एक दोहा उद्धृत है—

बाह विछोडवि जाहि तुहुं हउं तेवइं को दोसु।
हिअयट्ठिय जइ नीसरहि जाणउं मुंज स रोसु।

सूर भी कहते हैं—

बाँह छोड़ाए जात हो निबल जानि के मोहिं।
हिरदै ते जब जाहुगे सबल जानगो तोहिं।

हिंदी

हिंदी में अन्य अनेक भाषाओं की भाँति ही अनुवाद मुख्य रूप से दो रूपों में मिलता है। एक तो व्यवस्थित रूप से किसी कृति के अनुवाद रूप में, और

दूसरे विभिन्न लेखकों (मुख्यत कवियों) की रचनाओं में यत्र तत्र दूसरे के कृति अंश या छाया के छायानुवाद या प्रभाव रूप में। दूसरा अपेक्षाकृत कम महत्त्व पूर्ण है अत पहले उसे ही लिया जा रहा है।

कवि या लेखक प्राय बहुपठित या बहुश्रुत होता है अत उसके अनेक अंश प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से देश विदेश की भाषाओं की पूर्व प्रकाशित कृतियों उनके अंशों से प्रभावित होते हैं। यह प्रभाव कभी कभी तो अनुवाद रूप में प्राप्त मिलता है और कभी कभी मात्र छाया रूप में। छोटे मोटे साहित्यकारों की कौन कहे बड़ों बड़ों में भी यह बात न्यूनाधिक रूप में खोजी जा सकती है। यहाँ केवल बानगी के लिए हिंदी के चार दिग्गजों—विद्यापति, सूर, तुलसी, बिहारी—से कुछ नमूने दिए जा रहे हैं।

विद्यापति—भागवतकार, कालिदास, भारवि, माघ, श्रीहर्ष, अमरुक, मम्मट तथा जयदेव आदि अनेक कवियों के विविध भावों के समान भाव विद्यापति में मिलते हैं। अनेक पदों में यह भाव साम्य अनुवाद या छायानुवाद की सीमा तक पहुँच जाता दिखाई पड़ता है। दो उदाहरण पर्याप्त होंगे—

शृंगारतिलक—तव मुखमकलङ्क वीक्ष्य नून स राहु।
ग्रसति तव मुखेन्दु पूर्णचन्द्र विहाय।

विद्यापति—लोलुभ वदन सिरी धनि तोरि
जनु लागिहि तोहि चाँदक चोरि।
दरसि हलहू जनु हेरहु काहु
चाँद भरम मुख गरसत राहु।

मम्मट—नीवी प्रति प्रणिहिते तु करे प्रियेण
सख्य शपामि यदि किञ्चिदपि स्मरामि।

विद्यापति—जब निबि बंध खसाओल कान,
तोहर सपथ हम किछु जदि जान।

सूर—सूर में भी अनूदित पंक्तियाँ यत्र-तत्र मिल जाती हैं। संस्कृत का एक प्रसिद्ध श्लोक है—

मूक करोति वाचाल पगु लघयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द माधवम्।

सूरदास ने इसे अपने पद में ढाला है—

चरन कमल बन्दौं हरिराइ।

जाकी कृपा पंगु गिरि लघै अंधे को सब कुछ दरसाइ।
बहिरो सुन गूंग पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराइ।
सूरदास स्वामी करुनामय बार बार बन्दौं तिहि पाइ।

संस्कृत का ही एक अन्य श्लोक है—

तत्रैव गंगा यमुना च वेणी गोदावरी सिंधु सरस्वती च।
सर्वाणि तीर्थानि वसन्ति तत्र यत्राच्युतोदारकथाप्रसंग॥

सूरदास कहते हैं—

हरि की कथा होइ जब जहाँ, गंगा हू चलि आवै तहाँ।
जमुना सिंधु सुरसरी आव गोदावरी विलम्ब न लाव।
सब तीरथ को बासा तहाँ 'सूर' हरिकथा होवै जहाँ।

तुलसी—'नाना पुराण निगमागम' का आभार स्वीकार करने वाले तुलसी में वाल्मीकि रामायण, आनन्द रामायण, अगस्त्य रामायण, अध्यात्म रामायण, भागवत, गीता, शिव पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, वामन पुराण, प्रसन्न राघव, हनुमन्नाटक, पद्म चरित्र आदि अनेक रचनाओं की कुछ पंक्तियों या कभी कभी पूरे पूरे छन्दों के अनुवाद (कभी छायानुवाद, कभी भावानुवाद और कभी कभी शब्दानुवाद) मिलते हैं। कुछ उदाहरण हैं

(१) सज्जनस्य हृदयं नवनीतं
यद्वदन्ति कवयस्तदलीकम्।—सुभाषित रत्न भाण्डागार
संत हृदय नवनीत समाना।
कहा कविन्ह पै कहइ न जाना।—तुलसी, मानस

(२) मित्रस्य दुःखेन जना दुःखिता नो भवन्ति ये
तेषां दर्शनमात्रेण पातकं बहुलं भवेत्। —गालव संहिता
जे न मित्र दुख होहिं दुखारी।
तिन्हहिं बिलोकत पातक भारी। —तुलसी, मानस

(३) यो जनः स्वच्छहृदयः स मां प्राप्नोति नापरः।
मह्यं कपटं दम्भानि न रोचन्ते कपीश्वर।
निरमल मन जन सो मोहि पावा।
मोहि कपट छल छिद्र न भावा। —तुलसी, मानस

(४) ऊपर सूर के प्रसंग में संस्कृत का 'मूकं करोति ......' श्लोक उद्धृत है। तुलसी मानस में लिखते हैं—
मूक होइ बाचाल, पंगु चढ़इ गिरिवर गहन।

जासु कृपा सो दयाल, द्रवौ सकल कलिमल दहन ।

बिहारी—बिहारी पर अमरुक आर्यासप्तशती गाहा सत्तसई तथा वज्जालग्ग का प्रभाव सर्वविदित है। यह प्रभाव मुख्यत भाव संकेत या कभी कभी छाया रूप मे है, किंतु उनकी कुछ पंक्तियां ऐसी भी हैं जिन्हे किसी न किसी प्रकार का अनुवाद मानना ही पड़ेगा। वज्जालग्ग का एक छन्द है—

कल्ल किर खरहियओ पवसिहिइ पिओत्ति सुव्वइ जणम्मि ।
तह वड्ढ भयवइनिसे जह से कल्लं चिय न होइ ।

अर्थात् सुनती हूँ वह क्रूर कल परदेश जाएगा। हे भगवती रात्रि तू बड़ी हो जा जिससे कल कभी हो ही नही।

बिहारी कहते हैं—

सजन सकारे जायँगे नैन मरेंगे रोय ।
या विधि ऐसी कीजिए फजर कबहुँ ना होय ।

दूसरी पंक्ति का उत्तरार्ध ध्यान देने योग्य है।

प्राकृत के प्रसिद्ध संग्रह ग्रंथ गाहासत्तसई की एक गाहा है—

फुरिए वामच्छि तुए जइ एहिइ सो पिओ ज्ज ता सुइरम् ।
समीलिअ दाहिणअं तुइ अवि एह पलोइस्सम् ।

अर्थात् ए बाई आँख, तेरे फरकने पर (परदेश गया हुआ) मेरा प्रिय यदि आज आ जाएगा तो मैं अपनी दाहिनी आँख मूंदकर उसे तुमसे ही देखूंगी। बिहारी इसी कवि के उपयुक्त परिवर्तन के साथ कहते हैं—

बाम बाहु फरकत मिलै जो हरि जीवनमूरि ।
तौ तोही सौं भेंटिहौं राखि दाहिनी दूरि ।

अन्य कवियों मे भी इस प्रकार के अंश खोजे जा सकते हैं।

हिन्दी काव्यशास्त्रियों ने कुछ अपवादों को छोड़कर संस्कृत के काव्यशास्त्रियों का ही प्राय अनुवाद (भावानुवाद या छायानुवाद, कभी-कभी शब्दानुवाद भी) अपने ग्रंथों मे किया है। इसलिए उनमे मौलिकता प्राय नहीं के बराबर है। संस्कृत के जिन काव्यशास्त्रीय ग्रंथों का हिंदी म सर्वाधिक अनुवाद हुआ है वे हैं भानुमिश्र की रसमंजरी, मम्मट का काव्यप्रकाश विश्वनाथ का साहित्यदर्पण और अप्पय्य दीक्षित का कुवलयानंद। उदाहरण के लिए भिखारीदास के काव्यनिर्णय, तथा सोमनाथ के रसपीयूषनिधि के नायकनायिका भेद निरूपण वाले अंश भानुमिश्र के रसमंजरी के सम्बद्ध अंशों के भावानुवाद हैं। दूलह आदि के अलंकार वाले अंश चंद्रालोक (जयदेव) तथा कुवलयानंद (अप्पय्य दीक्षित) पर आधृत हैं। कुलपतिमिश्र के

रस रहस्य तथा रसारामणि ने संस्कृत काव्यशास्त्र के विविध काव्यांग निरूपण वाले ग्रन्थ काव्यप्रकाश (मम्मट) तथा साहित्यदर्पण (विश्वनाथ) की छाया है। कभी कभी इन अनुवादक काव्यशास्त्रियों ने बड़ी मनोरंजक भूलें की हैं। उदाहरण के लिए मम्मट ने काव्यप्रकाश (सप्तम उल्लास तेरहवाँ रस दोष) में कहा है अनंगस्याभिधानम् अर्थात् अंग का अधिक अभिधान (आख्यान) नहीं होना चाहिए अन्यथा रस दोष हो जाता है। कुलपति इसका अनुवाद करते समय अनु या स्वत अत नहीं अब नहीं समझ पाए और उसे अंग' से साथ जोड़कर अनंग अर्थात् कामदेव समझ लिया। परिणामत उन्होंने मान लिया—अनंग (कामदेव) का अभिधान (आख्यान) करना रसदोष है। इस भूल की पुष्टि उनके द्वारा लिखित निम्नोक्त उदाहरण और उसकी वृत्ति से हो जाती है—

लगी इक भेंट भई तब ही वें उर माझ
वाही भाँति काम के नगारे की धमक है।

वृत्ति—यहाँ पर काम का सताना व्यग्य रखना चाहिए। (रस रहस्य ५—१३७)

वस्तुत अनंगस्य अभिधान दोष का मम्मट प्रस्तुत उदाहरण है 'जसे कपूरमजरी नाटक म राजा ने नायिका द्वारा और स्वय अपने द्वारा किए गए वसत वर्णन का अनादर करके बदी जन द्वारा वर्णित वसत वर्णन की प्रशसा की है।'

हिन्दी मे ग्रन्थों आदि के व्यवस्थित अनुवादों की परम्परा १६वी सदी से मिलने लगती है। १६वी सदी से १८वी सदी के मध्य तक मुख्यत धर्म (हिंदू, जैन बौद्ध, मुसलमान) वद्यक ज्योतिष कोश, साहित्य, कोकशास्त्र व्याकरण तथा नीति स सम्बद्ध ग्रन्थो (मुख्यत सस्कृत से कुछ अरबी फारसी से भी) के अनुवाद हुए। इनम अनेक तो पाडुलिपि के रूप म विभिन्न ग्रन्थागारो म पड़े हैं और कुछ प्रकाशित भी हैं। गीता, महाभारत भागवत पुराण, सत्य नारायण कथा, पचतत्र हितोपदेश, नीतिग्रन्थ वद्यक ज्योतिष ने कुछ मुख्य प्राचीन अनुवादों की सूची यहाँ दी जा रही हैं। रचनाकाल या पाडुलिपि काल (जहाँ सकेतित है) साथ म दिया गया है।

गीता—गीता के काफी अनुवाद हिन्दी म हुए हैं जिनमें कुछ सामान्य अनुवाद है तो कुछ छायानुवाद, कुछ शब्दानुवाद, कुछ सक्षिप्तानुवाद और कुछ व्याख्यानुवाद। ये पद्य और गद्य दोनों म हैं। इनमे गीता प्रेस का अनुवाद आज सर्वाधिक लोकप्रिय है। गीता के हिंदी म कुछ प्राचीन अप्रकाशित अनुवाद हैं

गीता—हरिवल्लभ १६४४ ई०। गीता वार्तिक (गद्यानुवाद)—भगवानदास, १६६६ ई०। गीता भाषा टीका (दोहा में अनुवाद तथा गद्य में टीका)—आनंदराम, १७०४ ई०। भाषा गीता ज्ञान—हरिवल्लभ, १७१४ ई०। भगवद् गीता—काशी गिरि, १७३४ ई०। भगवद् गीता भाषा टीका (पद्य में)—मलूक दास लाहौरी, १७५१ ई०। भगवद्गीता टीका—मन्नू मिश्र १८०० ई०। भगवद्गीता माला—जुगुलानंद १८०२ ई०। गीता भाषा (गद्यानुवाद)—प्रभुशास्त्री १८५० ई०। भगवद् गीता (गद्यानुवाद)—बद्रीलाल पाडुलिपि काल १८६० ई०। भगवद् गीता भाषा—कृष्ण मणि १८६८ ई०। अष्टावक्र गीता के भी कुछ अनुवाद हुए हैं। एक पद्य अनुवाद १८३६ में प्रखंडानंद ने किया था।

महाभारत—इस के हिंदी में भी कई अंशानुवाद और पूर्णानुवाद हुए हैं। कुछ पुराने अनुवाद हैं महाभारत—दवीदास १६६३ ई०। विजय मुक्तावली (अंशानुवाद)—छत्र कवि, १७०० ई०। संग्राम सार (द्रोण पर्व का पद्यानुवाद)—कुलपति मिश्र, पाडुलिपिकाल १७२७ ई०। वन पर्व (पद्यानुवाद)—गोकुलनाथ १८ वीं सदी का अंतिम चरण।

भागवत—भक्तों के इस परमप्रिय ग्रंथ के पुरानी हिंदी में सर्वाधिक अनुवाद मिलते हैं। उदाहरणार्थ भागवत दशम स्कंध भाषा—नंददास १५६० ई०। भागवत (१० वाँ स्कंध पूर्वार्द्ध)—गोपीनाथ १५८२ ई०। भागवत (११ वाँ स्कंध)—चतुरदास, १५६५ ई०। भक्ति वत्सलता (भागवत का संक्षिप्तानुवाद)—पदुमन १६८२ ई०। भाषा भागवत (११ वाँ स्कंध)—कृपाराम १७१५ ई०। भागवत एकादश स्कंध (पद्यानुवाद)—बालकृष्ण, १७४७ ई०। भागवत (पूरा)—रसजानि १७५० ई०। भागवत दशम स्कंध—भीष्म, पाडुलिपि काल १८१६ ई०। भागवत दशम स्कंध (ब्रजभाषा में पद्यानुवाद)—भूपति, पाडुलिपि काल १८२० ई०। भागवत (प्रथम अध्याय)—भीष्म पाडुलिपि काल १८४३ ई०। गोकरण महात्म्य (भागवत के ६ अध्यायों का अनुवाद)—मक्खनलाल १८४६ ई०। भागवत (गद्यानुवाद)—प्रगद शास्त्री १८५० ई०। मानंद लहरी (१० वाँ स्कंध दोहा में)—रतन, १८५४ ई०।

पुराण—कई पुराणों के हिंदी अनुवाद मिलते हैं। उदाहरणार्थ विष्णु पुराण—सरन राज, १२८० ई०। जैमिनी पुराण—परम दास १५८२ ई०। जैमिनी अश्वमेध (दोहा चौपाई में मुक्तानुवाद)—भगवान दास निर-

जनी १६६८ ई०। शिवसागर (ब्रह्मवैवर्त पुराण का मुक्तानुवाद)—लेन सिंह १७०० ई०। विष्णु पुराण—भिखारी १७४० ई०। लिंग पुराण भाषा—दुर्गा प्रसाद १८७४ ई०।

सत्यनारायण कथा—इसके हिंदी में अनेक गद्यानुवाद तथा पद्यानुवाद हो चुके हैं। इनमें से कई प्रकाशित भी हैं। कुछ अनुवाद हैं सत्यनारायण कथा—गंगाधर शास्त्री १७६७ ई०। सत्यनारायण कथा (दोहा में)—ईश्वर नाथ १८०० के लगभग। सत्यनारायण व्रत कथा टीका—वासुदेव सनाढ्य १८४२ ई०। सत्यनारायण कथा (पद्यानुवाद)—राम प्रसाद गूजर, पांडुलिपि काल १८५१ ई०। सत्यनारायण व्रत कथा—गणेशदत्त पांडुलिपि-काल १८८३ ई०।

पंचतंत्र—इसके हिंदी में अनेक अनुवाद हुए हैं। कुछ हैं पंचतंत्र—देवी लाल १६६० ई०। पंचतंत्र भाषा टीका—अमर सिंह १७०३ ई०। पंचतंत्र उल्था—कृष्ण भट्ट १७७५ ई०। पंचतंत्र भाषा—पोल्हावन १८०० ई०।

हितोपदेश—यह हिंदी प्रदेश का बहुत लोकप्रिय ग्रंथ रहा है। इसके भी कई पद्य तथा गद्य अनुवाद हुए हैं। कुछ पुराने अनुवाद हैं हितोपदेश—पदुमन दास १६८१ ई०। मित्रमनोहर (पद्यानुवाद)—बंशीधर १७१७ ई०। हितोपदेश कथा (पद्यानुवाद)—जय सिंह दास १७२५ ई०। राजनीति (पद्यानुवाद)—छविनाथ १७६७ ई०। राजनीति (मित्रलाभ)—लल्लूलाल कवि १८१२ ई० (यह गद्यानुवाद है)।

अन्य नीति ग्रन्थ—भर्तृहरि चाणक्य नारद विदुर आदि के नीति ग्रन्थों के अनेक अनुवाद हिंदी में हुए हैं। कुछ हैं नारद नीति (सभापर्व के एक अध्याय का हिंदी रूपांतर, गद्य में)—देवीदास व्यास १६४३ ई०। चाणक्य नीति (पद्यानुवाद)—भवानी दास १६८० ई०। विदुर नीति (उद्योग पर्व का पद्यानुवाद)—गोपाल १६६० ई०। राजनीति भाषा (चाणक्य नीति का पद्यानुवाद)—कीर्ति सेन, १७८० ई०। भर्तृहरि शतक—नन्द चन्द १८७२ ई०। चाणक्य नीति दर्पण (दोहा)—श्री लाल १८७३ ई०।

वैद्यक—वैद्यक के ग्रंथों के भी अनेक हिंदी अनुवाद (गद्य में पद्य में अविकल, संक्षिप्त मुक्त) हुए हैं। इनमें सर्वाधिक मुक्तानुवाद हैं जिनमें कुछ में परिवर्तन परिवर्धन भी यत्र तत्र हैं। ये अनुवाद प्रायः संस्कृत से हैं किन्तु कुछ अरबी और फ़ारसी से भी हैं। इनमें कुछ गजशास्त्र और शालिहोत्र के भी हैं। कुछ पुराने अनुवाद हैं द्रव्य संग्रह भाषा—पुरुषोत्तम १६२७ ई०।

गज शास्त्र—चेत सिंह, १६८० ई०। माधव निदान भाषा—भगवान, १६६० ई०। भजन निदान (पद्य-पद्य, इसी नाम के संस्कृत ग्रंथ का अनुवाद)—पानन्द मिह्र १७०० ई०। औषधि संग्रह (बग सेन, मारगधर, उडडीस के आधार पर मुक्तानुवाद)—बाबू राम पाडे १७४५ ई०। शालिहोत्र (ब्रजभाषा गद्य में अनुवाद)—रिपिसुर १८०६ ई०। वैद्यक विनोद (फारसी से अनुवाद)—दरियाव सिंह १८३३ ई०। मामूल ति जा (मूल ग्रंथ फारसी में है। साथ में हिन्दी अनुवाद भी)—मूल लेखक टीपू सुलतान, अनुवादक अज्ञात लिपिकार पूर्ण वल्लभ मिश्र, पाडुलिपिकाल १८५० ई०। यूनानी सार—शेख मुहम्मद १८७५ ई०। तिब्ब रत्नाकर—ठाकुर प्रसाद १८८० ई०। निघण्टु भाषा (पद्य में)—मदनपाल १८८० ई०।

ज्योतिष—संस्कृत के ज्योतिष के ग्रंथों के भी हिन्दी में काफी अनुवाद हुए हैं। ये अनुवाद प्रायः मुक्तानुवाद कहे जा सकते हैं। कुछ के नाम हैं—स्तोत्य भाषा टीका—लालचन्द १६६६ ई०। ताजिक सार भाषा—छाजू राम द्विवेदी, १७३५ ई०। शीघ्रबोध टीका—गुलाबदास, १७४५ ई०। लघु जातक—भवराम, १७५५ ई०। मुहूर्त दर्पण (पद्यानुवाद)—चन्द्रमणि १७-५५ ई०। रमल शकुन विचार—फते, १८वी सदी। मुहूर्त सचय—वासुदेव सनाढ्य १८४२ ई०। रमल नवरत्न दर्पण भाषा टीका—दत्तराम, १८५५ ई०। लघु जातक—टीका राम, १८६० ई०। रमल विचार—गोविंद पाडु लिपि काल १८७६ ई०।

कुछ अन्य—उलया करीमा की नीति प्रकाश—बन्देन कवि समय अज्ञात। अमरु शतक भाषा—पुरुषोत्तम, १६७३ ई०। प्रश्न भाषा गीत गोविन्द (गद्य में)—भगवान १७०० ई०। अध्यात्म रामायण—माधोदास १७३१ ई०। अमर तिलक (अमर कोश)—भिखारीदास १७४० ई०। योग वाशिष्ठ भाषा—छज्जू १७८० ई०। रत्नपरीक्षा—राम चन्द्र १७६० ई०। याज्ञवल्क्य स्मृति भाषा—गुरुप्रसाद, १८०० ई०। मनुधर्म सार (मनुस्मृति)—शिव प्रसाद १८५० ई०। दुर्गापाठ भाषा—मनन्द, १८५० ई०। प्रताक (प्रज्ञा पर)—महेश दत्त समय अज्ञात। एकादशी महात्म्य टीका—वासुदेव, १८४२ ई०। वैराग्य शतक (राजस्थानी में)—गुणचन्द १८७० ई०।

१६वीं सदी के उत्तरार्ध से हिन्दी में अनुवाद की और भी समृद्ध परम्परा का शुभारम्भ हो गया जिसकी समृद्धि दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। यहाँ विषयानुसार कुछ परिचयात्मक विवरण दिया जा रहा है।

नाटक—हिन्दी में मुख्य रूप से संस्कृत, अंग्रेज़ी, बंगला तथा मराठी के नाटकों के अनुवाद हुए हैं। संस्कृत से किए गए अनुवादों में कदाचित् पहला प्रबोध चन्द्रोदय का मल्ह कविकृत मिश्रित हिन्दी अनुवाद (१५४४ ई०) है। तदनंतर प्रबोधचन्द्रोदय, हनुमन्नाटक, मुद्राराक्षस, मालती माधव, शकुन्तला, उत्तररामचरित, रत्नावली, कर्पूरमंजरी, कुन्दमाला, मृच्छकटिक आदि के सैकड़ों अनुवाद हुए हैं। इस क्षेत्र के कुछ प्रमुख अनुवादक हैं राजा लक्ष्मण सिंह (शकुन्तला नाटक १८६३), भारतेन्दु (रत्नावली १८६८, मुद्राराक्षस १८७४ आदि) सीताराम 'भूप' (नागानन्द १८९७, उत्तररामचरित १८९७, मृच्छकटिक १८९९ आदि) सत्यनारायण कविरत्न (उत्तररामचरित १९१३, मालती माधव १९१७) तथा रांगेय राघव (मृच्छकटिक १९५०, मुद्राराक्षस १९५१) आदि। अंग्रेज़ी से जिन नाटकों के हिन्दी अनुवाद हुए हैं उनमें शेक्सपियर के मुख्य हैं। आरम्भ में पारसी थियेटर कम्पनियों ने शेक्सपियर के कई नाटकों का भारतीयकरण करके परिवर्तन के साथ मुक्तानुवाद किए। जैसे 'मर्चेंट आफ वेनिस' का 'दिलफरोश', 'कामेडी आफ एरर्स' का 'भूल भुलैया' और 'गोरखधंधा' तथा 'किंग लियर' का 'हारजीत' आदि। ये अनुवाद बहुत ही खराब थे। अनुवादकों ने व्यावसायिक दृष्टि से अपने अनुवादों को कुरुचिपूर्ण ढंग से सामान्य जनता के लिए आकर्षक बनाने का यत्न किया था, अनुवादक के धर्म का निर्वाह नहीं किया था। हिन्दी में शेक्सपियर के उल्लेख्य अनुवादकों में भारतेन्दु (मर्चेंट आफ वेनिस का 'दुर्लभ बन्धु' या 'वंशपुर का महाजन' १८८०। इसमें भी भारतीयकरण है, अंटोनियो के स्थान पर अनन्त, पोर्शिया का पुरश्री आदि) लाला सीताराम (शेक्सपियर के प्रायः सभी नाटकों का अनुवाद किया, ये भी मुक्तानुवाद हैं तथा इनमें भी भारतीयकरण है। 'किंग लियर' का 'राजा लियर' १९१४ 'मेज़र फार मेज़र' का 'बगुला भगत' १९२२ आदि) प्रेमचन्द (गाल्सवर्दी के तीन नाटकों (जस्टिस-न्याय, स्ट्राइक-हड़ताल, द सिलवर बाक्स-चाँदी की डिबिया) का) रांगेय राघव (अधिकांश का किया है, भावानुवाद है 'एज़ यू लाइक इट' का 'जैसा तुम चाहो' १९५७, 'कमेडी आफ़ एरर्स' का 'भूल भुलैया' १८५८ हेमलेट १८५७, आदि), बच्चन (काफ़ी का किया है अच्छा है, मकबेथ १९५७ ओथेलो १९५९ आदि) आदि हैं। गोल्डस्मिथ तथा शा आदि के नाटकों के भी अनुवाद हुए हैं। नार्वे के प्रसिद्ध नाटककार इब्सन, रूसी साहित्यकार तालस्ताय, बेलजियम नाटककार मेटरलिंक, जर्मन नाटककार शिलर, तथा फ्रांसीसी नाटककार मोलियर (जी० पी०

श्रीवास्तव ने इनके ६७ नाटकों के अनुवाद किए हैं) के नाटकों के भी हिंदी अनुवाद हुए हैं। इनमें से कुछ के सीधे मूल भाषाओं से भी हुए हैं। जैसे डा० लक्ष्मणस्वरूप ने मूल फ्रेंच से मालियर के लो बार्जिस गतील हाम्मे का 'बनिया बना नवाब की चाल' नाम से किया है। मराठी (पराजपे, खाडिलकर, तेंडुलकर मामा वरेरकर आदि), बंगला (द्विजेन्द्रनाथ राय रवीन्द्रनाथ ठाकुर, बादल सरकार आदि) आदि अन्य भी अनेक भाषाओं के नाटकों के अनुवाद हुए हैं।

काव्य—संस्कृत के प्राय अधिकांश काव्य ग्रंथों के अनुवाद हिंदी में हो चुके हैं। अंग्रेजी से भी काफ़ी अनुवाद हुए हैं। मुख्यत शेक्सपियर मिल्टन, पोप, सैमुअल जान्सन, गोल्डस्मिथ विलियम कूपर टामस ग्रे वर्डसवर्थ बायरन शेले कीट्स, टेनीसन लागफेलो विटमैन आदि की कविताओं के। अंग्रेजी से काव्यानुवाद करने वाले अच्छे अनुवादकों में श्रीधर पाठक (हरमिट—एकान्तवासी योगी, १८८६ डिज़र्टेड विलेज—ऊजड़ ग्राम १८८९ आदि), रामचन्द्र शुक्ल (लाइट आफ एशिया बुद्ध चरित १९२२), बच्चन (मरकत द्वीप का स्वर' ईटस की कुछ कविताओं का अनुवाद १९६५, मधुशाला १९३५ भाषा अपनी भाव पराए आदि), तथा यतेन्द्र कुमार (महाकवि कीटस का काव्यलोक १९५६, महाकवि वर्डसवर्थ का काव्यलोक १९६२) आदि मुख्य हैं। बंगला (माइकेल मधुसूदन दत्त, रवीन्द्रनाथ ठाकुर आदि) मराठी (देशपांडे, मोरोपंत आदि) फारसी (सादी) आदि अन्य भाषाओं से भी काव्यानुवाद हुए हैं।

उपन्यास-कहानी—हिन्दी में सर्वाधिक अनुवाद उपन्यास और कहानियों के हुए हैं। इनमें सबसे बड़ी संख्या अंग्रेजी से अनुवादों की है। मूल अंग्रेजी रचना से अनुवाद के अतिरिक्त काफी ऐसे अनुवाद भी हुए हैं जो अंग्रेजी में भी किसी अन्य भाषा से अनुवाद हैं। कुछ थोड़े अनुवाद सीधे फ्रेंच रूसी चेक आदि से भी हुए हैं। भारतीय भाषाओं में सर्वाधिक अनुवाद बंगला (बंकिम प्रभात मुखर्जी रविबाबू शरच्चन्द्र आदि से) तथा मराठी (हरिनारायण आपटे खाडेकर आदि) से हुए हैं। बंगला से अनुवादकों में (रूपनारायण पांडेय तथा मराठी से अनुवादकों में डॉ० प्रभाकर माचवे, तथा रा० र० सरवटे मुख्य हैं।

काव्य नाटक कथा-साहित्य आदि सर्जनात्मक साहित्य के अतिरिक्त अन्य प्रकार की पुस्तकों के अनुवाद हिन्दी में अधिक नहीं हुए हैं। इस वर्ग के कुछ मुख्य अच्छे अनुवादक रामचन्द्र वर्मा (राजनीति) डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल (इतिहास) डॉ० रिज़वी (फारसी से अनेक भारतीय इतिहास के आधार ग्रंथों का

बहुत अच्छा अनुवाद किया है) महेन्द्र चतुर्वेदी (काव्यशास्त्र, राजनीति, इतिहास गणित, विज्ञान आदि के लगभग २० ग्रंथों का अनुवाद किया है) डा० मुकुंद स्वरूप वर्मा (आयुर्विज्ञान वनस्पतिविज्ञान) डा० हरसरन सिंह बिश्नोई (जीवविज्ञान), डा० जगदीशचन्द्र मूना (जीवविज्ञान) डा० कृष्णकुमार गुप्ता (जीवविज्ञान), लज्जाराम सिंहल (गणित) विश्वप्रकाश गुप्त (राजनीति) ओमप्रकाश गाबा (राजनीति) आदि हैं। विषयानुसार कुछ अच्छे हिन्दी अनुवादकों के नाम हैं गणित—हरिश्चन्द्र गुप्ता झम्मन लाल शर्मा लज्जाराम सिंहल ब्रज मोहन। अर्थशास्त्र—लक्ष्मी नारायण नाथूरामका, श्री गोपाल तिवारी दयाशंकर नाग। कृषि—गिरिधारी लाल। राजनीति—महेन्द्र चतुर्वेदी, विश्व प्रकाश गुप्त ओमप्रकाश गाबा। रसायनशास्त्र—शिव गोपाल मिश्र, विजयेन्द्र रामकृष्ण शास्त्री। भौतिकशास्त्र—निहालकरण सेठी पुरुषोत्तमलाल जैन नंदलाल सिंह। इंजिनियरिंग—प्रो० पी० कुलश्रेष्ठ रूपचंद भंडारी, प्रो० पी० जैन। जीवविज्ञान—हरसरनसिंह बिश्नोई उमाशंकर श्रीवास्तव जगदीशचंद्र मूना, कृष्णकुमार गुप्ता। भाषाविज्ञान—उदय नारायण तिवारी भोलानाथ तिवारी हेमचंद्र जोशी। वनस्पतिविज्ञान—मुकुन्द स्वरूप वर्मा। इतिहास—महेन्द्र चतुर्वेदी भारत भूषण विद्यालंकार। काव्यशास्त्र—महेन्द्र चतुर्वेदी निर्मला जैन। समाजशास्त्र—शंभूनाथ सिंह हरिश्चन्द्र उप्रेती।

हिंदी में अनुवाद कुछ तो राज्य सरकारों की ग्रंथ अकादमियों द्वारा हो रहे हैं कुछ केन्द्रीय सरकार के केन्द्रीय हिन्दी संस्थान तथा अन्य संस्थाओं द्वारा तथा कुछ अनुवाद के विशिष्ट एककों द्वारा जैसे दिल्ली विश्वविद्यालय का एकक (यहाँ प्राणिशास्त्र, गणित राजनीति काव्यशास्त्र के अनुवाद हो रहे हैं) तथा बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय का एकक (यहाँ भौतिकशास्त्र के अनुवाद हो रहे हैं)। किंतु इनके अतिरिक्त बहुत सारे अनुवाद व्यक्तिगत रूप से अनुवादकों और प्रकाशकों के सहयोग से भी प्रकाशित हो रहे हैं।

हिंदी में अनुवाद चिन्तन

यूरोप तथा अमरिका में अनुवाद के क्षेत्र में चिंतन काफी हुआ है। एशिया अन्य क्षेत्रों की भांति इस क्षेत्र में भी काफी पीछे है। भारतीय भाषाओं में हिंदी मराठी तथा बंगला में ही अनुवाद की दिशा में कुछ थोड़ा चिन्तन हुआ है।

हिन्दी में यह चिन्तन चार रूपों में मिलता है। (१) अनुवादों की भूमिका के रूप में—पुराने तथा नए अनेक अनुवादकों ने विभिन्न अनूदित ग्रंथों की भूमिकाओं में अनुवाद के विषय में अपने मत व्यक्त किए हैं। जैसे जगमोहन

सिंह, महावीर प्रसाद द्विवेदी, श्रीधर पाठक, राम चन्द्र शुक्ल तथा बच्चन आदि। (२) स्वतन्त्र लेखों के रूप में—अनुवाद से सम्बद्ध स्वतन्त्र लेख सरस्वती, नवभारत टाइम्स, हिन्दुस्तान आदि अनेक पत्र पत्रिकाओं में समय समय पर निकलते रहे हैं। 'संस्कृति' के 'जून-जुलाई १९६१' अंक में अनुवाद कला और समस्याएं' शीर्षक संगोष्ठी में अनुवाद के सम्बन्ध में राजगोपालाचार्य, दिनकर, अज्ञेय, बाल कृष्ण राव, जगदीश चन्द्र माथुर, आदि १५ विद्वानों के संक्षिप्त वक्तव्य प्रकाशित हुए थे। अनुवाद कला कुछ विचार' शीर्षक से प्रभाकर माचवे, जैनेन्द्र कुमार, गार्गी गुप्त, राजेन्द्र द्विवेदी नगीन चन्द्र सहगल आदि १६ व्यक्तियों के १६ लेखों का संग्रह १९६४ में पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ था। अनुवाद से सम्बद्ध लगभग १५ लेख भाषा पत्रिका में भी प्रकाशित हो चुके हैं। इस विषय के सर्वाधिक लेख भारतीय अनुवाद परिषद् की पत्रिका 'अनुवाद' में छपते रहे हैं। अनुवाद विषयक लेखों में अपने विचार व्यक्त करनेवालों में महेन्द्र चतुर्वेदी, नगीन चन्द्र सहगल, गार्गी गुप्त, विश्व प्रकाश गुप्त, ओम्प्रकाश गाबा उग्रसेन गोस्वामी कृष्ण गोपाल अग्रवाल ओम्प्रकाश सिंहल प्रेमचन्द गोस्वामी, राजेन्द्र वोहरा, सुरेन्द्र नाथ त्रिपाठी सुरेन्द्र कुमार दीक्षित श्रीकांत वर्मा, इन्द्रनाथ चौधुरी गंगाप्रसाद श्रीवास्तव, हरसरन सिंह विश्नोई आदि के नाम लिए जा सकते हैं। मैंने भी इस विषय पर एक दर्जन से ऊपर लेख लिखे हैं जो भाषा, अनुवाद, सप्तसिंधु आदि में छप चुके हैं। (३) थीसिस के रूप में—हिन्दी में अनुवाद से सम्बद्ध कुछ ही थीसिस मेरे देखने में आए हैं 'संस्कृत नाटकों के हिन्दी अनुवाद'—डा देवेन्द्र कुमार (दिल्ली) 'अंग्रेजी काव्य कृतियों के हिंदी अनुवाद (१८८६ १९६५)—डा० नगीन चन्द्र सहगल (दिल्ली) 'तकनीकी, वैज्ञानिक तथा पारिभाषिक शब्दों के हिन्दी अनुवाद की समस्या—डा० ना० रामकृष्ण राजुरकर (जबलपुर), बीसवीं शताब्दी में हुए अंग्रेजी नाटकों और काव्यों के अनुवादों का आलोचनात्मक अध्ययन—डॉ० रत्न कुमार वार्ष्णेय (आगरा)। पी एच० डी० के लिए अनुवाद से संबद्ध कई थीसिस भी लिखे जा रहे हैं। उदाहरणार्थ प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक के निर्देशन में विश्व प्रकाश गुप्त अनुवाद की दृष्टि से अंग्रेजी हिन्दी विशेषणों का तुलनात्मक अध्ययन कर रहे हैं। बंगला हिंदी अनुवादों पर भी एक काम हो रहा है। (४) स्वतन्त्र पुस्तक के रूप में—किसी एक व्यक्ति द्वारा लिखित स्वतंत्र पुस्तक रूप में १९६६ में डॉ० वासुदेव नंदन प्रसाद की 'हिंदी अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग' शीर्षक एक छोटी सी पुस्तिका प्रकाशित हुई थी, जिसमें लगभग २० पृष्ठों में सिद्धांत विवेचन था, तथा शेष

कुछ अंश छोड़ सकता है। श्री गोपिका गीत (पृष्ठ ८) में वे कहते हैं 'इसमें मूल बहुत छूट गया है, पर शायद कुछ बड़ा बिगाड़ नहीं हुआ, उसकी छाया बहुत कुछ आ गई है। इस तरह वे स्वच्छन्द अनुवाद के समर्थक थे। (३) काव्यानुवाद मूल छन्द में हो सके तो अधिक अच्छा होता है। श्रीगोपिका गीत के मुख पृष्ठ पर लिखा है समश्लोकी स्वच्छन्द छायानुवाद खड़ी हिन्दी में। (४) पंक्ति प्रति पंक्ति अनुवाद में त्रुटियां हो जाने की सम्भावना रहती है।[1] उजड़ ग्राम में वे कहते हैं 'अधिक भाग अनुवाद का पंक्ति प्रति पंक्ति है इस कारण त्रुटि इसमें विशेषकर होगी। (५) अनुवाद को रोचक तथा सुबोध बनाने के लिए मूल कृति की भावनाओं में अनुवादक अपेक्षित परिवर्तन परिवर्धन कर सकता है। पाठक जी ने एकांतवासी योगी की अंग्रेजी भूमिका[2] में इसका संकेत किया है।

× × × ×

मिश्रबंधुओं ने सरस्वती (नवंबर १९०० पृ० ३६४) में श्रीधर पाठक की अनूदित काव्य पुस्तकों पर विचार करते हुए कहा था, अनुवादों का निर्माण ऐसा होना चाहिए कि वह मूलग्रंथ की भाषा न जानने वाले पाठक को अवश्य रुचे और यह तभी हो सकता है जब कुछ न कुछ स्वच्छन्दता से उल्था किया जाय।

× × × ×

जगन्नाथदास रत्नाकर (१८६६ १९३२) ने यों तो पोप की प्रसिद्ध कविता एस्से आन क्रिटिसिज्म का हिंदी अनुवाद किया था किंतु ऐसा लगता है कि वे अनुवाद का महत्व मौलिक लेखन के प्रेरक रूप में ही स्वीकार करते थे।

---

१ श्रांत पथिक' की भूमिका में भी वे कहते हैं Being through out a line for line rendering of a terse and philosophical peom it can not claim to be a very faithful reproduction of the original

२ However all that lay in my small power has been excerted to make the Hindi rendering as satisfactory as possible the numerous additions to and the few slight deviations from the poet s original ideas which will be found in the body of the translastion being introduced only to render more interesting and indeed more intelligible to the purely Hindi knowing reader a foreign tale which, without them, would have but little or no charm for him

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के बीसवें अधिवेशन में अपने सभापति भाषण (पृ० १८ १६) में उन्होंने कहा है 'यह लोगों की भ्रांत धारणा है कि अनुवादों से साहित्य की पर्याप्त वृद्धि होती है। वस्तुत बात यह है कि चाहे इस प्रकार से अपने साहित्य में क्षणिक प्रवाह आ जाय और अन्यान्य साहित्यों की सामग्री से परिपूर्ण होकर अपना साहित्य भी परिपुष्ट दिखाई पड़ने लगे परन्तु इस प्रकार की परकीय सपत्ति से सम्पन्न होना लज्जास्पद ही है। प्रत्येक देश का साहित्य उस देश के आचार व्यवहार परपरा प्राप्त संस्कार, इतिहास, मर्यादा आदि से ही अनुप्राणित रहता है। अत दूसरे शरीर में प्रवेश करते ही साहित्य के ये प्राण पूर्व शरीर के साथ छूट जाते हैं। इसका यह तात्पर्य नहीं है कि साहित्य की वृद्धि में अनुवादों का कोई स्थान ही नहीं। आरभ में प्राय अनुवादों की ही बाढ़ आती है। पर यह बाढ़ ऐसी सबल और अनुकूल होनी चाहिए जो आगे चलकर मौलिकता की प्रसविनी हो।'

× × × × ×

मैथिलीशरण गुप्त (१८८६) के अनूदित ग्रंथ मेघनाथ वध तथा उमर खय्याम की रुबाइयाँ हैं। गुप्त जी ने अनुवाद के संबंध में कुछ विशेष नहीं लिखा है। वे अनुवाद में मूल के भाव की यथासाध्य रक्षा करने के पक्ष पाती थे। मेघनाथ वध के निवेदन (पृ० २५ २६) में वे लिखते हैं जहाँ तक हो सका है मूल के भावों की रक्षा करने की कोशिश की गई है परन्तु अक्षमता के कारण अनेक त्रुटियाँ रह गई होंगी संभव है कहीं कहीं भाव भी भग हो गए हों। परन्तु जानकर ऐसा नहीं होने दिया गया।

× × × ×

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (१८८४ १९४०) को प्राय हम उच्चकोटि के आलोचक इतिहासकार तथा निबंधकार के रूप में ही जानते हैं किन्तु इन सबके साथ साथ वे उच्चकोटि के अनुवादक तथा अनुवाद चिंतक भी थे। उनके अनूदित ग्रंथ हैं (१) मेगस्थनीज का भारतवर्षीय वर्णन (१९०५ ता इन्डिका का), (२) आदर्श जीवन (१९१४ ऐडम्स के प्लेन लिविंग हाई थिंकिंग का डा० शिवनाथ तथा शुक्ल जी पर लिखने वाले कई अन्यों ने इसे स्माइल्स की पुस्तक का अनुवाद कहा है किंतु वस्तुत स्माइल्स ने इस नाम की कोई पुस्तक ही नहीं लिखी थी) (३) विश्व प्रपंच (१९१९ २० हैकल के रिडल आफ दि यूनिवर्स का) (४) बुद्धचरित (१९२२ अर्नाल्ड के 'लाइट आफ एशिया' का) (५) शशांक (१९२२ राखालदास के बंगला उपन्यास का)। इनके अतिरिक्त उन्होंने ८ ९ लेखों (ऐतिहासिक तथा साहित्यिक) के भी अनु

बाद किए। उनका अनुवाद विषयक चिंतन उनकी कुछ भूमिकाओं तथा लेखों में मिलता है। उनके अनुवादों तथा अनुवाद विषयक बातों के आधार पर उनकी अनुवाद विषयक मुख्य मान्यताएँ ये हो सकती हैं (१) शुक्ल जी भाव के लिए भाव वाले अनुवाद के पक्षपाती थे। उनके सारे अनुवादों में यह बात मिलती है। सरस्वती (भाग ७ संख्या ११) में शुक्ल जी ने रानी नाथ खत्री का जीवन चरित लिखा। उसमें उन्होंने खत्री जी की अनुवाद भूलों को भी दिखाया था। उदाहरण के लिए खत्री जी ने चार्ल्स और मेरी के एक वाक्य what suspicious people these Christians are ! का अनुवाद किया था ये ईसाई लोग कैसे अविश्वासी हैं। शुक्ल जी ने शुद्ध रूप दिया था ये ईसाई लोग बड़े अविश्वासी होते हैं। स्पष्ट है कि are का शब्दानुवाद है है किन्तु शुक्ल जी ने उसे होते हैं' कर दिया है। (२) अनुवाद में स्रोत भाषा के प्रभावों से लक्ष्य भाषा को यथासाध्य बचाकर रखना चाहिए। आज बँगला से हिंदी के अनुवादकों में इस दृष्टि से बड़ी कमी मिलती है। इसके विपरीत शुक्ल जी ने शशांक में बंगला का तनिक भी प्रभाव अनुवाद की हिंदी पर नहीं आने दिया है। (३) शुक्ल जी चाहते थे कि अनुवाद की भाषा में मौलिक लेखन सा सहज प्रवाह हो। विश्व प्रपंच में अनुवादक के वक्तव्य में वे कहते हैं कौन सा वाक्य किस अंग्रेजी वाक्य का अक्षरशः अनुवाद है इसका पता लगाने की जरूरत किसी को न होगी। बुद्ध चरित में कहते हैं— यद्यपि ढंग ऐसा रखा गया है कि एक स्वतन्त्र हिंदी काव्य के रूप में इसका ग्रहण हो । (४) अनुवाद में विषय से संबद्ध शब्दों के प्रयोग में काफी सतर्कता बरतनी चाहिए। शुक्ल जी ने लाइट आफ एशिया का बुद्ध चरित रूप में अनुवाद करते समय ऐसा नहीं किया कि तत्कालीन हिंदी शब्दावली में चुपचाप अनुवाद कर दें। उपयुक्त शब्द की प्राप्ति के लिए उन्होंने बौद्ध ग्रंथों का मंथन किया। वे स्वयं लिखते हैं शब्द बौद्ध शास्त्रों में व्यवहृत रख गए हैं।' (५) अनुवाद आवश्यकतानुसार मूलनिष्ठ तथा मूलमुक्त दोनों प्रकार का किया जा सकता है। शुक्ल जी के अनुवादों में ये दोनों ही प्रकार मिलते हैं। ता इन्दिरा के अनुवाद में वे पूर्णतः मूलनिष्ठ हैं। अपनी ओर से कुछ भी जोड़ा घटाया नहीं है। दूसरी तरफ आदर्श जीवन, विश्व प्रपंच बुद्ध चरित तथा शशांक में उन्होंने काफी छोड़ा जोड़ा है। आदर्श जीवन में वे स्वयं कहते हैं इस देश की रीति नीति के अनुकूल करने के लिए और भी बहुत सी बातें घटाई बढ़ाई गई हैं। वाक्य तो वाक्य पूरे के पूरे अध्याय भी छोड़ दिए गए हैं। शशांक ऐतिहासिक उपन्यास है। शुक्ल जी ने

अनुवाद की भूमिका म नए ऐतिहासिक तथ्यों पर विचार करते हुए कुछ नए निष्कर्ष दिए हैं, तथा अपने अनुवाद मे उसके अनुकूल परिवर्तन करके उसे दुखांत से सुखांत कर दिया है। दो नए पात्र (संयमीति तथा मालती) जोड़े हैं। इस तरह अनुवादक के साथ साथ इसमे उनका इतिहासवेत्ता तथा उपन्यास कार का रूप भी सामने आया है। इसम कोई सदेह नही कि अनुवादक को यह अधिकार नही है, किन्तु शुक्ल जी इस पुस्तक का मात्र अनुवाद करने नहीं चले थे। अत उनसे शिकायत नही की जा सकती। (६) जो अलकार स्रोत भाषा स लक्ष्य भाषा म उसी रूप म नही लाए जा सकत, कुछ परिवर्तित किए जा सकते हैं। शुक्ल जी ने बुद्ध चरित की भूमिका मे लिखा है—अंग्रेजी अलकार जो हिंदी में खपनेवाले नही थे छाल दिए गए हैं। (७) अनुवाद की भाषा शैली विषयानुसार बदलती रहनी चाहिए। शुक्ल जी के अनुवादों म विश्व प्रपच की भाषा विज्ञानोचित है तो आदर्श जीवन की बोलचाल की तथा मुहावरेदार और बुद्धचरित की काव्योचित।

× × × ×

लल्लीप्रसाद पाडेय (१८८६—) ने १६२० मे सरस्वती (दिसम्बर) म एक लेख लिखा 'मौलिक ग्रन्थ और अनुवाद।' उसमे वे एक स्थान (पृष्ठ ३१४) पर कहते हैं 'अनुवाद म भाव प्रधान है। अनुवाद ऐसा होना चाहिए जिससे पढ़ने वाले की समझ म मूल लेखक का भाव आसानी से आ जाय। यह आवश्यक नहीं कि मूल के हर शब्द का अनुवाद अवश्य रहे। इसके लिए अनुवादक मनमाने शब्दो का प्रयोग कर सकता है। उसे और सब अधिकार है। वह सिर्फ भाव बदल डालने का अधिकारी नही। जो अनुवादक इस काम म अभ्यस्त हैं वही यथार्थ अनुवादक हैं।' पाडेय जी ने बँगला से काफी अनुवाद किए हैं।

× × ×

देवी प्रसाद पूर्ण ने कालिदास के मेघदूत का धाराधर धावन नाम स अनुवाद किया। इसके प्रथम भाग की भूमिका म अनुवाद के बारे में उन्होंने विस्तार से विचार किया है। कुछ मुख्य बातें हैं (१) अनुवादक को शब्दानुवाद न करके भावानुवाद करना चाहिए। (२) स्पष्टता के लिए अनुवादक भाव विस्तार कर सकता है। वे कहते हैं। (धाराधर धावन प्रथम भाग, भूमिका पृ० ६ १०) कहीं कहीं (जहाँ एसा करने से कविता की सुदरता में अतर नहीं पड़ता) अनुवाद मे भी गूढता खोल दिया है —(३) कविता का अनुवाद छन्द प्रति छन्द होना ... नियम छन्द प्रति

छन्द ही होना चाहिए' (पृ २) (४) काव्यानुवाद में पद-लालित्य का ध्यान रखना चाहिए। वे कहते हैं 'जहाँ तक हमारी अल्प शक्ति ने सहायता की, हमने अनुवाद की कविता की शब्द रचना को सोहावनी की है जिससे अर्थ सौन्दर्य के साथ पद लालित्य की संधि से पाठक को प्रसन्नता हो ...।'

× × ×

दिनकर (१९०८—) ने सीपी और शख' तथा 'धूपछाँह' आदि अनुवाद किए हैं। वे मूल के अधिकाधिक निकट अनुवाद के समर्थक हैं। 'सीपी और शख' की भूमिका (पृष्ठ ग) में वे कहते हैं 'कविता के अनुवाद की दो पद्धतियाँ अब तक देखने में आई हैं ... (एक) पद्धति अनुवाद को मूल के अधिक से अधिक निकट रखने का आग्रह रखती है और सच पूछिए तो अनुवाद की सही प्रणाली यही मानी जानी चाहिए। किन्तु अपने अनुवादों में दिनकर ने काफी छूट ली है। 'धूपछाँह (दो शब्द पृष्ठ क) में वे अपने अनुवादों के विषय में कहते हैं 'अनुवाद प्राय सर्वत्र ही स्वच्छन्द हुआ है और अधिकांश में उन्हें अनुकरण कहना ही ज्यादा उपयुक्त होगा।

× × ×

बच्चन (१९०७—) ने खयाम की मधुशाला, जनगीता, मैकबेथ, हैमलेट तथा 'भाषा अपनी भाव पराए' आदि काफी अनुवाद किए हैं तथा कुछ स्वतन्त्र लेखों और अपने अनूदित ग्रन्थों की भूमिकाओं में अनुवाद सम्बन्धी अपने विचार भी व्यक्त किए हैं। उनकी कुछ मुख्य मान्यताएँ निम्नांकित हैं (१) अनुवाद में भाव का अनुसरण करना चाहिए। 'खयाम की मधुशाला' की भूमिका (पृष्ठ ६६) में वे कहते हैं, 'अपने अनुवाद के विषय में मुझे केवल यह कहना है कि मैं शब्दानुवाद करने के फेर में नहीं पड़ा। भावों को ही प्रधानता दी है।' (२) के राजेन्द्र द्विवेदी के 'शेक्सपीयर के सानेट' के प्राक्कथन (पृ०ख) में कहते हैं 'सफल अनुवाद वह है जिसमें अनुवादक का व्यक्तित्व भी अपनी झलक दिखाता रहे। यह जहाँ दिखेगा वहाँ रचना अनुवाद न होकर मौलिक सी प्रतीत होगी' (३) 'मैकबेथ के पद्यानुवाद की प्रवेशिका (पृष्ठ फ) में बच्चन जी कहते हैं 'इसका अनुवाद करने में मैंने चार विशेष लक्ष्य अपने सामने रखे थे—अनुवाद छायानुवाद न होकर अविकल हो, शेक्सपीयर के कवित्व की रक्षा की जाय, नाटक सामान्य शिक्षित दीक्षित जनता के सामने खेला जा सके, और चरम लक्ष्य यह कि अनुवाद अनुवाद न मालूम हो।' (४) कुछ अनुवादक विदेशी कृति के अनुवाद में सांस्कृतिक आदि दृष्टियों से परिवर्तन करते रहे हैं। बच्चन जी इसके विरोधी हैं। कमला चौधरी के

'खयाम का जाम' की भूमिका (पृष्ठ ३) मे वे कहते हैं 'किसी देश की कविता के साथ ही वहाँ का वातावरण इस रीति से जुड़ा रहता है कि उसे अलग करना उसके साथ अन्याय करना ही कहा जाएगा। (८) छंदबद्ध कृति का अनुवाद बच्चन जी के अनुसार उसी छंद मे होना चाहिए। वे उपयुक्त भूमिका (पृष्ठ ३) म कहते हैं 'छंद और भाव म घनिष्ठ सम्बन्ध है। रुबाइयात का अनुवाद कुछ लोगों ने रुबाई छंद म ही रखा है—मेरा अनुवाद रुबाई छंद म नहीं हो सका। मुझे यह स्वीकार करने मे सकोच नहीं है कि रुबाई छंद छोड देने से कविता की भावाभिव्यजना अवश्य कुछ कम हो गई है।'

× × ×

एक बार जवाहर लाल नेहरू ने मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के एक भाषण का अंग्रेजी में अनुवाद किया था। उस अनुवाद की तारीफ़ मौलाना ने उन्हें एक पत्र लिखकर इस प्रकार की थी 'तरजुमा करना नई चीज़ लिखने से कहीं ज्यादा मुश्किल है। असली मज़मून की अदबी शक्ल बनाए रखना और साथ ही तर्जुमे के ज़रिए लेखक की अस्ली तर्ज़ को ज़ाहिर करना कोई आसान काम नहीं है। जिस आदमी का दोनों ज़बानों पर एक सा काबू हो वही यह काम करने की हिम्मत कर सकता है। आपके तर्जुमे म असली मज़मून की कोई भी खासियत बिगडी नहीं है, और आपने अंग्रेज़ी के तर्जुमे मे मेरे उर्दू के अदबी ढग को इतनी कामयाबी के साथ निबाहा है कि अगर पढने वाले को ऐसा लगे कि असली तकरीर उर्दू मे नहीं अंग्रेज़ी मे लिखी गई थी तो मुझे अचरज नहीं होगा। आपके तर्जुमे की एक दूसरी खासियत है तामीरी ख्यालात की गजब की बुनदी आपने पूरी तरह मेरे ख्याल को दबा लिया जिस ने मेरी तकरीर और ज़ुमला को यह शक्ल दी है। दरअसल आपने जब तर्जुमा शुरू किया तो जो कुछ मैने कहा उसकी पूरी तस्वीर आपके सामने थी, यकीनन यह बड़ा मुश्किल काम था तर्जुमे म कहीं भी मेरी तकरीर का स्पिरिट और शक्ल में कोई खामी नहीं आने पाई।

हिंदी की एक शैली उर्दू के लेखक के रूप म मौलाना आज़ाद के ये विचार यहाँ दिए गए हैं।

× × ×

महेन्द्र चतुर्वेदी हिन्दी के उन थोडे से लोगों म हैं जो कृती अनुवादक के रूप म प्रसिद्ध हैं। इन्होंने काव्यशास्त्र, साहित्य राजनय, राजनीति इतिहास, संस्कृति, गणित तथा विज्ञान के अत्यन्त प्रामाणिक लगभग बीस ग्रंथों का

छन्द ही होना चाहिए (पृ ५)' (४) काव्यानुवाद म पद लालित्य का रखना चाहिए। वे कहते हैं जहाँ तक हमारी अल्प शक्ति ने सहायत हमने अनुवाद की कविता की शब्द रचना को सोहावनी की है जिससे सौन्दय क साथ पद लालित्य की रुचि से पाठक को प्रसन्नता हो"—"।

× × ×

दिनकर (१९०८—) ने सीपी और शख' तथा 'धूपछाँह आदि म किए हैं। वे मूल के अधिकाधिक निकट अनुवाद के समथक हैं। 'सीपी शख' की भूमिका (पृष्ठ ग) मे वे कहते हैं कविता के अनुवाद की दो तियाँ अब तक देखने मे आई हैं— (एक) पद्धति अनुवाद को मूल के इ से अधिक निकट रखने का आग्रह रखती है और सच पूछिए तो सही प्रणाली यही मानी जानी चाहिए। किन्तु अपने अनुवादा मे दि ने काफी छूट ली है। धूपछाँह' (दो शब्द पृष्ठ क) मे वे अपने अनुवा विषय म कहते हैं 'अनुवाद प्राय सवत्र ही स्वच्छन्द हुआ है और अधि मे उन्हे अनुकरण कहना ही ज्यादा उपयुक्त होगा।

× × ×

बच्चन (१९०७—) ने खैयाम की मधुशाला, जनगीता मैकबथ है तथा 'भाषा अपनी भाव पराए आदि काफी अनुवाद किए हैं तथा कुछ स्व लेख और अपने अनूदित ग्रन्थो की भूमिकाओ मे अनुवाद सम्बन्धी विचार भी व्यक्त किए है। उनकी कुछ मुख्य मान्यताए निम्नांकित हैं (अनुवाद मे भाव का अनुसरण करना चाहिए। खयाम की मधुशाला भूमिका (पृष्ठ ६६) म वे कहते हैं अपने अनुवाद के विषय म मुझे केवल कहना है कि मैं शब्दानुवाद करने के फेर म नही पडा। भावो को ही प्रधान दी है। (२) व राजेन्द्र द्विवेदी के शेक्सपीयर के सानेट के प्राक्कथन (पृ० म कहते हैं सफल अनुवाद वह है जिसम अनुवादक का व्यक्तित्व भी झलक दिखाता रह। यह जहाँ दिखेगा वहाँ रचना अनुवाद न होकर मौलि सी प्रतीत होगी (३) मकवथ' मे पद्यानुवाद की प्रवेशिका (पृष्ठ क) बच्चन जी कहते हैं इसका अनुवाद करने म मैंने चार विशेष लक्ष्य सामने रखे थे—अनुवाद छायानुवाद न होकर अविकल हो शेक्सपीयर म कवित्व की रक्षा की जाय, नाटय सामान्य शिक्षित दीक्षित जनता क सामने खेला जा सके, और चरम लक्ष्य यह कि अनुवाद अनुवाद न मालूम हो। (४) कुछ अनुवादक विदेशी कृति के अनुवाद म सास्कृतिक आदि दृष्टियों से परिवतन करते रह हैं। बच्चन जी इसके विरोधी हैं। रमणा चौधरी के

'खैयाम का जाम' की भूमिका (पृष्ठ ३) में वे कहते हैं किसी देश की कविता के साथ ही वहाँ का वातावरण इस रीति से जुड़ा रहता है कि उसे अलग करना उसके साथ अन्याय करना ही कहा जाएगा। (५) छन्दबद्ध कृति का अनुवाद बच्चन जी के अनुसार उसी छन्द में होना चाहिए। वे उपयुक्त भूमिका (पृष्ठ ३) में कहते हैं 'छन्द और भाव में घनिष्ठ सम्बन्ध है। रुबाइयात का अनुवाद कुछ लोगों ने रुबाई छन्द में ही रखा है—मेरा अनुवाद रुबाई छन्द में नहीं हो सका। मुझे यह स्वीकार करने में संकोच नहीं है कि रुबाई छन्द छोड़ देने से कविता की भावाभिव्यंजना अवश्य कुछ कम हो गई है।'

× × ×

एक बार जवाहर लाल नेहरू ने मौलाना अबुल कलाम आजाद के एक भाषण का अंग्रेजी में अनुवाद किया था। उस अनुवाद की तारीफ मौलाना ने उन्हें एक पत्र लिखकर इस प्रकार की थी तरजुमा करना नई चीज लिखने से कहीं ज्यादा मुश्किल है। असली मजमून की अदबी शक्ल बनाए रखना और साथ ही तर्जुमे के जरिए लेखक की अदबी तर्ज को जाहिर करना कोई आसान काम नहीं है। जिस आदमी का दोनों जबानों पर एक सा काबू हो वही यह काम करने की हिम्मत कर सकता है। आपके तर्जुमे में असली मजमून की कोई भी खासियत बिगड़ी नहीं है, और आपने अंग्रेजी के तर्जुमे में मेरे उर्दू के अदबी ढंग को इतनी कामयाबी के साथ निबाहा है कि अगर पढ़ने वाला को ऐसा लगे कि असली तकरीर उर्दू में नहीं अंग्रेजी में लिखी गई थी तो मुझे अचरज नहीं होगा। आपके तर्जुमे की एक दूसरी खासियत है तामीरी ख्यालात की गजब की बुलंदी आपने पूरी तरह मेरे ख्याल को देख लिया जिस ने मेरी तकरीर और जुमलों को यह शक्ल दी है। दरअसल आपने जब तर्जुमा शुरू किया तो जो कुछ मैंने कहा उसकी पूरी तस्वीर आपके सामने थी, यकीनन यह बड़ा मुश्किल काम था तर्जुमे में कहीं भी मेरी तकरीर की स्पिरिट और शक्ल में कोई खामी नहीं आने पाई।

हिंदी की एक शैली उर्दू के लेखक के रूप में मौलाना आजाद के ये विचार यहाँ लिए गए हैं।

× × ×

महेन्द्र चतुर्वेदी हिन्दी के उन थोड़े से लोगों में हैं जो हिन्दी अनुवादक के रूप में प्रसिद्ध हैं। इन्होंने काव्यशास्त्र, साहित्य, राजनय, राजनीति, इतिहास, संस्कृति, गणित तथा विज्ञान के अत्यन्त प्रामाणिक लगभग बीस ग्रंथों का

जोडकर उससे अन्य सबद्ध शब्द सरलता से बनाए जा सकें। जैसे 'मानव' से मानवीय मानवीयता मानवीकरण मानविकी आदि या अद्वैत से शुद्धाद्वैत विशिष्टाद्वैत द्वैताद्वैत आदि। अर्थात् मूल पारिभाषिक शब्द में उर्वरता होनी चाहिए। विदेशी शब्दों में अन्य भाषा में जाकर वह उर्वरता नहीं रह जाती इसीलिए वे बहुत आवश्यक होने पर ही लिए जाने चाहिए। (६) समान श्रेणी के पारिभाषिक शब्दों में एकरूपता होनी चाहिए। जैसे भाषाशास्त्र में Phoneme, Morpheme Semanteme, Grapheme या ध्वनिग्राम रूपग्राम, अर्थग्राम लिपिग्राम। ऐसा होने से उनमें सहज रूप से सरलता और बोधगम्यता आ जाती है। (७) इसके विपरीत असमान संकल्पनाओं या वस्तुओं के लिए मिलते जुलते शब्द कभी न होने चाहिए, अन्यथा भ्रम की आशंका रहती है। (८) सबद्ध संकल्पनाओं और वस्तुओं के लिए सबद्ध शब्द होना चाहिए। इसीलिए हिंदी में ताप और तापमापी रखना अच्छा है बनिस्बत 'ताप' और 'थर्मामीटर' के। (९) हर शब्द को दूसरे से इतना अलग होना चाहिए कि उसे सुन या पढ़कर किसी और पारिभाषिक शब्द का भ्रम न हो। (१०) यदि पारिभाषिक शब्द एकाधिक भाषाओं के लिए हो तो सभी भाषा के भाषियों के लिए उच्चारण की दृष्टि से उसे सरल तथा अर्थ की दृष्टि से स्पष्ट होना चाहिए। भारतीय पारिभाषिक शब्दावली के लिए यह आवश्यक है क्योंकि यहाँ उसका प्रयोग दसाधिक भाषाओं में किया जा सकता है।

पारिभाषिक शब्द विषयक सम्प्रदाय— मूल लेखक अपनी भाषा में पारिभाषिक शब्दावली की कमी को कैसे दूर करे? या अनुवादक स्रोत सामग्री के पारिभाषिक शब्द के लिए लक्ष्य भाषा में शब्द न मिलने पर कहाँ से शब्द लाए? उस प्रश्न को लेकर थोड़ा विवाद है। भारतीय भाषाओं मुख्यतः हिन्दी में इस प्रश्न को लेकर चार प्रकार के मत व्यक्त किए गए हैं जिससे पारिभाषिक शब्दावली के संबंध में चार सम्प्रदायों (schools) की सत्ता हो गई है। (१) पुनरुद्धारवादी अथवा संस्कृतवादी अथवा प्राचीनतावादी— इस वर्ग के लोग भारतीय भाषाओं की सारी की सारी पारिभाषिक शब्दावली संस्कृत से लेने के पक्ष में हैं। ये यथासम्भव अधिक से अधिक शब्दों को प्राचीन संस्कृत वाङ्मय से लेना चाहते हैं तथा जिन आधुनिक पारिभाषिक शब्दों के लिए संस्कृत में शब्द नहीं हैं [illegible] पद्धति द्वारा [illegible] संस्कृत [illegible]। [illegible] अथवा संस्कृत [illegible] में उनके [illegible] बनाकर उनमें [illegible] कभी-कभी [illegible] हैं। डॉ० रघुवीर इस सम्प्रदाय के प्रमुख समर्थक [illegible]

रूप में प्रसिद्ध हैं। आर्यसमाजी विचारधारा से प्रभावित प्राचीन भारतीय संस्कृति के भक्त या इस श्रेणी के अन्य अनेक विद्वान् भी इसके समर्थक रहे हैं, और हैं। इस मत के पक्ष विपक्ष में कई बातें कही जा सकती हैं। जहा तक इसके पक्ष म तर्कों का प्रश्न है ये बातें मुख्य हैं (क) संस्कृत हमारे देश की प्राचीन गरिमा मडित भाषा है और यूरोपीय भाषाओं के लिए जो स्थान ग्रीक लैटिन का है भारतीय भाषाओं के लिए वही स्थान संस्कृत का है। ऐसी स्थिति म वे लोग जब अपने पारिभाषिक शब्द प्राय ग्रीक लैटिन म लेते या बनाते हैं तो हमें भी संस्कृत से लेने या बनाने चाहिए। (ख) संस्कृत भाषा धातु प्रत्यय, उपसर्ग तथा समास शक्ति के कारण बडी उवरा है और बडी सरलता से उनके आधार पर नए शब्द बनाए जा सकते हैं। (ग) प्राचीन भाषाओं में पारिभाषिक शब्दों की दृष्टि से संस्कृत काफी सम्पन्न है। अत उस पर आश्रित होने पर शब्दों का अभाव नहीं हो सकता। जो शब्द संस्कृत में पहले से नहीं हैं सरलता से बना लिए जा सकते हैं। (घ) संस्कृत से शब्द लेने तथा संस्कृत के आधार पर नए शब्द बनाने के विरोध म जो लोग यह कहते हैं कि हम अधिकांश शब्द अंग्रेजी या अतर्राष्ट्रीय शब्दावली से लने चाहिए, वे भूल जाते हैं कि आगे चलकर हमे एक शब्द से अनेक शब्द बनाने पड सकते हैं और हर भाषा में उसी भाषा या उसकी पूर्वज भाषा के शब्द उवर होते है। दूसरी भाषा से लाया गया शब्द उवर नहीं होता। किसी ने ठीक ही कहा है कि विदेशी या गृहीत शब्द अक्षम होता है, क्योंकि उसम जनन शक्ति का अभाव होता है। उदाहरण के लिए थर्मामीटर थर्मल, थर्मोलाइसिस जैसे दो चार शब्दों को ग्रहण कर लेने म समस्या का समाधान नहीं हो सकता। थर्म' से अंग्रेजी में लगभग ५० शब्द बनते हैं और उनमे Thermometamorphism जैसे दजनो ऐसे भी हैं जिन्हें हिंदी आदि में लिया नही जा सकता। ऐसी स्थिति म सीधा रास्ता यही होगा कि थर्म के लिए अपना कोई शब्द जैसे 'ताप' स्थिर कर लें (यों थर्म और संस्कृत घर्म तथा फारसी गर्म मूलत एक ही हैं) और फिर उस के आधार पर थर्म के सारे शब्दों (जैसे Thermal तापीय Thermal belt तापीय मण्डल Thermal Capacity तापीय धारिता Thermion तापायन आदि) को बनाया जा सकता है। इससे एक संकल्पना के शब्दों म समानता रहेगी। इसी कठिनाई के कारण यह प्राय सभी का विचार रहा है (मौलाना आजाद ने भी यही कहा था) कि संकल्पनासूचक शब्द तो अपने हो हों भले ही वस्तुबोधक (जैसे पेन, फुण्टन आदि) को हम ले लें।

इस सम्प्रदाय के विरुद्ध ये बातें कही जा सकती हैं (क) संकल्पनासूचक

शब्दों को संस्कृत से लेना तथा उनसे नए शब्द गढ़ लेना तो ठीक है किंतु ये लोग तो इस मत के हैं कि जो अरबी तुर्की फारसी अंग्रेजी से वस्तुबोधक शब्द हिंदी में आए हैं तथा जो सामान्य भाषा के भी अभिन्न अंग बन चुके हैं उन को भी भाषा से निकाल कर नए शब्द संस्कृत से लिए या बनाए जाएँ। कुछ लोग तो तद्भव तथा देशज के स्थान पर भी संस्कृत शब्द लाना चाहते हैं। बनारस का 'वाराणसी' करवा देना इसी प्रवृत्ति का परिणाम था। डा० रघुवीर ने नहर के लिए 'कुल्या', सड़क के लिए 'रथ्या' (रेलवे) 'स्टेशन' के लिए 'स्थाण' (यह ऋग्वेद में प्रयुक्त शब्द है) तथा पेन के लिए 'मसीरथ' दिया है। उनके द्वारा दिए गए कुछ और शब्द हैं रेल=सयान टिकट=सयान पत्र रिक्शा=नरयान बल्ब=विद्युत्कन्द मेज=पटल एकड=प्रहल, मिल=निर्माणी आदि। हिंदी के कई हजार इस प्रकार के बहुप्रचलित शब्दों को निकाल कर नए शब्दों को लेना हिंदी के आधुनिक समन्वयवादी (तत्सम+तद्भव+विदेशी+देशज) स्वरूप को झुठलाना है तथा इस वास्तविकता से मुँह मोड़ना है कि ये शब्द हमारी भाषा के अंग हैं। (कुछ लोगों ने मजाक उड़ाने के लिए यह भी कहना शुरू किया था कि डा० रघुवीर ने टाई के लिए 'कंठ लँगोट' तथा दाखिल खारिज के लिए घुसाट निकाल शब्द या ऐसे ही अनेक शब्द बनाए हैं किंतु वस्तुत यह गलत है। टाई को उन्होंने कदाचित् कंठ भूषण कहा है।) यदि इस संप्रदाय की बात मान लें तो हिंदी व्यर्थ में इतनी कठिन हो जाएगी कि सबके लिए समझना असंभव हो जाएगा। (ख) इस संप्रदाय ने उस अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली [तत्वों और यौगिकों के नाम माप-तौल की इकाइयों के नाम (डा० रघुवीर ने मीटर के लिए मान, किलोमीटर के लिए सहस्रमान दिया है) तथा रेडियो (डा० रघुवीर—नभोवाणी) रडार (डा० रघुवीर—तेजोवर्ष') पट्रोल (डा० रघुवीर—मार्तैल) आदि विश्व प्रचलित शब्द आदि] की पूर्णतया अवहेलना की है जो विश्व भर में वैज्ञानिक विचार-विनिमय के लिए एक सीमा तक आधार है। (ग) इस संप्रदाय की पद्धति है अंग्रेजी से शब्दानुवाद या उसके आधार पर यंत्रवत् शब्द निर्माण किंतु अनूदित शब्द सर्वत्र बहुत जीवित और व्यंजक नहीं होते। जैसे पी एच० डी० के लिए विद्यावाचस्पति? दर्शन महाविज्ञ (डा० रघुवीर) या रीडर के लिए प्रवाचक (डॉ० रघुवीर) आदि।

दूसरा संप्रदाय है शब्दग्रहणवादी या स्वीकरणवादी। अधिकांश विज्ञान वेत्ता तथा अंग्रेजी परंपरा के लोग इसी पक्ष में हैं। वे चाहते हैं कि अंग्रेजी तथा अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली को ले लिया जाय। इसके पक्ष में निम्नांकित

बातें कही जा सकती हैं (क) चूंकि अंग्रेजी और अंतरराष्ट्रीय शब्दावली का प्रचार विश्व में सर्वाधिक है अतः उससे परिचित होने पर हमारे विज्ञान या शास्त्रवेत्ताओं को विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित साहित्य को समझने में आसानी होगी साथ ही वह शब्दावली जिन जिन भाषाओं में प्रयुक्त हो रही है उसे बोलने वाले, केवल सामान्य भाषा सीख कर हमारे वैज्ञानिक और शास्त्रीय साहित्य को समझ सकेंगे। (ख) यह रास्ता अपनाने से अनुवादक या या लेखक के लिए शब्दावली की समस्या सदा सर्वदा के लिए सुलझ जाएगी। जब भी आवश्यकता हो वह आंख मूंद कर अंग्रेजी से पारिभाषिक शब्द ले सकता है। (ग) इसके पक्ष में सबसे बड़ा तर्क यह है कि नए शब्द विभिन्न विज्ञानों में हमेशा ही आते रहेंगे। तो फिर हम कब तक अपने देशीय स्रोतों से शब्द खोजते या बनाते रहेंगे। अच्छा हो कि अंग्रेजी से शब्दग्रहण की बात स्वीकार कर लें तो सदा सर्वदा के लिए इस समस्या से हमारा पिंड छूट जाय। (घ) नेपाल ईरान आदि कई देशों ने एक सीमा तक यही किया है। इस सम्प्रदाय के विपक्ष में ये बातें हैं (क) किसी भी समुन्नत देश में ऐसा नहीं है कि सारे के सारे शब्द किसी दूसरी भाषा से लिए जाते। मूलतः यह प्रश्न देश के व्यक्तित्व से जुड़ा है। सारे शब्द हम अंग्रेजी से नहीं ले सकते। (ख) अंग्रेजी के सारे पारिभाषिक शब्द हिन्दी पचा भी नहीं सकती। वस्तुतः कोई भी भाषा किसी दूसरी भाषा के सारे शब्द मुख्यतः अंग्रेजी हिन्दी अंतरवाली पचा नहीं सकती। (ग) गृहीत शब्द (loan words) अक्षम होते हैं क्योंकि उनमें जनन शक्ति (नए शब्द बनाने की क्षमता) या तो बहुत कम होती है, या बिलकुल नहीं होती। इस सम्प्रदाय में भी शब्द-ग्रहण के संबंध में दो मत हैं। कुछ लोग तो अंग्रेजी आदि से शब्दों को ज्यों का त्यों लेना चाहते हैं। जैसे एकेडमी इंटेरिम पैरावोला टैक्नीक, केमेस्ट्री नाइट्रोजन आदि। दूसरे वे लोग हैं जो इन शब्दों को हिन्दी आदि की ध्वनि व्यवस्था के अनुरूप अनुकूलित करके लेने के पक्ष में हैं। जैसे अकादमी अंतरिम परवलय तकनीक कामेस्ट्री नत्रजन आदि। कहना न होगा कि जिन भाषाओं ने भी दूसरी भाषाओं से शब्द लिए हैं प्रायः शब्दों को अनुकूलित किया है। शब्द चाहे पारिभाषिक हो या सामान्य।

तीसरा सम्प्रदाय हिंदुस्तानीवादी या प्रयोगवादी है। इसमें हिन्दुस्तानी भाषा के समर्थक पंडित सुन्दरलाल उस्मानिया विश्वविद्यालय तथा हिंदुस्तानी कल्चर सोसायटी आदि का नाम लिया जा सकता है। इस सम्प्रदाय ने हिन्दी-उर्दू के समन्वय तथा सरल शब्दावली के नाम पर बोलचाल के शब्दों संस्कृत शब्दों

तथा अरबी फारसी शब्दों की खिचड़ी में ऐसे शब्द बनाए हैं जो बड़े ही हास्यास्पद हैं। उदाहरणार्थ उस्मानिया यूनिवर्सिटी के तीन शब्द हैं Acceleration—पातबढ़ाव Absolutism—मरोरवा Reaction—पलटकारी। प० गुरुमाल ने इसी प्रकार की शब्दावली में भारतीय संविधान का अनुवाद किया है। उनके कुछ शब्द हैं Incorporate—मदगम करना Emergency—घटाकारी President—राजपति Governmental—शासनिया। हिंदुस्तानी कल्चर सोसायटी के कुछ शब्द हैं psychology—मनविद्या, halfheartedness—अधदिलापन Simplify—आसानियाना Pedagogy—तालीम दिया। कहना न होगा कि इस सम्बन्ध के शब्द इतने अस्पष्ट और हास्यास्पद हैं कि किसी ने इन शब्दों को आज गंभीरता से देखा तक नहीं है।

अधिक मत मध्यममार्गी या समन्वयवादी है। जो भी इस विषय पर गंभीरता से विचार करेगा प्रायः इसी मत का समर्थन करेगा। इस मत के अनुसार सुविधा और हिन्दी आदि भारतीय भाषाओं की प्रकृति की दृष्टि से शब्द ग्रहण (अंतर्राष्ट्रीय अंग्रेजी संस्कृत प्राकृत आधुनिक भाषाओं के प्राचीन और मध्यकालीन साहित्य, सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं तथा बोलियों से) तथा नव शब्द निर्माण दोनों का समन्वय किया जा सकता है। भारत सरकार की ओर से स्थापित वैज्ञानिक शब्दावली आयोग ने भी लगभग इसी प्रकार का मत व्यक्त किया था। इस मत की बातों को लेते हुए अपनी ओर से मैं भारतीय भाषाओं की पारिभाषिक शब्दावली की कमी दूर करने के लिए निम्नांकित सुझाव देना चाहूँगा (१) यथासंभव अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली को ले लिया जाए। इनमें जो शब्द अपने मूल रूप में चल सकें, उन्हें वैसे ही लें तथा जिनमें ध्वनि परिवर्तन या अनुकूलन आवश्यक हो बना कर लिया जाय। (२) अंग्रेजी लंबे समय तक संपर्क के कारण हमारे काफी निकट रही है तथा सभी भारतीय भाषाओं में तीन-तीन चार चार हजार अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हो रहा है। अतः जो अंग्रेजी शब्द हमारी भाषाओं में चल रहे हैं उन्हें चलने दिया जाय। कुछ नए शब्द भी आवश्यक होने पर अनुकूलित करके लिए जा सकते हैं किंतु इन्हें सभी दृष्टियों से उपयुक्त होना चाहिए। (३) प्राचीन तथा मध्यकालीन साहित्य से भी चलनेवाले तथा सभी दृष्टियों से सटीक शब्दों को लिया जा सकता है। (४) शब्दावली में अखिल भारतीयता का गुण लाने के लिए यह उचित होगा कि विभिन्न भारतीय भाषाओं तथा बोलियों में पाए जाने वाले उपयुक्त शब्दों को भी यथासंभव ग्रहण कर लिया जाए। (५) शेष आवश्यक शब्दावली के लिए हमारे पास नये शब्द बनाने के अतिरिक्त कोई

चारा नहीं रह जाता। नये शब्द बनाते समय साधारणतः हमें इस बात का ध्यान नहीं रखना चाहिए कि शब्द की व्युत्पत्ति मूलतः क्या है, बल्कि हमें उसके वर्तमान प्रयोग और अर्थ को देखना चाहिए क्योंकि कभी कभी शब्दों का अर्थ मूल अर्थ की सीमाओं से बहुत अलग हट जाता है और उस स्थिति में हमारे लिए मूल शब्दार्थ की अपेक्षा, वर्तमान शब्दार्थ ही अधिक महत्वपूर्ण होता है।

भारत में अन्तर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावली न्यूनाधिक मात्रा में गत दो दशकों से प्रचलित है। केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार समिति ने अपने १९४० के पांचवें अधिवेशन में इस शब्दावली पर विचार विमर्श करने के पश्चात् यह सिफारिश की थी कि जहां तक सम्भव हो अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली को भारतीय वैज्ञानिक शब्दावली में सम्मिलित कर लेना चाहिए। इस समिति की सन्दर्भ समिति ने भी अपनी १९४७ की बैठक में इस सुझाव को स्वीकार किया था। सन् १९४८ में उपकुलपतियों के सम्मेलन की विषय समिति ने भी इसका समर्थन किया था और १९४८-४९ में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग ने भी इस पर अपनी स्वीकृति दे दी थी। डा० शान्तिस्वरूप भटनागर और डा० बीरबल साहनी जैसे कई विशिष्ट वैज्ञानिकों ने भी इस निश्चय का समर्थन किया था।

वास्तव में यह निर्णय सुविचारित और बड़ा ही उपयुक्त था। अंतर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावली के पक्ष में पहली बात तो यह है कि यह उन देशों की देन है जो वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति की दौड़ में सबसे आगे हैं। यदि हम भी अपनी तकनीकी शब्दावली में इस अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली को सम्मिलित कर लें तो विज्ञान का साहित्य शीघ्र ही हमारी भाषाओं में रूपान्तरित हो सकेगा। इसके विपरीत यदि हम भाषा की शुद्धता के पीछे पड़े रहेंगे तो हमारे वैज्ञानिकों को दुगुना परिश्रम करना पड़ेगा। उनको भारतीय शब्दावली के साथ साथ अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली को भी याद रखना पड़ेगा, जिससे इन देशों के वैज्ञानिक साहित्य तक हमारी पहुँच बनी रहे।

एक बात और। शब्द केवल ध्वनियों के समवाय ही नहीं होते, बल्कि वे सप्राण और सजीव होते हैं। इस सजीवता के पीछे प्रयोग की पुरानी परम्परा होती है। नए शब्दों में सजीवता लाना उनमें चेतना और भाव फूंकना कोई सरल काम नहीं है। उदाहरणार्थ अंग्रेजी फ्रेंच, जर्मन और रूसी आदि भाषाओं में थोड़ा बहुत ध्वनि भिन्नता को छोड़कर एक ही शब्द 'कलरी' प्रयुक्त होता है। डॉ० रघुवीर ने इसके लिए एक नया शब्द उष्मांक बनाया है। स्पष्ट है कि कलरी शब्द की अर्थ-सम्पन्नता इस नए शब्द में कभी नहीं भरी

अपनी प्राचीन परम्परा के आधार पर आशातीत सफलता मिल सकती है। उदाहरण के लिए—Calculus के लिए कलन Maximum के लिए भूयिष्ठ Minimum के लिए अल्पिष्ठ, alliance के लिए समय battallion के लिए वाहिनी आदि। इसी तरह हम अपनी भाषाओं और बोलियों को भी पारिभाषिक शब्दों के लिए खंगालना पड़ेगा जो कृषि, बढ़ईगीरी और दूसरे ग्राम दस्तकारियों म प्रयुक्त होते हैं। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा प्रकाशित शब्द सूचियों म ऐसे बहुत से शब्द हैं जो अन्य भारतीय भाषाओं से लिये गये हैं। हम आशा है कि हम और भी शब्द लिए जाते रहेंगे। कुछ स्वीकृत शब्द इस प्रकार हैं। सिल्ट क लिए पंजाबी से लिया गया शब्द गत', टड्पोल के लिए बंगाली से लिया गया शब्द बेंगची एकमालिजमेंट के लिए मराठी से लिया गया शब्द पावती। यदि उक्त स्रोतों से भी हम किसी विशेष शब्द का प्रतिशब्द ढूढने म असमर्थ हो तब कहीं जाकर हम नया शब्द बना सकते हैं। परन्तु नया शब्द बनाते समय जैसा कि ऊपर कहा गया है इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि मूल धातु से बनाया गया शब्द हमेशा सही और आदर्श पर्यायवाची नहीं होता जैसे अंग्रेजी शब्द पाप्युलर एटिमालोजी के लिए मूल अर्थ के आधार पर बनाया गया शब्द लौकिक व्युत्पत्ति है, परन्तु इसके लिए 'भ्रामक व्युत्पत्ति' शब्द कहीं अच्छा है। प्रयोग म आने पर शब्द प्रायः अपनी मूल धातु के अर्थ से बहुत दूर चला जाता है और नए अर्थ ग्रहण करता रहता है। फलस्वरूप कुछ समय म प्रायः वह बिलकुल ही नया अर्थ धारण कर लेता है। ऐसे शब्दों के पर्याय ढूढने अथवा नए शब्द बनाने के लिए कल्पना शक्ति का थोड़ा सा उपयोग भी बड़ा सहायक सिद्ध हो सकता है। ऐसी हालत म हमे सम्बन्धित शब्द की मूल धातु की ओर ध्यान न देकर उस शब्द के वर्तमान प्रयोग और अर्थ को समझना चाहिए। उदाहरणार्थ 'ज़ीरो आवर' के लिए 'शून्य घण्टा' के स्थान पर 'अपस वेला' अपेक्षाकृत अच्छा शब्द है। इसी प्रकार 'कज़न लाइन' के लिए 'कज़न रेखा' की अपेक्षा 'कज़न सीमा' अधिक उपयुक्त है।